उत्तर भारतीय

आन्ध्र–तैलंग–भट्ट–गोस्वामी

वंशवृक्ष

संकलन-सम्पादक :

बालकृष्ण राव

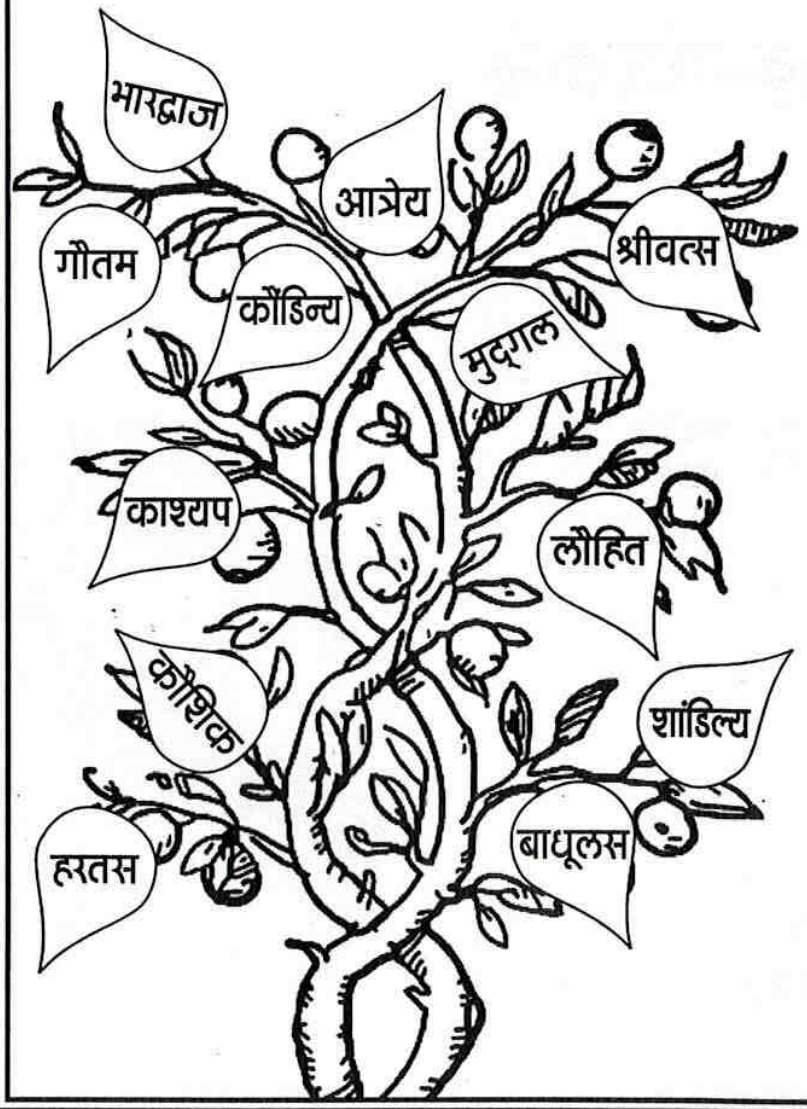

उत्तर भारतीय आन्ध्र–तैलंग–भट्ट–गोस्वामी

वंशवृक्ष

सर्वाधिकार सुरक्षित © सम्पादक–बालकृष्णराव

नवीन संस्करण सम्वत् 2069 सन् 2012

मूल्य रू. 200/– (दौ सौ रूपये)

कम्प्यूटर डिजाईन एवं मुद्रक :

रेही कम्प्यूटर्स एण्ड प्रिन्टर्स

340, कृष्ण भवन, चांदी की टकसाल, जयपुर (राज.)

मोबाइल : **098292 91194**

सम्पादक एवं प्रकाशक :

बालकृष्ण राव

24, महावीर कॉलोनी, करतारपुरा, जयपुर (राज.)

दूरभाष : **0141-2501693**

पुस्तक प्राप्ति स्थल :

भानुस्वरूप गोस्वामी

13, गायत्री नगर, सोडाला, जयपुर -6 (राज.)

दूरभाष : **0141-2450971** मोबाइल : **09414440997**

यदुनाथ भट्ट

54/151, देवर्षि सदन, पंचवटी मार्ग, मानसरोवर, जयपुर -20 (राज.)

दूरभाष : **0141-2784689** मोबाइल : **09414770324**

समर्पण

श्री कंठमणिजी शास्त्री

श्री गोकुलानन्दजी तैलंग

परम आदरणीय **श्री कंठमणि शास्त्री** एवं **श्री गोकुलानन्द तैलंग**
जो आज से लगभग सत्तर वर्ष पूर्व उत्तर भारत में निवसित तैलंग-भट्ट-गोस्वामी समाज के वंशवृक्ष के प्रणेता रहे, उन्हें शतशः नमन करते हुए तैलंग कुलम् के समस्त सदस्यों एवं स्वयं के द्वारा वर्तमान **वंशवृक्ष** सादर समर्पित है।

बालकृष्ण राव

उत्तर भारतीय

आन्ध्र–तैलंग–भट्ट–गोस्वामी

वंशवृक्ष

सौजन्य एवं सहयोग

तैलंग–कुलम्

अनुक्रमणिका

क्रमसं.	विषय	पृष्ठ सं.
1 .	पुरोवाक्	1
2 .	प्रस्तावना	3
3 .	परिशिष्ट–1	22
4 .	परिशिष्ट–2	38
5 .	परिशिष्ट–3	40
6 .	परिशिष्ट–4	54
7 .	भारद्वाज गोत्र के परिवारों का वंशवृक्ष	55
8 .	आत्रेय गोत्र के परिवारों का वंशवृक्ष	67
9 .	गौतम गोत्र के परिवारों का वंशवृक्ष	83
10.	श्रीवत्स गोत्र के परिवारों का वंशवृक्ष	95
11.	कौंडिन्य गोत्र के परिवारों का वंशवृक्ष	101
12.	मुद्गल गोत्र के परिवारों का वंशवृक्ष	107
13.	कश्यप गोत्र के परिवारों का वंशवृक्ष	114
14.	लोहित गोत्र के परिवारों का वंशवृक्ष	119
15.	कौशिक गोत्र के परिवारों का वंशवृक्ष	120
16.	बापूलस गोत्र के परिवारों का वंशवृक्ष	121
17.	हरतस गोत्र के परिवारों का वंशवृक्ष	122
18.	शांडिल्य गोत्र के परिवारों का वंशवृक्ष	123

पुरोवाक्

यह तथ्य तो विश्व में सुविदित है कि विश्वभर में जितने भी ब्राह्मण वर्ण के परिवार हैं वे 49 और 8 ऋषियों से उत्पन्न हैं। उनका इतिहास सहस्राब्दियों का है यह भी इससे स्पष्ट हो जाता है। हजारों वर्षों से ऋषियों की ये सन्तानें भारतीय मनीषा का संधारण कर रही हैं, साथ ही अपने पूर्वजों के इतिहास का भी संरक्षण कर रही हैं। जिन ऋषियों की ये सन्तान हैं उनका नाम गोत्र प्रवर्तक ऋषियों के रूप में ये याद रखती हैं और अपने आपको उनके गोत्र का उत्तराधिकारी बतलाती हैं। गोत्र के बारे में यह उक्ति प्रसिद्ध है – **"गोत्रं द्विधा, जन्मना विद्यया च।"** अर्थात् विप्र वर्ण का जो वर्ग अपने आपको आत्रेय गोत्र का कहता है वह या तो अत्रिऋषि की सन्तान परम्परा से पैदा हुआ है या शिष्य परम्परा से। प्रत्येक ब्राह्मण अपना गोत्र याद रखता है, उस गोत्र में जो प्रमुख प्रसिद्ध ऋषि हुऐ हैं उन्हें **"प्रवर"** नाम से याद रखता है। यह उसे हजारों वर्षों के इतिहास से सीधा जोड़ देता है।

इस प्रकार प्रत्येक विप्र वेद की उस शिखा का नाम भी अपने साथ जुड़ा रखता है जिसका अध्ययन हजारों वर्षों से उसके पूर्वजों द्वारा धर्मकृत्य के रूप में विहित किया गया था। यह इतिहास भी प्रसिद्ध है कि वेदों को, जिन्हें विश्वभर में मानव के पुस्तकालय की सर्वप्रथम पुस्तक के रूप में स्वीकार किया गया है, हजारों वर्षों से वंश परम्परा से विप्र वर्ग पढ़ता और याद रखता रहा है। इसलिए प्रत्येक विप्र का एक गोत्र होता है, तीन या पाँच प्रवर होते हैं, वेद की एक शाखा उससे जुड़ी होती है। बहुधा उस वंश विशेष की उप जाति का या वर्ग का भी अलग नाम होता है जिसे **"अल्ल"** अवटंक या सरनामा कहते हैं। विप्र लोग उस धर्मसूत्र और गृह्यसूत्र का नाम भी याद रखते हैं जिससे उनके विवाहादि संस्कार होते हैं। इन सबसे ही उनका इतिहास सहस्राब्दियों से अक्षुण्ण बना हुआ है।

जिन देशों या भूभागों में ये ब्राह्मण रहते थे उनके नाम से उनकी पहचान अलग बनी हुई है। तभी दक्षिण भारत के पंच द्रविड, उत्तर भारत के पंच गौड़, पश्चिम भारत के पंच गुर्जर इस प्रकार के उपभेद भी वर्षों से प्रसिद्ध हैं। ब्राह्मणों के इस इतिहास पर पिछली पाँच छह शताब्दियों से अनेक ग्रन्थ लिखे भी जा चुके हैं – ब्राह्मण निर्णय, ब्राह्मण दर्पण, ब्राह्मणोत्पत्तिदर्पण, ब्राह्मणउत्तरमार्तण्ड आदि नामों से। पंच द्रविडों में तैलंग (आन्ध्र) नाम के जो ब्राह्मण हैं व भी दो प्रकार के हैं, एक तो वे जो आन्ध्र प्रदेश में रहते हैं, दूसरे वे जो वहाँ से प्रवास कर उत्तर भारत में आ बसे हैं। यह प्रसन्नता की बात है कि उनमें से अधिकांश का शताब्दियों का इतिहास सुरक्षित है। या तो संस्कृत के वंश वर्णन काव्यों में या पट्टों–परवानों में। इसका महत्त्व इस दृष्टि से बहुत अधिक है कि प्राचीन इतिहास को ये लोग जीवन्त रखे हुए हैं।

उत्तरदेशस्थ आन्ध्र विप्र अधिकतर तो वल्लभाचार्यजी के परिवार के दक्षिण भारत से उत्तर भारत में आ बसने के क्रम में उनके साथयहाँ आ बसे थे जिनमें से प्राय: प्रत्येक परिवार में विद्वान, उपदेशक, कवि, लेखक आदि रहे हैं। संस्कृत के दिग्गज विद्वान जगन्नाथ पंडितराज, हिन्दी के महाकवि श्रीकृष्णभट्ट कविकलानिधि या पद्माकर देशभर में प्रसिद्ध हैं। इस प्रकार सभी तैलंग परिवारों के वंशों के इतिहास के अभिलेखन के प्रयास भी पिछली सदी में होते रहे हैं। एक प्रयास कांकरोली (राजसमन्द, राजस्थान) से स्व. पं. कंठमणि शास्त्री और गोकुलानन्द तैलंग द्वारा

क्रमश:

सम्पादित वंशवृक्ष द्वारा किया गया था, फिर "**संस्कृत कल्पतरु**" नाम के ग्रन्थ में स्व. धनश्याम गोस्वामी (महापुरा) ने कुछ परिवारों का अभिलेख छापा था। इन सबको इतना समय बीत गया कि उन ग्रन्थों की प्रतियाँ भी समाप्त हो गई और पिछले छह दशकों में नई पीढ़ी के अनेक बालक भी पैदा हो गए जिनका अभिलेख उनमें कहीं नहीं है।

यह प्रसन्नता की बात है कि जयपुर में बसे हुए ऐसे प्रवासी आन्ध्र परिवार के कुछ उद्यमी बन्धुओं में यह जागृति आई कि ऐसे परिवारों का अभिलेख पुनः सुरक्षित और अद्यावधि नवीनीकृत किया जाए। इसी क्रम में जयपुर के **श्रीबालकृष्णराव** ने जो संस्कृति सम्बन्धी अनेक ग्रन्थों के लेखक हैं, ऐसे परिवारों के वंशवृक्षों को अद्यावधिकर उनकी पृष्ठभूमि की जानकारी देने वाली भूमिका सहित प्रकाशित करने का बीड़ा उठाया है यह भी अत्यन्त हर्षप्रद है। यह ग्रन्थ आपके हाथों में है। इसे परिशोधित और अद्यतनकृत कर सुरक्षित रखने में सहयोग करना हम सबका कर्तव्य है यह आपका हृदय अवश्य कहेगा। इसी उद्देश्य से यह प्रसारित किया जा रहा है कि यह क्रम जारी रहे और हमारी जागृति भी बनी रहे।

देवर्षि कलानाथ शास्त्री
(राष्ट्रपति सम्मानित)
अध्यक्ष–आधुनिक संस्कृत पीठ, ज. रा. रा. संस्कृत विश्वविद्यालय,
प्रधान सम्पादक– "भारती" संस्कृत मासिक पत्र,
भूतपूर्व अध्यक्ष–राजस्थान संस्कृत अकादमी
निदेशक– संस्कृत शिक्षा एवं भाषा विभाग (राजस्थान सरकार)

सी/8, पृथ्वीराज मार्ग, सी–स्कीम, जयपुर

प्रस्तावना

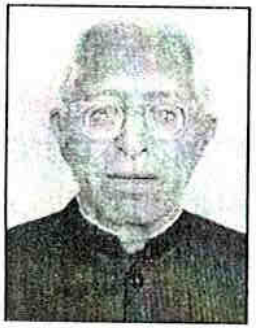

यदि आप अपने भूतकाल को अपने स्मृति पटल पर रखकर आगे बढ़ने की कामना करते है तो सबसे पहले जरूरत इस बात की है कि आप अपने अतीत को पहचानें, उसके बारे में सम्भावित अधिकतम जानकारी आपके पास हो। इसके लिए एकजुट भावना से काम करना अपेक्षित है। सुविधा और कर्तव्य के क्षेत्र में हम सब बराबरी के भागीदार बनकर अपना कर्तव्य बोध सामने रखें। आपके पूर्वज स्वयं गुणी थे तथा साथ ही गुणग्राही भी थे। उनके बारे में जानना आज हमारी आवश्यकता है। इस लक्ष्य का पहला चरण तैलंग–भट्ट–गोस्वामी समुदाय की वंशावली का अद्यतन प्रकाशन है।

तैलंग–भट्ट–गोस्वामी समुदाय की नामावली तो पूर्व प्रकाशित वंशवृक्ष भाग दो, जो पूज्य **श्रीकण्ठमणि शास्त्री** एवं **श्रीगोकुलानन्द तैलंग** द्वारा सम्पादित–विरचित है, से ली गयी है। गोस्वामी, देवर्षि, चक्रवर्ती, पोतकूर्चि, करंजी, कवीश्वर आदि शब्द तो कुल बोधक हैं, जो जाति विशेष को प्रतिपादित नहीं करते हैं। भौगोलिक अधिष्ठान के अनुसार आज तैलंगाना प्रदेश वर्तमान आन्ध्र प्रदेश का पूर्वी भाग एवं मध्यवर्ती भाग को जाना जाता है, परन्तु तैलंग–भट्ट जाति समुदाय के लिए तैलंग देश का व्यवहृत स्वरूप जो बतलाया गया है, वह है उत्कल का दक्षिण भाग, तमिलनाडु का उत्तरी छोर, कर्नाटक का पूर्व–उत्तर तथा आन्ध्र में श्रीशैलम से चोला स्थान के मध्य का भाग तैलंग प्रदेश के नाम से उपख्यात है।

तैलंग–भट्ट–गोस्वामी समुदाय का निर्माण आन्ध्र प्रदेश में विभिन्न वर्गी ब्राह्मणों से हुआ, वेलनाडी अर्थात परदेसी ब्राह्मण जो बाहर से आये और तैलंग देश में आकर बसे। दूसरा वर्ग वेगीनाडू, जिनके निवास ग्राम जल गये वे तैलंग देश में आकर बसे। "**वेगी**" दग्ध होने को कहते हैं। तीसरा वर्ग वह है जिनके स्वदेशाधिपति मर जाने के कारण, अत्याचार व अनाचार के भय के कारण तैलंग देश में आकर बसे, वे मुर्कीनाडू कहलाये। उपरोक्त तीनों प्रकार के ब्राह्मण कर्म–कर्मा नाम से जाने गये, अर्थात् ये कर्म करने में कुशल थे। यही कारण है कि रक्तबीज के कारण तैलंग–भट्ट–गोस्वामी समुदाय में कर्म की प्रधानता होते हुए पूर्वज व वर्तमान पीढ़ी में अध्यवसायी कर्मियों की कमी नहीं रही। ये गर्व का विषय है कि इस जाति समुदाय ने ज्योतिष, तांत्रिक, कर्मकाण्डी, साहित्यकार, अध्यापक, प्रशासन, न्याय, कला कौशल आदि विभिन्न क्षेत्रों में नाम उजागर किया है। परिशिष्ट–3 कृपया देखें।

"**तैलंग**" शब्द स्थान विशेष का परिचायक है। इस शब्द में हमारा आचार–विचार, संस्कृति–संस्कार, भाषा–वेशभूषा, कर्म–कर्तव्य बोध का आभास होता है। ये कहना अनुपयुक्त नहीं होगा कि हम अब उत्तर भारतीय रंग–ढंग में ढल गये हैं, व ढलते जा रहे हैं। स्वाभाविक है कि हमारे ऊपर देश–काल–वातावरण का प्रभाव पड़ा है और पड़ता जा रहा है। भाषा व वेशभूषा को हमारा तैलंग समाज लगभग परित्याग कर चुका है। अब आचार–विचार एवं संस्कृति का परिचय यत्र–तत्र ही मिलता हैं जिसके तार भी छिन्न–भिन्न होते जा रहे हैं। जाति समुदाय को अपनी विशिष्टता दिखलाने के लिए हमें अपने मूल संस्कारों को अपनाने हेतु पूर्व प्रक्रिया को चालू रखना होगा, इसके लिए दृढ़ता व अनुशासन की हम

सबको जरूरत है, परन्तु आज के बढ़ते हुए कदमों में रूढ़ि की बेड़ी डालना भी समयोचित नहीं प्रतीत होती है। भगवान बुद्ध की शिक्षा **"मज्झिम निकाय"** के अनुसरण में प्रशस्त मार्ग पर चलना ही श्रेयस्कर होगा।

"धर्मो विश्वस्य जगतः प्रतिष्ठा" (ना. उपनिषद), वेद, स्मृति, सदाचार, आत्मतुष्टि धर्म के चार लक्षण है। सामान्यरूप से धर्म दस लक्षणात्मक माना गया है –धैर्य, सन्तोष, क्षमा, दया, अस्तेय, शौच, इन्द्रियनिग्रह, आत्मविषयिणी बुद्धि, सत्य और अक्रोध आदि। सृष्टि के प्रारम्भ में ब्राह्मण के कोई भेद नहीं थे। इसका प्रमाण श्रुति–स्मृति ग्रन्थों में है। जिस समय ब्रह्मा ने अपने मुख से ब्राह्मणों की उत्पत्ति की, उस समय ब्राह्मण वर्ग का एक ही भेद था, ब्रह्म ऋषि। बाद में एक के गौड़ और द्रविण दो हुए। दोनों अलग–अलग दिशा और देशों में रहे, इससे दो भेद हो गये। बाद में इनके दस भेद हुए, और फिर दस भेद के चौरासी भेद हो गये। आगे चलकर सन्तति वृद्धि होने पर 280 ब्राह्मण भेद हुए। ब्राह्मणों की उत्पत्ति बह्मादिक देवताओं से वशिष्ठ, गौतम, कण्व, वाल्मीकि आदि ऋषियों से तथा कुछ मान्धाता जैसे राजाओं से अपने कार्य व पदत्व से ब्राह्मण स्थापित किये। दस प्रकार के ब्राह्मण इस प्रकार हैं – 1. तैलंग 2. महाराष्ट्र 3. गुर्जर 4. द्रविड़ 5. कर्णाटक। ये पाँच द्रविड़ ब्राह्मण कहलाये। इनका निवास विन्ध्याचल के दक्षिण में है। विन्ध्याचल के उत्तर में 1. सारस्वत 2. कान्यकुब्ज 3. गौड़ 4. मैथिल 5. उत्कल। इनमें भी ब्राह्मणों की अनेक शाखायें व उप शाखायें होती गयी। वर्तमान में ब्राहाण के मुख्यतः 115 वर्ग हैं।

"अथ दशभिदा ब्राह्मणा कर्णाटिकाश्च तैलंगा द्रविड़ा महाराष्ट्र काः। गुर्जराश्चेति पंचैव द्रविड़ा विन्ध्य दक्षिणे।
सारस्वताः कान्यकुब्जा गौड़ा उत्कलमैथिलाः। पंचगौड़ा इति ख्याता विन्ध्यस्योत्तर वासिनः।" (ब्राह्मण उत्तर मार्तण्ड)

गौड़ ब्राह्मणों की संख्या की भांति द्राविड़ ब्राह्मणों की संख्या भी 115 बतलाई है। अलग–अलग स्थानों पर बसने के कारण अलग–अलग नामों की संज्ञा दी गयी। दक्षिण के सभी ब्राह्मण वेद–वेदांगों से परिपूर्ण स्वाध्याय, तप, हवन आदि कर्मकाण्डी, विद्वान, ज्योतिष वक्ता हुए। तैलंग ब्राह्मणों में आठ वर्ग भेद हैं – 1. तैलंगानी 2. वेलनायटी 3. वेगुनायटी 4. मुरूकीनायटी 5. काशलनायटी 6. कर्णकामा 7. नियोगी 8. ऋषि न्यानासाखी। कुछ लोग तैलंग ब्राह्मणों के मुख्यतः छः भेद करते हैं – 1. वेलनाडू 2. वेगीनाडू 3. मुर्कीनाडू 4. कर्णकर्मा 5. तैलंगाणी 6. काशलनाडू। तैलंग ब्राह्मणों में निम्न वर्गीय ब्राह्मणों की भी गणना की जाती है। 1. अरवेलु ब्राह्मण – तैलंग ब्राह्मणों का यह एक गोत्र भेद है। 2. कानाराकमिा ब्राह्मण – यह तैलंग देश के निवासी कानाराकामा वैदिक ब्राह्मण हैं ये तैलंग कहलाते हैं। 3. आंध्र वैष्णव ब्राह्मण – ये रामानुज सम्प्रदाय के तैलंग ब्राह्मण हैं। 4. कासलनाडू ब्राह्मण – ये तैलंग ब्राह्मण हैं इनका निकास ओड प्रदेशान्तर्गत कौशला नगरी से है, वहां से ये तैलंग देश आकर बसे। 5. गोस्वामी या गुसाई ब्राह्मण – तैलंग ब्राह्मण हैं, इन्हें वल्लभाचार्य सम्प्रदाय की विशेष रूप से पदवी प्राप्त है। 6. मध्यगौड़ीय सम्प्रदाय के तैलंग ब्राह्मण हैं।

तैलंग ब्राह्मणों की उत्पत्ति की एक कथा है – जैमुनि देश का राजा धर्मव्रत था। ईश्वर भक्ति के प्रताप से उसे स्वेच्छा गमन की सिद्धि प्राप्त

थी। इस बल से वह नित्य प्रति विभिन्न तीर्थ क्षेत्रों में जाता और दान–तर्पण–पूजा कर वापिस अपने घर आकर राज्य कार्य में लग जाता था। उस धर्मात्मा राजा का नियम था कि हर रोज काशी में जाकर गंगा स्नान कर एवं पूजा पाठ कर प्रातः होने से पूर्व ही घर वापिस आ जाता था। एक दिन राजा की पत्नी सो कर जागी तो उसने राजा को पलंग पर नहीं पाया। उसके मन में आया कि राजा दुराचारी है। राजा के वापिस आने पर रानी ने पूछा कि मुझे सोती छोड़कर आप कहां जाते हो। राजा ने उसके मन के संदेह को भांप लिया। राजा ने सत्य बतला दिया। रानी ने भी अगले दिन राजा के साथ प्रातः चलने के लिए कहा। राजा सहमत हो गया रानी भी राजा के साथ गंगा स्नान को नित्य जाने लगी। एक बार गंगा पर्व पर राजा ने काशी के ब्राह्मणों का दान आदि से सत्कार किया। घर लौटने का अवसर आते ही रानी रजस्वला हो गयी। इधर राजा को समाचार मिला कि शत्रुओं ने उसके राज्य पर चढ़ाई कर दी है। राजा पशोपेश में पड़ गया। रजस्वला पत्नी को छोड़कर वह तीन दिन तक घर वापिस नहीं जा सकता था। उसने काशी के पण्डितों को बुलवाया। उनसे राजा ने मार्गदर्शन चाहा। पण्डितों ने राजा को जाने की अनुमति दे दी। राजा प्रसन्न हुआ उसने पण्डितों को कहा कि आप लोगों पर जब भी कोई विपत्ति आये, आप मेरे राज्य में आ जावें। राजा ने अपने राज्य में वापिस आकर शत्रु से युद्ध किया और विजयी हुआ। वह धर्मानुसार राज्य करने लगा। एक समय काशी में अकाल पड़ा। काशी के ब्राह्मण जैमुनि देश में गये, जैसा कि उन्हें राजा ने आश्वासन दिया था। वहां पहुंच कर राजा ने उन पण्डितों का आदर सत्कार किया। धन दान दिया। पण्डितों के कहने पर नदी के उत्तरी तट पर उनके रहने व भोजन आदि की व्यवस्था कर दी गयी। नदी के दक्षिणी तट पर वहां के मूल निवासी ब्राह्मण रहते थे। उन्हें काशी के पण्डितों से ईर्ष्या हुई उन्हें अपना तिरस्कार मालूम पड़ा। ये बात राजा–रानी तक पहुंची। राजा काशी के ब्राह्मणों को पूज्य व महान कहता था और रानी जैमुनि वासियों को महान कहती थी। इस पर शास्त्रार्थ कराने का निश्चय किया गया।

राजा व रानी ने विचार कर एक ताम्र कलश में सर्प बंद कर दिया और सभा में आज्ञा दी कि जो यह बतलायेगा कि कलश में क्या है वही श्रेष्ठ विद्वान माना जायेगा। जैमुनि के विद्वानों ने निर्णय दिया कि इसमें सर्प है। काशी के ब्राह्मण दुविधा में पड़ गये कि वे क्या कहें, जबकि जैमुनि ब्राह्मणों ने पहले ही इसका उत्तर दे दिया। तभी भगवान विष्णु एक बालक ब्रह्मचारी के रूप में प्रकट हुए। उन्होंने पण्डितों से कहा कि इस गूढ़ार्थ को मै जानता हूँ। मैं आप लोगों के लाभ की बात ही रखूंगा। बालक ने उनको मर्यादा रखने के लिए कहा। बालक राजा के पास गया और बोला कि मैं काशी के पण्डितों का शिष्य हूँ, उनकी तरफ से मै उत्तर दूंगा। बालक ने कहा कि इस ताम्र कलश में स्वर्ण निर्मित कृष्ण मूर्ति है। राजा–रानी उस बालक की बात पर हंसे। बालक के आग्रह करने पर जब कलश का मुंह खोला गया तो सचमुच ही स्वर्ण की कृष्ण मूर्ति उसमें निकली तब राज्य के मूल निवासी ब्राह्मण अपनी हार मान कर सभा से चले गये। बाद में राजा ने काशी के ब्राह्मणों को ग्राम दान कर अपने राज्य में बसाया। जिस क्षेत्र में उन्हें बसाया गया वह तैलगू क्षेत्र था। अतः वहां के निवासी ब्राह्मण तैलंग कहे गये।

राजा विलोकयामास स्त्रीमुखं हास्य–संयुतः। पात्रमुद्घाट्य च ततों दृष्टवान्मूर्तिमनुत्तमाम् ॥
दंपती विस्मयाविष्टावैश्तरेयाः प्रहर्षिताः। तस्मात् स्थानान्निरगमञ्जैमिनीयाः पराजिताः ॥
अथ राजातिसंहृष्टस्तेभ्यो ग्रामान्प्रदत्तवान्। ते औत्तरेया ह्यभवंस्तैलंग ब्राह्मणास्तदा ॥ (ब्राह्मण उत्तर मार्तण्ड पुराण) श्लोक 48–50

वर्तमान में तैलंग–भट्ट–गोस्वामी जाति का समुदाय निम्न स्थानों पर उनके सामने दी हुई परिवार संख्या के अनुसार इस प्रकार है –

1.	**जयपुर** (राजस्थान)	परिवार संख्या – 295	2.	**बीकानेर** (राजस्थान)	परिवार संख्या – 122
3.	**भोपाल** (मध्यप्रदेश)	परिवार संख्या – 68	4.	**मुंबई** (महाराष्ट्र)	परिवार संख्या – 48
5.	**अहमदाबाद** (गुजरात)	परिवार संख्या – 39	6.	**कोटा** (राजस्थान)	परिवार संख्या – 35
7.	**दिल्ली** (भारत)	परिवार संख्या – 28	8.	**जबलपुर** (मध्यप्रदेश)	परिवार संख्या – 13
9.	**टीकमगढ़** (मध्यप्रदेश)	परिवार संख्या – 16	10.	**वडोदरा** (गुजरात)	परिवार संख्या – 15
11.	**ग्वालियर** (मध्य प्रदेश)	परिवार संख्या – 11	12.	**गाजियाबाद** (उत्तर प्रदेश)	परिवार संख्या – 17
13.	**मिर्जापुर** (उत्तर प्रदेश)	परिवार संख्या – 9	14.	**बरेली** (उत्तर प्रदेश)	परिवार संख्या – 9
15.	**वृन्दावन** (उत्तर प्रदेश)	परिवार संख्या – 9	16.	**पन्ना** (मध्य प्रदेश)	परिवार संख्या – 8
17.	**गोकुल** (उत्तर प्रदेश)	परिवार संख्या – 5	18.	**मथुरा** (उत्तर प्रदेश)	परिवार संख्या – 7
19.	**जोधपुर** (राजस्थान)	परिवार संख्या – 6	20.	**उदयपुर** (राजस्थान)	परिवार संख्या – 9
21.	**जूनागढ़** (गुजरात)	परिवार संख्या – 7	22.	**राजकोट** (गुजरात)	परिवार संख्या – 6
23.	**लखनऊ** (उत्तर प्रदेश)	परिवार संख्या – 6	24.	**बैंगलुरू** (कर्नाटक)	परिवार संख्या – 5
25.	**सागर** (मध्य प्रदेश)	परिवार संख्या – 5	26.	**चण्डीगढ़**	परिवार संख्या – 5
27.	**पोरबन्दर** (गुजरात)	परिवार संख्या – 4	28.	**कानपुर** (उत्तर प्रदेश)	परिवार संख्या – 4
29.	**अजमेर** (राजस्थान)	परिवार संख्या – 3	30.	**दमोह** (मध्य प्रदेश)	परिवार संख्या – 3
31.	**अजयगढ़** (मध्य प्रदेश)	परिवार संख्या – 3	32.	**आगरा** (उत्तर प्रदेश)	परिवार संख्या – 2
33.	**ब्यावर** (राजस्थान)	परिवार संख्या – 1	34.	**सीधी** (मध्य प्रदेश)	परिवार संख्या – 1

35.	**गोंडा** (उत्तर प्रदेश)	परिवार संख्या – 1	36.	**बस्ती** (उत्तर प्रदेश)	परिवार संख्या – 1
37.	**रायगढ़** (महाराष्ट्र)	परिवार संख्या – 1	38.	**इलाहाबाद** (उत्तर प्रदेश)	परिवार संख्या – 1
39.	**झालावाड़** (राजस्थान)	परिवार संख्या – 3	40.	**धौलपुर** (राजस्थान)	परिवार संख्या – 1
41.	**नरी** (उत्तर प्रदेश)	परिवार संख्या – 4	42.	**प्रेमसरोवर** (उत्तर प्रदेश)	परिवार संख्या – 1
43.	**ऊँचागांव** (उत्तर प्रदेश)	परिवार संख्या – 3	44.	**खुर्जा** (उत्तर प्रदेश)	परिवार संख्या – 1
45.	**फरीदाबाद** (हरियाणा)	परिवार संख्या – 3	46.	**गुड़गांव** (हरियाणा)	परिवार संख्या – 2
47.	**सोनीपत** (हरियाणा)	परिवार संख्या – 1	48.	**दुर्ग** (मध्य प्रदेश)	परिवार संख्या – 4
49.	**विदिशा** (मध्य प्रदेश)	परिवार संख्या – 1	50.	**छिन्दवाड़ा** (मध्य प्रदेश)	परिवार संख्या – 1
51.	**विजावर** (मध्य प्रदेश)	परिवार संख्या – 1	52.	**छतरपुर** (मध्य प्रदेश)	परिवार संख्या – 1
53.	**चंपारण** (छत्तीसगढ)	परिवार संख्या – 1	54.	**रायपुर** (छत्तीसगढ़)	परिवार संख्या – 3
55.	**चंदौसी**(उत्तर प्रदेश)	परिवार संख्या – 2	56.	**काशीपुर** (उत्तराखण्ड)	परिवार संख्या – 1
57.	**कोलकाता** (प. बंगाल)	परिवार संख्या – 1	58.	**वाराणसी** (उत्तर प्रदेश)	परिवार संख्या – 2
59.	**रेवई** (मध्य प्रदेश)	परिवार संख्या – 1	60.	**बबीना** (उत्तर प्रदेश)	परिवार संख्या – 1
61.	**नोहरा** (मध्य प्रदेश)	परिवार संख्या – 1	62.	**हरिद्वार** (उत्तराखण्ड)	परिवार संख्या – 1
63.	**इंदौर** (मध्य प्रदेश)	परिवार संख्या – 3	64.	**रतलाम** (मध्य प्रदेश)	परिवार संख्या – 2
65.	**सिमरिया** (मध्य प्रदेश)	परिवार संख्या – 3	66.	**विरसिंहपुर** (मध्य प्रदेश)	परिवार संख्या – 2
67.	**भरूआ सुमेरपुर** (उत्तर प्रदेश)	परिवार संख्या – 1	68.	**चित्रकूट** (मध्य प्रदेश)	परिवार संख्या – 2
69.	**नाथद्वारा** (राजस्थान)	परिवार संख्या – 6	70.	**कांकरोली** (राजस्थान)	परिवार संख्या – 8
71.	**चित्तौड** (राजस्थान)	परिवार संख्या – 2	72.	**गंगानगर** (राजस्थान)	परिवार संख्या – 1
73.	**सीकर** (राजस्थान)	परिवार संख्या – 1	74.	**डीग** (राजस्थान)	परिवार संख्या – 1
75.	**भीलवाड़ा** (राजस्थान)	परिवार संख्या – 1	76.	**नडियाद** (गुजरात)	परिवार संख्या – 1
77.	**केशोद** (गुजरात)	परिवार संख्या – 2	78.	**जामनगर** (गुजरात)	परिवार संख्या – 3

79. **सूरत** (गुजरात)	परिवार संख्या – 3	80. **भद्रावती** (उड़ीसा)	परिवार संख्या – 1
81. **पूना** (महाराष्ट्र)	परिवार संख्या – 3	82. **नागपुर** (महाराष्ट्र)	परिवार संख्या – 1
83. **गोवा** –	परिवार संख्या – 1	84. **हैदराबाद** (आंध्र प्रदेश)	परिवार संख्या – 1
85. **विशाखापट्टनम** (आ. प्र.)	परिवार संख्या – 1	86. **चेन्नई** (तामिलनाडू)	परिवार संख्या – 3
87. **अगरतल्ला** (त्रिपुरा)	परिवार संख्या – 1	88. **शिलोंग** (मेघालय)	परिवार संख्या – 1
89. **विदेश**	परिवार संख्या – 4		**(कुल योग – 928 परिवार)**

इसमें प्रातः स्मरणीय वल्लभाचार्यजी के वंशजों की गणना शामिल नहीं है। अनुमानतः चार व्यक्तियों का एक परिवार मानते हुए जातीय जनसंख्या लगभग चार हजार व्यक्तियों की होती है। वास्तविक आंकड़ों के लिये प्रत्येक परिवार की जानकारी प्राप्त करना व उनका एकत्रीकरण आवश्यक है।

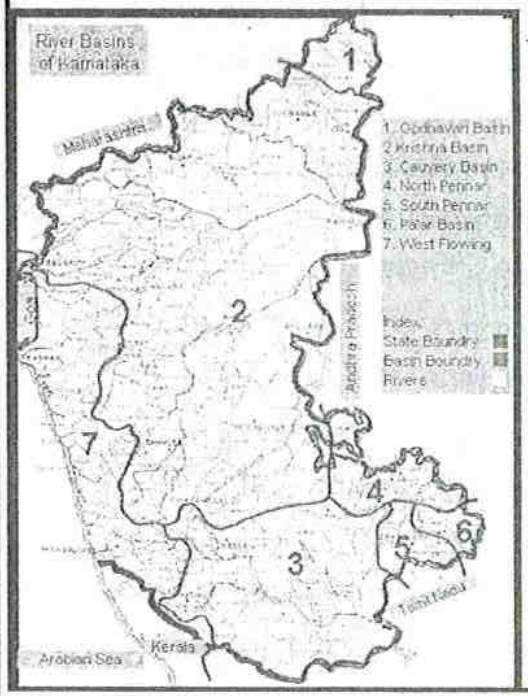

← तैलंग भट्ट जाति के लोग दक्षिण में आन्ध्र प्रदेश तामिलनाडू कर्नाटक एवं उड़ीसा के दक्षिण भाग में निवसित थे। यह प्रदेश पूर्ण रूप से तैलंग प्रदेश के नाम से पूर्व में विख्यात था।

आन्ध्र प्रदेश के गेन्डीकोट्टा के समीप प्रवाहित पेण्णार नदी का बेसिन क्षेत्र तैलंग भट्ट समुदाय का उद्भव स्थल रहा है। →

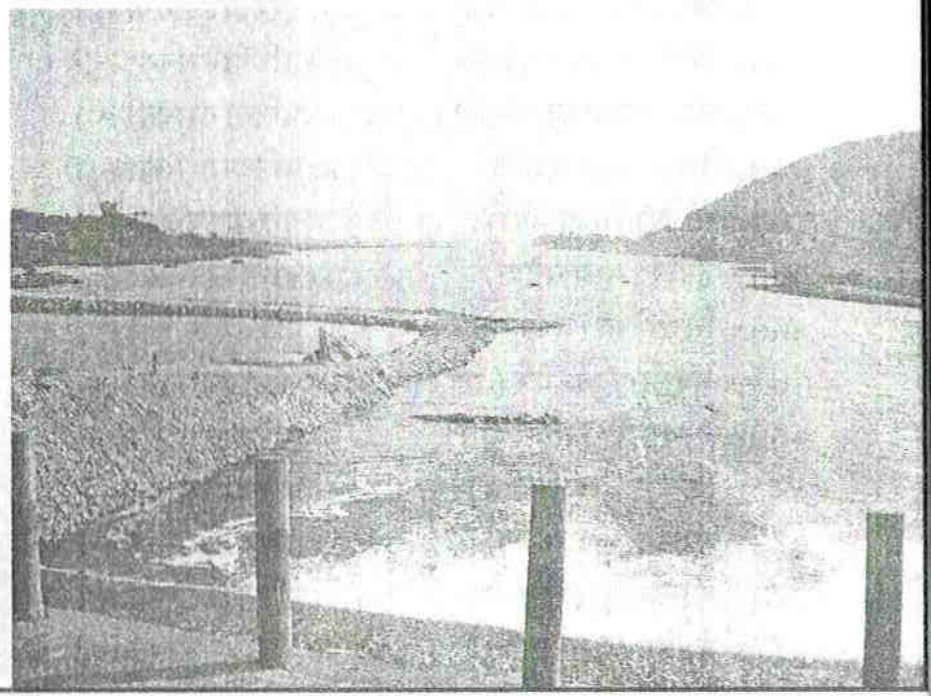

प्रस्तुत वंशावली के अनुसार यह जातीय समुदाय निम्नांकित गोत्रों में वर्गीकृत है। गोत्रों के समक्ष ही उनके प्रवर, वेद तथा गोत्रों में समाहित अवटंक जिन्हें **अल्ल** भी कहा जाता है, बतलाया है।

क्र. सं.	गोत्र	प्रवर	वेद	शाखा	अवंटक
1.	भारद्वाज	आंगिरस, भारद्वाज, बार्हस्पत्य–त्रिप्रवर	कृष्ण यजुर्वेद	शाकल–आश्वलायन	नेत, वाजपेयी
2.	आत्रेय	आर्चनानस, आत्रेय, श्यावाश्व–त्रिप्रवर	कृष्ण यजुर्वेद	तैत्तिरीय आपस्तम्ब	गोस्वामी, द्रविड़, कवीश्वर, बागरोदी, कठोड़ी
3.	गौतम	आंगिरस, आयास्य, गौतम–त्रिप्रवर	कृष्ण यजुर्वेद	तैत्तिरीय आपस्तम्ब	सिमरी देवर्षि, चक्रवर्ती
4.	श्रीवत्स	भार्गव, च्यवन, आप्नवान, और्व, जामदग्न्य–पंचप्रवर	ऋग्वेद	शाकल–आश्वालयन	पोतकूर्चि, भदरसा (भद्राश्व) माध्व गोड़ीय
5.	कौंडिन्य	कौंडिन्य, मैत्रावरूण, वशिष्ठ–त्रिप्रवर	कृष्ण यजुर्वेद	तैत्तिरीय आपस्तम्ब	करंजी, दीक्षित, वशिष्ठ
6.	मुद्गल	आंगिरस, भार्म्याश्व, मौदगल्य–त्रिप्रवर	कृष्ण यजुर्वेद	तैत्तिरीय आपस्तम्ब	छभैया
7.	कश्यप	काश्यप, आवत्सार, नैधुव–त्रिप्रवर	ऋग्वेद	शाकल–आश्वलायन	रेही, त्रिग्रह (तिगरा), करंभा, झांझेय, मठपति
8.	कौशिक	विश्वामित्र, देवरात, औदल–त्रिप्रवर	कृष्ण यजुर्वेद	तैत्तिरीय आपस्तम्ब	गोष्ठीशाल
9.	बाधूलस	भार्गव, वैतहव्य, सावेतस–त्रिप्रवर	कृष्ण यजुर्वेद	तैत्तिरीय आपस्तम्ब	पंचनदी
10.	हरतस	आंगिरस, अम्बरीष, यौवनाश्व–त्रिप्रवर	कृष्ण यजुर्वेद	तैत्तिरीय आपस्तम्ब	मेडूरी, पालगुल्ल, पेद्दीभोटला, चिंतलपाटि
11.	शांडिल्य	काश्यप, आवत्सार, शांडिल्य–त्रिप्रवर	कृष्ण यजुर्वेद	तैत्तिरीय आपस्तम्ब	
12.	लोहित	विश्वामित्र, देवरात, औद्दलेति–त्रिप्रवर	कृष्ण यजुर्वेद	तैत्तिरीय आपस्तम्ब	अवौटी, रामानुज सम्प्रदाय
13.	तैलंग विल्लाट	---- -----	----	----------	देव प्रयागी भट्ट

* नोट : भारद्वाज गोत्र के कुछ परिवार ऋग्वेदी हैं और कुछ कृष्ण यजुर्वेदी हैं। जिनके पंच प्रवर होगें वे ऋग्वेदी हैं।

वंशावली को जानने का उद्देश्य केवल मात्र पूर्वजों के परिचय प्राप्त करने से ही नहीं है वरन गोत्र, प्रवर, वेद, शाखा, सूक्त, अवंटक को जानने के साथ हमको परस्पर समभाव का आदर्श भी अपनाना है। विषम भाव का त्याग नितान्त आवश्यवक है। इसके बिना समभाव नहीं आवेगा। ऋग्वेद का उपदेश है –

समानी व आकूतिः समाना हृदयानि वः। समानमस्तु वो मनो यथा वः सुसहासति ॥ ऋक्वेद–10/191/4

"अर्थात् सब मानवों की आकूति अर्थात् संकल्प, निश्चय, प्रयत्न एवं व्यवहार समान–समभाव वाले सरल, कपट आदि दोषरहित, स्वच्छ रहें एवं आपस में मानवों के हृदय भी समान निर्द्वन्द हर्ष शोक रहित समभाव वाले रहें तथा आप सब मानवों का मन भी समान, सुशील एवं सब प्रकार के सद्भाव वाला ही रहे। जिस प्रकार आपका शोभन (अच्छा) साहित्य (सहभाव) धर्मार्थादि का समुच्चय सम्पादित हो उस प्रकार आपके आकूति हृदय एवं मन हों।" जैसा कि भगवान ने कहा है–"**मयि सर्वमिदं प्रोतं सूत्रे मणिगणा इव।**" मैं इस जगत् में मणियों के भीतर सूत्ररूप में विद्यमान हूँ। इसी प्रकार जाति वंशावली में प्रत्येक व्यक्ति मणिरूप में समाहित है। वंशावली में प्रत्येक व्यक्ति का अपना महत्व है।

गोत्र, प्रवर, शाखा सूक्त, वेद का जानना प्रत्येक के लिए अपेक्षित है। समाज में जो भी व्यवस्थाऐं प्रतिपादित की गई हैं वे वेद विहित हैं। वेद पाँच हैं – ऋग्वेद, सामवेद, शुक्ल यजुर्वेद, कृष्ण यजुर्वेद एवं अथर्व वेद। वेदों में गृह्य सूत्र का साहित्य विशद है। इसमें विविध धर्म विविध जातियों की आचार धाराऐं हैं। ऋग्वेद के तीन गृह्य सूत्र हैं – आश्वलायन, शाखायन और कौषीतकि। कृष्ण यजुर्वेद के नौ गृह्य सूत्र है – बौधायन, भारद्वाज, आपस्तम्ब, हिरण्यकेशीय, वैखानस, अग्निवैश्य, मानव, काठक, वाराह। तैलंग–भट्ट–गोस्वामी समुदाय दो वेदों के अन्तर्गत ऋग्वेद तथा कृष्ण यजुर्वेद के अन्तर्गत कर्म प्रधान हैं तथा ऋग्वेद के आश्वलायन गृह्य सूत्र एवं कृष्ण यजुर्वेद के आपस्तम्ब गृह्य सूत्र को मानने वाले हैं। इन्ही दो सूत्रों के अन्तर्गत निर्दिष्ठ कर्मों को ये समाज मानता है। वेद का अर्थ ज्ञान से है। ऋचाओं का ज्ञान ऋग्वेद है। यजुर्वेद में यज्ञ और कर्मकाण्ड की प्रधानता है। यजुर्वेद की 107 शाखाऐं है। इस वेद के दो भाग हैं– शुक्ल व कृष्ण यजुर्वेद। वर्तमान में यजुर्वेद की पाँच शाखाऐं उपलब्ध हैं – वाजसनेय व काण्व शुक्ल यजुर्वेद की तथा तैत्तिरीय, मैत्रायणी, कठ कृष्ण यजुर्वेद की है। ऋग्वेद की शाखाओं के बारे में मतभेद है। इस वेद की कुछ प्रमुख शाखाऐं – **शाकल, मुद्गल, गालव, शालीय, वात्स्य, वाष्कल, पाराशर, जातूकर्ण्य, उद्दालक, गौतम, भारद्वाज, ऐतरेय, वशिष्ठ, काश्यप** आदि। तैलंग–भट्ट–गोस्वामी समुदाय ऋग्वेद और इसकी शाखा शाकल के अन्तर्गत तथा कृष्ण यजुर्वेद तथा इसकी शाखा तैत्तिरीय के अन्तर्गत कर्मनिष्ठ है। शाखा से तात्पर्य है– विभिन्न वेदों की वे संहिताऐं जिनका पठन सम्बन्धित गोत्रधारियों को सौंपा गया है।

आर्य संस्कृति में गोत्र व प्रवर का विचार रखना सर्वोपरि माना गया है। सनातन धर्मी आर्य जाति की सुरक्षा के लिए चार स्तम्भों में ये प्रथम स्तम्भ है। तीन अन्य हैं – वर्ण व्यवस्था–इसमें जन्म से जाति मानने की दृढ़ आज्ञा है। आश्रम धर्म व्यवस्था – इससे सुव्यवस्थित रूप से धर्म मूलक प्रवृत्ति मार्ग से चलते हुए निवृत्ति मार्ग की पराकाष्ठा पर पहुंचा जा सकता है। चौथा स्तम्भ है सतीत्त्व मूलक नारी धर्म की सहायता से आर्य जाति की पवित्रता। गोत्र व प्रवर को महत्व न देने से काई भी जाति विपथगामी हो जाती है।

गोत्र–प्रवर का सम्बन्ध एवं इसकी उपादेयता सृष्टि के प्रारम्भ से ही है क्योंकि ब्रह्माजी की उत्पत्ति के साथ ही उनके मानस पुत्र रूप में उत्पन्न हुए ऋषियों से ही गोत्र व प्रवर सम्बन्ध चला है। प्रवर उन ऋषियों के द्वारा शास्त्रीय प्रवचन, शिक्षा सुनने एवं प्राप्त करने से जो शिष्यत्व प्राप्त हुआ उनके द्वारा शब्द शरीर बना अर्थात् गुरुकुल प्रवक्ता ही प्रवर कहलाते थे। इससे हम सनातन धर्मी अपने अस्तित्व की रक्षा करने में समर्थ हुए। गोत्र–प्रवर का विचार न करने से नित्य पितरों की कृपा नहीं होती है। गोत्र–प्रवरों के प्रवर्तक ऋषि–महर्षि हैं। यह जन्मान्तर विज्ञानपरक है। इसमें रजोवीर्य की शुद्धता का गौरव छिपा हुआ है। गोत्र का उद्भव पूर्वज ऋषियों के नाम पर हुआ है और प्रवर विशिष्ट शिष्य या उनके वंशज जिनसे कुल की पहचान हुई है से जाने जाते हैं। पण्डित काशीनाथ उपाध्याय द्वारा विरचित धर्मसिन्धु के अनुसार सारे विश्व में ब्राह्मणों के 57 गोत्र हैं – भृगुऋषि के परिकर में सात, अंगिरा ऋषि के परिकर के सत्रह, अत्रि ऋषि के चार, विश्वामित्र के दस, काश्यप ऋषि के तीन, वशिष्ठ के चार , अगस्त्य के चार तथा आठ अन्य ऋषियों के परिकर के आठ गोत्र प्रवर्तक हुए। प्रत्येक ब्राह्मण को 14 बातों का ज्ञान होना आवश्यक हैं – निज गोत्र, ऋषि गोत्र, प्रवर, वेद, अवटंक, कुल देव या देवी, शाखा, गणपति, शिव, चरण, मूल, पुराण पुरुष, भैरव व सूत्र।

गोत्र एवं प्रवरों पर विहंगम दृष्टिपात :

वेदों का साक्षात्कार ऋषियों ने किया है। पुराणों के आधार पर आर्यावर्त के राजवंश का प्रारम्भ वैवस्वत मनु से माना जाता है। वैसे ही सभी प्राचीन ऋषियों की उत्पत्ति ब्रह्माजी से हुई मानी जाती है। वायु पुराण के अनुसार ऋषि शब्द ऋष धातु से बना है। ऋषि रूप में ब्रह्माजी ने सुयोग्य, तेजस्वी, मन्त्रदृष्टा, आधिदैविक मानस पुत्र उत्पन्न किये। जिन्होंने वैदिक व ब्राह्मण वंश परम्परा को आगे बढ़ाया। विष्णूपुराण के अनुसार ब्रह्माजी ने शुरू में अपनी मानसी सृष्टि से सनक, सनन्दन, सनातन और सनतकुमार चार ऋषियों की रचना की। ये सृष्टिकार्य से विरक्त रहे। अतः ब्रह्माजी ने फिर आठ मानस पुत्रों की रचना की। वे हैं – भृगु, आंगिरस, मरीचि, अत्रि, वशिष्ठ, पुलस्त्य, पुलह और क्रतु। अन्तिम तीन की सन्तानें मानवेतर जातियों की हुई। शेष प्रारम्भ के पाँच महर्षियों से गोत्रों का प्रचलन एवं प्रसार हुआ। अत्रि और कश्यप कुल से उत्पन्न ब्राह्मण अन्य गोत्रकार ऋषियों के उत्तर कालीन थे।

ब्रह्माजी ने पुनः दस मानस पुत्र उत्पन्न किये – आठ तो पूर्व के एवं दक्ष व नारद। नारद का प्रादुर्भाव ब्रह्माजी की गोद से, दक्ष अंगुठे से, वशिष्ठ प्राण से, कृतु हाथ से, पुलह नाभि से, पुलस्त्य कान से, आंगिरस (अंगिरा) मुख से, मरीचि और अत्रि नेत्रों से प्रकट हुए। (भाग. पुराण–3/12) **विशेष :** वैशेषिक दर्शन देवों व ऋषियों के शरीर को शुक्रशोणित के बिना सूक्ष्म परमाणुओं से बना मानते है। यजुर्वेद के पुरुष सूक्त के अनुसार परमात्मा से आदि सृष्टि देव, ऋषि व साध्य स्वतः उत्पन्न हुए है। यही परमात्मा की मानसी सृष्टि है–**"तेन देवाः अयजन्त साध्या ऋषयश्च ये।"** भागवत के अनुसार गोत्र प्रवर्तक ऋषियों का वर्णन इस प्रकार है–**"कश्यपोऽत्रिर्वशिष्ठश्च विश्वामित्रोऽथ गौतमः जमदग्निर्भरद्वाज इति सप्तर्षयः स्मृताः"** ये ऋषि ब्राह्मण गोत्रों के प्रवर्तक एवं धर्मव्यवस्थापक हैं। इन्हीं से प्रजा का विस्तार होता है। शरीरस्थ

इन्द्रियों के रूप में सप्तर्षियों का वर्णन यजुर्वेद में मिलता है।

हमारे वेदों में तीन प्रकार के विश्वों का वर्णन है। 1. अन्तरिक्ष संसार जिसमें सूर्य, चन्द्र तथा नक्षत्र सभी आते है। 2. मानव संसार जिसमें गौतम, भारद्वाज, विश्वामित्र, जमदग्नि आदि ऋषि मानव इन्द्रियों के अधिष्ठाता के रूप में वर्णित है। 3. विश्व इसी पृथ्वी पर है जो हमारे लिये दृष्टि का विषय है, जिसमें आकाश स्थित नक्षत्र ऋषि रूप में वर्णित हैं।

अगस्त तारा के समीप सप्तऋषि समूह है जहाँ अट्ठासी हजार गृह में ऋषि मुनि है। ब्रह्माण्ड पुराण एवं आपस्तम्ब धर्मसूत्र में भी इसकी पुष्टि मिलती है। वायुपुराण में सप्तऋषियों के लक्षण बतलाये गये है। देवर्षियों के भावों का जो अध्ययन, स्मरण कराते है वेऋषि है। इन ऋषियों की संख्या सात है। ये ऋषि मन्त्रकर्ता (मन्त्रदृष्टा), दीर्घआयु, ऐश्वर्यवान्, दिव्यदृष्टि युक्त, गुणविद्या और आयु में धर्म तत्व का प्रत्यक्ष साक्षात्कार करने वाले तथा गोत्र प्रवर्तक हैं। इन्हीं से विश्व में प्रजा का विस्तार होता है। ये सप्तऋषि प्रत्येक मनवन्तर में भिन्न-भिन्न होते हैं। जैसे- मनु, देवता, इन्द्र आदि पृथक्-पृथक् होते है। ये सभी अपनी निश्चित अवधि तक धर्म का प्रचार-प्रसार और संरक्षण करते हुए प्रजा का विस्तार करते हैं। ये प्रवृत्ति मार्गीय हैं। मरीचि, अंगिरा, अत्रि, पुलस्त्य, पुलह, क्रतु व वशिष्ठ ही ब्रह्माजी के मानस पुत्र हैं। ये ही प्रमुख वेदज्ञ है। वेदों के मन्त्रों के दृष्टा, निर्माता हैं।

यदि विश्व की संस्कृतियों व धर्म का ऐतिहासिक विश्लेषण किया जावे तो अनेक संस्कृतियाँ एवं धर्म अपना अस्तित्व खो चुके हैं। कालजयी भारतीय संस्कृति एवं सनातन धर्म आज भी अपना अस्तित्व बनाए हुए है। इसके आधार हैं - हमारी गोत्र, प्रवर, परम्परा, वर्णाश्रम व्यवस्था एवं सतीत्वमूलक नारी शक्ति। जैसा कि पूर्व में कहा गया है कि हमारे गोत्र, प्रवर्तक ऋषियों की संख्या सात है। ये ऋषि हैं - विश्वामित्र, जमदग्नि, भारद्वाज, गौतम, अत्रि, वशिष्ठ और कश्यप। आठवें ऋषि अगस्त्य है जो सन्तान प्रवर्तक है एवं इन्हीं से गोत्रों का चलन हुआ है। **"ऋषीणां यदपत्यं तद् गोत्रमित्याचक्षते।"** ये ऋषि मन्त्र निर्माता, दीर्घायु, दिव्यदृष्टा एवं विद्या आयुवृद्धि एवं धर्मतत्व ज्ञाता माने गये है। एक ही गोत्र में पृथक्-पृथक् करने वाले ऋषि प्रवर कहलाते है। **"व्यावर्तकाः ऋषिविशेषाः प्रवर इत्येव"** (धर्मसिन्धु) यह प्रवर संख्या में तीन से पाँच तक होते है। कहीं-कहीं इनकी संख्या और अधिक भी मानी गई है। धर्म शास्त्र के प्रमुख ग्रन्थ धर्मसिन्धु के अनुसार मुख्य गोत्र एवं प्रवर निम्न प्रकार के हैं, जिनके भी अनेक उप-गोत्र एवं प्रवर है - **भृगु** - सात गोत्र हैं। वत्य, धिद्, जामदग्न्य, यास्क, मित्रेयु, वन्य एवं शुनक। इनमें भी दो सौ वत्य गोत्र के भेद है। इनके पाँच प्रवर होते है -भार्गव, च्यवन, आप्नवान्, और्व एवं जामदग्न्य। **आंगिरस**-छः गोत्र है-हस्ति, कुत्स, कण्व, रथीतर, विष्णुवृद्ध एवं मुद्गल। इनमें बत्तीस भेद हैं। मुख्य हैं - आंगिरस, अम्बरीश और यौवनाश्व। **अत्रि**-चार गोत्र है-अत्रि, गविष्ठिर, यदुभुक्त एवं मुद्गल। अत्रियों के भूरिय, छांदि आदि चौरानवे भेद हैं। इनके तीन प्रवर हैं - आत्रेय, आर्चनानस और श्यावाश्व। **विश्वामित्र** - इनके दस गोत्र है- लोहित, रोक्षक, कामकायन, अज्ञ, कत, धनंजय, अधमर्षण, पूरण, इन्द्र एवं कौशिक। इनके भी सत्तर भेद है। तीन प्रवर हैं-विश्वामित्र, देवरात

एवं औवदल। **कश्यप** – तीन गोत्र हैं –नैध्रुव, रेभ एवं शाण्डिल्य। इनके चालीस से सौ तक भेद है। इनके तीन प्रवर है–काश्यप, आवत्सार व नैध्रुव। **वशिष्ठ** – चार गोत्र हैं – वशिष्ठ, कौंडिन्य, उपमन्यु एवं पाराशर। इनके भी साठ से अधिक विभेद हैं। तीन प्रवर हैं – वशिष्ठ, इन्द्रप्रमद एवं आभरद्रसु। **भारद्वाज** – इनके चार गोत्र हैं – भारद्वाज, गर्ग, ऋक्ष एवं कपि। इनके एक सौ साठ से अधिक भेद हैं। तीन प्रवर हैं – आंगिरस, बार्हस्पत्य एवं भारद्वाज। **गौतम** – गौतम आंगिरस के दस भेद हैं – आयास्य, शारद्वत, कौमण्ड, दीर्घतमस, करेणुपाल, नामदेव, औशनस, राहुगण, सोमराजक एवं वृहदुक्थ। तीन प्रवर हैं – आंगिरस, आयास्य एवं गौतम। **अगस्त्य** – इनके दस गोत्र हैं – इध्मवाह, सांभवाह, सोमवाह, यज्ञवाह, दर्भवाह, सारवाह, अगस्ति, पूर्णमास, हिमोदक एवं पाणिक। इनके पचास से भी अधिक विभेद हैं। इनके प्रवर हैं – अगस्त्य, ढाढ्र्यच्युत तथा इध्मवाह। **जमदग्नि** – इनके छः गोत्र हैं – जमदग्नि, वत्स, विद्यस्क, मित्रेयु, वेन्य एवं शुनक। इनके पांच प्रवर हैं – जामदग्न्य, भार्गव, और्व, च्यावन, आप्नवान। **द्विगोत्रीय** – भारद्वाज जो शुंग से विश्वामित्र औशिर के क्षेत्र में शींग शिशिर नामक ऋषि उत्पन्न हुए वे द्विगोत्रीय कहलाते है। इनके अट्ठाईस विभेद हैं। पाँच प्रवर हैं – आंगिरस, बार्हस्पत्य, भारद्वाज, शींग एवं शैशिर।

क्षत्रिय एवं वैश्य वर्गों में इनके जो पुरोहितों के गोत्र व प्रवर होते हैं वे ही गोत्र–प्रवर इनके भी माने जाते हैं। गोत्र का ज्ञात न होने पर उपनयन संस्कार में जो आचार्य हो उनका गोत्र–प्रवर ग्राह्य होता है। आचार्य का गोत्र ज्ञान न हो तो जिस किसी को आत्म अर्पण किया जावे उसका गोत्र प्रवर ग्रहण किया जा सकता है।

"वास्तव में गोत्र एवं प्रवर की महिमा के प्रभाव से आज भी ब्रह्म तेज देखने को मिलता हैं। अतः वंश परम्परा को बनाए रखने तथा ब्रह्म तेज की समृद्धि के लिये गोत्र–प्रवर की रक्षा करना अपना कर्तव्य व धर्म है। समान गोत्र एवं समान प्रवर में विवाह संस्कार करना सर्वथा निषिद्ध एवं अनुचित है। पाश्चात्य नृशास्त्रियों एवं प्राणिशास्त्रियों का वैज्ञानिक अध्ययन सिद्ध करता है कि सगोत्रीय विवाह सम्बन्धों से उभय लिंगीय एवं विकृत संतानों को जन्म मिलता है।"

विभिन्न गोत्रों के अन्तर्गत कतिपय वंशों का परिचय

यह गौरव की बात है कि इस जातीय समुदाय में विभिन्न वंशों में मूर्धन्य विद्वान हुए हैं जिन्होंने अपनी प्रतिभा से हर क्षेत्र में अपना मुकाम बनाया। वे स्वनाम धन्य हैं। तैलंग–भट्ट–गोस्वामी समाज में विभिन्न वंशों का संक्षिप्त विवरण निम्नानुसार है –

भारद्वाज गोत्र –इस गोत्र के तीन प्रवर हैं – आंगिरस, बार्हस्पत्य और भारद्वाज। इनका कृष्ण यजुर्वेद है तथा शाखा तैत्तिरीय आपस्तम्ब है। यह गोत्र दो वर्गों में विभाजित है – 1. श्रीमद् वल्लभाचार्य के वंशज गोस्वामी वर्ग 2. अन्य तैलंग–भट्ट समुदाय। तैलंग–भट्ट समुदाय में नेत, वाजपेयी अवटंक के लोग आते है। अवटंक धारणा या अवधारणा का चलन कुटुम्ब अथवा कुल का परिचायक है। यह वर्ग वल्लभाचार्यजी के अनुज

विश्वनाथजी के वंशज है। इनका मूल ग्राम कांकरवाड़ है। ये सोलहवीं सदी के उत्तरार्ध में उत्तर भारत में आकर बसे। बुन्देलखण्ड के राजा छत्रसाल से इन्हें राज्याश्रय प्राप्त हुआ। इस गोत्र के लोग अजयगढ़, जयपुर, जबलपुर, सागर, बिलहरा, बांदा–गौरहार, मिर्जापुर, बस्सी, बिजावर, नयाकिला आदि स्थानों पर निवास करते हैं। इस वंश में अनेक विद्वान हुए है – विश्वनाथ कविराज, रामचन्द्र वाणीपति, पीताम्बरजी, वेणीमाधव, नन्दकिशोर शास्त्री, श्रीकृष्ण शास्त्री, मण्डन कवि, जय गोविन्द, पुरुषोत्तमजी, विट्ठल शास्त्री, श्रीराम नेत, केशव शास्त्री आदि। इस वंश ने विद्वान, ग्रन्थकार, कवि, पौराणिक व पण्डित समाज को दिये हैं।

आत्रेय गोत्र – इस गोत्र में तीन प्रवर हैं – आत्रेय, आर्चनानस व श्यावाश्व। कृष्ण यजुर्वेद है तथा इनकी शाखा तैत्तिरीय आपस्तम्ब है। इस वंश में द्रविड़, गोस्वामी, कवीश्वर, बागरोदी अवटंक के लोग आते हैं। यह वंश वैंकटेशजी के पुत्र समरपुंगव दीक्षित से शुरू होता है। इनसे सातवीं पीढ़ी में श्रीराधारमण व श्रीरमारमण हुए, जिनसे क्रमशः बीकानेर व महापुरा के वंशज हुए। इस वंश के पूर्वज शिवानन्दजी पांचवी पीढ़ी में हुए थे। यह वंश दक्षिण में कांचीनगरी के पेंणा नदी के तट पर पणिपट्टनगर में मूलतः निवास करता था। आत्रेय वंश के लिए कहा गया है कि आत्रेय गोत्री अपने वंशरूपी कमल के लिए सूर्य के समान अतिरात्र यज्ञों के करने वाले दीनदुखी एवं सृहृदयजनों के पालनकर्ता एवं छः शास्त्रों के ज्ञाता थे। यह माना जाता है कि दक्षिण भारत से उत्तर भारत में आने वाले इस गोत्र के प्रथम व्यक्ति श्रीनिवासजी थे। जो इस वंश के तीसरी पीढ़ी में हुए थे। यह कांगड़ा जिले के जालंधर पीठ नामक तीर्थ स्थान में बसे। यह स्थान अब ज्वालामुखी के नाम से जाना जाता है। इन्होंने वहाँ श्रीसुन्दराचार्यजी से दीक्षा ली थी। ये शिव भक्त थे। इन्होंने शिवार्चन चन्द्रिका ग्रन्थ लिखा। इनकी विद्वता के फलस्वरूप सुन्दराचार्यजी ने इन्हें गोस्वामी की पदवी से विभूषित किया। इनके पौत्र शिवानन्दजी विद्वत समाज में पूज्य, शास्त्र चर्चा में अत्यन्त चतुर, तंत्र मंत्रों में पारंगत एवं समस्त राजा–महाराजाओं में वन्दनीय थे। चन्देरी, जयपुर, बीकानेर के राजाओं ने इन्हें सम्मानित किया। बीकानेर में चिलकोई व पूलासर गाँव तथा जयपुर में इन्हें दो गाँव भेंट किये गये–महापुरा व चिमनपुरा। बाद में हरवंशपुरा दिया गया। इनके अनुज जनार्दनजी को रामचन्द्रपुरा भेंट किया गया। कालान्तर में इनके वंशजों को पांचवां गाँव कूकरवाड़ी (बसवा) भी प्राप्त हुआ। कवीश्वर वंश में क्षेमनिधि, पद्माकर, मिहीलाल, कमलाकर हुए जिनका काव्य क्षेत्र में अमूल्य योगदान था।

बागरोदी – आत्रेय गोत्र में बागरोदी परिवार के मूल पुरुष यज्ञनारायण भट्ट थे। इन्होंने विद्वत् सभा में शास्त्रार्थ के समय विरोधियों की वाणी को अवरोध कर दिया था। अतः इन्होंने **"वाक्–रोधी"** उपाधि प्राप्त की। आगे चलकर यह बागरोदी कहलाये। (रत्नगर्भजी के मतानुसार) यह परिवार पूर्व में गोकुल में आया था। इनके मुख्य घर जयपुर, बृजनगर (अलवर), नाथद्वारा एवं झालावाड़, कोटा में अवस्थित हैं। इस परिवार के विद्वज्जन बालकृष्णजी, लालूभट्टजी, गिरधरजी, श्रीकृष्णभट्ट एवं वर्तमान में गदाधर भट्ट प्रभृति विद्वान हैं। हिन्दी, संस्कृत, अंग्रेजी की विद्वत्ता इस परिवार की प्रमुख विशेषता है। साहित्य के क्षेत्र में भी यह वंश अग्रणी रहा।

गौतम गोत्र – इस गोत्र के तीन प्रवर हैं – आंगिरस, आयास्य व गौतम। कृष्ण यजुर्वेद व शाखा तैत्तिरीय आपस्तम्ब है। इस गोत्र में सिमरी, वाजपेयी, देवर्षि व चक्रवर्ती अवटंक के लोग आते हैं। मूल पुरुष रामकृष्णजी (तेजरामजी) के पिता नन्दनाथ दीक्षित–सौम्याजी थे। रामकृष्णजी के प्रथम पुत्र गोविन्दजी का वंश नोहरा वालों का है और पंचम पुत्र बलभद्र अर्ध्वयु का वंश रेवई वालों का है। रामकृष्ण जी के दूसरे–तीसरे व चौथे पुत्र के वंश झिलाय वालों के है जो झिलाईया कहलाते हैं। कालान्तर में ये लोग बीकानेर आकर बस गये। इस वंश के वंशज शिवाड़, बीकानेर, अटेर में बसे। कुछ लोग वालेर व वृन्दावन में भी बस गये। मूलत: गौतम गोत्री पूर्वज मूल ग्राम दक्षिण सिमरी के वासी थे। अत: ये सिमरी कहे जाते है। बलभ्रद, केशव, गोपेश्वर, यदुनाथ, रामकृष्ण भट्ट, गोपाल राव आदि हिन्दी, संस्कृत के विद्वान व कवि हुए है। गौत्रम सिमरी गोत्र वाले नरी में बसे हुए परिवार गोस्वामी आचार्य हैं। दाऊजी के मन्दिर की इनकी सेवा है। दाऊजी का मन्दिर अत्यन्त प्राचीन है। इसका पुन: नवीनीकरण एवं प्रतिष्ठापन आषाढ़ कृष्ण प्रतिपदा, संवत् 1790 में हुआ था। दाऊजी की सेवा व आराधना समयान्तर अनुसार यहाँ का गोस्वामी वंश सम्भालता है। सेवा पूर्ण वैष्णवी व पुष्टिमार्गीय है। नरी में गोस्वामी परिवार का आगमन विक्रम संवत् 1640 में हुआ था। उत्तर भारत के तैलंग–भट्ट समुदाय को तप के प्रभाव से गोस्वामी व विद्वत्ता के प्रभाव से भट्ट सम्बोधित किया गया। यह कुल विद्यानुरागी व आयुर्वेद का संरक्षक है। यह परम्परा वर्तमान तक चली आ रही है। इन्हें इस क्षेत्र में गुरुपद प्राप्त है। ये लोग अपने शिष्यों को दीक्षा भी देते हैं। इनके कुलदेवता श्रीलक्ष्मीनारायण हैं।

चक्रवर्ती – विष्णु शर्मा के तीसरे पुत्र माधवजी सौलहवीं सदी में मथुरा में आकर बसे थे। मूलत: गौतम चक्रवर्ती रामानुज सम्प्रदाय के हैं। आगे चलकर ये पुष्टिमार्गी हो गये। इनके पूर्वज श्री पुरुषोत्तमजी पौराणिक वृत्ति पर ग्वालियर में राज्याश्रित हुए। वर्तमान में इनके वंशज लश्कर–ग्वालियर, जयपुर, अहमदाबाद, टीकमगढ़ में विद्यमान है। विष्णुदेव को कर्नाटक नरेश ने कवि चक्रवर्ती की उपाधि दी थी। इनके वंशज चक्रवर्ती कहलाये।

गौतम देवर्षि – इस वंश के मूल पुरुष पुरुषोत्तमजी प्रारम्भ में प्रयाग में आकर बसे। वहाँ उन्हें दिवरिखिया ग्राम प्राप्त हुआ। आगे चलकर यही वंश देवर्षि नाम से जाना गया। बाद में इस कुल के पूर्वज आमेर में राज्याश्रित हुए। इस कुल में कविमण्डन, श्रीकृष्ण भट्ट, द्वारकानाथ, रमानाथ शास्त्री, मथुरानाथ शास्त्री व कलानाथ शास्त्री जैसे विद्वान हुए हैं।

श्रीवत्स गोत्र – इनके पाँच प्रवर हैं – भार्गव, च्यवन, आप्नवान, ओर्व, जामदग्न्य। इनका ऋग्वेद व शाकल आश्वालायन शाखा है। इस वंश में पोतकूर्चि, भद्राश्व एवं महापात्र तीन अवटंक वर्ग है। शास्त्री वंश के मूल पुरुष रूद्रणाचार्य थे। इनका मूल ग्राम राजमहेन्द्री है। सोलहवीं सदी में दक्षिण भारत से आकर मध्य प्रदेश के गढ़ा मण्डला मे अवस्थित हुए। तत्कालीन नरेशों द्वारा राज्याश्रय प्राप्त हुआ। बाद में ये सागर, दतिया, बानपुर में राज्याश्रित हुए। यह भागवद् वैष्णव वंश है। शिक्षा की दृष्टि से यह विद्वान वंश कहा जाता है। इस वंश को कई राज्यों में गुरु सम्मान प्राप्त

हुआ है। कंठमणिजी, हरिवल्लभजी, वासुदेव, बिहारीलाल, बालकृष्ण शास्त्री जैसे विद्वान् इसमें हुए हैं। ये परिवार कांकरोली, नागपुर, भोपाल, रायपुर, सागर आदि में निवसित है। दाऊ वंश के मूल पुरुष ब्रह्मदेव है। इनका मूल ग्राम राजमहेन्द्री जिला है। ये वहाँ से आकर काशी और विंध्याचल में बसे थे। बाद में ये ओरछा में राज्याश्रित हुए। इस वंश में दामोदर देव, जयदेव, रामदेव आदि विद्वान, ग्रन्थकार हुए। वर्तमान में ये टीकमगढ़ वासी है। इनकी कुलदेवी शबरी (भीलनी) हैं। भद्राश्व वंश के मूल पुरुष भैरों दीक्षित हैं। इनका मूल ग्राम मदुरई है। नारायण भट्टजी दक्षिण भारत से आकर बृजमण्डल के ऊँचा ग्राम में रहे। इन्होंने ब्रज के बहुत से लीला स्थलों को प्रकट किया। इन्हें महन्त गोस्वामी के नाम से जाना जाता है। शिष्य परम्परा एवं माध्व सम्प्रदाय का आचार्यत्व इन्हें प्राप्त है। इस वंश में भट्ट भास्कर, भैरों दीक्षित, रंगनाथजी, नारायण भट्ट, दामोदर भट्ट आदि विद्वान हुए हैं। वर्तमान में ये ऊँचा गाँव व नीमराना में बसे हुए हैं।

कौण्डिन्य गोत्र – इनके तीन प्रवर हैं – वाशिष्ठ, मैत्रावरुण और कौण्डिन्य। इनका वेद कृष्ण यजुर्वेद है तथा तैत्तिरीय आपस्तम्ब शाखा है। मूल पुरुष गदाधर भट्ट हैं जो 1560 में उत्तर भारत में ब्रजमण्डल में गोड़ेश्वर चैतन्य सम्प्रदाय के अनुगत होकर आये। चेतन्य महाप्रभुजी को ये श्रीमद् भागवत सुनाया करते थे। इनकी शिष्य परम्परा वृन्दावन में अभी भी है। इनकी परम्परा में लालजी से इस वंश का विस्तार हुआ है। इनका समय 1800 विक्रम संवत् माना जाता है। यह कुटुम्ब श्रीमद् भागवत के प्रवचन और पौराणिक वृत्ति के द्वारा भक्ति सम्प्रदाय में सम्मानित है। यह वर्ग शुद्धाद्वैत सम्प्रदाय से सम्बद्ध है। गदाधर भट्ट, बल्लभ रसिक, दामोदर भट्ट, नन्द कुमारजी, मधुसूदन भट्ट आदि विद्वान् उल्लेखनीय है। जहानाबाद कानपुर में कौण्डिन्य गोत्र के वंशजों के मूल पुरुष हरि भट्ट के पुत्र श्रीकृष्णजी हैं। ये लोग सागर से सम्बद्ध हैं। इनकी सेवा चतुर्भुज रायजी की है। जहानाबाद में इनका प्रचीन मन्दिर है। ये कानपुर, जबलपुर में निवास करते हैं। कौण्डिन्य गोत्र के अन्तर्गत झिलाईया वर्ग अपने को वशिष्ठ मानते है। इनके मूल पुरुष दिवाकरजी हैं। ये लोग बीकानेर और बांदा में पाये जाते रहे हैं। टीकमगढ़ में इसी गोत्र के दीक्षित परिवार अवस्थित हैं। मूल पुरुष गिरधर जी थे। दामोदर दीक्षित, पीताम्बरजी, सुन्दर लालजी आदि विद्वान हुए हैं।

मुद्गल गोत्र – इसमें तीन प्रवर हैं – आंगिरस, भार्म्याश्व, मौदगल्य। इनका वेद कृष्ण यजुर्वेद है। और शाखा तैत्तिरीय आपस्तम्ब है। महाकवि गौरेलाल (लाल कवि) जो पन्ना राज्य के महाराजा छत्रसालजी के गायत्री गुरु थे, उनके वंशज दग्धा ग्राम (जिला–पन्ना) में निवासस्थ हैं। मूल पुरुष श्रीकाशीनाथ तैलंग थे जो आन्ध्रप्रदेश के राजमहेन्द्री जिले के सप्त गोदावरी नदी के तट पर नृसिंह क्षेत्र धर्मपुरी में रहते थे। इनके पुत्र जगन्नाथजी थे। जिनके छः पुत्र हुए – गिट्टाजी (गोविन्द), लम्बूकजी (लम्बोदर), जोगियाजी (योगेश्वरजी), तिघराजी, गिरधरनजी, भरसजी (भद्राक्ष)। इन छः भाईयों के कारण ही इनके वंशज षड्भ्रातृ या छभैया कहलाये। दसवीं पीढ़ी में लाल कवि हुए। इनका संवत्काल 1700 के लगभग रहा है। वर्तमान में इनके वंशज दग्धा, बीकानेर, दिल्ली, जयपुर, अजयगढ़ आदि स्थानों में निवास कर रहे हैं। मुद्गल गोत्रीय पूर्वजों के उपरोक्त छः भाईयों को दिल्ली के लोधी सम्राट् बहलोल लोधी ने छः ग्राम दिये थे। इन ग्रामों के नाम इन छः भाईयों के नाम के सादृश्य थे। इसका

वर्णन ब्राह्मणोत्पत्ति मार्तण्ड वैंकटेश्वर स्टीम प्रेस मुंबई से मुद्रित संवत् 1979 में हैं। यह वंश श्रेष्ठ विद्वानों का रहा है। इस वंश के कुछ लोगों को सिंधिया राज्य ने वैदुष्य परमपण्डित राज की उपाधि से सम्मानित किया है। खुर्जा में अवस्थित इस वंश के लोग श्रीकृष्णजी के वंशज माने जाते हैं। इनकी अवस्थिति अनूप शहर में हुई थी। वर्तमान में ये लखनऊ, खुर्जा, कामवन आदि में रहे।

वृन्दावन स्थित माध्वगौड़ीय सम्प्रदाय में रघुनाथ भट्ट गोस्वामी पीठ के अन्तर्गत श्रीमदनमोहनजी के मन्दिर में श्रीगदाधर भट्ट के वंशज विद्वता एवं भक्ति के क्षेत्र में अपने पूर्वजों एवं पूर्व आचार्यों की भांति सेवा परम्परा में विद्यमान है। इस वंश में श्रीगदाधर भट्ट, श्रीयदुपतिभट्ट, श्रीगोवर्धनभट्ट, श्रीनन्दकुमार भट्ट जैसे प्रभृति विद्वान हुए है। इन सबका भागवत पर विशेष ध्यान था। ये संस्कृत के विद्वान थे। इनकी अभिरुचि श्रीमदनमोहन की राग, रस, भोग, शृंगारमयी सेवा पद्धति तथा अनवरत भगवत लीला, रूप, गुण व माधुर्य के गायन के आधार पर स्थापित है।

कश्यप गोत्र – इनके तीन प्रवर हैं – काश्यप, आवत्सार और नैध्रुव। ऋग्वेद व आश्वलायन शाकल शाखा है। इनके मूल पुरुष नारायणैया हैं। मूल ग्राम दक्षिण में मदुरा है। ये लोग गोकुल में आकर बसे थे। इनका अवटंक रेही है। चित्रकूट में अवस्थित रेही परिवार के मूल पुरुष सोमनाथ रेही हैं। इस वंश में विष्णुअय्या, विष्णु स्वामी, जगन्नाथ पण्डित राज, विट्ठलनाथ, मनरंजन कवि, हरदेव, प्रवीण कवि आदि विद्वान् हुए हैं। वर्तमान में ये चन्दौसी, कोटा, गोकुल, घाटा, नाथद्वारा, मुंबई, मण्डालिया, जयपुर, अहमदाबाद, माण्डवी, पोरबन्दर, जूनागढ़, राजकोट, जामनगर, जामजोधपुर, माण्डवी, चित्रकूट में रहते हैं। त्रिग्रह अवटंक के लोग मथुरा, कोटा, उदयपुर में हैं। इनके मूल पुरुष रामचन्द्र दीक्षित हैं। ये विट्ठलनाथजी के आश्रय में आकर गोकुल रहे। ये शुद्धाद्वैत सम्प्रदाय के अनुगत हैं। इस वंश में हरिहर दीक्षित, लालू भट्टजी, बलदेवजी आदि विद्वान हुए हैं। अवटंक करम्भा के मूल पुरुष रामकृष्ण भट्ट थे। अधिकांशतः यह वर्ग उपाध्याय वृत्ति से जीविका प्राप्त है। ये लोग नाथद्वारा, अहमदाबाद, वडोदरा में रह रहे हैं। इस वंश में कुछ लोग मठपति नाम से भी जाने जाते हैं। इनमें चिन्तामणि, श्रीनाथ, गोपीनाथ, लक्ष्मण भट्ट आदि संस्कृत के विद्वान रहे। इनके कुलदेवता चतुर्भुज स्वरूप हैं।

लोहित गोत्र – इस गोत्र में तीन प्रवर हैं – वैश्वामित्र, दैवरात, औद्दलेति। इनका कृष्ण यजुर्वेद है, व शाखा तैत्तिरीय आपस्तम्ब है। इनका निकास अहोबल मठ से हुआ है। तामिलनाडू और आन्ध्रप्रदेश की सीमा पर स्थित है। इनके पूर्वज दक्षिण से चल कर सिरोंज व सागर में आकर बसे। यह वंश रामानुज सम्प्रदाय को मानता है। इनके मूल पुरुष लक्ष्मणाचार्यजी वर्तमान पीढ़ी से आठवीं पीढ़ी ऊपर हैं। मूल ग्राम इनका प्रथुतर कहा जाता है। इन्हें कावेरी तट पर श्री लक्ष्मण बालाजी की मूर्ति प्राप्त हुई थी। यह वंश सत्रहवीं शताब्दी में दक्षिण से आकर जयपुर, मथुरा, धौलपुर, नरवर, सिरोंज व सागर में बस गया। इन्हें शिष्य परम्परा प्राप्त है। पौराणिक विद्वत्ता की विशेषता रही है। लक्ष्मणाचार्य, रंगनाथजी, विट्ठलनाथजी, यदुनाथजी, श्रीनिवासाचार्य आदि समर्थ विद्वान इस वंश में हुए हैं। इनके कुलदेवता लक्ष्मीनारायण हैं।

हरतस गोत्र – इनके तीन प्रवर हैं–आंगिरस, अम्बरीष और यौवनाश्व। कृष्ण यजुर्वेद है और शाखा तैत्तिरीय आपस्तम्ब है। इस गोत्र में

पालगुल्ल, मण्डूरी, पैद्दीभोटला और चिंतलपाटी अवटंक के लोग हैं। यह दाक्षिणात्य कुटुम्ब बीसवीं शताब्दी में ही वल्लभ वंशज गोस्वामियों के सम्बन्ध से उत्तर भारत में आया। इनका विशेष विवरण उपलब्ध नहीं हो सका है। वर्तमान में ये गोकुल और जयपुर में निवास कर रहे है। इनपर दक्षिण परम्पराओं का प्रभाव है। इनके पूर्वज आन्ध्र प्रदेश के मूल निवासी थे तथा कांचीमठ के शंकराचार्यजी के अनुयायी थे। श्री गुरूशंकर जी का विवाह गोस्वामी श्री देवकीनन्दनाचार्यजी महाराज (पंचमपीठ–कामवन) की बेटीजी से होने के उपरान्त उनकी कुछ सन्तानों ने वल्लभाचार्य जी के सिद्धान्तों का अनुसरण किया जिनमें से श्री श्रीकृष्णजी ने अपनी युवावस्था, प्रौढ़ावस्था एवं वृद्धावस्था श्रीमद् गोकुल में व्यतीत की। इन्होंने पूर्णरूप से श्रीमद् भागवत गीता के सिद्धान्तों के अनुरूप **"अनन्याश्चित्यन्तो मां ये जनाः पर्यु पासते"** को मूर्त रूप दिया।

बाधूलस गोत्र – भार्गव, वैतहव्य और सावेतस त्रिप्रवर हैं। कृष्ण यजुर्वेद है और शाखा तैत्तिरीय आपस्तम्ब है। इनमें अवटंक पंचनदी है। सिद्ध लक्ष्मण पुत्र अल्लाड भट्ट इनके मूल पुरुष हैं। पूर्ण वंशवृक्ष इनका उपलब्ध नहीं हुआ। ये वंश भी विट्ठलनाथजी के आश्रय में आया। इन्हे पंचनद तीर्थ में गोपाल कृष्ण भगवत मूर्ति प्राप्त होने पर ये पंचनदी कहलाये। ये शुद्धाद्वैत मतावलंबी हैं। इनमें अल्लाड भट्ट, ओघल भट्ट, माधव भट्ट, श्रीकृष्ण, गोवर्धनजी (गट्टू लालाजी) जिन्हें भारत मार्तण्ड की उपाधि प्राप्त थी। वर्तमान में ये कोटा में स्थित हैं।

कौशिक गोत्र – इनके वैश्वामित्र, देवरात, औदल त्रिप्रवर हैं। इनका वेद कृष्ण यजुर्वेद है, और शाखा तैत्तिरीय आपस्तम्ब है। इनका अवटंक गोष्ठीशाल है। गोष्ठीशाल यानि **"गोष्ठि"** अर्थात् वार्तालाप करना, **"शाल"** अर्थात् शाला का संचालन करना। इसी कारण गोष्ठीशाल वंश का नाम श्रीगुसांईजी के समय से चला आ रहा है। गोष्ठीशाल श्रीघनश्यामजी, श्रीगोपीनाथ जी एवं श्रीगुसांईजी के समय के ज्येष्ठ जामाता थे। वे अपने समय के प्रमुख विद्वान थे। इनकी विद्वत्ता और ज्ञान से प्रभावित होकर श्रीगुसांई जी ने अपने सात बालकों को विद्याभ्यास, वेद–उपनिषद, श्रीमद्भागवत् एवं शास्त्र पठन परम्परा का प्रारम्भ विधिवत् श्रीमद् गोकुल में पाठशाला स्थापित करके की। प्रधान आचार्य श्रीघनश्यामजी गोष्ठीशाल को नियुक्त किया और उन्होंने अपनी जिम्मेवारी से यह कार्य निर्वहन किया। उन्होंने उस समय में महान ग्रंथ पुस्तक के स्वरूप में जो श्रेष्ठ सर्जना की है वह आज पर्यन्त प्राचीन विद्या विभाग में हस्तलिखित ग्रंथ के रूप में विद्यमान है। गोकुल के बाद गोष्ठीशाल वंशज सतघड़ा मथुरा में अपने माथे बिराजते स्वरूपों को लेकर पधारे। वहाँ से आगरा होते हुए कोटा में स्थापित किये। जिसका प्रमाण कोटा में श्रीलुमका भट्टजी का मन्दिर है। लुमका जी गोष्ठीशाल थे। वहाँ से वे जोधपुर अपने सेव्य स्वरूपों को लेकर पधारें पश्चात् यह परिवार जोधपुर होता हुआ अहमदाबाद (राजनगर) में आ बसा जो अब तक विद्यमान है। इनमें घनश्याम भट्ट, गोपाल सतकवि अच्छे ग्रन्थकार हुए है।

देव प्रयाग में रहने वाले तैलंग विल्लाट वल्लाभाचार्य जी के समय से गढ़वाल, देवप्रयाग में बद्रीनारायण के पुरोहित के रूप में रहते है। इनके पास आचार्यचरण का वृत्ति पत्रक है। यह स्वतन्त्र कुटुम्ब है। यह वंश तैलंग–भट्ट–गोस्वामी के साथ अपरिचित होने के कारण अज्ञात सा रहा है। इसलिए जातीय व्यवहार में यह मेल नहीं कर सका। इनका तैलंग समाज से सम्बन्ध तैलंग विल्लाट देवप्रयाग के नाम से प्राप्त होता है। वर्तमान में चक्रधर जोशी और उनका परिकर देवप्रयाग में ज्योतिष और पौरोहित्य वृत्ति में आजीविका प्राप्त कर रहा है। विशेष परिचय इनका उपलब्ध

नहीं हैं। उत्तर भारतीय तैलंग समुदाय में भट्ट शब्द सभी वर्गों के साथ प्रयुक्त होता रहा है, यह शब्द वैदूष्य–प्रकाण्ड प्रतिभा का द्योतक है जो विगत शताब्दियों में पूर्ववर्ती महानुभावों ने उपार्जित की थी। पाण्डित्य के पर्याय की यह उपाधि है। उत्तर देश में तैलंग शब्द से तैलंग देशस्थ ब्राह्मणत्व का ही बोध हो जाता है। इस जाति के महानुभावों के अपार विद्याबल, चमत्कार और प्रतिभा से उत्तर देशस्थ विभिन्न कुटुम्ब, सद्गृहस्थ, कवि, गुरु, गायक, धर्मशास्त्री, ज्योतिष, वैद्य, पौराणिक, उपदेशक आदि रूप में एवं ग्राम सम्पत्ति, सम्मान आदि राजाओं से लेकर उत्तरी भारत में बसे। कुछ लोग श्रीमद् वल्लभाचार्यजी (महाप्रभूजी) तथा गुसांईजी के साथ आये और उत्तर भारत में यत्र–तत्र बस गये। धीरे–धीरे रहन–सहन, सदाचारों की विभिन्नता, विभिन्न आर्थिक धरातलों का होना, भोजन–पान, भाषा, दीक्षा, आचार–विचार एवं प्रतिष्ठा आदि में भेद होने के कारण इनमें भी भेद हो गया और वर्गभेदों के कारण एक होते हुए भी वर्गभेदों की सृष्टि हुई और गोस्वामी, गोकलस्थ, मथुरास्थ, सागरस्थ, बीकानेरस्थ, टीकमगढ़स्थ, महापुरास्थ आदि विभिन्न भेद प्रचलित हो गये, किन्तु अब समय की परिस्थिति और विचार ने इस भेद–भाव को दूर कर दिया है। इस वंशवृक्ष में **श्रीमद्वल्लभाचार्यजी** के वंशजों का वंशवृक्ष शामिल नहीं किया गया है। इनका वंशवृक्ष पृथक् से है।

तैलंग–भट्ट–गोस्वामी समुदाय के वंशवृक्ष को पूर्व में प्रकाशित पूज्य श्री कण्ठमणि शास्त्री एवं श्री गोकुलानन्द तैलंग द्वारा सम्पादित वंशवृक्ष को आधार बनाकर इसमें अद्यतन बालकों का समावेश किया गया है। दिसम्बर **2011** तक के जन्में बालकों का समावेश करने का प्रयत्न किया गया है। वाञ्छित नामावली सम्बन्धित परिवार के सदस्यों व उनके निकटस्थ सम्बन्धियों से प्राप्त की गई है। कुछ सूचनाऐं कतिपय स्थानों के कर्मठ व्यक्तियों द्वारा प्राप्त हुई है। यथा– सागर से रमेश कुमार तैलंग, जबलपुर से अशोक भट्ट, जयपुर से देवकीनन्दन गोस्वामी, बसन्त कृष्ण भट्ट एवं कन्हैयालाल गोस्वामी, बरेली की सूचनाऐं निरन्जन भट्ट से मथुरा, वृन्दावन, गोकुल की सूचनाऐं अवध बिहारी भट्ट से संकलित की गई हैं। इसी प्रकार अहमदाबाद, कोटा, भोपाल, बीकानेर, दुर्ग एवं अन्यान्य स्थानों की सूचनाऐं व्यक्तिगत स्तर पर भी संकलित की गई। इस पवित्र कार्य में सहयोग करने वाले सभी महानुभाव जाति समुदाय के हर व्यक्ति के कृतज्ञ हैं, और मैं स्वयं सबका कृतज्ञ हूँ। वंशवृक्ष की भूमिका तैयार करने में श्री कलानाथ शास्त्री एवं श्री गदाधर भट्ट (झालावाड़) का सहयोग अभिनन्दनीय है। वे श्रद्धा के पात्र है। परिशिष्ट–3 की सामग्री कानपुर से श्रीरामकृष्ण तैलंग भूतपूर्व प्राचार्य द्वारा तैयार की गई है। जिसका अपना महत्व है एवं सजातीय बन्धुओं के लिये पूर्ण उपयोगी है।

पूर्व प्रकाशित वंशवृक्ष में वृन्दावन निवसित श्रीकृष्णचैतन्यजी के पुत्र श्री माधवेन्द्रजी के द्वारा यह ध्यान में लाया गया कि उनका गोत्र कौंडिन्य न होकर मुदगल है। ऐसा ही भोपाल निवसित वल्लभ रसिक जी के यहाँ से भी ज्ञात हुआ कि वे भी मुदगल गोत्र ही है। यह उचित समझा गया कि इस भूल को इस अवसर पर जबकि वंशवृक्ष प्रकाशन का कार्य चल रहा है सुधार दिया जावे। अस्तु श्रीकृष्णचैतन्य के वंश को जो गदाधरभट्ट से प्रारम्भ होता है उसे मुदगल गोत्र के साथ प्रकाशन में ले लिया गया है। कौंडिन्य गोत्र में श्रीब्रजपति एवं श्री गोविन्दकृष्ण के वंशज यथावत रहेंगे।

इस वंशवृक्ष में यदि कोई नाम गलत या उपनाम आ गया हो अथवा वर्तनी द्वारा गलत लिखा गया हो या कोई नाम छूट गया हो तो विनम्र निवेदन है कि इस भूल को आप अपने स्तर पर अपनी प्रति में सुधार करते हुए इस भूल सुधार की सूचना निम्न पतों पर भी अनिवार्यतः देने की कृपा करें।

श्री बालकृष्ण राव
सम्पादक
24, महावीर कॉलोनी
करतारपुरा, जयपुर-6
दूरभाष : 0141-2501693

श्री भानुस्वरूप गोस्वामी
सम्पादक-तैलंग कुलम्
13, गायत्री नगर, सोडाला, जयपुर-6
दूरभाष : 0141-2450971
मो. : 09414440997

श्री यदुनाथ भट्ट
54/151, देवर्षि सदन, पंचवटी मार्ग
मानसरोवर, जयपुर-20
दूरभाष : 0141-2784689
मो. : 09414770324

इस वंशवृक्ष में निहित सामग्री के बारे में बतलाना अपेक्षित है कि पूर्व प्रकाशित वंशवृक्ष में अंकित नामों के आगे उनके वंशजों के नाम इसमें शामिल किये गये हैं। वंशावली गोत्रानुसार है। प्रत्येक गोत्र के वंशवृक्ष के प्रारम्भ में ऊपर गोत्र का नाम, प्रवरों के नाम, वेद का नाम, शाखा व सूक्त का नाम बतलाया गया है। तैलंग-भट्ट-गोस्वामी समुदाय या तो ऋग्वेदी है या कृष्ण यजुर्वेदी है। इसीप्रकार इस समुदाय की दो शाखाऐं हैं- शाकल शाखा व तैत्तरीय शाखा। इनका विवरण पूर्व पैराग्राफों में स्पष्ट कर दिया गया है। वंशवृक्ष में गोत्रवार परिवारों के मुखियाओं के नाम, उनके आगे वंशवृक्ष की पृष्ठ संख्या बतलायी गयी है। (परिशिष्ट-1)

इस वंशवृक्ष में उन वंशों को भी शामिल कर लिया गया है जो पूर्व प्रकाशित वंशवृक्ष में किसी कारणवश शामिल नहीं किये जा सके थे। यथा-हरितस गोत्रीय श्रीकाशीपति अवधानी के वंशज, बीबीपुर, बिरसिंहपुर, सिमरिया मेंबसे परिवार। इसी प्रकार पूर्व वंशवृक्ष में केशोद निवासी श्रीबलरामजी के पूर्वजों एवं कोटा में श्रीनवनीतजी के पूर्वजों का जिक्र स्पष्ट नहीं हुआ था उन्हें भी यथा स्थान संयोजित किया गया है। इसी प्रकार मुंबई निवासी कौंडिन्य गोत्र के श्री जी. रामाराव का वंश भी इस वंशवृक्ष में शामिल किया गया है। तथा इसी प्रकार चैन्नई निवासी पिट्टमण्डलम वैंकटकृष्ण शर्मा के परिवार का वर्णन भी मुद्गल गौत्र के वंश के साथ जोड दिया गया है तथा गोकुल के मूल पुरुष श्रीघनश्यामजी गोष्ठीशाल कौशिक गोत्रीय परिवार का विवरण जो पूर्व वंशवृक्ष में दर्शाया नहीं गया था उसे भी इस वंशवृक्ष में शामिल कर लिया गया है।

वंशवृक्ष प्रकाशन में जाति समुदाय के महानुभावों ने जो भी आर्थिक सहायता प्रदान की है उनका मैं अन्तर्मन से आभारी हूँ। यह कार्य बगैर उनकी सहायता के असम्भव था। पुनः इन सहयोगियों का आभार मैं प्रकट करता हूँ व उन्हें धन्यवाद देता हूँ। मै इस वंशवृक्ष प्रकाशन के लिये श्रीकमलेश रेही (जयपुर-मण्डालिया) **का विशेष रूप से अनुग्रहित हूँ जिन्होंने पूर्ण, निष्ठा, लगन, समर्पण की भावना से प्रेरित होकर**

वंशवृक्ष को पूरा करने में अपना अमूल्य सहयोग प्रदान किया है। इनका परिश्रम स्वत: ही वंशवृक्ष में दर्शित हो रहा है।

वंशवृक्ष प्रकाशन में जाति समुदाय के महानुभावों ने जो भी आर्थिक सहायता प्रदान की है उनका मैं अन्तर्मन से आभारी हूँ। यह कार्य बगैर उनकी सहायता के असम्भव था। पुन: इन सहयोगियों का आभार मैं प्रकट करता हूँ व उन्हें धन्यवाद देता हूँ। मै इस वंशवृक्ष प्रकाशन के लिये श्रीकमलेश रेही (जयपुर-मण्डालिया) का विशेष रूप से अनुग्रहित हूँ जिन्होंने पूर्ण, निष्ठा, लगन, समर्पण की भावना से प्रेरित होकर वंशवृक्ष को पूरा करने में अपना अमूल्य सहयोग प्रदान किया है। इनका परिश्रम स्वत: ही वंशवृक्ष में दर्शित हो रहा है।

अन्त में मै उन महानुभावों से क्षमा प्रार्थी हूँ जिनके सुझाव इस वंशवृक्ष में शामिल नहीं किये जा सके, क्योंकि वे सुझाव श्रम प्रधान होने के साथ प्रकाशन की दृष्टि से असहज थे। वंशवृक्ष पुरुषों पर आधारित है।

शुभम्

बालकृष्ण राव
सम्पादक

प्रकाशन वर्ष – 2012
विक्रम संवत् – 2069

– : उपादेयता : –

वंशवृक्ष उस वटवृक्ष की तरह है जिसकी शाखाऐं प्रस्फुटित होती हैं, पल्लवित होती हैं, प्रसार लेती हैं और फिर वह वृक्ष बन जाता है – ऐसी ही उद्‌भावना इस वंशवृक्ष में निहित है।

श्री बालमुकुन्द भट्ट

श्री कृष्णकुमार शर्मा

श्री योगेश चन्द्र शर्मा

हितेश शर्मा

चि. निपूण शर्मा

वंशवृक्ष में आप अपना वंश (कुल) इस प्रकार तलाश करें।

1. वंशवृक्ष गोत्र आधारित है। पहिले गोत्र खण्ड निकालें। 2. अपना वंश/नाम तलाशने हेतु इस अनुक्रणिका का सहारा लेवें।
3. इस सूची में व्यक्ति के नाम के आगे उसके पिता का नाम दिया हुआ है। इससे एक नाम के दो व्यक्तियों के भ्रम से आप बचेंगे।
4. फिर अगले कालम में गोत्र का नाम, परिवार का मूल निवास (जैसे–मथुरा, महापुरा, बीकानेर, दिल्ली, दग्धा आदि के निवासी।
5. पृष्ठ संख्या, जहाँ आपका नाम, परिवार–वंश के व्यक्तियों के नाम अंकित है।
6. वंशवृक्ष में प्रत्येक गोत्र के साथ गोत्र का नाम, प्रवरों के नाम, वेद का नाम, शाखा का नाम बतला दिया गया है। प्रत्येक पृष्ठ के ऊपर सम्बन्धित गोत्रों आदि के नाम दिया हुआ है। गोत्र के साथ ही अवटंक या अल्ल को भी बतलाया गया है।

वंशावली में अकिंत परिवार का मुखिया/वर्तमान व्यक्ति –

क्र. सं.	नाम	पिता	गोत्र	मूल निवासी	पृ. सं.
	भारद्वाज				
1.	अरुण भट्ट	रामचन्द्र भट्ट	भारद्वाज	अजयगढ़	55
2.	मुकेश भट्ट	गणेश प्रसाद भट्ट	,,	जबलपुर	,,
3.	अनुपम, अभिलाष	शरद भट्ट	,,	,,	,,
4.	अशोक भट्ट	रघुनाथ राव	,,	,,	,,
5.	आशीष भट्ट	अशोक भट्ट	,,	,,	,,
6.	विनोद भट्ट	घनश्याम भट्ट	,,	अजयगढ़	,,
7.	वेद भट्ट	सुभाष भट्ट	,,	,,	,,
8.	हेमचन्द भट्ट	हरिश्चन्द्र भट्ट	,,	,,	,,
9.	कलानाथ भट्ट	,,	,,	,,	,,
10.	श्यामसुन्दर भट्ट	,,	,,	,,	,,
11.	सर्वेश भट्ट	गोकुलेश भट्ट	,,	,,	,,
12.	दिनेश भट्ट (तैलंग)	भोलानाथ भट्ट	,,	,,	56
13.	रमेश तैलंग	,,	,,	,,	,,
14.	सुरेश तैलंग	,,	,,	,,	,,
15.	विकास तैलंग	,,	,,	,,	,,
16.	राजेश तैलंग	,,	,,	,,	,,
17.	विश्वम्भर राव	जनार्दन राव	,,	,,	,,
18.	श्रीधर राव	विश्वम्भर राव	,,	,,	,,
19.	राजीव	प्रकाश	,,	,,	,,

क्र. सं.	नाम	पिता	गोत्र	मूल निवासी	पृ. सं.
20.	संजीव	प्रकाश राव	भारद्वाज	अजयगढ़	56
21.	मुकेश राव	,,	,,	,,	,,
22.	अनिल राव	हरिहर राव	,,	,,	,,
23.	सुभाग	सुनील राव	,,	,,	,,
24.	नीरज	श्यामसुन्दर	,,	,,	,,
25.	आनन्द राव	मनोहर राव	,,	,,	,,
26.	जयकृष्ण	,,	,,	,,	,,
27.	प्रदीप राव	उपेन्द्र राव	,,	,,	,,
28.	प्रभात राव	,,	,,	,,	,,
29.	प्रताप	,,	,,	,,	,,
30.	सुरेन्द्र राव	मुरलीधर	,,	,,	,,
31.	राजेन्द्र	,,	,,	,,	,,
32.	दुर्गाशंकर	बालकृष्ण	,,	जबलपुर	57
33.	अनुराग	उमाशंकर	,,	,,	,,
34.	रमाकान्त	बालकृष्ण	,,	,,	,,
35.	कृष्णकांत	कन्हैया लाल	,,	नाथद्वारा	,,
36.	द्वारकानाथ	गिरधारीजी	,,	,,	,,
37.	सुबोध	लक्ष्मण जी	,,	जबलपुर	58
38.	सूर्यकुमार	,,	,,	,,	,,
39.	संतोष	शंकर राव	,,	,,	,,

वंशवृक्ष में आप अपना वंश (कुल) इस प्रकार तलाश करें।

क्र. सं.	नाम	पिता	गोत्र	मूल निवासी	पृ. सं.
40.	राजीव	चन्द्रशेखर	भारद्वाज	जबलपुर	58
41.	शरद राव	सदाशिव राव	"	"	"
42.	विनोद	"	"	"	"
43.	सुशील	"	"	"	"
44.	बसन्त	"	"	"	"
45.	स्वतन्त्र	नलिनीकान्त	"	सागर	"
46.	प्रशान्त	"	"	"	"
47.	प्रमोद	"	"	"	"
48.	स्वप्निल	प्रभाकर	"	बिलहरा–सागर	59
49.	सुधाकर	पद्मनाभ	"	"	"
50.	विनोद	"	"	"	"
51.	अशोक	"	"	"	"
52.	विजय	"	"	"	"
53.	हरीकृष्ण	मुरलीधर	"	"	"
54.	सुरेन्द्र	"	"	"	"
55	देवेन्द्र	"	"	"	"
56.	रवीन्द्र	"	"	"	"
57.	भास्कर	गोविन्द	"	"	"
58.	दिनकर	"	"	"	"
59.	कुणाल	गंगाधर	"	"	"
60.	महेन्द्र	माधवजी	"	"	"
61.	मनोहर	"	"	"	"
62.	नरेन्द्र	"	"	"	"
63.	गोपाल	रामभाऊ	"	"	"
64.	मन्ना	"	"	"	"
65.	राजेन्द्र	"	"	"	"
66.	दीपक	ब्रजरत्न	"	दुर्ग	60

क्र. सं.	नाम	पिता	गोत्र	मूल निवासी	पृ. सं.
67.	प्रकाश	ब्रजरत्न	भारद्वाज	दुर्ग	60
68.	प्रमोद	"	"	"	"
69.	ब्रजरत्न	बालमुकुन्द	"	"	"
70.	कृष्णकान्त	"	"	"	"
71.	चन्द्रकान्त	"	"	"	"
72.	हरिकृष्ण	गोपीकान्त	"	मिर्जापुर	61
73.	नन्दकृष्ण	"	"	"	"
74.	श्रीकृष्ण	"	"	"	"
75.	बालकृष्ण	"	"	"	"
76.	कमल	नन्दकृष्ण	"	"	"
77.	गोपाल	गुलाबचन्द	"	बस्सी–जयपुर	62
78.	रमेश	"	"	"	"
79.	अरविन्द	गोपाल	"	"	"
80.	मुरारीलाल	बिहारी लाल	"	"	"
81.	श्यामसुन्दर	घनश्याम	"	"	"
82.	द्वारकेश	रोधश्याम	"	"	"
83.	मथुरेश	"	"	"	"
84.	रामचन्द्र	वृन्दावन	"	"	"
85.	श्रीकान्त	रामचन्द्र	"	"	"
86.	बंसीधर	"	"	"	"
87.	लक्ष्मीकान्त	"	"	"	"
88.	मथुरेश	कृष्णमुरारी	"	मथुरा	63
89.	द्वारकेश	"	"	"	"
90.	कैलाश	कृष्णकन्हैया	"	"	"
91.	ब्रजेश	"	"	"	"
92.	सुभाष	"	"	"	"
93.	रत्नेश	रमेश	"	"	"

वंशवृक्ष में आप अपना वंश (कुल) इस प्रकार तलाश करें।

क्र. सं.	नाम	पिता	गोत्र	मूल निवासी	पृ. सं.
94.	गिरवर	हलधर	भारद्वाज	मथुरा	63
95.	देवेन्द्र	गिरवर	"	"	"
96.	सत्येन्द्र	"	"	"	"
97.	राजेन्द्र	"	"	"	"
98.	महेन्द्र	हलधर	"	"	"
99.	आनन्द बिहारी	वेणीधर	"	"	"
100.	ब्रज बिहारी	"	"	"	"
101.	बांके बिहारी	"	"	"	"
102.	अवध बिहारी	"	"	"	"
103.	मनीष	अवध बिहारी	"	"	"
104.	सुधीर	"	"	"	"
105.	अशोक	ब्रजवल्लभ	"	बरेली	64
106.	अरुण	"	"	"	"
107.	आनन्द	"	"	"	"
108.	कृष्ण कुमार	"	"	"	"
109.	संजय	"	"	"	"
110.	अनिल	सुदर्शनजी	"	जयपुर	"
111.	सुनील	"	"		"
112.	विमल	"	"	"	"
113.	विनय	"	"	"	"
114.	कमल	"	"	"	"
115.	विजय	देवकीनन्दन	"	सागर	65
116.	शरद	"	"	"	"
117.	अनिल	"	"	"	"
118.	गोविन्द	रामभाऊ	"	दतिया	"
119.	अरविन्द	जगमोहन	"	विजावर	66
120.	अरुण	"	"	"	"

क्र. सं.	नाम	पिता	गोत्र	मूल निवासी	पृ. सं.
121.	अनिल	"	भारद्वाज	विजावर	66
122.	मनमोहन	हरिवल्लभ	"	"	"
123.	अनुपम	मनमोहन	"	"	"
124.	शक्ति कुमार	हरिवल्लभ	"	"	"
125.	विनोद	"	"	"	"
126.	उपेन्द्र	लक्ष्मणराव	"	"	"
127.	शरद	बालकृष्ण	"	"	"
128.	दीपक	"	"	"	"
129.	गौरव	गोपाल राव	"	"	"
130.	रवीन्द्र	लक्ष्मणराव	"	"	"
131.	जोगेन्द्र	"	"	"	
132.	भूपेन्द्र	"	"	"	"
133.	तोलेश्वर	"	"	"	"
		आत्रेय			
1-क	अरुण	बालकृष्ण	आत्रेय	बीबीपर (कानपुर)	67
1-ख	रामकुमार	रामेश्वर	"	"	"
1.	दुर्गाशंकर	गौरीशंकर	"	बीकानेर	68
2.	अपर्णेश	"	"	"	"
3.	अलंकार	"	"	"	"
4.	बलदेव	किशनलाल	"	"	"
5.	सुशील	"	"	"	"
6.	संजय	आनन्दीलाल	"	"	"
7.	राजेश	राधारमण	"	"	"
8.	रतन	ब्रजरमण	"	"	"
9.	प्यारेलाल	"	"	"	"
10.	हरीश	"	"	"	"
11.	कौशलेश	श्रीकण्ठ	"	"	69

वंशवृक्ष में आप अपना वंश (कुल) इस प्रकार तलाश करें।

क्र. सं.	नाम	पिता	गोत्र	मूल निवासी	पृ. सं.
12.	वैंकटेश	"	आत्रेय	बीकानेर	69
13.	श्रीनिवास	फाल्गुनजी	"	"	"
14.	मदनमोहन	उद्धवजी	"	"	"
15.	देवकी नन्दन	"	"	"	"
16.	महेन्द्र	मदनमोहन	"	"	"
17.	गिरिराज	गोपालजी	"	"	"
18.	गोकुल	"	"	"	"
19.	राजेश	गिरिराज	"	"	"
20.	सुदर्शन	आशुकरणजी	"	"	"
21.	अरविन्द	"	"	"	"
22.	चक्रपाणि	"	"	"	"
23.	श्रीहर्ष	चक्रपाणि	"	"	"
24.	नीलकंठ	आशुकरणजी	"	"	"
25.	अशोक	"	"	"	"
26.	वरुण	विजय	"	"	"
27.	विनय	अनिरूद्धजी	"	"	"
28.	विवेक	"	"	"	"
29.	सिद्धार्थ	सुदर्शन	"	"	"
30.	संदीप	बाबूलाल	"	"	"
31.	संजय	"	"	"	"
32.	संजीव	"	"	"	"
33.	भानुप्रकाश	माधवलाल	"	"	"
34.	मनीष	भानुप्रकाश	"	"	"
35.	वैभव	रवि	"	"	"
36.	मयूर	मधुर	"	"	"
37.	राजेश	माधवलाल	"	"	"
38.	सुरेश	"	"	"	"

क्र. सं.	नाम	पिता	गोत्र	मूल निवासी	पृ. सं.
39	नरेश	माधवलाल	आत्रेय	बीकानेर	69
40.	प्रणव	नरेश	"	"	"
41.	अश्विनी	कन्हैयालाल	"	"	70
42.	विद्याप्रकाश	"	"	"	"
43.	भैरवानन्द	बालकृष्ण	"	"	"
44.	ब्रजभूषण	विट्ठलजी	"	"	"
45.	त्रिभुवन	"	"	"	"
46.	भारत	"	"	"	"
47.	मुरली	बंसीजी	"	"	"
48.	वृन्दावन	"	"	"	"
49.	सनत	अबीरचन्द	"	"	"
50.	मुकेश	वल्लभजी	"	"	"
51.	प्रद्युम्न	"	"	"	"
52.	विशाल	प्रद्युम्न	"	"	"
53.	मदन	वल्लभजी	"	"	"
54.	गोकुल	नटवर	"	"	"
55.	मुकुल	"	"	"	"
56.	मुकुन्द	बल्लभजी	"	"	"
57.	गोकर्ण	"	"	"	"
58.	गोपीकान्त	"	"	"	"
59.	अर्जित	गोपीकान्त	"	"	"
60.	अंकित	"	"	"	"
61.	शम्भू	भगवान दत्त	"	"	71
62.	पंकज	"	"	"	"
63.	निर्मल	रेवतीरमण	"	"	"
64.	विमल	"	"	"	"
65.	कमल	"	"	"	"

वंशवृक्ष में आप अपना वंश (कुल) इस प्रकार तलाश करें।

क्र. सं.	नाम	पिता	गोत्र	मूल निवासी	पृ. सं.
66.	सुनील	रेवतीरमण	आत्रेय	बीकानेर	71
67.	सुधीर	,,	,,	,,	,,
68.	राजकुमार	,,	,,	,,	,,
69.	सुशील	,,	,,	,,	,,
70.	मनीष	अम्बिका दत्त	,,	,,	72
71.	कमल	विद्यालाल	,,	,,	,,
72.	पंकज	,,	,,	,,	,,
73.	परेश	राजेश्वर	,,	,,	,,
74.	राधाकृष्ण	हरिकृष्ण	,,	,,	,,
75.	सत्यनारायण	,,	,,	,,	,,
76.	ओमप्रकाश	,,	,,	,,	,,
77.	गोपीकान्त	भुवनेश्वर	,,	,,	73
78.	सुरेन्द्र नारायण	जागेश्वर	,,	,,	,,
79.	गोपाल	,,	,,	,,	,,
80.	रवि	सुरेन्द्र नारायण	,,	,,	,,
81.	सुधीर	,,	,,	,,	,,
82.	शेखर	,,	,,	,,	,,
83.	भालचन्द्र	तुलेश्वर	,,	,,	,,
84.	हेमन्त शेष	भालचन्द्र	,,	,,	,,
85.	जयन्त	,,	,,	,,	,,
86.	कैलाशचन्द्र	तुलेश्वर	,,	,,	,,
87.	सुशील	कैलाशचन्द्र	,,	,,	,,
89.	प्रकाश	तुलेश्वर	,,	,,	,,
90.	प्रतीक	प्रकाश	,,	,,	,,
91.	अनन्य	,,	,,	,,	,,
92.	लक्ष्मण	तुलेश्वर	,,	,,	,,
93.	दिनेश	,,	,,	,,	,,

क्र. सं.	नाम	पिता	गोत्र	मूल निवासी	पृ. सं.
94.	गीत	दिनेश	आत्रेय	बीकानेर	73
95.	भास्कर	तुलेश्वर	,,	,,	,,
96.	रोचक	भास्कर	,,	,,	,,
97.	अशोक	तुलेश्वर	,,	,,	,,
98.	अपूर्व	अशोक	,,	,,	,,
99.	राजीव	शिवकुमार	,,	,,	,,
100.	संजीव	,,	,,	,,	,,
101.	धनेश	मदनलाल	,,	,,	,,
102.	नरेन्द्र	शिवप्रताप	,,	,,	,,
103.	राजीवलोचन	नूतन	,,	,,	,,
104.	कन्हैयालाल	दाऊदयाल	,,	,,	,,
105.	सोमेश्वर	,,	,,	,,	,,
106.	योगेन्द्र	,,	,,	,,	,,
107.	यादवेन्द्र	,,	,,	,,	,,
108.	आशुतोष	,,	,,	,,	,,
109.	दीपक	बालकृष्ण	,,	महापुरा	74
110.	कमल	,,	,,	,,	,,
111.	गोपालकृष्ण	पुरुषोत्तम	,,	,,	,,
112.	चन्द्रकान्त	,,	,,	,,	,,
113.	सूर्यकान्त	,,	,,	,,	,,
114.	गणेशनारायण	प्रह्लादनारायण	,,	,,	,,
115.	गजानन्द	गणेशनारायण	,,	,,	,,
116.	आनन्द	,,	,,	,,	,,
117.	अरुण	कल्याण दत्त	,,	,,	,,
118.	अशोक	,,	,,	,,	,,
119.	कमलेश	घनश्याम	,,	,,	,,
120.	राकेश	,,	,,	,,	,,

वंशवृक्ष में आप अपना वंश (कुल) इस प्रकार तलाश करें।

क्र. सं.	नाम	पिता	गोत्र	मूल निवासी	पृ. सं.
121.	देवकीनन्दन	लक्ष्मीनारायण	आत्रेय	महापुरा	74
122.	राजेश	देवकीनन्दन	"	"	"
123.	सुरेश	"	"	"	"
124.	मुकेश	"	"	"	"
125.	वामनदेव	लक्ष्मीनारायण	"	"	"
126.	अनिल	वामनदेव	"	"	"
127.	राजीव	"	"	"	"
128.	हरिशचन्द्र	छन्नूलाल	"	"	"
129.	अरुण	हरिशचन्द्र	"	"	"
	130.	अशोक "	"	"	"
131.	ब्रजभूषण	छन्नूलाल	"	"	"
132.	अतुल	ब्रजभूषण	"	"	"
133.	नटवर	रामप्रकाश	"	"	"
134.	श्याम	"	"	"	"
135.	अमर	सुभाष	"	"	"
136.	कृष्णचन्द्र	हरीकृष्ण	"	"	75
137.	राजीव	"	"	"	"
138.	गोपालकृष्ण	"	"	"	"
139.	कृष्णस्वरूप	रामस्वरूप	"	"	"
140.	भानुस्वरूप	"	"	"	"
141.	विष्णुस्वरूप	"	"	"	"
142.	सुधाकर	रत्नाकर	"	"	"
143.	वसुधाकर	"	"	"	"
144.	पद्माकर	"	"	"	"
145.	प्रभाकर	"	"	"	"
146.	विभाकर	"	"	"	"
147.	श्यामसुन्दर	जयकृष्ण	"	"	"

क्र. सं.	नाम	पिता	गोत्र	मूल निवासी	पृ. सं.
148.	सुरेश	श्यामसुन्दर	आत्रेय	महापुरा	75
150.	भगवतदयाल	नारायणजी	"	"	"
151.	चन्द्रकान्त	भगवतदयाल	"	"	"
152.	सूर्यकान्त	"	"	"	"
153.	विनोद	"	"	"	"
154.	रामदयाल	नारायणजी	"	"	"
155.	प्रभुदयाल	"	"	"	"
156.	राजीव	राम भट्ट	"	कानपुर	76
157.	विजय	कन्हैयालाल	"	"	"
158.	मधुकर	कमलाकर	"	जयपुर	77
159.	सुधाकर	"	"	"	"
160.	दिनकर	विमलाकर	"	"	"
161.	प्रकाश	"	"	"	"
162.	निशाकर	"	"	"	"
163.	भास्कर	लक्ष्मण	"	प्रेमसरोवर	"
164.	गिरधारी	"	"	"	"
165.	कृष्णकान्त	भालचन्द्र	"	रायपुर	"
166.	चन्द्रकान्त	"	"	"	"
167.	अनुपम	ब्रजवल्लभ	"	जैतपुर (चंडीगढ़)	78
168.	रेवतीरमण	गोविन्द	"	जबलपुर	"
169.	राधारमण	"	"	"	"
170.	पीताम्बर	रामचन्द्र	"	"	"
171.	शैलेन्द्र	राजेन्द्र	"	"	"
172.	श्रीकान्त	बालमुकुन्द	"	"	"
173.	गोकुल	गोपीरसिक	"	गोकुल	79
174.	गोकलेन्दु	"	"	"	"
175.	गौरव	"	"	"	"

वंशवृक्ष में आप अपना वंश (कुल) इस प्रकार तलाश करें।

क्र. सं.	नाम	पिता	गोत्र	मूल निवासी	पृ. सं.
176.	दामोदर	श्रीकृष्ण	आत्रेय	गोकुल	79
177.	गोपेश्वर	श्रीकृष्ण	"	अलवर	"
178.	व्रजनाथ	कृष्णवल्लभ	"	"	"
179.	मुकेश	श्यामसुन्दर	"	नाथद्वारा	"
180.	रवि	"	"	"	"
181.	आयुष	गिरधर	"	"	"
182.	अरुण	उद्धवजी	"	"	"
183.	यदुनाथ	नवनीत	"	"	"
184.	हेमन्त	"	"	"	"
185.	देवेन्द्र	मुरलीधर	"	जयपुर	80
186.	राजेन्द्र	"	"	"	"
187.	वीरेन्द्र	"	"	"	"
188.	व्रजेन्द्र	"	"	"	"
189.	सुरेन्द्र	"	"	"	"
190.	वेणुगोपाल	श्रीकृष्ण	"	मुबंई	"
191.	गोकुलेश	गिरधारीलाल	"	झालावाड़	"
192.	गिरवर	गोकुलेश	"	"	"
193.	गौतम	"	"	"	"
194.	गणेश	"	"	"	"
195.	गीताप्रकाश	"	"	"	"
196.	गदाधर	गिरधारीलाल	"	"	"
197.	गोपेश्वर	"	"	"	"
198.	गोपीरमण	गिरीश चन्द्र	"	"	"
199.	गीतेश	"	"	"	"
200.	गोपीवल्लभ	गिरधारीलाल	"	"	"
201.	उद्धवजी	लक्ष्मण	"	पोरबन्दर	81
202.	बलरामजी	महावीरजी	"	केशोद	"

क्र. सं.	नाम	पिता	गोत्र	मूल निवासी	पृ. सं.
203.	ब्रजेश	महावीर	आत्रेय	केशोद	81
204.	नवनीत	मथुरानाथ	"	कोटा	82
205.	गिरधरगोपाल	गोकुलचन्द्र	"	"	"
		गौतम			
1.	गोकुलेश	बालकृष्ण	गौतम	नोहरा	83
2.	दिनेश	"	"	"	"
3.	श्यामसुन्दर	"	"	"	"
4.	राधेश्याम	"	"	"	"
5.	अशोक	गोकुलेश	"	"	"
6.	अनिल	"	"	"	"
7.	होलचन्द	दौलतराम	"	बीकानेर	"
8.	प्रेमचन्द	"	"	"	"
9.	आशाराम	"	"	"	"
10.	खेमचन्द	"	"	"	"
11.	विजय कुमार	"	"	"	"
12.	कृष्णगोपाल	"	"	"	"
13.	सुमन	"	"	"	"
14.	घनश्याम	नाथीराम	"	"	84
15.	परसराम	"	"	"	"
16.	श्रीकृष्ण	गोविन्दलाल	"	"	"
17.	जसकरण	"	"	"	"
18.	गिरधर	"	"	"	"
19.	सुबोध	"	"	"	"
20.	श्यामसुन्दर	गोवर्धन	"	"	"
21.	रमेश	"	"	"	"
22.	दिनेश	"	"	"	"
23.	ओमप्रकाश	"	"	"	"

वंशवृक्ष में आप अपना वंश (कुल) इस प्रकार तलाश करें।

क्र. सं.	नाम	पिता	गोत्र	मूल निवासी	पृ. सं.
24.	ज्ञानप्रकाश	गोवर्धन	गौतम	बीकानेर	84
25.	गोपीरमण	राधारमण	"	वालेर–जयपुर	85
26.	सर्वोत्तम	पुरुषोत्तम	"	"	"
27.	बालकृष्ण	रामकृष्ण	"	"	"
28.	मुकुन्द	"	"	"	"
29.	संतोष	"	"	"	"
30.	बसन्तकृष्ण	गोपालकृष्ण	"	"	"
31.	हेमन्त	बसन्तकृष्ण	"	"	"
32.	शरद	"	"	"	"
33.	शिशिर	"	"	"	"
34.	नवीनकृष्ण	श्यामकृष्ण	"	"	"
35.	प्रमोद	"	"	"	"
36.	विनोद	"	"	"	"
37.	मुकेश	"	"	"	"
38.	ओमप्रकाश	ब्रजगोपाल	"	नरी	86
39.	जगदीश	"	"	"	"
40.	ब्रजेश	"	"	"	"
41.	अरविन्द	"	"	"	"
42.	लक्ष्मण	रणछोड़जी	"	"	"
43.	चन्द्रशेखर	लक्ष्मण	"	"	"
44.	सनतकुमार	गोवर्धनजी	"	"	"
45.	विष्णु	"	"	"	"
46.	किशन	आशाराम	"	बीकानेर	87
47.	अशोक	कैलाश	"	"	"
48.	अजय	"	"	"	"
49.	बसन्त	अनन्तलाल	"	"	"
50.	शशिकान्त	चन्द्रकान्त	"	"	"

क्र. सं.	नाम	पिता	गोत्र	मूल निवासी	पृ. सं.
51.	प्रकाशमणि	किशोरी वल्लभ	गौतम	बीकानेर	87
52.	दीपक	रंजन	"	"	"
53.	सतीश	किशोरीवल्लभ	"	"	"
54.	मूलचन्द	वासुदेव	"	"	"
55.	सुभाष	मूलचन्द	"	"	"
56.	प्रभात	"	"	"	"
57.	अंचल	पूर्णेन्दु	"	"	"
58.	नवेन्दु	गोपीवल्लभ	"	"	"
59.	जगदीश	भुवनेश्वर	"	"	"
60.	हरीश	"	"	"	"
61.	प्रदीप	"	"	"	"
62.	राजेन्द्र	"	"	"	"
63.	राधावल्लभ	दामोदर	"	"	88
64.	बुलाकी	सुजानमल	"	"	89
65.	विष्णू	गोपालजी	"	"	"
66.	कृष्णू	"	"	"	"
67.	प्रहलाद	सुजानमल	"	"	"
68.	जगदीश	"	"	"	
69.	प्रभात	जगदीश	"	"	
70.	विकास	"	"	"	
71.	अशोक	"	"	"	"
72.	मार्कण्डेय	सुजानमल	"	"	"
73.	इन्दुलाल	"	"	"	"
74.	राजेन्द्र	बटुकप्रसाद	"	"	"
75.	सदाशिव	रामेश्वर	"	"	"
76.	योगेश	"	"	"	"
77.	सोमेश्वर	लक्ष्मीनारायण	"	"	"

वंशवृक्ष में आप अपना वंश (कुल) इस प्रकार तलाश करें।

क्र. सं.	नाम	पिता	गोत्र	मूल निवासी	पृ. सं.
78.	ध्यानेश्वर	लक्ष्मीनारायण	गौतम	बीकानेर	89
79.	वाणेश्वर	"	"	"	"
80.	ज्ञानेश्वर	"	"	"	"
81.	विजय	सोमेश्वर	"	"	"
82.	अश्विनी कुमार	ब्रजगोपाल	"	"	"
83.	गजेन्द्र	"	"	"	"
84.	लक्ष्मीकान्त	"	"	"	"
85.	बालकृष्णराव	नारायणराव	"	रेवई	90
86.	प्रमोद	बालकृष्णराव	"	"	"
87.	विनोद	"	"	"	"
88.	अशोकराव	नारायणराव	"	"	"
89.	दिनकर	शंकरराव	"	"	"
90.	गणेश कुमार	वासुदेव	"	"	"
91.	प्रमोद	कपिलकुमार	"	"	"
92.	विनोद	"	"	"	"
93.	पद्मनाभ	श्रीनिवास	"	ग्वालियर	91
94.	वत्सांक	पद्मनाभ	"	"	"
95.	विश्वकसेन	"	"	"	"
96.	मुरलीधर	श्रीनिवास	"	"	"
97.	रमेश	कृष्णचन्द्र	"	"	"
98.	गोकुलेश	"	"	"	"
99.	ब्रजमोहन	"	"	"	"
100.	लक्ष्मण	पूर्णगोपाल	"	टीकमगढ़	"
101.	अनूप	नूतन कुमार	"	"	"
102.	अमिताभ	श्रीनाथ	"	ग्वालियर	92
103.	पुरुषोत्तम	मुकुन्द चक्रवर्ती	"	"	"
104.	संजय	चारुकृष्ण	"	"	"

क्र. सं.	नाम	पिता	गोत्र	मूल निवासी	पृ. सं.
105.	पद्मेश	मुकुन्द चक्रवर्ती	गौतम	ग्वालियर	92
106.	अरविन्द	"	"	"	"
107.	विट्ठलेश	श्यामसुन्दर	"	"	"
108.	चन्द्रमोहन	"	"	"	"
109.	केशव	"	"	"	"
110.	योगेश	"	"	"	"
111.	जगदीश	"	"	"	"
112.	कलानाथ	मथुरानाथ	"	जयपुर	93
113.	कमलानाथ	"	"	"	"
114.	राधेश्याम	मदनमोहन	"	"	"
115.	यदुनाथ	राधेश्याम	"	"	"
116.	लोकनाथ	"	"	"	"
117.	देवनाथ	"	"	"	"
118.	दिव्यनाथ	"	"	"	"
119.	देवेन्द्र	कलानाथ	"	"	"
120.	धीरेन्द्र	"	"	"	"
121.	प्रदीप	लक्ष्मीकान्त	"	कांकरोली	"
122.	राजेश	"	"	"	"
123.	जगदीशचन्द्र	ब्रजनाथ	"	"	"
124.	हर्ष	जगदीशचन्द्र	"	"	"
125.	केशव	ब्रजनाथ	"	"	"
126.	महेश	"	"	"	"
127.	रमेश	"	"	"	"
128.	दिनेश	"	"	"	"
129.	राजेश	गोपीनाथ	"	जयपुर	"
130.	सुकान्त	"	"	"	"
131.	सीताराम	श्रीनाथ	"	"	"

वंशवृक्ष में आप अपना वंश (कुल) इस प्रकार तलाश करें।

क्र. सं.	नाम	पिता	गोत्र	मूल निवासी	पृ. सं.
132.	रजनीश	सीताराम	गौतम	जयपुर	93
133.	अवनीश	"	"	"	"
134.	आलोक	राजेन्द्र	"	"	"
135.	आशीष	"	"	"	"
136.	विजय	गोकुलनाथ	"	"	94
137.	अजय	"	"	"	"
138.	संजय	"	"	"	"
139.	अशोक	गोकुलनाथ	"	"	"
140.	चन्द्रमोहन	शशिमोहन	"	"	"
141.	कृष्णमोहन	"	"	"	"
142.	राजीव	महेन्द्र	"	"	"
143.	हेमन्त	"	"	"	"
144.	रविमोहन	मनमोहन	"	"	"
145.	विश्वमोहन	"	"	"	"
146.	बसन्त	आनन्दमोहन	"	"	"
147.	हेमन्त	"	"	"	"
148.	ललित	"	"	"	"
149.	शिशिर	"	"	"	"
150.	विजय	ब्रजमोहन	"	"	"
151.	अरुण	"	"	"	"
		श्रीवत्स			
1.	कृष्णकान्त	वासुदेव	श्रीवत्स	—	95
2.	आनन्द	नूतन कुमार	"	भोपाल	"
3.	आलोक	"	"	"	"
4.	राजेश	"	"	"	"
5.	सनत कुमार	गोपालजी	"	कांकरोली	"
6.	नीलाम्बुज	"	"	"	"

क्र. सं.	नाम	पिता	गोत्र	मूल निवासी	पृ. सं.
7.	राजशेखर	गोपालजी	श्रीवत्स	कांकरोली	95
8.	मधुकर	पुरुषोत्तमजी	"	अहमदाबाद	"
9.	पंकज	गोकुलेन्दु	"	"	"
10.	कृष्णमूर्ति	दामोदर	"	टीकमगढ़	"
11.	गणेशमूर्ति	"	"	"	"
12.	मधुसूदन	"	"	"	"
13.	रमेश	जमनाप्रसाद	"	सागर	96
14.	आनन्द	गजानन	"	"	"
15.	विवेक	"	"	"	"
16.	मुकुल	कृष्णवल्लभ	"	बीकानेर	"
17.	सुधीर	"	"	"	"
18.	भरत	"	"	"	अ
19.	हरिवल्लभ	कृपालजी	"	"	"
20.	गणेशवल्लभ	"	"	"	"
21.	प्रमोद	"	"	"	"
22.	गोपालकृष्ण	उपेन्द्रनाथ	"	जयपुर	"
23.	अनिरुद्ध	"	"	"	"
24.	चन्द्रशेखर	"	"	"	"
25.	गजानन	गंगाधर	"	दुर्ग	97
26.	अरुण	कृष्णानन्द	"	"	"
27.	अनिल	"	"	"	"
28.	अनुपम	"	"	"	"
29.	अतुल	"	"	"	"
30.	शंकर	रामचन्द्र	"	रायपुर	"
31.	सदाशिव	"	"	"	"
32.	राजेश	श्रीधर	"	"	"
33.	राजीव	"	"	"	"

वंशवृक्ष में आप अपना वंश (कुल) इस प्रकार तलाश करें।

क्र. सं.	नाम	पिता	गोत्र	मूल निवासी	पृ. सं.
34.	शरद	ज्ञानदेव	श्रीवत्स	टीकमगढ़	98
35.	ब्रजेश	"	"	"	"
36.	मयंक	विक्रम	"	"	"
37.	कपिलदेव	बालकृष्णदेव	"	"	"
38.	हेमन्त	कपिलदेव	"	"	"
39.	प्रदीप	"	"	"	"
40.	आदित्यदेव	बालकृष्णदेव	"	"	"
41.	रेणुदेव	आदित्यदेव	"	"	"
42.	भारतेन्दु	केशवदेव	"	"	"
43.	आशीष	घनश्यामदेव	"	"	"
44.	केतन	"	"	"	"
45.	गोविन्ददेव	जनार्दनदेव	"	"	"
46.	राजेन्द्र	"	"	"	"
47.	रवीन्द्र	विष्णुदेव	"	"	"
48.	अनिल	"	"	"	"
49.	पुनीत	"	"	"	"
50.	रमेश	हरिदेव "	"	"	
51.	राजेश	"	"	"	"
52.	प्रदीप	"	"	"	"
53.	सुनील	"	"	"	"
54.	शरद	"	"	"	"
55.	माधवदेव	बालमुकुन्द	"	"	"
56.	प्रमोद	"	"	"	"
57.	ब्रजेश	"	"	"	"
58.	अशोक	"	"	"	"
59.	प्रदीप	श्रीदेव	"	"	99
60.	राधाकृष्ण देव	जय जय कृष्ण	"	"	"

क्र. सं.	नाम	पिता	गोत्र	मूल निवासी	पृ. सं.
61.	कृष्णदेव	जय जय कृष्ण	श्रीवत्स	टीकमगढ़	99
62.	राजेश	विनायक (रामदेव)	"	"	"
63.	गिरीश	रामकृष्ण	"	"	"
64.	मनोज	"	"	"	"
65.	राजीव	"	"	"	"
66.	बसन्त	गोपीकृष्ण	"	"	"
67.	अरुण	"	"	"	"
68.	सुलभ	सुशील	"	"	"
69.	सुमित	"	"	"	"
70.	सुधीर	गोपालकृष्ण	"	"	"
71.	दीपक	रमानिवास	"	नीमराना	100
72.	दिलीप	"	"	"	"
73.	कृष्णशरणम	ब्रजभूषण	"	"	"
74.	सर्वेश	"	"	"	"

कौंडिन्य

1.	श्रीनाथ	काशीनाथ	कौंडिन्य	मथुरा	101
2.	क्षेमेन्द्र	हरगोविन्द	"	"	"
3.	सुरेन्द्र	नत्थूजी	"	"	"
4.	सुनील	हरिवल्लभ	"	"	"
5.	सनातन	गौरगोपाल	"	"	"
6.	रूपजी	"	"	"	"
7.	यदुनाथ	"	"	"	"
8.	गौरांग	राधाकान्त	"	वृन्दावन	102
9.	मयंक	"	"	"	"
10.	ऋतुराज	विपिन	"	"	"
11.	अशोक	ब्रजवल्लभ	"	"	"
12.	चन्द्रवल्लभ	मदनमोहन	"	"	"

वंशवृक्ष में आप अपना वंश (कुल) इस प्रकार तलाश करें।

क्र. सं.	नाम	पिता	गोत्र	मूल निवासी	पृ. सं.
13.	आनन्दवल्लभ	मदनमोहन	कौंडिन्य	वृन्दावन	"
14.	श्याम	द्वारकानाथ	"	मथुरा	"
15.	गिरीश	कृष्णगोपाल	"	"	"
16.	सुरेश	कृष्णगोपाल	"	"	102
17.	शचिनन्दन	नित्यानन्द	"	वृन्दावन	"
18.	अच्युत	"	"	"	"
19.	राकेश	गोकुलानन्द	"	"	"
20.	पद्मेश	"	"	"	"
21.	केशव	परमानन्द	"	"	"
22.	विनय	हेमांग	"	"	"
23.	रामकृष्ण	लक्ष्मीकिशोर	"	जहानाबाद (कानपुर)	103
24.	श्रीकान्त	रामकृष्ण	"	"	"
25.	हर्ष	"	"	"	"
26.	कृष्णकान्त	रामनारायण	"	"	"
27.	प्रदीप	भगवत प्रसाद	"	"	"
28.	सुधीर	श्याम	"	भोपाल	"
29.	सुशीलजी	हरीकृष्ण	"	अहमदाबाद	104
30.	श्रीकान्त	विपिनजी	"	"	"
31.	योगेश	"	"	"	"
32.	रमेश	"	"	"	"
33.	शैलेश	गोविन्द	"	"	"
34.	पद्मनाभ	गोपालकृष्ण	"	"	"
35.	गोपालकृष्ण	रामकृष्ण	"	नाथद्वारा	"
36.	गोविन्दकृष्ण	"	"	जयपुर	"
37.	मुन्दीप	बब्बूजी	"	वडोदरा	"
38.	संदीप	"	"	"	"
39.	मुकुन्द	गोपालकृष्ण	"	अहमदाबाद	"

क्र. सं.	नाम	पिता	गोत्र	मूल निवासी	पृ. सं.
40.	राजशेखर	प्रयागनारायण	"	बीकानेर	105
41.	चन्द्रशेखर	"	"	"	"
42.	शशि	"	"	"	"
43.	अंकित	"	"	"	"
44.	निर्भय	ब्रजरत्न	"	"	"
45.	देवेन्द्र	भरतजी	"	"	"
46.	शरतचन्द्र	धनरूपजी	"	"	"
47.	सनत	शरतचन्द्र	"	"	"
48.	आशुतोष	"	"	"	"
49.	राजेश	श्यामसुन्दर	"	"	"
50.	प्रवीण	"	"	"	"
51.	मोहनलाल	मेघराज	"	"	"
52.	रवि	मोहनलाल	"	"	"
53.	नीरज	"	"	"	"
54.	अनिल	"	"	"	"
55.	दिनकर	"	"	"	"
56.	पीयूषपाणि	राजेन्द्र	"	"	"
57.	पातंजलि	"	"	"	"
58.	तुकाराम	"	"	"	"
59.	गणेशवल्लभ	"	"	"	"
60.	मुरली	"	"	"	"
61.	देवदमन	बसन्तलाल	"	"	"
62.	रामकृष्ण	चैतन्यजी	कौंडिन्य	बीकानेर	106
63.	बालकृष्ण	"	"	"	"
64.	गणेशवल्लभ	हृषिकेश	"	"	"
65.	कृष्णकान्त	जयदेव	"	"	"
66.	सुनील	गौरीशंकर	"	"	"

वंशवृक्ष में आप अपना वंश (कुल) इस प्रकार तलाश करें।

क्र. सं.	नाम	पिता	गोत्र	मूल निवासी	पृ. सं.
67.	विजय	गौरीशंकर	कौंडिन्य	बीकानेर	106
68.	रघुवरदयाल	वृद्धिचन्द	"	"	"
69.	जगदीश	रघुवरदयाल	"	"	"
70.	दीपक	"	"	"	"
71.	राजेश्वर	"	"	"	"
72.	संजय	"	"	"	"
73.	बालकृष्ण	नारायणजी	"	टीकमगढ़	"
74.	जी. रामाराव	लक्ष्मीनरसिंहराव	कौंडिन्य	मुंबई	107
75.	रंगनाथ राव	जी रामाराव	"	"	"
76.	विजय राव	जी. रामाराव	कौंडिन्य	मुंबई	"
77.	प्रतीक राव	"	"	"	"
	मुद्गल				
1.	ध्रुव शर्मा	स्वामीनाथ	मुद्गल	"	107
2.	सत्येन्द्र	ध्रुव शर्मा	"	"	"
3.	गोकुलनाथ	सुन्नमण्यम	"	"	"
4.	हेमन्त	गोकुलनाथ	"	"	"
5.	नन्द नन्दन	बालमुकुन्द	"	बरेली	108
6.	देवकीनन्दन	"	"	"	"
7.	गोपाललाल	"	"	"	"
8.	वल्लभ रसिक	"	"	"	"
9.	कृष्णचैतन्य	गोवर्धनलाल	"	वृन्दावन	"
10	जनार्दन	कृष्णचैतन्य	"	"	"
11.	विशवंभर	"	"	"	"
12.	नीलमणि	"	"	"	"
13.	माधवेन्द्र	"	"	"	"
14.	शैलेन्द्र	"	"	"	"
15.	अनन्त	देवकीनन्दन	"	बरेली	"

क्र. सं.	नाम	पिता	गोत्र	मूल निवासी	पृ. सं.
16.	राजीवलोचन	देवकीनन्दन	मुद्गल	बरेली	108
17.	नलिन	"	"	"	"
18.	प्रदीप	"	"	"	"
19.	श्रीनाथ	गोपाललाल	"	"	"
20.	नन्द नन्दन	बालमुकुन्द	"	"	"
21.	देवकीनन्दन	"	"	"	"
22.	गोपाल लाल	"	"	"	"
23.	वल्लभ रसिक	"	"	"	"
24.	कृष्ण चैतन्य	गोवर्धन लाल	"	वृन्दावन	"
25.	मनोज	लक्ष्मीनारायण	"	बीकानेर	109
26.	गोकुलेश	द्वारकाप्रसाद	"	मुबंई	"
27.	सुरेश	"	"	"	"
28.	योगेश	कृष्णचन्द्र	"	नाथद्वारा	"
29.	अरविन्द	"	"	मथुरा	"
30.	राजीवलोचन	"	"	"	"
31.	ब्रजभूषण	रामकृष्ण	"	"	"
32.	शशिविन्दु	"	"	"	"
33.	महेन्द्र	ब्रजभूषण	"	"	"
34.	निरंजन	गोपीनाथ	"	"	"
35.	शिरीष	"	"	"	"
36.	श्रीकान्त	गोविन्द	"	"	"
37.	कृष्णजीवन	"	"	"	"
38.	अजय	कृष्णजीवन	"	"	"
39.	विजय	विनोद	"	मथुरा	"
40.	प्रमोद	"	"	"	"
41.	आमोद	"	"	"	"
42.	मुकेश	वासुदेव	"	"	"

वंशवृक्ष में आप अपना वंश (कुल) इस प्रकार तलाश करें।

क्र. सं.	नाम	पिता	गोत्र	मूल निवासी	पृ. सं.
43.	गोविन्द	नित्यानन्द	मुद्गल	मथुरा	110
44.	अनन्त	"	"	"	"
45.	सन्तोष	"	"	"	"
46.	रामचन्द्र	गोकुलचन्द्र	"	जयपुर	"
47.	लक्ष्मण	"	"	"	"
48.	प्रवीण	विष्णुकुमार	"	टीकमगढ़	"
49.	राकेश	"	"	"	"
50.	चन्द्रकुमार	बालमुकुन्द	"	कामवन	"
51.	अवधेश	चन्द्रकुमार	"	"	"
52.	दिनेश	"	"	"	"
53.	नन्दकुमार	बालमुकुन्द	"	"	"
54.	नीरज	नन्दकुमार	"	"	"
55.	कृष्णकुमार	बालमुकुन्द	"	"	"
56.	योगेश	कृष्णकुमार	"	"	"
57.	वागीश	सत्येश	"	"	"
58.	नरेश	कृष्णकुमार	"	"	"
59.	शेखर	गोपीकृष्ण	"	जयपुर	111
60.	प्रदीप	"	"	"	"
61.	दिलीप	"	"	"	"
62.	गोविन्दनारायण	फूलचन्द	"	"	"
63.	गोपेश	गोविन्दनारायण	"	"	"
64.	दामोदर	नत्थूजी (मन्नूजी)	"	"	"
65.	निरंजन	दामोदर	"	"	"
66.	विनत	दामोदर	"	"	"
67.	वासुदेव	नत्थूजी (मन्नूजी)	"	"	"
68.	गौरव	अरुण	"	"	"
69.	जगदीश	नत्थूजी (मन्नूजी)	"	"	"

क्र. सं.	नाम	पिता	गोत्र	मूल निवासी	पृ. सं.
70.	विजय	घनश्याम	"	दग्धा	112
71.	विमल	"	"	"	"
72.	व्रजेश	"	"	"	"
73.	मधुर	नेत्रनाथ (मुन्नालाल)	"	"	"
74.	मयंक	देवेन्द्र	"	"	"
75.	अभिजित	हेमन्त	"	"	"
76.	जयप्रकाश	रामनाथ	"	"	"
77.	कपिलदेव	उत्तमलाल	"	बीकानेर	"
78.	कमलनयन	"	"	"	"
79.	ध्रुवलाल	प्रह्लादजी	"	"	"
80.	अनूप	ध्रुवलाल	"	"	"
81.	प्रेमचन्द	प्रह्लादजी	"	"	"
82.	तटस्थ	प्रेमचन्द	"	"	"
83.	संकेत	"	"	"	"
84.	श्रीचन्द	प्रह्लादजी	"	"	"
85.	प्रशांत	श्रीचन्द	"	"	"
86.	असीम	"	"	"	"
87.	श्वेत	"	"	"	"
88.	लोकेश	"	"	"	"
89.	सौरभ	सोहन	"	अजयगढ़	113
90.	कृष्णा	लक्ष्मीनाथ	"	"	"
91.	अशोक	"	"	"	"
		कश्यप			
1.	रमेश	बालकृष्ण	कश्यप	मण्डालिया (जयपुर)	114
2.	कमलेश	रमेश	"	"	"
3.	मुकेश	"	"	"	"
4.	गोकुलेश	बालकृष्ण	"	"	"

वंशवृक्ष में आप अपना वंश (कुल) इस प्रकार तलाश करें।

क्र. सं.	नाम	पिता	गोत्र	मूल निवासी	पृ. सं.
5.	योगेश	गोकुलेश	कश्यप	मण्डालिया	114
6.	राकेश	"	"	"	"
7.	दिनेश	बालकृष्ण	"	"	"
8.	ब्रजेश	"	"	"	"
9.	राजेश	"	"	"	"
10.	प्रकाश	रामकृष्ण	"	"	"
11.	प्रणय	प्रकाश	"	"	"
12.	गोपालकृष्ण	बलभद्र	"	घाटा-कोटा	115
13.	सुनील	द्वारकानाथ	"	मुंबई	"
14.	हरीकृष्ण (मधुकर)	मथुरानाथ	"	अहमदाबाद	"
15.	राजशेखर	"	"	"	"
16.	शरद	गोकुलनाथ	"	कानपुर	"
17.	योगेन्द्र	विट्ठलनाथ	"	"	"
18.	सुरेन्द्र	"	"	"	"
19.	नारायण	मधुसूदन	"	कोटा	"
20.	मदनमोहन	"	"	"	"
21.	ब्रजेन्द्र	बालकृष्ण	"	नाथद्वारा	"
22.	अरविन्द	"	"	"	"
23.	राजेन्द्र	"	"	"	"
24.	गोपालकृष्ण	रामकृष्ण	"	जामनगर	"
25.	कमलेश	"	"	अहमदाबाद	"
26.	मुरलीधर	हरिकृष्ण	"	चन्दौसी	"
27.	किशोर	मुरलीधर	"	"	"
28.	अनिल	रमेशचन्द्र	"	"	"
29.	कृष्णचन्द्र	हरीकृष्ण	"	"	"
30.	प्रवीण	विष्णुकुमार	"	"	"
31.	तारकेश	राधाकृष्ण	"	"	"
32.	कन्हैया	राधाकृष्ण	कश्यप	चन्दौसी	115
33.	नन्द नन्दन	बलदेवजी	"	झालावाड़	116
34.	सत्येश शर्मा	गोकुलेश	"	गोकुल-उदयपुर	"
35.	रोहित शर्मा	सत्येश शर्मा	"	"	"
36.	वेदान्त शर्मा	"	"	"	"
37.	नलिन	बालकृष्ण	"	गोकुल-पोरबन्दर	"
38.	विनय	गोपीनाथ	"	अहमदाबाद	"
39.	संजीव	"	"	"	"
40.	दीपक	बलदेव	"	चित्रकूट	"
41.	राजीव	"	"	"	"
42.	प्रभूदयाल	गोवर्धनजी	"	"	"
43.	राजेश	प्रभूदयाल	"	"	"
44.	रामकृष्ण	गोवर्धनजी	"	"	"
45.	जयेन्द्र	बालकृष्ण	"	"	"
46.	ब्रजभूषण	"	"	"	"
47.	हरिकृष्ण	"	"	"	"
48.	श्यामसुन्दर	बालमुकुन्द	"	वडोदरा	118
49.	मदनमोहन	ब्रजनाथ	"	गोकुल	"
50.	कृष्णशरण	चिमनलाल	"	"	"
51.	श्याम मनोहर	बालमुकुन्द	"	अहमदाबाद	"
		लोहित			
1.	रघुनन्दन	रंगनाथ	लोहित	बरेली	119
2.	सुधांशु	रघुनन्दन	"	"	"
3.	लक्ष्मण	"	"	"	"
4.	नवनीत	"	"	"	"
5.	गिरीश	"	"	"	"
6.	शुभांग	"	"	"	"

वंशवृक्ष में आप अपना वंश (कुल) इस प्रकार तलाश करें।

क्र. सं.	नाम	पिता	गोत्र	मूल निवासी	पृ. सं.
7.	लक्ष्मीकान्त	रघुनन्दन	लोहित	बरेली	119
8.	कौशलनन्दन	श्रीनन्दन	"	"	"
9.	अवधेश	"	"	"	"
10.	राकेश	"	"	"	"
11.	योगेश	"	"	"	"
12.	विनोद	ब्रजनन्दन	"	"	"
13.	रवीन्द्र	"	"	"	"
14.	शैलेन्द्र	"	"	"	"
15.	देवेन्द्र	यदुनन्दन	"	"	"
16.	अरविन्द	मुकुन्दाचार्य	"	सागर	"
17.	राघवेन्द्र	श्रीनिवासाचार्य	"	"	"
18.	राजीव	राघवेन्द्र	"	"	"
19.	ब्रजेन्द्र	श्रीनिवासाचार्य	"	"	"
20.	संजय	ब्रजेन्द्र	"	"	"
21.	सचिन	"	"	"	"
22.	उपेन्द्र	श्रीनिवासाचार्य	"	"	"
23.	संदीप	उपेन्द्र	"	"	"
	कौशिक				
1.	विदूभूषण	ब्रजचन्द	कौशिक	अहमदाबाद	120
2.	प्रणवकुमार	"	"	"	"
	बाधूलस				
1.	सुबोध	पुरुषोत्तमदेव	बाधुलस	कोटा	121
2.	भालचन्द्र	"	"	"	"
3.	प्रभाष	"	"	"	"
	हरितस				
1.	ललित	श्रीकृष्ण	हरितस	गोकुल (जयपुर)	122
2.	बसन्त	"	"	"	"

क्र. सं.	नाम	पिता	गोत्र	मूल निवासी	पृ. सं.
3.	सतीश	श्रीकृष्ण	हरितस	गोकुल (जयपुर)	122
	शांडिल्य				
1.	चिन्तामणि	गिरजाप्रसाद	शांडिल्य	विरसिंहपुर	123
2.	राजेन्द्र	"	"	"	"
3.	भूपेन्द्र	"	"	"	"
4.	देवेन्द्र	"	"	"	"
5.	संजीव	नौरंगी प्रसाद	"	"	"
6.	राजीव	"	"	"	"
7.	राजेन्द्र	कृष्णदत्त	"	सिमरिया	124
8.	देवेन्द्र	"	"	"	"
9.	राजेश	"	"	"	"
10.	अनिल	"	"	"	"
11.	शिवकुमार	रविदत्त	"	"	"
12.	ओमप्रकाश	"	"	"	"
13.	श्रीप्रकाश	"	"	"	"
14.	प्रेमदत्त	लक्ष्मीशंकर	"	"	"
15.	रमेश	प्रेमदत्त	"	"	"
16.	दीपक	"	"	"	"
17.	हरिप्रकाश	बाबूलाल	"	"	"
18.	सचिन	"	"	"	"
19.	मोहनलाल	लक्ष्मीशंकर	"	"	"
20.	आनन्द	मोहनलाल	"	"	"
21.	हरिदत्त	लक्ष्मीशंकर	"	"	"

क्र. सं.	गोत्र	अवंटक	सांस्थानिक परिचय
1.	भारद्वाज	(i) नेत	अजयगढ़, मैहर, बांदा, गोरहार, टीकमगढ़, चित्रकूट, सागर, कोटा, नाथद्वारा, विलहरा, मिर्जापुर, बसेरी, मथुरा, जयपुर, बरेली।
		(ii) वाजपेयी	नयाकिला, दतिया, टीकमगढ़, सागर, बिजावर।
2.	आत्रेय	(i) द्राविड़ा गोस्वामी	बीकानेर और महापुरा, कोटा, मधुवन।
		(ii) कवीश्वर	बांदा, अजयगढ़, दतिया, जयपुर, रामपुर, रायपुर, जबलपुर।
		(iii) बागरोदी	जयपुर, मुंबई, अलवर, बृजनगर, नाथद्वारा, कोटा, झालावाड़, वडोदरा, गोकुल।
		(iv) द्राविड़ा	कोटा, नाथद्वारा
		(v) कठोडी	लुप्तवंश।
3.	गौतम	(i) सिमरी	नोहरा, रेवई, बीकानेर, चित्रकूट, सिवाड़, झिलाय, बालेर, वृन्दावन, जयपुर, नरी, ऊँचागाँव।
		(ii) चक्रवर्ती	लश्कर, ग्वालियर, मुंबई, अहमदाबाद, जयपुर।
		(iii) देवर्षि	जयपुर, नाथद्वारा, दिल्ली, मुंबई।
4.	श्रीवत्स	(i) पोतकूर्चि	कांकरोली, नागपुर, भोपाल, सागर, जयपुर, रायपुर, टीकमगढ़।
		(ii) भदरसा	ऊँचागाँव।
		(iii) महापात्र	लुप्तवंश।
5.	कौंडिन्य	(i) करंजी	वृन्दावन (षड्भ्रात्), मथुरा, कोटा, जहानाबाद, कानपुर, मुंबई, अहमदाबाद, वेट, नाथद्वारा।
		(ii) वाशिष्ठ	बीकानेर (झिलाइया), बीकानेर (वांदास्थ)।
		(iii) दीक्षित	टीकमगढ़।

क्र. सं.	गोत्र	अवंटक	सांस्थानिक परिचय
6.	मुद्गल	(i) षड्भ्रातृ	वृन्दावन (करंजी), कांकरोली, मथुरा, लखनऊ, खुर्जा, लश्कर, कामवन, दग्धा, बीकानेर अजयगढ़।
7.	काश्यप	(i) रेही (ii) त्रिग्रही (iii) करम्भा (iv) ज्ञान्ज्ञेय (v) मठपति	चन्दोसी, कोटा, गोकुल, घाटा, काशी, नाथद्वारा, अहमदाबाद, नासिक, मण्डालिया, चित्रकूट। मथुरा, कोटा। नाथद्वारा। मुंबई। लुप्तवंश।
8.	लौहित	अबोटी	भोपाल, सागर।
9.	कौशिक	गोष्ठीशाल	अहमदाबाद।
10.	हरतस	(i) पालगुल्ल (ii) पेद्दीभोटला (iii) मेडूरी (iv) चिन्तलपाटी	कामवन। सूरत। नाथद्वारा। कामवन।
11.	बाधूलस	पञ्चनदी	मथुरा, कोटा।

तैलंग जाति के गौरव

कान्य कुब्ज कॉलेज, कानपुर के भूतपूर्व प्राचार्य श्री रामकृष्ण तैलंग एम. ए., एल. टी. द्वारा तैयार किया गया यह शोध पूर्ण आलेख है। तैलंग जाति के पूर्व एवं वर्तमान गौरव पुरुषों का यह आलेख सजातीय बन्धुओं की जानकारी के लिये अत्यन्त महत्वपूर्ण है। यह इतिहास आलेखन की सामग्री है। और भविष्य के लिये मार्ग दर्शन भी है।

सम्पादक

भ्रान्तियों के निवारणार्थ जातीय इतिहास की उपयोगिता – भारत के निर्माण में जिन जाति समूहों ने सकारात्मक योग दिया है उनमें तैलंगों की भूमिका महत्त्वपूर्ण है। उदाहरणार्थ – दार्शनिक क्षेत्र में शुद्धाद्वैत मत ने उत्तरमध्यकालीन भारत में भक्ति के प्रवाह को "**पुष्टि**" प्रदान की। इससे शंकराचार्यजी के अद्वैत को नई दिशा मिली और कृष्णभक्ति का नया प्रवाह चला। भाषा के क्षेत्र में ब्रज की क्षेत्रीय बोली सम्पूर्ण भारत की काव्य भाषा बनी। अष्टछाप के सूर, नन्द आदि ने दैन्य की "**घिघियाती प्रवृत्ति**" को सखाभाव के नये कलेवर में बदला। भारतीय चित्रकला, संगीत, मूर्ति, सज्जा व सेवा को नया आकाश दिया। आदि–आदि।

मध्यकालीन भारत में संस्कृत भाषा के प्रकाण्ड पण्डित, साहित्य सृष्टा व तंत्र–मंत्र–ज्योतिष–वैद्यक आदि तैलंग जातीय पुरुषों ने मध्यभारत, राजपूताना, गुजरात आदि राजघरानों में अपना गुण–गौरव स्थापित किया। ब्रिटिश राज में अनेक तैलंग–भट्ट–गोस्वामी पूर्व पुरुषों ने ऊँचे पद धारण कर शासन–प्रशासन–न्याय–राजनीति आदि में भी योगदान दिया। अतः उचित है कि उत्तर भारत में स्थापित तैलंग जाति के साहित्य समाज आदि में किये गये प्रदाय का लेखा तैयार कर नई पीढ़ी को जातीय गौरव से अनुप्राणित किया जाय। तैलंग का जातीय इतिहास आज की आवश्यकता है। स्मरण कराना उचित होगा कि स्थानीय इतिहास का महत्व समझते हुए ब्रिटिश प्रशासकों ने "**गजेटियर**" जिलेवार तैयार कराये थे। उनमें भी यथास्थान तैलंग पूर्व पुरुषों के उल्लेख मिलते है, इन्हें संकलित कर पुस्तकीय रूप देना चाहिए। विदित हो कि यूरोप के छोट–छोटे कस्बों, पूजाघरों, संग्रहालयों के व्यवस्थित इतिहास लिखे जाते हैं और राष्ट्रीय इतिहास के लेखकों को इनसे पर्याप्त लाभ होता है।

तैलंग जाति ने दक्षिण से उत्तर में आकर राजनीति से प्रशासन, धर्म, विद्या, कला–न्याय आदि आदि को दिशा देने वाले जो तेजस्वी व योग्य पुरुष दिये उन पर हमें गर्व करना उचित है तथा इससे राष्ट्रीय गौरवबोध में कोई व्याघात नहीं होता है। इस कार्य को संस्था बनाकर तथा व्यक्तिगत तौर पर भी करना उचित है, एक कारण ओर है – हमारे पूर्व पुरुषों ने हिन्दी, ब्रजभाषा आदि को स्थानीय तथा अन्यान्य कारणों से जिस कुशलता से अपनाया, उसका उल्लेख करना साहित्य के इतिहास लेखकों के लिये अनुपेक्षणीय या

अनिवार्य था। किन्तु उन्हें भट्ट–तैलंग–आन्ध्र, देवर्षि–रेही–नेत, गोस्वामी आदि के विषय में स्पष्ट ज्ञान नही था। फलतः रामचन्द्र शुक्ल, डा. धीरेन्द्र वर्मा, बाबू श्यामसुन्दर दास, मिश्र बन्धु आदि के ग्रन्थों में **'भ्रान्तियों'** का प्रवेश हो गया। धन्य हो पं कण्ठमणिजी का, उन्होंने यथा समय इनको इंगित करते हुए पत्राचार करके भ्रान्तियों का कुछ सीमा तक सुधार कराया। कांकरोली का इतिहास आदि सहित , तैलंग जाति के वंशवृक्षों में इसका उल्लेख हमारी महिमा को प्रदर्शित करता है। उत्तर भारत के बद्रीनाथ से बंगलूरू, पूना आदि तक में तैलंग परिवारों की वर्तमान पीढ़ी में अन्तर्प्रान्तीय–अन्तर्जातीय विवाहों के कारण आई हुई कुलवधुओं को तैलंग जाति के महत्व–महिमा का बोध नहीं है। लिखित इतिहास इस कमी को पूरा कर सकता है।

एक कारण और है कि आन्ध्र से आये जाति पुरुषों में विद्यमान स्थानीयता पर आधारित भेद का तत्व समझना आवश्यक है, यथा गोस्वामी–गोकुलस्थ, मथुरास्थ आदि का पंक्ति–भेद कब कैसे हुआ? हमने अपने पुरखों से सुना था कि महाप्रभु वल्लभाचार्यजी ने सम्प्रदाय प्रचारार्थ और उनके पिता श्री लक्ष्मण भट्टजी ने यात्रार्थ अथवा रानी दुर्गावती के यज्ञ–याग हेतु कर्मकाण्ड में निपुण दक्षिण से तैलंग परिवार के मुख्य पुरुषों को लाकर यहाँ बसाया, सुविज्ञात है कि श्रीकृष्णभट्टजी शत सोमयज्ञों के पूर्ण होने के उपलक्ष्य में सं. 1534 में काशी यात्रा पर निकले उनके साथ पचासों भट्ट पूर्व पुरुष आये थे। अथवा महाप्रभुजी ने तीन बार भारत यात्रायें सं 1548–67 के मध्य की। इनमें बद्रीनाथधाम से गोवा और गुजरात से जगन्नाथपुरी तक पचासों भट्ट परिवार सम्मिलित थे और वही उनकी 84 बैठकों, अडैल, गोवर्धन ब्रज आदि में बसे। सेवाकार्य सहित, भक्ति, सम्प्रदाय ज्ञान, ज्योतिष कर्मकाण्ड, तंत्रज्ञान, गुरुमंत्र आदि के क्षेत्र में उनकी निपुणता से उन्हें स्थानीय स्वीकृति प्राप्त हुई। यह भी कहा गया है कि महाप्रभुजी के पुत्र गोपीनाथजी के समय सं. 1590 में जब श्रीनाथजी की सेवा से बंगालियों को हटाया गया तो भट्टों ने इसका विरोध किया। फलतः जातीय जनों को सदा के लिए श्रीनाथजी की सेवा से पृथक होना पड़ा। (कांक. इति. कंठमणि पृ. 98) दूसरी बार गो. विट्ठलनाथ को अकबर ने गोकुल गाँव की गोचर भूमि का सरकारी आदेश किया तथा उन्हें **"न्यायाधीश"** का पद भी दिया (सं. 1624–34) तब 1628 सं. में उन्होंने गोकुल ग्राम बसाया। तभी रानी दुर्गावती ने मथुरा में उनके लिए **"सतघरा"** का भवन बनवाकर दिया।

प्रब्रजन के सम्बन्ध में तैलंगों के दग्धा आदि में बसे पुराने परिवारों में यह कथा प्रचलित है कि किसी बड़े यज्ञ के कर्मकाण्ड पौरोहित्य आदि में तीन हजार तैलंग जन उत्तर भारत आये और यज्ञोपरान्त नाना राजघरानों के अतिथि बनकर उनके अनुग्रह से विविध राज परिवारों में सम्मान पाकर बस गए। देवर्षि परिवारों के विषय में लिखा है कि अकबर द्वारा प्रयाग विजय के कारण देवर्षि परिवार अडैल में अपने आवास छोड़ने को विवश हुए थे। अस्तु उत्तर भारत में अवस्थित तैलंग वंश की सकारात्मक भूमिका का क्रमबद्ध

इतिवृत्त समय की आवश्यकता है।

तैलंग जाति के प्रसिद्ध गौरव पुरुष हिन्दी साहित्येतिहास में उल्लिखित नामों की तालिका –

तैलंग जाति ने विद्या, कला, संगीत, प्रशासन, पौरोहित्य, सम्प्रदाय के प्रचार-प्रसार, प्रवचन, ज्योतिष, वैद्यक शास्त्रज्ञान आदि-आदि प्राय: सभी क्षेत्रों में अपने व्यक्तिगत तथा कृतित्व से सम्मान, राज्याश्रय, भू-स्वामित्व, वृत्तियाँ, उपाधियाँ आदि प्राप्त की है। विशेषत: उत्तर मध्यकाल 1500-1900 ई. के मध्य उनका योगदान साहित्येतिहास में उल्लिखित हुआ है, वर्तमान में भी उन्होंने प्रशासन शिक्षा, विद्या, कला, साहित्य (संस्कृत-हिन्दी आदि) में सर्वोच्च सम्मान अर्जित किया है। इनकी विषय वर्ग क्षेत्रानुसार सूची आवश्यक है। यहाँ हम हिन्दी, ब्रजभाषा (मुख्यत: काव्य) की तालिका दे रहे है। यह भी सूच्य है कि यह सूची प्रथम प्रयास व सीमित संसाधनों में बनी है, जातीय बन्धु तथा बहनें इसे अपने संज्ञानानुसार शुद्ध व पूर्ण करें, यही कामना है। यह तालिका बनाने में हमने इन ग्रन्थों व श्रोतों का उपयोग किया है।

ग्रन्थ सूची : **हिन्दी साहित्य कोश** (भाग 1-2) सम्पादक – धीरेन्द्र वर्मा, ज्ञानमण्डल, वाराणसी 1986 **हिन्दी साहित्य का इतिहास,** नागरी प्रचा. सभा, काशी सं. 2000, **हिन्दी साहित्य का इतिहास,** डा. नगेन्द्र मयूर पेपर वैक्स, दिल्ली 2000 ई. **हिन्दुत्व,** लेखक – रामदास गौड़, ज्ञानमण्डल लिमिटेड, वाराणसी 1993 ई., **कांकरोली का इतिहास**, पो. कण्ठमणि शास्त्री, विद्या विभाग, कांकरोली सं. 1994 ई., **कल्याण कल्पतरु** (अंग्रेजी), गीता प्रेस, गोरखपुर (उ.प्र.) तथा आन्ध्र-तैलंग-भट्ट परिषद, जहानाबाद शाखा के प्राचीन प्रपत्र 1900-40 ई. के मध्य निजी संग्रह हेतु **"सुकवि"** काव्य पत्रिका, कानपुर 1930 ई. (फाईल) सम्पादक **'स्नेही'** संस्कृत साहित्य इतिहास-पं. बलदेव उपाध्याय, शारदा निकेतन, वाराणसी सं. 2001, अष्टछाप और वल्लभ सम्प्रदाय-डा. दीनदयाल गुप्त, हि. सा. सम्मे., प्रयाग सं. 2004 भाग-2 ।

पं. रामकृष्ण तैलंग (पूर्व प्राचार्य)
50/195, नौघड़ा, कानपुर-208001 दूरभाष : 0512-2377844

1. उल्लेख है कि महाप्रभुजी सं. 1547 में ओरछा गये। वहाँ उन्होंने **"घट सरस्वती"** नामक तांत्रिक को नतमस्तक किया, तब राजा ने उनसे **"गुरु मंत्र"** देने की प्रार्थना की। महाप्रभुजी ने निषेध करते हुए कहा कि आपके यहाँ पहले से विद्यमान **"विद्यादेव भट्ट"** को गुरुपद देवें। यह वंश आज भी वहाँ **"गुरु"** पद पर है, अर्थात् ये महाप्रभुजी के आने से पूर्व से ओरछा में प्रतिष्ठा प्राप्त थे।
2. तथैव गोस्वामी विट्ठलनाथजी का दूसरा विवाह रामकृष्णभट्ट की पुत्री से हुआ। यह परिवार वहाँ पहले से प्रतिष्ठित था। (सं. 1624 में)

तैलंग जाति के प्रसिद्ध पुरुष

क्र. सं.	नाम	वर्ष (संभावित)	स्थान	रचनायें विशेष
1.	लालकवि गोरेलाल	1658 ई.	दग्धा	छत्र प्रकाश
2.	लोकनाथ	1735 सं.	दग्धा	--
3.	शिवनाथजी	--	दग्धा	वैद्यक ग्रन्थ
4.	श्रीमती परमा देवी	--	दग्धा	--
5.	गङ्गाधर 'शास्त्री'	1897 सं.	दग्धा	विद्वन् मण्डल [illegible]
6.	बिहारीलाल भट्ट	1946 सं.	बिजावर	साहित्य सागर
7.	गोपकवि	1716 ई.	औरछा	रामचन्द्र भूषण रामचन्द्राभरण
8.	माधव कवि	1746 ई.	औरछा	माधवाब्धि (स.)
9.	करन कवि भट्ट	1738 ई.	पन्ना	साहित्य चन्द्रिका (बिहारी सत की टीका)
10.	कुमार मणि भट्ट	1665 ई.	दतिया	रसिक रसाल रसिक रंजन, सप्तशती
11.	श्रीकृष्ण भट्ट काव्यकला निधि	1668 ई.	बूँदी	साम्भर युद्ध जयसिंह गुण सरिता
12.	कृष्णदेव भट्ट देवऋषि (2)	1712 ई.	बिन्दवती	श्रृंगार रस माधुरी
13.	मोहनलाल भट्ट	1750 ई.	बाँदा	(पद्ममाकर के पिताजी) फुटकरकाव्य
14.	पद्माकर भट्ट तैलंग	1753 ई.	बाँदा	जगद्विनोद रामरसायन, गंगालहरी
15.	रामनेत तैलंग	--	टीकमगढ़	वीरसिंह-चरित्र टीका
16.	पं. पीताम्बर कवीश्वर	--	टीकमगढ़	फुटकर
17.	भट्ट श्री रमानाथ शास्त्री	1936 सं.	नाथद्वारा	सुबोधनी हिन्दी टीका
18.	श्रीव्रजनाथ शास्त्री	--	नाथद्वारा	महाप्रभुजी की जीवनी (अंग्रेजी)
19.	भट्ट श्रीमथुरानाथ शास्त्री	--	जयपुर	साहित्य वैभवम् आदि (हि. सं.)
20.	कमलाकर 'कमल'	--	जयपुर	उद्धव शतक, कविमहाकाव्य
21.	चिम्मनलाल गोस्वामी	--	गोरखपुर	कल्याण कल्पतरु (अंग्रेजी संपादक)
22.	प्रो. हृषीकेश शर्मा	--	वर्धा	राष्ट्रभाषा (तेलगु-हिन्दी पाठ्य पुस्तक)
23.	गोपालशर्मा		कांकरोली-दिल्ली	हिन्दी शब्दकोष के निर्माता
24.	प्रो. कण्ठमणि शास्त्री	1956 सं.	कांकरोली	कांकरोली का इतिहास [illegible]
25.	प. लक्ष्मीकिशोर तैलंग	1973 ई.	कानपुर	फुटकर काव्य, बारहमासा
26.	बालकृष्णदेव तैलंग	--	टीकमगढ़	समस्यापुर्ति आदि
27.	डा. भालचन्द्र तैलंग	--	बाँदा	पद्ममाकर शोध सं. (रामरसायन की टीका)
28.	नूतनकुमार तैलंग	--	भोपाल	अंग्रेजी कविताएँ
29.	रत्नगर्भ तैलंग (देर कवि)	--	कानपुर	साँझी, फुटकर लेख रोटी सतसई
30.	प्रो. भास्कर तैलंग	--	होशंगाबाद	हाईकू काव्य संग्रह
31.	श्री हरिकृष्ण तैलंग	1934	भोपाल	बाल कविता के प्रसिद्ध कवि
32.	कलानाथ शास्त्री	1936	जयपुर	भारतीय संस्कृति संस्कृति के वातायन
33.	श्रीमती माधुरी शास्त्री	--	जयपुर	बाल कहानियाँ
34.	श्रीमती शकुन्तला तैलंग	--	जयपुर	शकुन की 21 कविताएँ
35.	शंकरराव तैलंग (गिरीश)	--	रेवई	फुटकर काव्य रचनाएँ
36.	कृष्णकान्त तैलंग	--	जबलपुर	बाल साहित्य लघु कथाएँ, बालगीत
37.	ज्ञानदेव	--	टीकमगढ़	औरछा के राजगुरु वंश में दोनों बन्धु साहित्यिक
38.	कपिलदेव	--	टीकमगढ़	रुचि के थे। और बुन्देली भाषा में कविता करते थे।
39.	रामकृष्ण तैलंग (शिक्षा शास्त्री)	--	कानपुर	कानपुर का इतिहास आदि
40.	बागरोदी बलदेव शर्मा 'सत्य'	--	नाथद्वारा	पुष्टिरसाल, आरती स्वरूप
41.	पण्डितराज जगन्नाथ	1590-1685	दिल्ली-काशी	गंगालहरी
42.	बालकृष्ण राव तैलंग	--	रेवई-जयपुर	भारतीय संस्कृति एवं पर्यटन
43.	गदाधर भट्ट	1930	झालावाड़	काव्य वैभवम्, हमारे पुरोधा
44.	अन्यान्य			

तैलंग जाति के प्रसिद्ध पुरुष (साहित्यिक परिचय)

1. लालकवि श्री गोरेलाल (मुद्गल गोत्र) – आपका जन्म 1658 में हुआ। इनका समय 1707 तक रहा। ये दग्धा के थे। इनके पूर्वजों को रानी दुर्गावती के समय (1478 ई.) राज्याश्रय मिला था। लालकवि को छत्रसाल (1671–1731) ने छः गाँव दिये थे। जिनके कारण इनका वंश छभैया कहलाया था। दग्धा में जन्में कवि ने छत्रसाल की लोहागढ़ विजय का वर्णन छत्र प्रकाश काव्य ग्रन्थ में किया। दोहा, चौपाई, छन्द का प्रयोग करते हुए कवि ने ब्रजभाषा के साहित्यिक रूप का सफल प्रयोग किया है। इतिहास और काव्य दोनों दृष्टियों से इनकी रचना सफल मानी जाती है। लाल कवि के अन्य ग्रन्थ हैं – छत्र प्रशस्ति, छत्रछाया, छत्र कीर्ति, छत्र प्रकाश प्रकाशित है। शेष अप्राप्य है। (सन्दर्भ हिन्दी साहित्य कोष ज्ञान मण्डल, 1986 पृष्ठ 550) महाकवि लाल तक का वंश विवरण गतांक से आगे इस प्रकार है। इनके चार पुत्र हुए। लोकनाथ, बैजनाथ, रमानाथ, विश्वनाथ।

टिप्पणी – उक्त लालकवि को कवि वंश मानना चाहिए। लाल कवि के एक पुत्र लोकनाथ जी भी संभवतः कवि थे।

2. श्री लोकनाथ जी (मुद्गल गोत्र) – इनका जन्म सं. 1735 के लगभग हुआ। ये दग्धा निवासी थे। सूचना – साहित्यिक इतिहास में इनका उल्लेख नहीं मिलता है। किन्तु हमारे संग्रह में एक तैलंग भट्ट परिषद, जहॉनाबाद में उपलब्ध विवरण के अनुसार लालकवि दग्धा तथा अन्य श्री शिवनाथजी उनकी पत्नी श्रीमती परमा देवी तथा गंगाधर शास्त्री का परिचय मिलता है। उसे यथावत दिया जा रहा है। ज्ञात होता है कि यह उक्त परिषद की कोई पत्रिका का गतांक से अगला अंक है। यह पत्रिका संभवतः हस्तलिखित रही होगी।

3. श्री शिवनाथ जी (मुद्गल गोत्र) – ये महान कवि थे। पवई (दग्धा) के पास उनकी वैद्यगी खूब चलती थी। इन्होंने सैकड़ों को आरोग्य प्रदान किया और द्रव्योपार्जन किया। कुछ दिनों बाद अनेक कारणों से दग्धा छोड़कर आप काशी में शिवराजघाट पर जा बसे।

4. श्रीमती परमादेवी (मुद्गल गोत्र) – आप श्री शिवनाथ जी की पत्नी थी। श्याम सखी के नाम से कविताएँ लिखती थी। ये विदुषी तथा हरि भक्त थी। इन्होंने कविताएँ एवं भजन लिखे हैं। इनके लेखन का समय 1940 ई. के मध्य का रहा।

5. श्री गंगाधर शास्त्री (मुद्गल गोत्र) – इनका विद्यमान काल 1897 सं. था। ये दग्धा के निवासी थे। ये न्याय–वेदान्त–मीमांसा–ज्योतिष आदि विषयों में परम निपुण थे। ये बहुधा नाथद्वारा में रहते थे। विद्यार्थियों को व्याकरण, न्याय आदि पढ़ाते थे। कई गोस्वामी लोग इनके शिष्य थे। इनके बनाए हुए ग्रंथों के नाम इस प्रकार हैं। 1. (अस्पष्ट) 2. शेखर टीका पर भाष्य 3. उप सर्गीथ (निश्चय) श्री सुबोधनी टीका 4. प्रक्रिया गंगाधर लिखित 5. गंगाधर बोधिनी 6. वेणुगीत की सुबोधिनी छाया 7. गोपेश्वर कृत भक्तिरत्न प्रभा (श्री गंगाधर लिखित), 8. भारत तरंगणी गीता उपोद्घात 9. वाक् सुधा टीका 10. गोविन्द सुधा के अधिकारी 11.प्रश्नावली

टिप्पणी – उक्त सूची में विद्वन् मण्डन गोस्वामी विट्ठलनाथ कृत प्रसिद्ध है जिसे स्वर्णाक्षरों में इन्होंने प्रतिलिपि की है। सभी ग्रन्थ अप्राप्य है। (तैलंग भट्ट परिषद के पुराने प्रपत्र 1900–40)

6. श्री विहारीलाल भट्ट (भारद्वाज गोत्र) 1989 ई. बिजावर (बुन्देल खण्ड)– परम्परागत कवि श्रेणी में प्रतिष्ठित श्री भट्टजी का जन्म कविवंश में हुआ था। इनके पितामह भी कवि थे। काव्य गुरु श्री हनुमान प्रसाद को इन्होंने अपना गुरु बनाया। बिजावर नरेश सवाई महाराजा भगवंत सिंह ने इनकी काव्य प्रतिभा का सम्मान करते हुए इन्हें राजकवि नियुक्त किया था। तत्कालीन अन्य राजाओं ने भी इनको सम्मान दिया। सन् 1937 में प्रकाशित इनका ग्रन्थ

साहित्य सागर रीति साहित्य में महत्वपूर्ण माना जाता है। इस ग्रन्थ में विषय सम्बन्धी नवीनता नहीं है, तथापि नायिका भेद का वास्तविक तत्व आध्यात्म के रूप में मानकर तत्वद् विवेचन किया है। साहित्य सागर दो भागों में है। यह दो हजार छन्दों में और 600 पृष्ठों का है। ये आचार्य कवियों में माने गये है। इनकी ब्रजभाषा में यत्र-तत्र बुन्देल खण्ड के स्थानीय शब्द भी हैं। (सन्दर्भ- हि. सा. को.-2 ज्ञा.1986 पृ. 387, 625)

7. श्री गोपकवि (गौतम गोत्र) 1716 ई. औरछा (टीकमगढ़) – गोप कवि औरछा महाराज पृथ्वीसिंह देव के आश्रित थे। वहाँ के आराध्य रामराजा के भक्त थे। इसीलिए इनके तीन रीति ग्रंथों के नाम है - रामअलंकार, रामचन्द्र भूषण, रामचन्द्राभरण राम पर है। इन्होंने अपने ग्रंथों में रामजीवन सम्बन्धी उदाहरण दिये हैं। कवि ने अपने जीवन परियच में पूर्वज नन्दनाथ दीक्षित भट्ट तथा पिता का नाम जदुनाथ कवि बतलाया है। हिन्दी के साहित्य समीक्षकों के अनुसार गोपकवि द्वारा दी हुई अलंकार की परिभाषा को बहुत स्पष्ट व सार्थक मानना चाहिए। इन्होंने रीति ग्रन्थों में दोहा, छन्द का प्रयोग करते समय ऊपर की पंक्ति में लक्षण और नीचे रामचन्द्र परिवार सम्बन्धि उदाहरण दिये है। इनकी कविता सोद्देश्य प्रधान तथा भक्तिपूर्ण ब्रजभाषा में है। (हि. सा. को. -2 ज्ञान पृ 146-47)

8. श्री माधव कवि (गौतम गोत्र) सन् 1746 औरछा (टीकमगढ़) – इनके जीवन तथा काव्य पर विस्तृत सूचना अप्राप्त है। सन् 1930 सितम्बर में कानपुर के सुकवि में धूलभरे हीरे नामक स्तम्भ के अन्तर्गत एक लेख छपा था-महाकवि माधवजी। यह पत्रिका पूर्णत: कविता की थी और एक प्रकार से ब्रिटिश सत्ता की विरोधी थी। महाकवि माधव लेख के द्वारा लेखक पं. जयकृष्णदेव तैलंग बी.ए. ने प्राय: विस्मृत महाकवि की काव्य चर्चा उठाई थी। इनके अनुसार इस कवि का ग्रन्थ माधवाब्धि था। माधव कवि औरछा के देव वंश के थे। इस लेख से ज्ञात होता है कि महाकवि की 1764 ई. में विद्यमानता थी।

9. श्री करनकवि भट्ट (1738) पन्ना (म. प्र.) – इनका विवरण बहुत कम मिलता है। इनकी एक रचना बिहारीसतसई की टीका साहित्य चन्द्रिका है। ये पन्ना नरेश राजा सभासिंह हृदयसाहि के द्वारा सम्मानित कवि थे। सम्भवत: रानी दुर्गावती के समय में या इनसे पूर्व भी इनके पूर्वज तैलंग भट्ट परिवारों को गाँव बाँटें गये थे। (1587-91) उनमें इनका कुटुम्ब रहा होगा। बिहारी की सतसई की रचना 1662 ई. में मानी जाती है। इस ग्रन्थ की पहली टीका 1662 में दूसरी 1680 में और तीसरी अनवर चन्द्रिका के नाम से 1714 में बनी। इनकी टीका 1738 में चौथी या पांचवी मानी जाती है। भट्टजी ने साहित्य चन्द्रिका में अन्य टीकाकारों की कमियों को दूर किया। इनके विषय में तथा वंश परिचय के बारे में पूर्ण विवरण अप्राप्य है। पन्ना के लोग सम्भवत: इन पर प्रकाश डाल सकते है। भट्ट जी ने बिहारी का अर्थ देकर उत्तरवर्ती टीकाकारों का बड़ा हित किया। (हि. सा. कोष 2 ज्ञा. 1986 पृ. 69 व 612)

10. श्री कुमारमणि भट्ट (श्रीवत्स गोत्र) 1665 ई. दतिया-सागर-गोकुल – रानी दुर्गावती ने कुमारमणि के पूर्वजों को कई गांव दिये थे। इनके पिता श्री हरि वल्लभ संस्कृत और ब्रजभाषा के विद्वान् कवि थे। गाथा सप्तसतीकार गोवर्धनाचार्य जी इनके पूर्वज थे। दतिया में इनका वंश प्रतिष्ठित था। इन्होंने तीन ग्रंथ लिखे-रसिक रंजन, सप्तसती तथा रसिक रसाल। इनके बारे में रामचन्द्र शुक्ल ने लिखा था -कुमार मणि भट्ट -इनका कुछ वृत्त ज्ञात नहीं है। (हि. सा. इ. पृ 279) तत् पश्चात् कण्ठमणिजी ने रसिक रसाल का संस्करण विद्या विभाग कांकरोली से निकाला। इनकी पुस्तक नागरी प्रचारणी सभी की खोज रिपोर्ट में स्थान पा चुकी थी। इनके रीति निरूपण की सबसे बड़ी विशेषता है - स्पष्ट सरल भाषा में रीति का विवेचन करना। यह उनकी काव्य कौशल व प्रौढ़ता का परिचायक है। ये रीति युग के श्रेष्ठ कवियों में से है। इनकी अन्य विशेषता है कि वात्सल्यरस को इन्होंने दसवें रस के रूप में प्रतिष्ठा देने का सफल

प्रयास किया। इन्हें डा. नगेन्द्र के इतिहास में रूप विधानानुसार मुक्तक काव्यकारों में माना गया है।

11. श्रीकृष्ण भट्ट काव्यकला निधि (गौतम गोत्र) 1968–1743 ई. बूंदी, जयपुर – इनकी विषय सामग्री भी पूर्णतः उपलब्ध नहीं है। ये बूंदी नरेश महाराव बुद्धसिंह के आश्रय में रहे और फिर वहाँ से महाराजा जयसिंह (1699–1747) के आग्रह पर जयपुर में बस गये। जयसिंह जी ने सम्मान, गाँव व उपाधि काव्यकलानिधि इन्हें दी। ये मन्त्र शास्त्र के ज्ञाता थे। संस्कृत काव्य रचना में भी निपुण थे। इन्होंने ब्रजभाषा में सांभर युद्ध लिखा जो 1734 ई. में सैय्यद भाईयों एवं महाराजा जयसिंह के मध्य हुआ था। इनके अन्य ग्रंथ है जाजय युद्ध, बहादुर विजय, जयसिंह गुण सरिता इनके ग्रंथों की सराहना की गई है। इसमें इतिहास पक्ष सटीक है। श्रीकृष्ण भट्टजी संस्कृत काव्य रचना के कुशल रचनाकार थे।

12. श्रीकृष्ण भट्ट देवऋषि (गौतम गोत्र) 1712 ई. (विन्दवती) – डा. नगेन्द्र ने बतलाया है कि विन्दवती के राजा बुद्ध सिंह की आज्ञा से इन्होंने शृंगाररस माधुरी लिखा। इनके अन्य ग्रंथ है अलंकार कलानिधि तथा रसतरंगणी। इनमें श्रृंगार का विवेचन, सविस्तार वर्णन किया है। श्रृंगार रस माधुरी में रीतिशास्त्र का विवेचन मधुर पदावली में किया गया है। भट्टजी काव्य के साथ संस्कृत के भी विद्वान् थे।

13. श्री मोहनलाल भट्ट (आत्रेय गोत्र) 1750 ई. बाँदा–पन्ना–जयपुर–नागपुर– भट्टजी पद्माकर के पिता थे। आप हिन्दी–संस्कृत के विद्वान थे। मध्ययुगीन परम्परा के अनुसार आप राज्याश्रयों के अधीन रहे, तथा उनका प्रशस्ति वर्णन छन्दों में किया। इन्हें कविराज शिरोमणि की उपाधि मिली थी। पन्ना के राजा हिन्दूपति ने इनकी कविताओं पर प्रसन्न होकर कुछ गाँव भेंट किये थे। नागपुर के अप्पा साहब रघुनाथ राव के यहाँ भी इनका सम्मान हुआ था। इनका वंश कवीश्वर वंश कहलाता है।

14. श्री पद्माकर भट्ट (आत्रेय गोत्र) 1753–1833 – इनका जन्म बाँदा में हुआ तथा देहान्त कानपुर में हुआ। ये उच्चकोटि के कवि तथा तुलसीदासजी के समान भाषा की विविधता के निदर्शक माने गये। इन्हें अपार लोकप्रियता मिली। पद्माकर जी को पन्ना नरेश ने अपना गुरु बनाया और कई गाँव भेंट किये। ये सुगरा के नीनेसिंह के मंत्र गुरु थे। इनकी दीक्षा मथुरा में हुई थी। बाँदा के अनूप गिरी गोसांई उपनाम हिम्मत बहादुर के सम्मान में हिम्मत बहादुर गिरदावली लिखी। उदयपुर के महाराणा भीमसिंह के आदेश पर गणगौर मेला पर रचना करके इन्हें अपार धन मिला था। ये कई नरेशों के आश्रय में भी रहे। इनको सम्मान, जागीरें खूब प्राप्त हई। ये ठाटबाट के साथ पालकी एवं हाथी की सवारी करते थे। बाँदा में इनका पारिवारिक मन्दिर था। इनके द्वारा लिखित रामरसायन का सम्पादन डा. भालचन्द तैलंग ने किया। इनके रचें ग्रन्थ हैं – पद्माभरण, जगद्विनोद, प्रबोध पचासा आदि। गंगालहरी इनकी अन्तिम रचना कानपुर प्रवास में 1827–33 के मध्य हुई। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने इनकी भाषा की लाक्षणिकता तथा लोकप्रियता की सराहना की है।

15. श्री रामनेत तैलंग (भारद्वाज गोत्र) – टीकमगढ़ 1904 के लगभग वीरसिंह देव चरित्र केशवदास की प्रसिद्ध रचना का सम्पादन करके औरछा नरेश की तरफ से छपवाया। इनका उल्लेख मिश्र बन्धुओं ने साहित्य कोष में किया है। इनका सम्पादन कौशल तथा टीका में निपुणता इनकी रचनाओं में लक्षित है। कोषकार्य की टिप्पणी से प्रकट होता है कि बुन्देली भाषा के शब्दों के अर्थ और 1684 छन्दों की व्याख्या इनकी महत्वपूर्ण देन है।

16. पं. पीताम्बर तैलंग कवीश्वर (भारद्वाज गोत्र) 1965 ई. टीकमगढ़ – ये राजकवि थे। इन्हें पुराने कवियों, सवैया, घनाक्षरी के टकसाली छन्द उन्हें कण्ठस्थ थे। इन्हें राजा की ओर से माफी की जमीन दीगोड़ा में मिली थी। इनकी कविताएँ कानपुर के सुकवि मासिक पत्रिका में छपी है। इनका कोई पुत्र

नहीं था। इनके दामाद कण्ठमणि शास्त्री थे।

17. श्री रमानाथ शास्त्री (गौतम गोत्र) सं. 1936–2000 नाथद्वारा – पुष्टिमार्ग व सम्प्रदाय के सिद्धान्त पक्ष की व्याख्या के लिये हिन्दी साहित्य में इनका उल्लेख है। आप सनातन धर्म तथा पुष्टिमार्ग के उत्कृष्ट व्याख्याता एवं विद्वान् थे। ये देवर्षि परिवार के थे। देवर्षियों के विषय में बताया जाता है कि महाप्रभुजी ने अड़ैल प्रयाग में अपना आश्रम बनाया। और कई सजातीय व्यक्तियों को वहाँ बसाया। उस समय तैलंग जातीय समुदाय का निवास देवरिखिया नामक गाँव कहलाता था। (कांका. इति. पृ 53) देवर्षि परिवार वैदुष्य, शास्त्रज्ञान, संस्कृत व काव्य साहित्य रचना व प्रशासनिक कार्यों में निपुण रहा है। जाति में ये ख्याति प्राप्त है। इनके प्रकाशित ग्रन्थों में सुबोधिनी हिन्दी टीका, अध्यात्म योग, श्रीमद् भागवत गीता, शुद्धाद्वैत सिद्धान्त(तीन भाग में) शुद्धाद्वैत वर्णन व प्राक्ट्य वार्ता आदि हैं।

18. श्री ब्रजनाथ शास्त्री (गौतम गोत्र) नाथद्वारा–जयपुर – आप रमानाथ जी के पुत्र है। इन्होंने हिन्दी में कई ग्रंथ लिखे हैं। अंग्रेजी में वल्लभाचार्यजी की जीवनी लिखी है। इनका श्रीमद्वल्लभाचार्यजी और उनके सिद्धान्त हिन्दी का महत्वपूर्ण ग्रंथ है। इसमें अंग्रेजी में सिद्धान्त चर्चा है। उक्त ग्रंथ सं. 1984 में वैलनाटीय विद्या समिति, बम्बई की ओर से छपा है।

19. भट्ट मथुरानाथ शास्त्री (गौतम गोत्र) – महाराजा संस्कृत कॉलेज में संस्कृत साहित्य के प्राचार्य रहे। इनकी संस्कृत साहित्य रचना का विशाल भण्डार है। इनकी सर्व प्रसिद्ध रचना जयपुर वैभवम् है। कई पत्रिकाओं में लेख प्रकाशित हुए है। इन्होंने संस्कृत पत्र–पत्रिकाओं का सम्पादन भी किया। साहित्य की सभी विधाएँ आपसे अछूती नहीं है। आप कलानाथ शास्त्री के पिता थे। आप देवर्षि कुल के स्वनाम धन्य व्यक्ति थे।

20. श्री कमलाकर 'कमल' (गुरुजी) (आत्रेय गोत्र) जयपुर – रीति कालीन प्रसिद्ध कवि पद्माकर के वंशज है। इनका जीवन कर्मठ व सादगी पूर्ण रहा। आत्रेय गोत्र में ये कवीश्वर वंश के थे। इनकी साहित्य साधना व अध्यापन कार्य सर्वोच्च शिखर पर रहा। हिन्दी साहित्य का अध्यापन कार्य इनकी कर्मठता का द्योतक रहा है। अपने जीवन काल में इन्होंने लगभग 75 हजार विद्यार्थियों को लाभान्वित किया। ये ब्रजभाषा व खड़ी बोली के कवि थे। प्रताप बावनी, उद्धव शतक, अष्टदल इनके काव्य ग्रंथ हैं। कवि महाकाव्य इनका अप्रकाशित ग्रंथ है।

21. श्री चिम्मनलाल गोस्वामी (गौतम गोत्र) 1937 ई. बीकानेर–गोरखपुर– 1937 में नन्ददुलारे बाजपेयी गोरखपुर के गीता प्रेस में रामचरित मानस के शुद्ध पाठ तथा टीका के कार्य हेतु प्रवृत्त हुए थे। उसी कार्य हेतु बीकानेर से श्री चिम्मनलाल गोस्वामी उनके सहयोगी हुए। कल्याण ने जब अंग्रेजी में संस्कृत के शब्दों का अंग्रेजी अनुवाद–सम्पादन कराया तब गोस्वामी जी ने उसका भार अपने ऊपर लिया तथा जीवन पर्यन्त वे कल्याण कल्पतरु अंग्रेजी के सम्पादक रहे। वे सन्त स्वभाव के निरहंकारी भक्त हृदय थे। कल्याण के प्रचार–प्रसार में उनकी निपुणता के कारण उनका बड़ा सम्मान था। वे निष्ठावान वैष्णव, गृहस्थ सन्त थे। गीतादि धर्म ग्रंथों की अंग्रेजी में सटीक टिप्पणी तथा शब्द चयन की सर्वत्र प्रशंसा होती थी।

22. श्री हृषीकेश शर्मा (श्रीवत्स गोत्र) 1900 ई. वर्धा–नागपुर – महात्मा गांधी ने 1936 ई. में वर्धा हिन्दी नगर में प्रसिद्ध संस्था राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा की स्थापना हिन्दी को राष्ट्रभाषा पद देने हेतु गठित की थी। उसके अन्तर्गत तेलगु क्षेत्र में हिन्दी प्रचार के लिये श्रीहृषीकेश शर्मा को नियुक्त किया गया था। हिन्दी–तेलगू की पाठ्य पुस्तके, हिन्दी की परीक्षाएँ, राष्ट्रभाषा के विविध प्रकाशनों का कार्य श्रीशर्मा जी के संचालन में होता था। वे

आजीवन हिन्दी सेवा में संलग्न गांधीवादी निष्ठावान व्यक्ति थे। राष्ट्रभाषा के प्रचार में इनका योगदान प्रसिद्ध है।

23. श्रीगोपाल शर्मा (श्रीवत्स गोत्र) – आप हृषिकेश शर्मा के अनुज थे। डा. रघुवीर के शब्दकोष के प्रमुख सहयोगी थे। तथा के. एम. मुंशी हिन्दी विद्यापीठ के निदेशक प्रधान भी रहे। हिन्दी के मानवीकरण, वर्तनी तथा पाठ्य पुस्तकों की रचना में आपका स्मरण सदैव किया जायेगा।

24. श्रीकण्ठमणि शास्त्री (श्रीवत्स गोत्र) विशारद 1956 सं. दतिया–कांकरोली– आप बालशास्त्री दतिया दरबार के दीक्षा गुरु के पुत्र थे। सम्प्रदाय और भागवत के निष्णात् प्रवचन कर्ता थे। सम्प्रदाय के तृतीय पीठ कांकरोली के पीठाधीश्वर गोस्वामी श्रीब्रजभूषणलालजी व उनके अनुज गोस्वामी विट्ठलनाथ जी के संरक्षण में सम्प्रदाय के पुराने प्रपत्रों में विद्यमान साहित्य एवं इतिहास को व्यवस्थित तथा प्रकाशित करने के लिये प्रमुख व्यवस्थापक आप ही थे। पिछले 500 वर्षों में सम्प्रदाय की जो अभिवृद्धि हुई उसका प्रभूत साहित्य पीठों के पास एकत्रित था। जिसके इतिहास की कई गांठें खुली थी। इस साहित्य में से मणियों का परख कर छांटना कौशल की अपेक्षा रखता था। क्योंकि सम्प्रदाय व भक्ति का प्रचार एक भावुक तथा आवेश पूर्ण कार्य होता है। इतिहास लेखन तो इन बोझों से मुक्त होकर ही लिखा जा सकता है। कण्ठमणिजी ने सश्रद्धा सम्यक् विचार के साथ साहित्य को खंगालकर शुद्ध विचार से विवेचन किया। और सम्प्रदाय के बहुत बड़े अभाव की पूर्ति की। इनका इतिहास बोध प्रशंसनीय है। विद्या विभाग कांकरोली की स्थापना 1928 ई. में हुई थी। आप प्रारम्भ से ही इसके संचालक थे। विद्या विभाग के दस प्रकाशन हिन्दी में आपने दिये। जिनमें कविता कुसमाकर दोभाग, परमानन्द सागर, रसिक रसाल (कुमारमणि कृत), कांकरोली का इतिहास भाग–2, प्राचीन वार्ता साहित्य 2 भाग बड़े मूल्यवान ग्रंथ है। हिन्दी साहित्य में जहाँ–जहाँ अष्टछाप के कवि सूर–परमानन्द आदि की चर्चा होती है। वहाँ कण्ठमणिजी का अभिमत अवश्य उधृत होता है। वे देशि केन्द्र नाम से कविता करते थे। इनकी कविताएँ कानपुर की सुकवि पत्रिका में छपती थी। कण्ठमणि जी की शोध परख निर्भ्रान्त भावुकता रहित बुद्धि सदैव काम करती रहती थी। इसका उदाहरण यह है – हिन्दी साहित्य के निर्माता व इतिहासकारों को तैलंग भट्ट गोस्वामी नेत आदि का भेद सही नहीं मालूम था। फलतः हमारे पूर्व कवियों के परिचय भ्रान्ति पूर्ण मिलते है। कभी–कभी अन्य कारणों से भी त्रुटि भद्दीभूल हो जाती है। बाबूश्याम सुन्दर दास के हिन्दी शब्द सागर में महाप्रभुजी के परिचय में लिखा था " इनके पिता का पता नही" कण्ठमणिजी ने इसको इंगित किया तब बाबूश्यामसुन्दर दास ने 6अप्रेल 1928 के पत्र द्वारा इस भद्दीभूल को स्वीकार किया। साहित्य और सम्प्रदाय को उनका यह अवदान अमरत्व प्रदान करता है।

25. पं. लक्ष्मीकिशोर तैलंग (कौंडिन्य गोत्र) कानपुर – आप मूलतः कोड़ा, जहानाबाद, जिला–फतेहपुर (उ.प्र.) के थे। 1926 में कानपुर आकर आपने ज्योतिष, कर्मकाण्ड, पुराण, प्रवचन आदि से बड़ी ख्याति पायी। काशी से ज्योर्तिभूषण, कर्मकाण्ड व विशारद की उपाधियाँ भी प्राप्त की। आप किशोर उपनाम से काव्य रचना करते थे। और कवि सम्मेलनों का सभापतित्व भी करते थे। ज्योतिष तथा कर्मकाण्ड पर इन्होंने कई पुस्तकें लिखी। इनकी पत्नी कण्ठमणि जी की बहन थी। वे संस्कृत में वार्ता कर सकती थी। आप अखिल भारतीय संस्कृत सम्मेलन कानपुर के आयोजकों में से थे। तथा सुप्रसिद्ध कवि भट्ट मथुरानाथजी एवं विद्वान पं. गिरधर शर्मा चतुर्वेदी जब कानपुर पधारे थे तब उनकी उपस्थिति में विद्वत् सम्मेलन आपके संयोजकत्व में हुआ था। इन्होंने 108 श्रीमद् भागवत् परायण किये। इन्होंने अपने यौवनकाल में तैलंग भट्ट परिषद नामक संस्था कोडा, जहानाबाद में गठित की थी। इन्होंने जातीय भेदभाव समाप्त करने का वास्तविक उद्योग किया था।

26. श्री बालकृष्णदेव तैलंग 'प्रेम' (श्रीवत्स गोत्र) 1930 ई. टीकमगढ़ – औरछा को संवत् 1588 में राजधानी बनाने के पूर्व सं. 1547 में महाप्रभु श्रीवल्लभाचार्य जी ने औरछा की यात्रा की थी। इस यात्रा में उन्होंने तान्त्रिक हठयोगी **"धट सरस्वती"** को नतमस्तक किया। तब राजा ने महाप्रभुजी से निवेदन किया कि वे उनके मंत्र गुरु बने। महाप्रभुजी ने कहा कि आपके यहाँ पहले से विद्यमान पं. विद्यादेवजी तैलंग जो हमारे सजातीय है। उन्हें मेरे समान समझें और उन्हीं से दीक्षा ले। राजा ने विद्यादेव जी को दीक्षा गुरु मान कर सम्मान व सम्पदा दी। पं. बालकृष्णदेव जी इसी राजगुरु वंश के थे। इन्होंने राजसभा को सुशोभित किया तथा तत्कालीन महाराजा सवाई वीरसिंह जू देव के विश्वास पात्र, साहित्यिक मित्र बने। सन् 1830 में श्रीवीरेन्द्र केशव साहित्य परिषद, टीकमगढ़ की स्थापना की। इनकी कार्य संचालन में बहुत उपयोगी भूमिका रही थी। सन् 1930 सितम्बर के सुकवि, कानपुर के अंक में श्रीबालकृष्ण देव **"प्रेम"** का फुल पेज चित्र छपा था। सन् 1940 में टीकमगढ़, कुण्डेश्वर से बनारसीदास चतुर्वेदीजी ने मधुकर नामक साहित्य मासिक पत्रिका का सम्पादन शुरू किया इस पत्रिका का प्रकाशन उक्त श्री वीरेन्द्र केशव साहित्य परिषद के तत्वावधान में हुआ था। महाराजा औरछेश गुण ग्राह्यी थे और बुन्देली बोली के प्रेमी थे। बालकृष्ण जी बुन्देली के मार्मिक विद्वान और कवि थे। इन्होंने फुटकर कविताएँ एवं समस्यापूर्तियाँ की। इनकी कविताएँ सुकवि पत्रिका में वरवधू, बुन्देल खण्ड वैभव नाम से छपी है।

27. डॉ. भालचन्द्र तैलंग (आत्रेय गोत्र) 1968 औरंगाबाद – महाकवि पद्माकर के वंशज डॉ. भालचन्द जी का जन्म सागर (म. प्र.) में हुआ था। महाकवि ने बाँदा के नवाब और गोसांई भाईयों से ससम्मान सम्पदा और भूमि प्राप्त की थी। बाँदा की इस भूमि पर स्थित मन्दिर पर स्थानीय लोगों ने नियन्त्रण कर लिया। अत: भालचन्दजी को इन पर मुकदमा करना पड़ा। पद्माकरजी ने कानपुर गंगातट पर देह त्याग किया था। इन्होंने पद्माकरजी के देहत्याग स्थान का पता लगाया। अब यह स्थान परिवर्तित होकर स्थानीय जेल का भाग हो गया है। पद्माकर स्मृति शोध संस्थान सागर और औरंगाबाद से भालचन्दजी ने पद्माकरजी की कई पुस्तकों के प्रामाणिक संस्करण तथा सम्पादित खण्ड निकाले। पद्माकरजी के प्रसिद्ध ग्रंथ रामरसायन के युद्ध काण्ड का पुन: प्रकाशन इन्होंने भारत–पाक युद्ध के समय निकाला था। तथा श्रीविद्याचरण शुक्ल को ससम्मान भेंट किया था। डॉ. तैलंग औरंगाबाद के कॉलेज में हिन्दी विभाग के अध्यक्ष थे तथा अन्तर्विश्वविद्यालय की गोष्ठियों में जाते रहते थे। आपने सागर में पद्माकर नगर स्थापना में अपना योगदान दिया था। इनके ज्येष्ठ पुत्र श्रीकृष्णकांत तैलंग रायपुर इंजीनियरिंग कॉलेज में प्राध्यापक एवं प्राचार्य रहे हैं। इनकी पुत्री डॉ. सुषमा पी.एच.डी. है।

28. श्री नूतनकुमार तैलंग (श्रीवत्स गोत्र) भोपाल – भोपाल में प्रशासनिक पद से अधिक अपने रोचक व्यक्तित्व से प्रभावित करने वाले श्रीनूतनकुमार जी मूलत: सुकुमार भावों के कवि थे। हमीदिया कॉलेज भोपाल में प्राध्यापक तथा बाद में शिक्षा विभाग के विशेष अधिकारी तैलंग जी ने भोपाल के भारत में विलय होने तथा स्वशासन के लिये डॉ. शंकरदयाल शर्मा द्वारा संचालित जन आन्दोलन में सक्रिय भाग लिया। कानपुर के एस. डी. कॉलेज से स्नातक तथा उच्चशिक्षा के बाद उनका मन सामाजिक सरोकारों में जुड़ा। कविता उसका माध्यम बनी। इनका काव्य संग्रह भी निकला। इसकी विशेषता यह थी कि कवि ने अपने गीतों का अंग्रेजी अनुवाद स्वयं किया। इनका वंश मध्यभारत के विद्यावंत गुणी परिवारों में था। इनके पिताजी श्रीकेशव शास्त्री ने भोपाल में अपने संस्कृत ज्ञान से काफी सम्मान पाया था।

29. श्री रत्नगर्भ तैलंग "देर कवि" जहॉनाबाद–कानपुर–जयपुर – ज्योर्तिभूषण लक्ष्मीकिशोर शास्त्री के ज्येष्ठ पुत्र रत्नगर्भजी का जन्म कोड़ा,

जहानाबाद में हुआ था। कोड़ा जहानाबाद में विभिन्न स्थानों के जातीय महानुभावों का जमावड़ा रहता था। श्रीतैलंग-भट्ट परिषद नाम की संस्था भी यहाँ सक्रिय थी। यहाँ से हस्तलिखित पत्रिका भी निकलती थी। रत्नगर्भजी की अभिरुचि परिवेश से सम्प्राप्त, क्रियात्मक, कलात्मक कार्यो से प्रारम्भ हुई तथा चित्र-विचित्र वस्तुओं के संकलन करना उनका स्वभाव था। अपनी जीविका के लिये इन्होंने कामवन, कांकरोली, महापुरा, जयपुर में प्रवास किया। ज्योतिष कर्मकाण्ड और सम्प्रदाय के ग्रंथों का संकलन, विश्लेषण करने में इनकी विशेष रुचि थी। समाज के सभी वर्गों का इन्हें सम्मान प्राप्त था। सांझी कला पर इनकी विशेष रुचि थी। **"देर कवि"** उपनाम से ये कविताएँ लिखते थे। **"रोटी सतसई"** इनका महाकाव्य है। ये विनोद प्रिय भी थे।

30. प्रो. भास्कर तैलंग (भारद्वाज गोत्र) होशंगाबाद–म. प्र. – सीहोर मध्य प्रदेश के अधिवासी तैलंग परिवार के स्व. गोविन्द राव तहसीलदार के सुपुत्र आप प्राध्यापक एवं प्राचार्य पद से सेवानिवृत्त हैं। शासन में विभिन्न प्रशासनिक पदों पर काम करते हुए इन्होंने अपना जीवन साहित्य एवं शिक्षा के क्षेत्र में अर्पित किया। आप राजनीति शास्त्र के प्राध्यापक थे। इन्हें कई सम्मान प्राप्त हुए है। इनकी विख्यात कृति हाईकू छन्द में है। हिन्दी के वरिष्ठ हाईकू छन्दकारों में इनकी गणना होती है। हाईकू जापानी छन्द है। इसमें चार पंक्तियाँ होती है। चौदह शब्दों में भाव जगत् का पूरा शब्दांकन प्रस्तुत करना होता है। आपकी इसमें निपुणता रही है।

31. श्री हरिकृष्ण तैलंग (भारद्वाज गोत्र) 1934 ई. भोपाल – आप स्व. मुरलीधर तैलंग के ज्येष्ठ पुत्र है। आपकी पहचान शिक्षक के रूप में है। सरकारी सेवा से स्वैच्छिक निवृत्ति प्राप्त कर साहित्य और समाज को अपना शेष समय अर्पण कर दिया। जीवन को अनेक प्रकार के संघर्षों में आत्म सम्मान व त्याग के साथ निर्वाह करने में आप लगे रहे। आपको भारत सरकार एवं सामाजिक सम्मानों से अलंकृत किया गया है। मध्यप्रदेश साहित्य परिषद भोपाल से पद्माकर पुरस्कार 1961 ई. में मिला। भारत सरकार के समाज कल्याण मंत्रालय तथा अन्य मंत्रालयों से इन्हें अनेक पुरस्कार मिले है। बाल साहित्य सर्जन, नव साक्षर साहित्य पुरस्कार आदि से आप सम्मानित है। प्रकाशित रचनाओं में पतंग बोली, होलीका होली, अक्ल बड़ी कि लाठी, प्रगति के पहिये, अपंग जिनसे दुनियाँ दंग, कुत्तापालक कॉलोनी, संस्कृत कथाएँ, हमारा देश हमारा गाँव आदि। बाल साहित्य समीक्षा (राष्ट्रबन्धु सम्पादक) कानपुर ने सन् 1989 में श्रीहरिकृष्ण तैलंग पर पूरा विशेषांक निकाला था।

32. श्री कलानाथ शास्त्री (गौतम गोत्र) 1936 जयपुर – हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृत आदि का आद्योपान्त अध्ययन, एम.ए. (अंग्रेजी), साहित्याचार्य, साहित्य रत्न आदि उपाधियाँ, विभिन्न भाषाओं और तुलनात्मक भाषाविज्ञान में अनुसंधान। राजस्थान सरकार के भाषा विभाग में उपनिदेशक, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी में भाषा सम्पादक, स्नातकोत्तर महाविद्यालय में प्रधानाचार्य, राजस्थान संस्कृत शिक्षा विभाग में निदेशक आदि पदों पर कार्य करते हुए भाषा विभाग के निदेशक पद से सेवा निवृत्त हुए है। राजस्थान संस्कृत अकादमी के अध्यक्ष, शासन हिन्दी विधायी समिति के सदस्य, भारती संस्कृत मासिक के प्रधान सम्पादक, केन्द्रिय संस्कृत बोर्ड के सदस्य के रूप में कार्यरत है। भाषा परिचय, आलोक आदि के सम्पादन, वैज्ञानिक एवं पारिभाषिक शब्दावली के संकलन तथा शासकीय शब्दावलियों, प्रारूपों, अनुवाद कला आदि पर 48 ग्रंथों द्वारा राजभाषा हिन्दी के साधना में संलग्न रहे। आपके लेख हिन्दी, संस्कृत, अंग्रेजी में स्तरीय पत्रिकाओं में छपते रहे हैं। भारतीय संस्कृति, संस्कृति के वातायन, संस्कृत के गौरव शिखर, संस्कृत साहित्य का इतिहास, आधुनिक संस्कृत गद्य, आख्यान वल्लरी, संस्कृत नाट्य वल्लरी आदि रचनाएँ प्रमुख हैं। आकाशवाणी और दूरदर्शन आदि पर आपकी 500 से अधिक

वार्ताएँ प्रसारित हो चुकी है। राजस्थान सरकार, भारत सरकार एवं साहित्य सेवी संस्थाओं की ओर से आपको अनेक पुरस्कार एवं सम्मान प्राप्त हुए है। सन् 1998 में संस्कृत वैदुष्य के लिये राष्ट्रपति सम्मान प्राप्त हुआ है। 66 साहित्यिक संस्थाओं से अध्यक्ष, संरक्षक, परामर्शदाता आदि के रूप में सम्बद्ध हैं।

33. श्रीमती माधुरी शास्त्री (गौतम गोत्र) – आप श्रीकलानाथ शास्त्री की पत्नी है। इन्हें बाल साहित्य सम्मान एवं ब्रज साहित्य मण्डल, नाथद्वारा से विशेष सम्मान प्राप्त हुआ है। ब्रजभाषा काव्य में इनका योगदान है। इनकी कई कथा पुस्तकें प्रकाशित व पुरस्कृत है। लोक कथाओं के पुनर्लेखन को इन्होंने गति प्रदान की है। हृदयपक्ष इनके साहित्य में प्रमुखता से मिलता है। आप श्रीरत्नगर्भ तैलंग की ज्येष्ठ पुत्री हैं।

34. श्रीमती शकुन्तला तैलंग (मुद्गल गोत्र) – आप श्रीलक्ष्मीकिशोर तैलंग की ज्येष्ठ पुत्री हैं। आप कवियित्री थी। इनका संग्रह "मेरी इक्कीस कविताएँ" सन् 2001 में छपा था। इनकी कविताओं में देशप्रेम का भाव लक्षित होता रहा है। ये अपने विवाहित जीवन में गोगुण्डा के प्राइमरी स्कूल में भी कार्यरत रहीं। इनके पति श्रीवासुदेव शास्त्री (कामवन) थे।

35. श्री शंकरराव तैलंग "गिरीश" (गौतम गोत्र) 1950 ई. रेवई–कानपुर–बबीना – मूलत: मध्यप्रदेश के तैलंगों का प्राचीन अधिवास रेवई, अजयगढ़, पन्ना, दग्धा आदि में था। इनमें परस्पर सम्बन्ध व आत्मीयता रहती थी। रेवई के परिवारों के कुछ युवक अपने भविष्य के निर्माणार्थ बड़े नगरों की ओर गये। उनमें से श्रीशंकरराव तैलंग भी थे। श्रीशंकरराव तैलंग ने कानपुर से प्रकाशित दैनिक वीर भारत में अनेक वर्षों तक सहायक सम्पादक, सहायक प्रबन्धक एवं सर्कुलेशन मैनेजर आदि के कार्य किये। इन्होंने इस दैनिक वीर भारत पत्र को प्रसिद्ध व लोकप्रिय बनाने में कठिन परिश्रम किया था। विशेषांकों में इनका योगदान रहता था। कवि हृदय श्रीशंकररावजी ने वन्य जीवन, विन्ध्य सौंदर्य को अपनी कविताओं में आत्मसात किया है। इनकी कविताओं में प्रकृति सौंदर्य पक्ष का उल्लेख रहता था। चित्रकूट के सौन्दर्य पर इनके छन्द सुकवि पत्रिका में मई 1943 में छपे थे। हिम नन्दनी, बादल व वसन्त पर भी इनके धनाक्षरी व सवैया छन्द में प्रकाशित हुए है। इनका बहुत सा काव्य समस्यापुर्ती के रूप में भी छपा है। इनका परिवार बबीना (झांसी) उ.प्र. में रहता है। इनकी गत वर्ष में ही मृत्यु हुई है।

36. श्री कृष्णकान्त तैलंग (आत्रेय गोत्र) जबलपुर – आप बाल साहित्य रचनाओं के लिये सम्मानित किये गये हैं। इन्होंने बालगीत व लघुकथाएँ लिखी हैं।

37. श्री ज्ञानदेव तैलंग (श्रीवत्स गोत्र) टीकमगढ़, अयोध्या – आप टीकमगढ़ के राजगुरु श्रीबालकृष्णदेव तैलंग के ज्येष्ठ पुत्र थे। आप साहित्यिक अभिरुचि के थे और बुन्देली भाषा में कविता करते थे। अयोध्या में कनक भवन के मैनेजर भी रहे है। आप मृदु व सौम्य स्वभाव के थे।

38 श्री कपिल देव तैलंग (श्रीवत्स गोत्र) टीकमगढ़, भोपाल – आप श्री ज्ञानदेव तैलंग के छोटे भाई हैं। हिन्दी संस्कृत के अच्छे विद्वान हैं। भागवत् पर पूर्ण अधिकार है। साहित्यिक अभिरुचि के साहित्यकार हैं। इनके लेख कल्याण एवं अन्य पत्रिकाओं में प्रकाशित होते रहते हैं।

39. श्री रामकृष्ण तैलंग (कौंडिन्य गोत्र) कानपुर – शिक्षक आन्दोलन से कानपुर शहर में अपनी पहचान बना चुके डॉ. रामकृष्ण तैलंग कानपुर शहर की निशानियों को संजोने का काम कर रहे हैं। इन्होंने कानपुर का इतिहास एक सूत्र में पिरोकर भविष्य के लिये एक बड़ा काम किया है। कानपुर के साहित्य पर छपे साहित्यों के सम्पादन में इनकी अहम भूमिका रही है। फतेहपुर जिले के कोड़ा जहानाबाद में इनका जन्म 20 सितम्बर 1930 को हुआ था।

भारतीय विद्यालय इन्टर कॉलेज में इतिहास के शिक्षक और कान्यकुब्ज इन्टर कॉलेज में प्रधानाचार्य के पद पर रहते हुए इन्होंने शिक्षकों के अधिकारों के लिये काफी काम किया। उनके लिये इन्होंने काफी संघर्ष भी किये हैं। इनके स्वतन्त्र लेखन में स्वतन्त्रता संग्राम, लोक दर्शन, कानपुर का इतिहास, लोकजीवन, कानपुर के प्राचीन कवि, कानपुर की काव्य परम्परा है। विभिन्न संस्थाओं जेसे अध्यक्ष पुरातत्व मित्र, उपाध्यक्ष गांधी शान्ति प्रतिष्ठान केन्द्र, ललितकला संस्थान, कानपुर बाल संघ, कानपुर हिस्ट्री सोसाईटी से आप सम्बद्ध है। आपके जीवन में गतिशीलता प्रमुखता से है।

40. बागरोदी बलदेव शर्मा 'सत्य' (आत्रेय गोत्र) – इनका जन्म सम्वत् 1969 में ग्राम–पचेवर, जिला–टोंक में हुआ था। इनका निवास अधिकांश नाथद्वारा में रहा है। इन्होंने पुष्टिमार्ग में प्रारम्भिक कला एवं साहित्य का प्रारम्भिक ज्ञान कोटा में प्राप्त किया। इन्हें बनारस से शास्त्री की उपाधि प्राप्त थी। नाथद्वारा में समाज सेवा, साहित्यिक गतिविधियाँ एवं रचनात्मक गतिविधियों में भाग लेते हुए अनेक कविताएँ रचीं। आप कवि सम्मेलनों में भी भाग लेते थे। इन्हें साहित्य वैभव का ताज, नाथद्वारा का सांस्कृतिक इतिहास एवं श्रीनाथ सेवा रसोदधि ग्रन्थों ने दिया। इस ग्रन्थ में पुष्टिमार्गीय सेवा पद्धति, उत्सव मनोरथ भावना, रागभोग, दर्शन, श्रृंगार रस आदि का सजीव वर्णन है। इन्होंने अष्टछाप कवियों के द्वारा निर्मित पदों का विवेचनात्मक वर्णन भी किया है। यह ग्रन्थ शुद्धाद्वैत दर्शन, साहित्य (ब्रजभाषा), चित्रकला, संगीत रचना आदि के सन्दर्भ पुस्तक के रूप में काफी उपयोगी है। इन्होंने पुष्टि रसाल, श्रीनाथ चिन्ह् भावना, आरती स्वरूप, सात स्वरूप भावना, विट्ठलनाथजी के वचनामृत आदि ग्रन्थों का निर्माण किया। इन्हें श्रीमद्भागवत पूर्णत: कण्ठस्थ थी। राजस्थान ब्रजभाषा अकादमी द्वारा इन्हें प्रशस्ति पत्र भी दिया गया है।

41. पण्डितराज जगन्नाथ (कश्यप गोत्र) 1590–1665 ई. काशी – आप संस्कृत भाषा के साहित्य निर्माताओं में माने जाते है। साहित्येतर तथा इनके विख्यात होने के तीन कारण कहे गये है। 1. इन्हें दिल्ली के बादशाह शाहजहाँ ने अपने पुत्र दाराशिकोह को संस्कृत पढ़ाने के लिए दिल्ली में सम्मान दिया। 2. दिल्ली प्रवास में किसी मुस्लिम तनवंगी के प्रति उत्कट प्रेम को प्रचारित ही नहीं किया वरन् जातीय विरोधियों यथा अप्पय दीक्षित जैसे साहित्य महारथी जो प्रसिद्ध ग्रंथ कुवलियानन्द के रचयिता थे को खूब फटकारा। 3. जगन्नाथ जी तंत्र–मंत्र, आयुर्वेद में भी निपुण थे। इसके लिये उन्हें सोने से तोला गया। यह सौभाग्य तैलंग जाति में महाप्रभुजी के बाद इन्हें ही मिला है। इसमें इन्हें और लाल खाँ नामक संगीतज्ञ को तैतालिस हजार स्वर्ण मुद्राएँ मिली। जगन्नाथ जी कुछ समय महाराज जयसिंह के यहाँ जयपुर भी रहे थे। कुछ समय मथुरा, वृन्दावन में बिताकर गंगातट काशी में दिवंगत हुए। साहित्य शूर पण्डितराज का संस्कृत साहित्य में ऊँचा स्थान है। उन्होंने अपनी मौलिकता की रस गंगाधर में स्वनिर्मित श्लोकों द्वारा अलंकारों, रसों के उदाहरण देकर उच्छिष्ट प्रयोग से स्वाभिमान की रक्षा की। (सं. सा. इ. पृ 361) पण्डितराज की 17 रचनाओं में से गंङ्गालहरी के बीसो अनुवाद हिन्दी ग्रंथों में उपलब्ध है। मराठी साहित्य में भी उनका यथेष्ठ प्रभाव था। विट्ठलनाथ भट्ट ने जो जगन्नाथ जी के भाई थे सं. 1729 में सम्प्रदाय कल्पद्रुम ग्रंथ लिखा। इसमें उल्लेख मिलता है कि पण्डितराज के परामर्श से राजा जयसिंह ने जयपुर, मथुरा, काशी, उज्जैन, दिल्ली में वेधशालाएँ बनवाई थी।

42. श्री बालकृष्ण राव (गौतम गोत्र) 1933 रेवई, कानपुर, जयपुर – आपका जन्म 7 अप्रेल 1933 को रेवई ग्राम में हुआ था। आप रेवई ग्राम के भूतपूर्व सदर माफीदार स्व. श्री नारायणराव के ज्येष्ठ पुत्र हैं। इनके पूर्वज साहित्य प्रेमी व कवि थे। प्रारम्भिक जीवन इनका कानपुर में व्यतीत हुआ। इनका कार्यक्षेत्र प्रमुखत: कानपुर व जयपुर रहा है। आप कार्य के प्रति लगनशील एवं समर्पण भावना से पूरित रहे हैं। श्रीराव कर्मठ एवं साहित्यिक अभिरुचि के धनी

है। इनका सम्बन्ध कानपुर के बाल संघ एवं जयपुर के गुरु श्रीकमलाकर तैलंग द्वारा संचालित साहित्य सदावर्त, जयपुर से रहा है। ये इन संस्थाओं के परीक्षायोजक रहे है। इन्हें नाट्यालंकार, साहित्य रत्नाकर की उपाधियाँ प्राप्त हैं। शासन सचिवालय, राजस्थान, जयपुर में शासन सहायक सचिव के पद से सेवानिवृत्त होने के बाद लेखन कार्य में दत्त-चित्त हो गये। इन्होंने लगभग 17 ग्रंथों की रचना की है। जिनमें प्रमुख हैं – भारतीय संस्कृति का सन्दर्भ कोष, भारतीय संस्कृति के सोपान, हमारे देवता, श्रीमद्भागवत अनुशीलन, राजस्थान में भ्रमण, अपने समय के चर्चित व्यक्तित्व एवं फिल्म निर्माण के कारक तत्व है।

43. श्री गदाधर भट्ट (आत्रेय गोत्र) 1930 झालावाड़ – भारतीय संस्कृति और धर्म के प्रणेता श्री गदाधरजी को साहित्य संस्कार अपने पितामह श्रीरणछोड़जी तथा पिता श्रीगिरधारी शर्मा (कविकिंकर) से प्राप्त हुए। आप हिन्दी व संस्कृत में एम. ए. है। राजस्थान शिक्षा विभाग में प्राध्यापक से लेकर प्रधानाचार्य, शिक्षाधिकार के रूप में शिक्षा की यात्रा पूरी की है। सेवानिवृत्ति के बाद स्वतन्त्र लेखन में प्रवृत्त हो गये। इनका विषय वैदिक साहित्य रहा है। हिन्दी, संस्कृत, ब्रजभाषा पर इन्हें समान अधिकार प्राप्त है। ये सामाजिक, शैक्षणिक, साहित्यिक व सांस्कृतिक गतिविधियों से जुड़े हुए है। इनकी प्रकाशित रचनाएँ 14 है। कुछ रचनाएँ अभी प्रकाशनाधीन भी है। इन्हें स्थानीय, राज्यस्तरीय तथा राष्ट्रीय सम्मान प्राप्त हुए है। ये विभिन्न संस्थाओं के सदस्य एवं संरक्षक भी रहे है।

तैलंग–भट्ट जाति का यह गर्व है कि इसने साहित्य, काव्य, ज्योतिष, तंत्र–मंत्र, चित्रकार, प्रशासन, न्याय, संगीत आदि विभिन्न क्षेत्रों में एक से एक धुरन्धर विद्वान् कलाकार उत्पन्न किये है। ये मूर्धन्य अपने क्षेत्र के विशेषज्ञ पूर्व काल में भी रहे और वर्तमान काल में भी है। पूर्वकाल में श्रीनारायण भट्ट, रामकृष्ण आदि प्रभृति विद्वान् हो चुके है। वर्तमान काल में श्री गणेशप्रसाद भट्ट (मुख्य न्यायाधीश) जबलपुर हाईकोर्ट, श्रीकृष्णानन्द तैलंग (जिलाधीश–शिवपुरी), गंगाधर राव (सेक्रेटरी–टेम्पल बोर्ड नाथद्वारा), गोपाल शर्मा (निदेशक–राजभाषा), चित्रकारों में प्रेमचन्द गोस्वामी, रंजन गौतम, राधावल्लभ गौतम तथा संगीत के क्षेत्र में श्री लक्ष्मणभट्ट तैलंग, डॉ. मधुभट्ट तैलंग, चन्द्रकला भट्ट, गोविन्दलाल जी, जसकरण गोस्वामी तथा विश्वमोहन भट्ट है। इनके अलावा साहित्य के क्षेत्र में डॉ. सुषमा तैलंग (जयपुर), रमेश तैलंग (दिल्ली), ब्रजेन्द्र रेही (दिल्ली), रेही गोपाल कृष्ण भट्ट "आकुल" (कोटा) जैसे सार्थक विद्वान् कार्यरत है। प्रशासनिक अधिकारियों में श्रीजगदीश शर्मा (IAS), हेमन्त शेष (RAS), विनय गोस्वामी (न्यायाधीश) आदि महारथी है।

हमारे कुलदेवता – कुलदेवी

अपने–अपने वंश परिवार में कुल पूर्वजों द्वारा जो भी देवी–देवता पूजित होते आ रहे है, उन आराध्यों की पूजा–अर्चना अवश्य करना चाहिए। इससे वंश, कुलाचार तथा मर्यादा की रक्षा होती है। वंश नष्ट नहीं होता है–सुख, शान्ति, ऐश्वर्य की ही प्राप्ति होती है। जाति में जिन कुलों का कुलदेवता–कुलदेवी के बारे में ज्ञान प्राप्त हो सका उनका विवरण निम्नलिखित है –

1. महापुरा के गोस्वामी शाक्त मत के है। कुल देवी त्रिपुर सुन्दरी है। इनके कुलदेवता लक्ष्मीनारायणजी है। जब यज्ञोपवित–विवाह आदि होते है। तभी कुल देवता आते है। शाखा आंकडें की डाली है और हर अवसर पर सोने की पातडी बनाई जाती है।

2. छभैया (षड्भातृ) श्रीगोकुलचन्द जी के सुपुत्र श्रीरामचन्द्रजी का कथन है कि उनकी कुलदेवी अवन्तिका जी है। ये अनूपगढ़ खुर्जा के पास में है। इनके कुलदेवता लक्ष्मीनारायणजी है। शाखा आम की है। साल में एक बार नागपंचमी के दिन ये अपने कुलदेवता की पूजा करते है।

3. कंरजी (मथुरास्थों) के वर्ष में चार बार कुलदेवी की पूजा होती है। कुलदेवी पद्मावती है जो आन्ध्रप्रदेश में तिरूपति बालाजी के निकट अवस्थित है। कोड़ा–जहानाबाद–कानपुर वालों के कुलदेवता श्रीचतुर्भजदेव है तथा इनकी कुलदेवी कात्यायनी देवी है। इनकी नित्य अर्चना होती है। विवाह यज्ञोपवीत के अवसर पर कंरज की शाखा तथा चित्र पूजन होता है एवं तवापूड़ी तथा सेव के 21 लड्डूओं का भोग लगता है।

4. श्रीवत्स गोत्र की कुलदेवी एक वीरा भीलनी है। इनकी आम की शाखा का पूजन होता है। स्वर्ण की ताली बनती है। चने का शाग व तवापूड़ी का भोग लगता है। इनके यहाँ अपरस का पूरा ध्यान रखा जाता है।

5. देवर्षि भट्ट जयपुर वालों के यहाँ प्रधान दवे हयग्रीवजी है। हयग्रीव भगवान का स्थान आसाम में गौहाटी से 55 कि. मी. दूर हाजो नामक स्थान पर है। इनके यहाँ चित्र का पूजन होता है। स्वर्ण की ताली रखी जाती है। होली के दूसरे दिन विशेष पूजा होती है। दिनभर व्रत रखकर रात को पूजा आरती करके प्रसाद दिया जाता है। तवापूड़ी, बथुवा, साबूत मूंग की दाल और दहीभात का भोग लगता है।

6. आत्रेय कविश्वर की कुलदेवी पद्मादेवी है। विवाह–यज्ञोपवीत के अवसर पर इनका पूजन होता है। शाखा आम की है तथा स्वर्ण की ताली बनती है।

7. बिलहरा, भोपाल, सागर में भारद्वाज नेत के लोगों के यहाँ स्वर्ण की तारी बनती है, आम की शाखा का प्रयोग करते है एवं स्वस्ति पूजन होता है।

8. गौतम गोत्र सिमरी रेवई वालों के कुलदेवता चतुर्भुज ही है। शाखा आंकड़े की है तथा कुलदेवता के लिए सेव के सोलह लड्डूओं का भोग लगता है। सोने की ताली चतुर्भज स्वरूप बनायी जाती है।

9. कश्यप गोत्र में कुलदेवता चतुर्भज स्वरूप है। विवाह यज्ञोपवीत के अवसर पर सफेद आंकड़े की शाखा रखी जाती है, एवं स्वर्ण की ताली चतुर्भुज स्वरूप होती है। कुलदेवता को सेव के 16 लड्डूओं एवं मठडी का भोग आता है।

10. लोहित गोत्र के कुलदेवता श्रीलक्ष्मीनारायणजी है।

11. आत्रेय गोत्र के अन्तर्गत बागरोदी परिवार के कुलदेवता चतुर्भज जी है। अशोक वृक्ष की शाखा रखी जाती है। स्वर्ण की ताली बनाई जाती है।

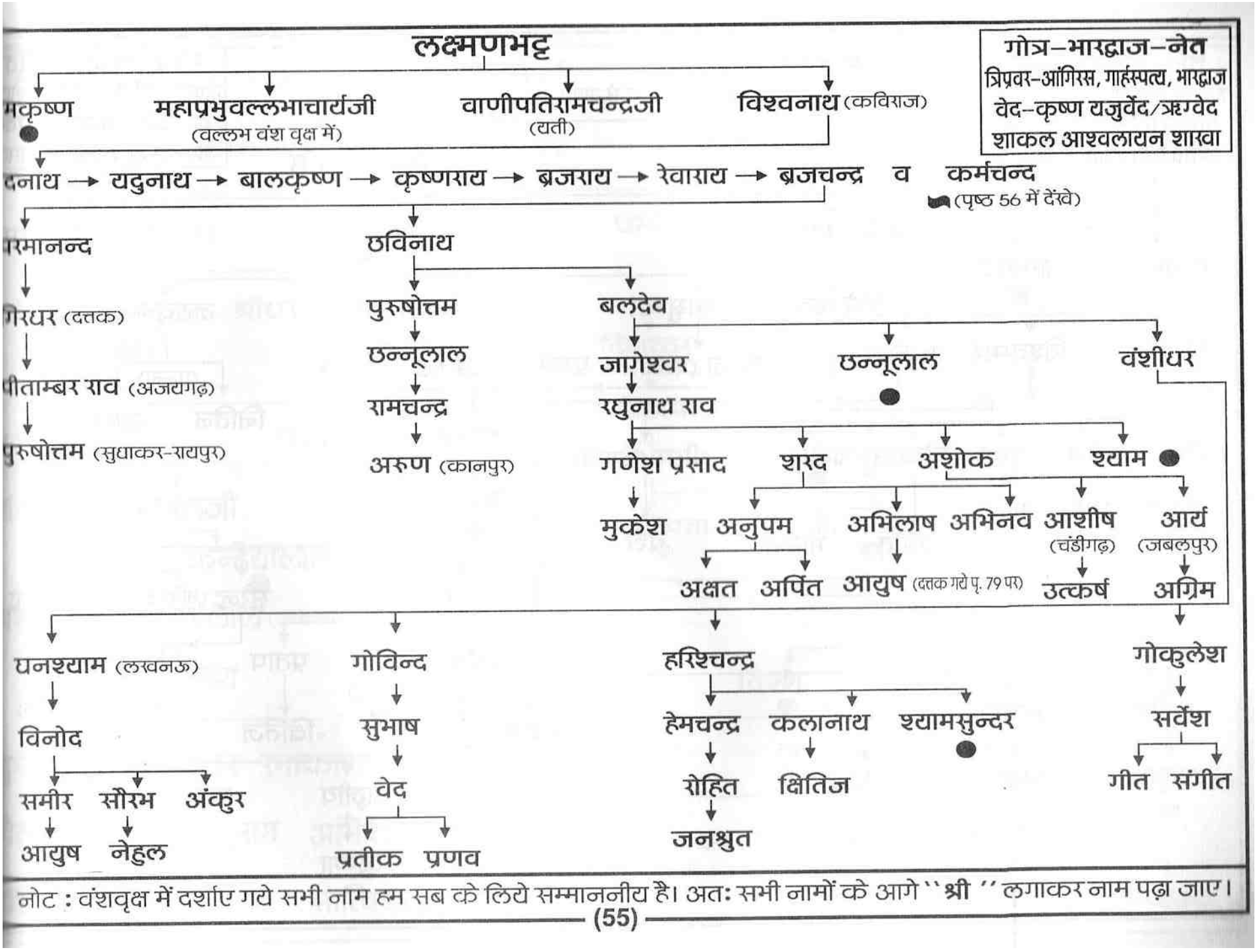

नोट : वंशवृक्ष में दर्शाए गये सभी नाम हम सब के लिये सम्माननीय है। अतः सभी नामों के आगे "श्री" लगाकर नाम पढ़ा जाए।

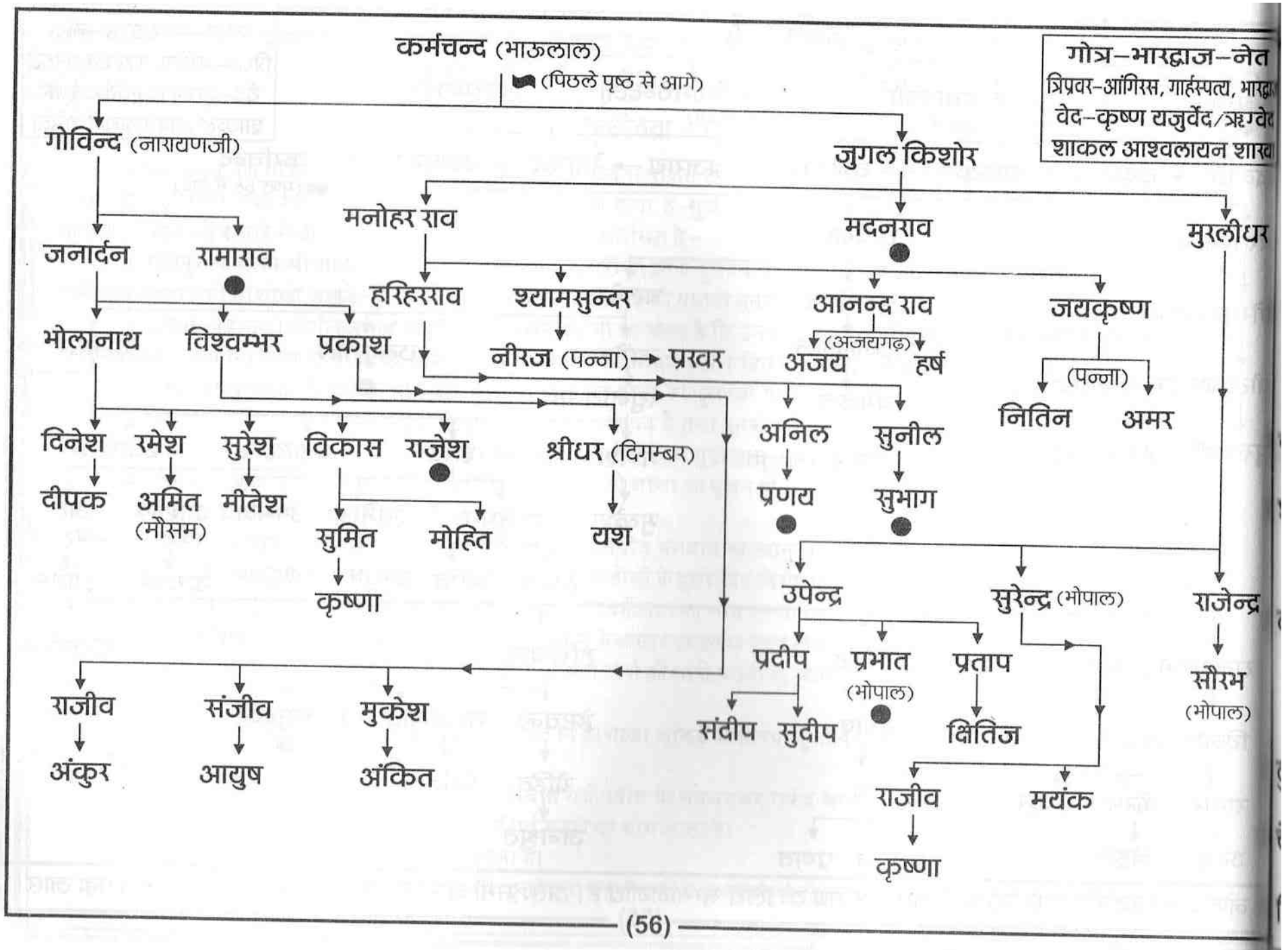
कर्मचन्द (भाऊलाल)
(पिछले पृष्ठ से आगे)
गोत्र–भारद्वाज–नेत
त्रिप्रवर–आंगिरस, गार्हस्पत्य, भारद्वा
वेद–कृष्ण यजुर्वेद/ऋग्वेद
शाकल आश्वलायन शाखा
गोविन्द (नारायणजी)
जुगल किशोर
जनार्दन
रामाराव
मनोहर राव
मदनराव
मुरलीधर
भोलानाथ
विश्वम्भर
प्रकाश
हरिहरराव
श्यामसुन्दर
नीरज (पन्ना)
प्रवर
आनन्द राव
(अजयगढ़)
अजय
हर्ष
जयकृष्ण
(पन्ना)
नितिन
अमर
दिनेश
रमेश
सुरेश
विकास
राजेश
श्रीधर (दिगम्बर)
अनिल
सुनील
दीपक
अमित
(मौसम)
मीतेश
सुमित
मोहित
यश
प्रणय
सुभाग
कृष्णा
उपेन्द्र
सुरेन्द्र (भोपाल)
राजेन्द्र
प्रदीप
प्रभात
(भोपाल)
प्रताप
सौरभ
(भोपाल)
राजीव
संजीव
मुकेश
संदीप
सुदीप
क्षितिज
अंकुर
आयुष
अंकित
राजीव
मयंक
कृष्णा

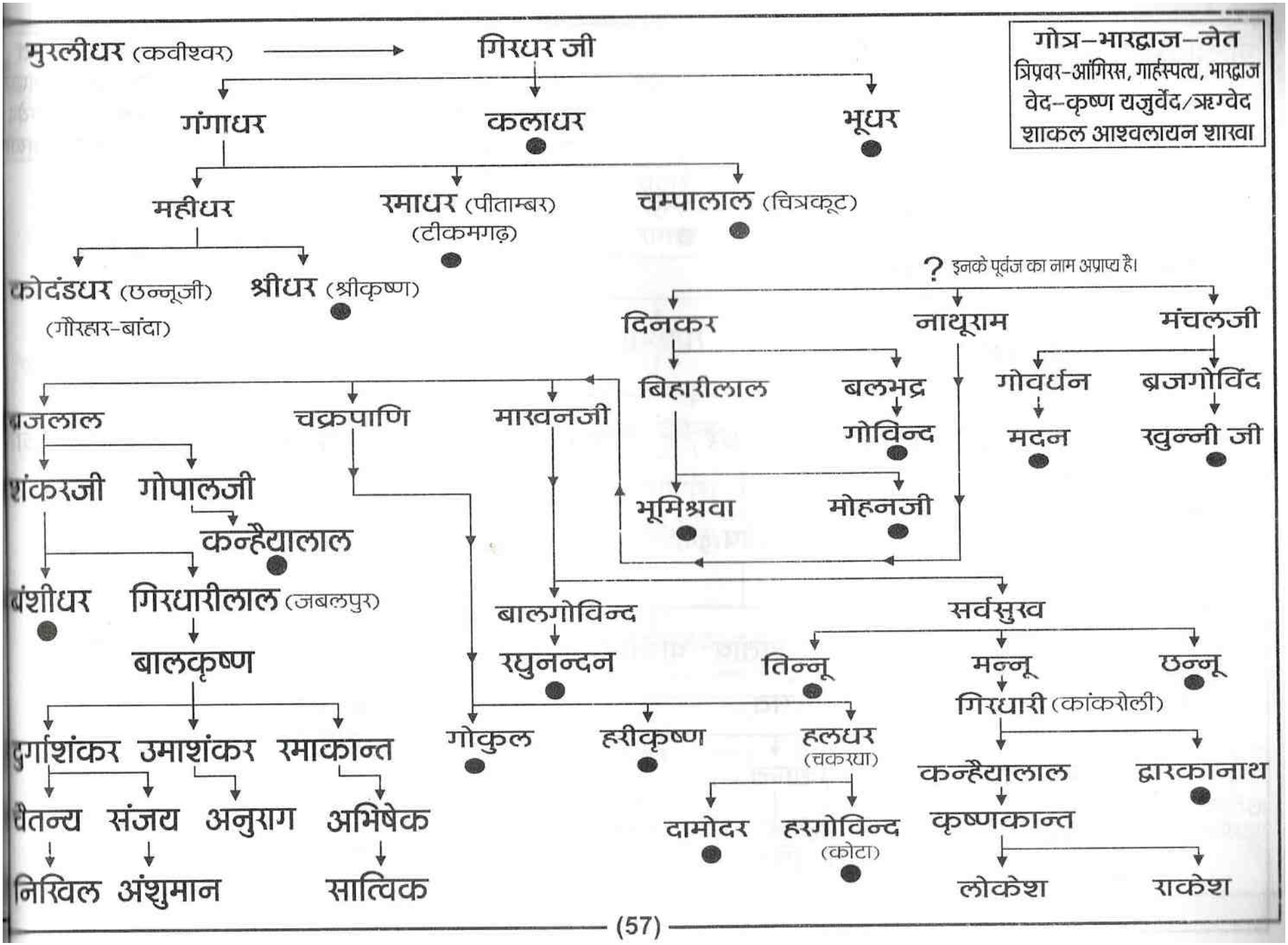
गोत्र–भारद्वाज–नेत
त्रिप्रवर–आंगिरस, गार्हस्पत्य, भारद्वाज
वेद–कृष्ण यजुर्वेद/ऋग्वेद
शाकल आश्वलायन शाखा
मुरलीधर (कवीश्वर)
गिरधर जी
गंगाधर
कलाधर
भूधर
महीधर
रमाधर (पीताम्बर)
(टीकमगढ़)
चम्पालाल (चित्रकूट)
कोदंडधर (छन्नूजी)
(गौरहार–बांदा)
श्रीधर (श्रीकृष्ण)
? इनके पूर्वज का नाम अप्राप्य है।
दिनकर
नाथूराम
मंचलजी
बिहारीलाल
बलभद्र
गोविन्द
गोवर्धन
मदन
ब्रजगोविंद
खुन्नी जी
भूमिश्रवा
मोहनजी
ब्रजलाल
चक्रपाणि
मारवनजी
शंकरजी
गोपालजी
कन्हैयालाल
बंशीधर
गिरधारीलाल (जबलपुर)
बालकृष्ण
बालगोविन्द
रघुनन्दन
सर्वसुख
तिन्नू
मन्नू
छन्नू
गिरधारी (कांकरोली)
दुर्गाशंकर
उमाशंकर
रमाकान्त
गोकुल
हरीकृष्ण
हलधर
(चकरया)
कन्हैयालाल
द्वारकानाथ
चैतन्य
संजय
अनुराग
अभिषेक
दामोदर
हरगोविन्द
(कोटा)
कृष्णकान्त
निखिल
अंशुमान
सात्विक
लोकेश
राकेश

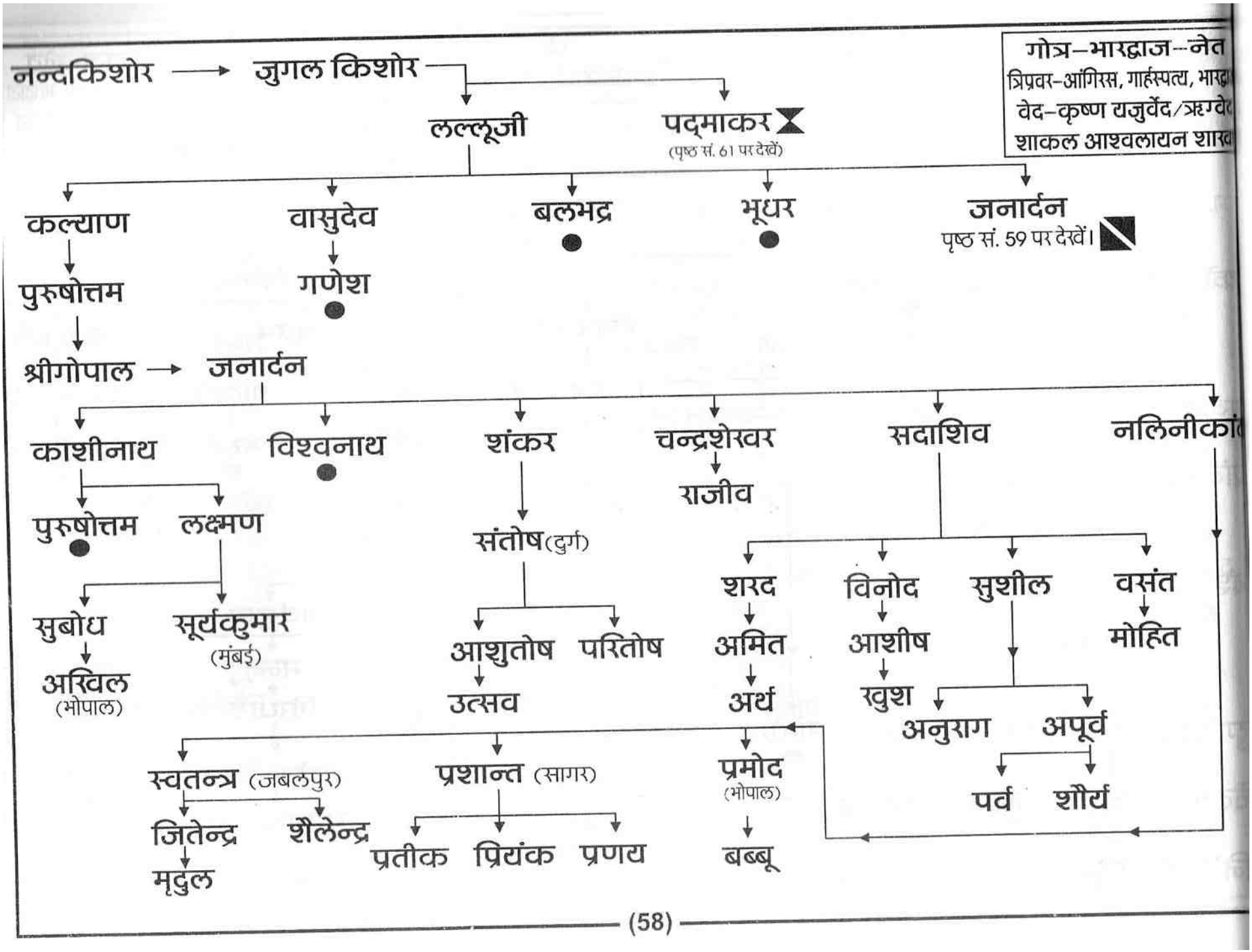
गोत्र–भारद्वाज–नेत
त्रिप्रवर–आंगिरस, गार्हस्पत्य, भारद्
वेद–कृष्ण यजुर्वेद/ऋग्वेद
शाकल आश्वलायन शाख
नन्दकिशोर → जुगल किशोर
ललूजी
पद्माकर
(पृष्ठ सं. 61 पर देखें)
कल्याण
वासुदेव
बलभद्र
भूधर
जनार्दन
पृष्ठ सं. 59 पर देखें।
पुरुषोत्तम
गणेश
श्रीगोपाल → जनार्दन
काशीनाथ
विश्वनाथ
शंकर
चन्द्रशेखर
सदाशिव
नलिनीकां
पुरुषोत्तम
लक्ष्मण
संतोष(दुर्गा)
राजीव
शरद
विनोद
सुशील
वसंत
सुबोध
सूर्यकुमार
(मुंबई)
आशुतोष
परितोष
अमित
आशीष
मोहित
अखिल
(भोपाल)
उत्सव
अर्थ
खुश
अनुराग
अपूर्व
स्वतन्त्र (जबलपुर)
प्रशान्त (सागर)
प्रमोद
(भोपाल)
पर्व
शौर्य
जितेन्द्र
शैलेन्द्र
प्रतीक
प्रियंक
प्रणय
बब्बू
मृदुल

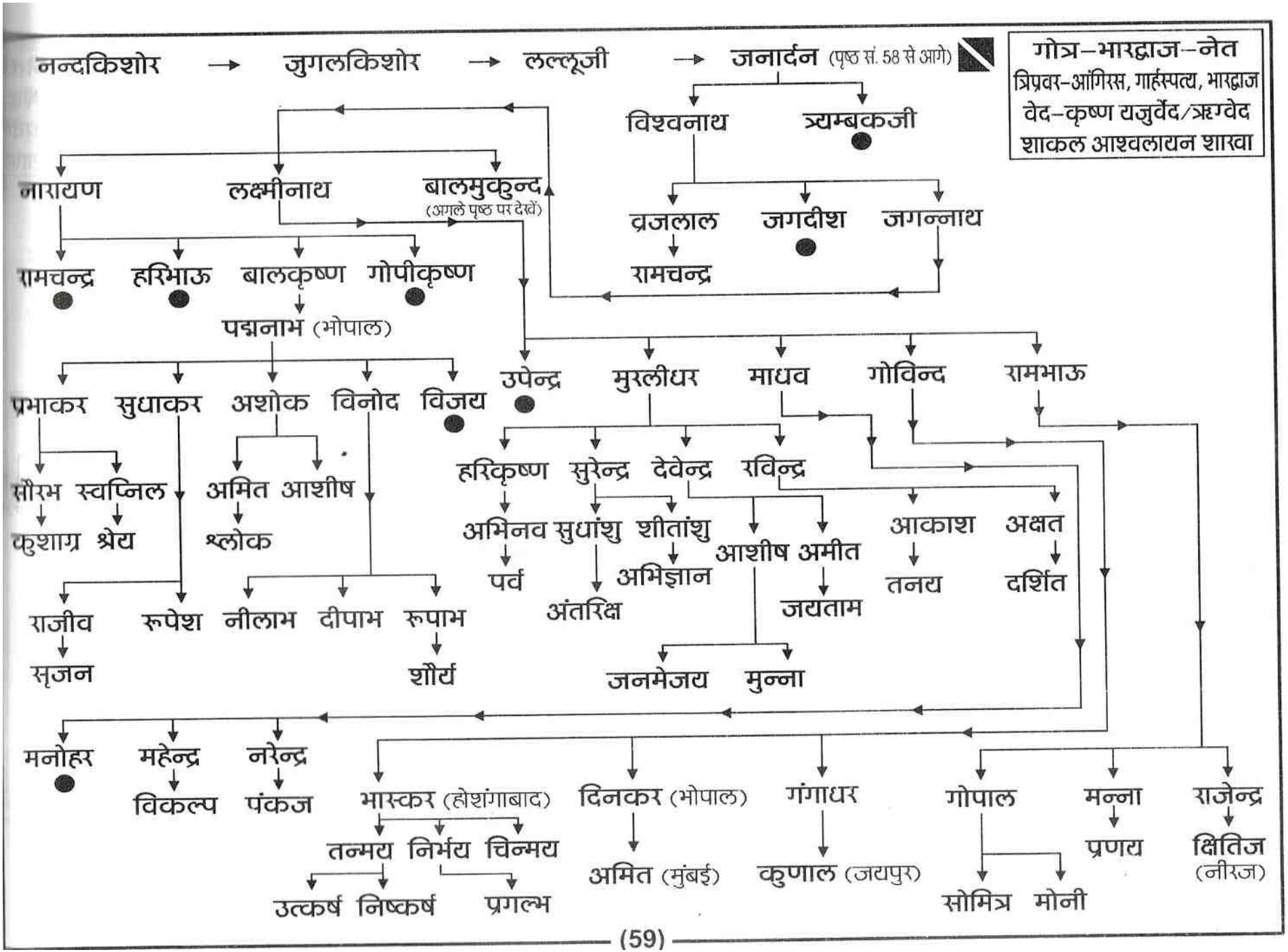
नन्दकिशोर → जुगलकिशोर → लल्लूजी → जनार्दन (पृष्ठ सं. 58 से आगे)
गोत्र–भारद्वाज–नेत
त्रिप्रवर–आंगिरस, गार्हस्पत्य, भारद्वाज
वेद–कृष्ण यजुर्वेद/ऋग्वेद
शाकल आश्वलायन शाखा
विश्वनाथ
त्र्यम्बकजी
नारायण
लक्ष्मीनाथ
बालमुकुन्द
(अगले पृष्ठ पर देखें)
व्रजलाल
जगदीश
जगन्नाथ
रामचन्द्र
रामचन्द्र
हरिभाऊ
बालकृष्ण
गोपीकृष्ण
पद्मनाभ (भोपाल)
उपेन्द्र
मुरलीधर
माधव
गोविन्द
रामभाऊ
प्रभाकर
सुधाकर
अशोक
विनोद
विजय
हरिकृष्ण
सुरेन्द्र
देवेन्द्र
रविन्द्र
सौरभ
स्वप्निल
अमित
आशीष
कुशाग्र
श्रेय
श्लोक
अभिनव
सुधांशु
शीतांशु
आशीष
अमीत
आकाश
अक्षत
पर्व
अभिज्ञान
तनय
दर्शित
राजीव
रूपेश
नीलाभ
दीपाभ
रूपाभ
अंतरिक्ष
जयताम
सृजन
शौर्य
जनमेजय
मुन्ना
मनोहर
महेन्द्र
नरेन्द्र
भास्कर (होशंगाबाद)
दिनकर (भोपाल)
गंगाधर
गोपाल
मन्ना
राजेन्द्र
विकल्प
पंकज
तन्मय
निर्भय
चिन्मय
अमित (मुंबई)
कुणाल (जयपुर)
प्रणय
क्षितिज
(नीरज)
उत्कर्ष
निष्कर्ष
प्रगल्भ
सोमित्र
मोनी

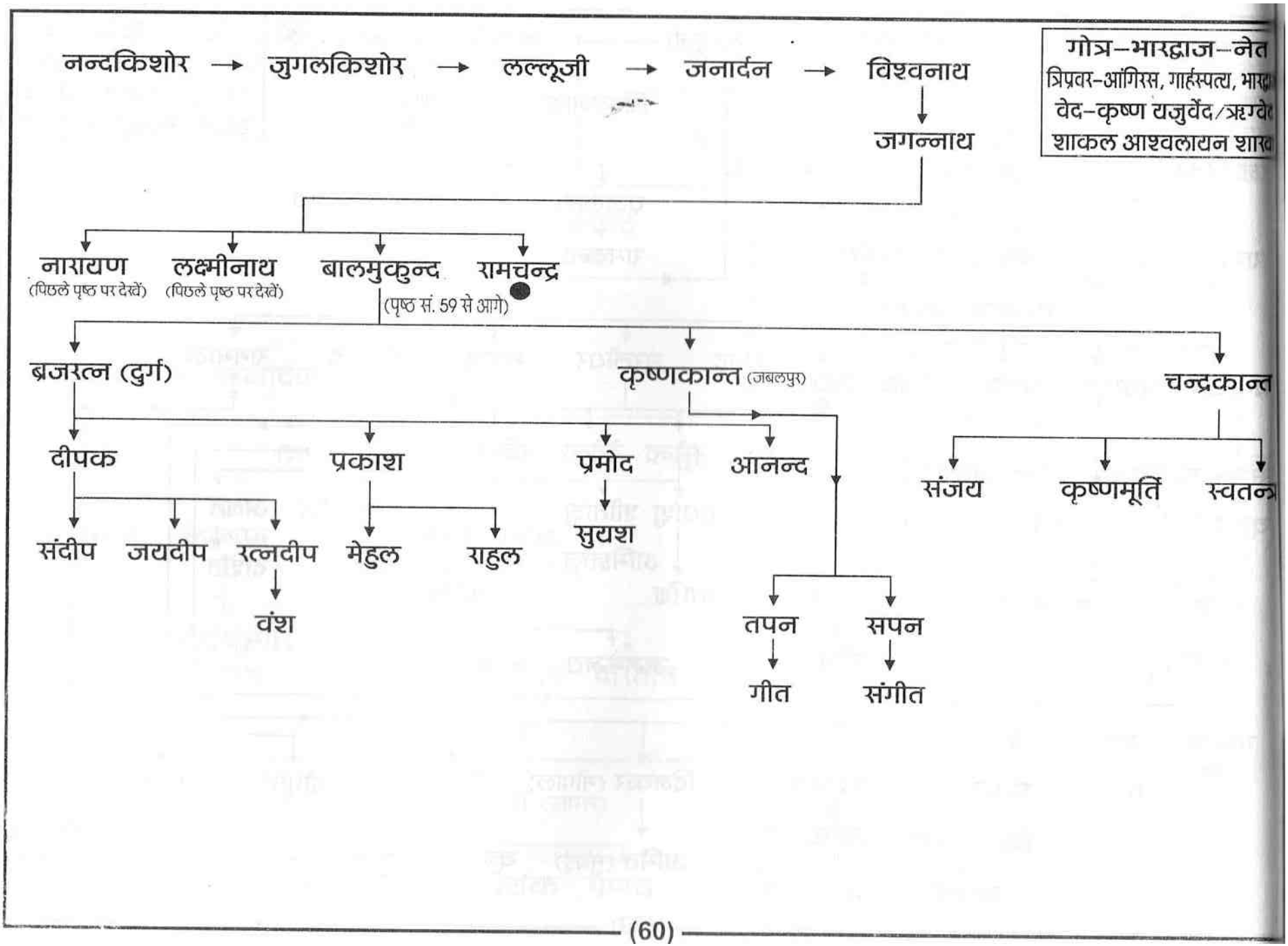
नन्दकिशोर → जुगलकिशोर → लल्लूजी → जनार्दन → विश्वनाथ
जगन्नाथ
गोत्र–भारद्वाज–नेत
त्रिप्रवर–आंगिरस, गार्हस्पत्य, भारद्
वेद–कृष्ण यजुर्वेद/ऋग्वे
शाकल आश्वलायन शार
नारायण
(पिछले पृष्ठ पर देखें)
लक्ष्मीनाथ
(पिछले पृष्ठ पर देखें)
बालमुकुन्द
रामचन्द्र
(पृष्ठ सं. 59 से आगे)
ब्रजरत्न (दुर्ग)
कृष्णकान्त (जबलपुर)
चन्द्रकान्त
दीपक
प्रकाश
प्रमोद
आनन्द
संजय
कृष्णमूर्ति
स्वतन्त्र
संदीप
जयदीप
रत्नदीप
वंश
मेहुल
राहुल
सुयश
तपन
सपन
गीत
संगीत

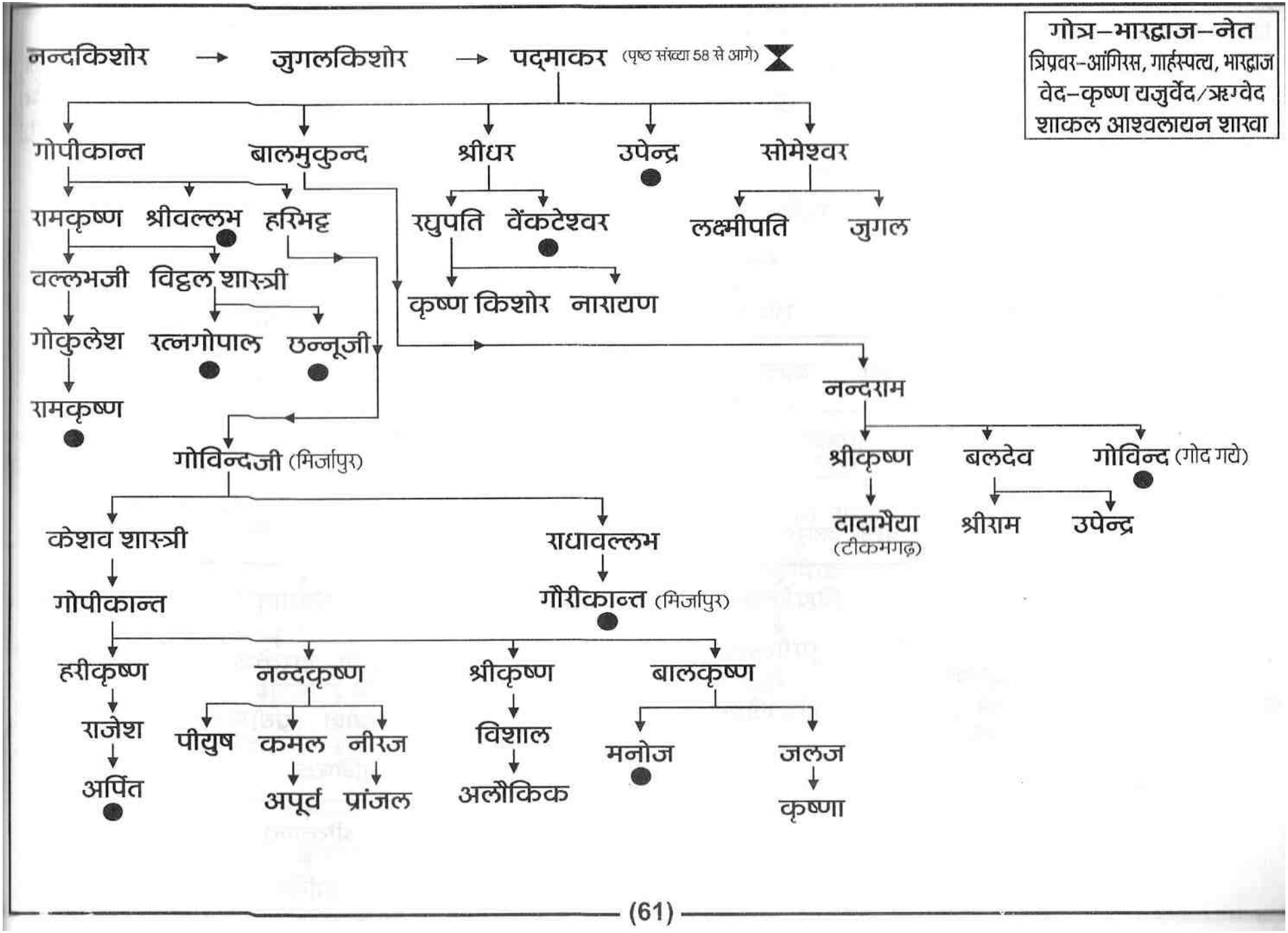

गोत्र–भारद्वाज–नेत

त्रिप्रवर–आंगिरस, गार्हस्पत्य, भारद्वाज

वेद–कृष्ण यजुर्वेद/ऋग्वेद

शाकल आश्वलायन शाखा

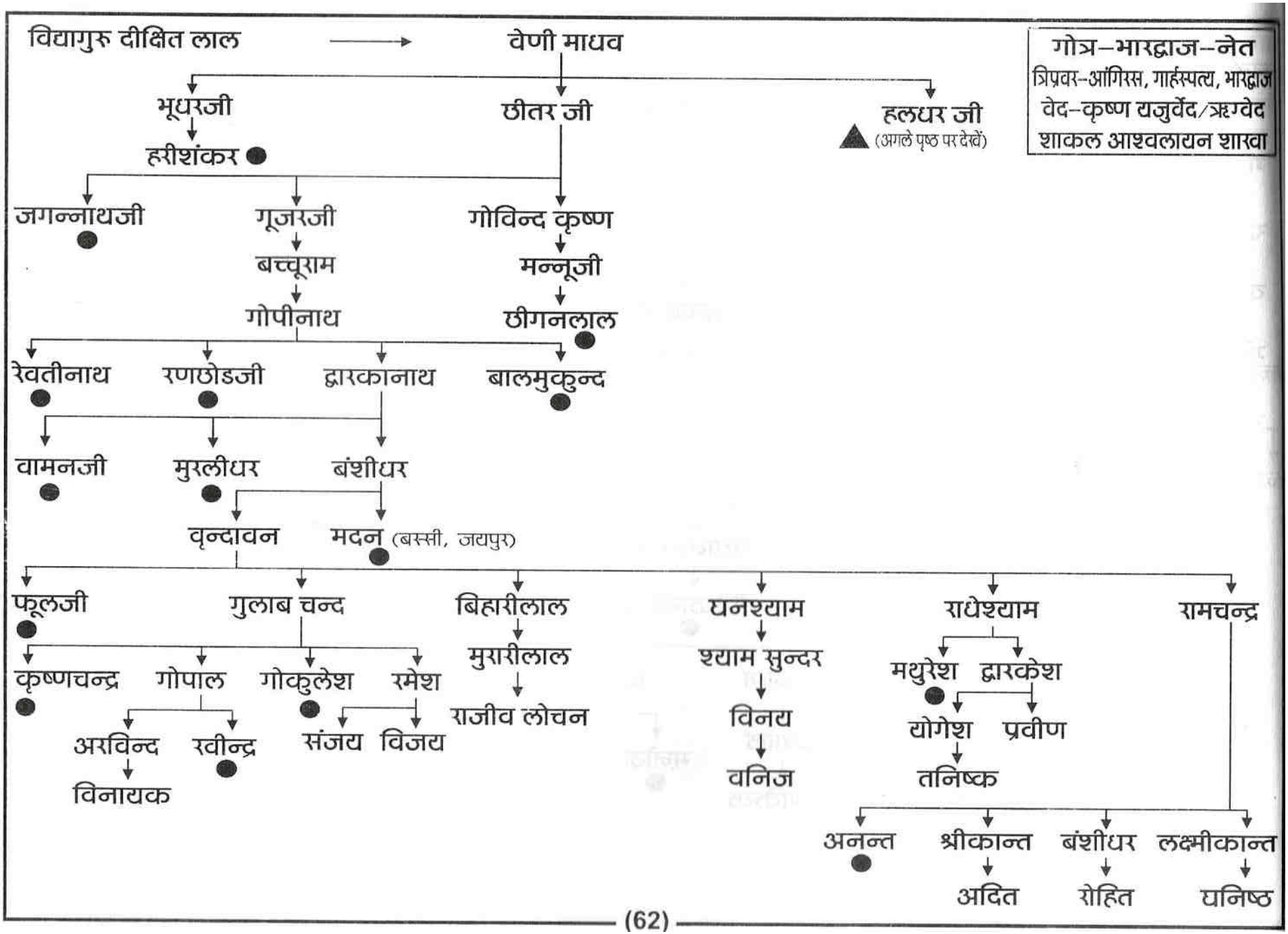
विद्यागुरु दीक्षित लाल
वेणी माधव
गोत्र–भारद्वाज–नेत
त्रिप्रवर–आंगिरस, गार्हस्पत्य, भारद्वाज
वेद–कृष्ण यजुर्वेद/ऋग्वेद
शाकल आश्वलायन शाखा
भूधरजी
हरीशंकर
छीतर जी
हलधर जी
(अगले पृष्ठ पर देखें)
जगन्नाथजी
गूजरजी
बच्चूराम
गोपीनाथ
गोविन्द कृष्ण
मन्नूजी
छीगनलाल
रेवतीनाथ
रणछोडजी
द्वारकानाथ
बालमुकुन्द
वामनजी
मुरलीधर
बंशीधर
वृन्दावन
मदन (बस्सी, जयपुर)
फूलजी
गुलाब चन्द
बिहारीलाल
घनश्याम
राधेश्याम
रामचन्द्र
कृष्णचन्द्र
गोपाल
गोकुलेश
रमेश
मुरारीलाल
श्याम सुन्दर
मथुरेश
द्वारकेश
अरविन्द
रवीन्द्र
संजय
विजय
राजीव लोचन
विनय
योगेश
प्रवीण
विनायक
वनिज
तनिष्क
अनन्त
श्रीकान्त
बंशीधर
लक्ष्मीकान्त
अदित
रोहित
घनिष्ठ

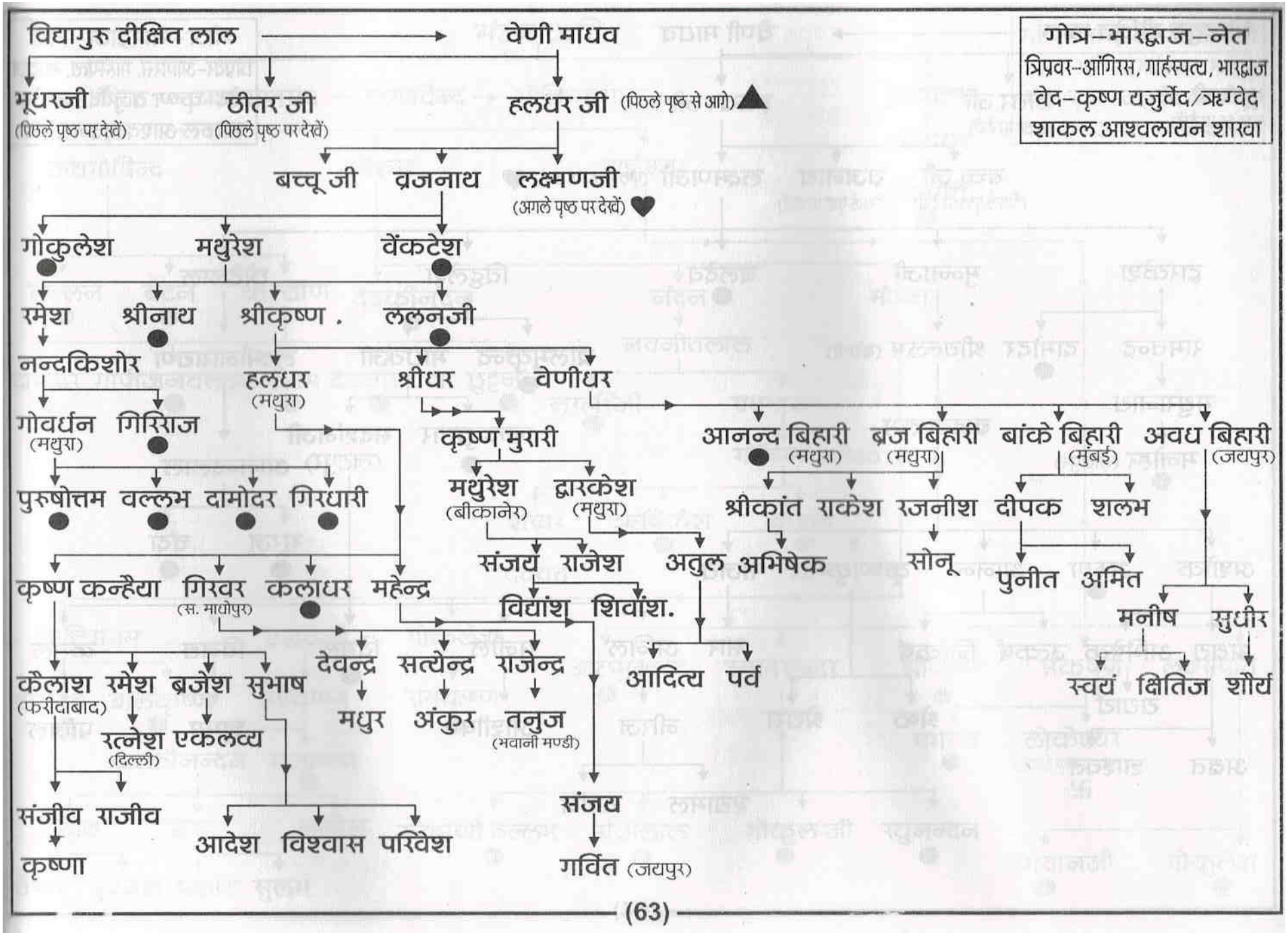
विद्यागुरु दीक्षित लाल
वेणी माधव
गोत्र–भारद्वाज–नेत
त्रिप्रवर–आंगिरस, गार्हस्पत्य, भारद्वाज
वेद–कृष्ण यजुर्वेद/ऋग्वेद
शाकल आश्वलायन शारवा
भूधरजी
(पिछले पृष्ठ पर देखें)
छीतर जी
(पिछले पृष्ठ पर देखें)
हलधर जी
(पिछले पृष्ठ से आगे)
बच्चू जी
व्रजनाथ
लक्ष्मणजी
(अगले पृष्ठ पर देखें)
गोकुलेश
मथुरेश
वेंकटेश
रमेश
श्रीनाथ
श्रीकृष्ण .
ललनजी
नन्दकिशोर
हलधर
(मथुरा)
श्रीधर
वेणीधर
गोवर्धन
(मथुरा)
गिरिराज
कृष्ण मुरारी
आनन्द बिहारी
(मथुरा)
ब्रज बिहारी
(मथुरा)
बांके बिहारी
(मुंबई)
अवध बिहारी
(जयपुर)
पुरुषोत्तम
वल्लभ
दामोदर
गिरधारी
मथुरेश
(बीकानेर)
द्वारकेश
(मथुरा)
श्रीकांत
राकेश
रजनीश
दीपक
शलभ
संजय
राजेश
अतुल
अभिषेक
सोनू
पुनीत
अमित
कृष्ण कन्हैया
गिरवर
(स. माधोपुर)
कलाधर
महेन्द्र
विद्यांश
शिवांश.
मनीष
सुधीर
कैलाश
(फरीदाबाद)
रमेश
ब्रजेश
सुभाष
देवन्द्र
सत्येन्द्र
राजेन्द्र
आदित्य
पर्व
स्वयं
क्षितिज
शौर्य
रत्नेश
(दिल्ली)
एकलव्य
मधुर
अंकुर
तनुज
(भवानी मण्डी)
संजीव
राजीव
आदेश
विश्वास
परिवेश
संजय
कृष्णा
गर्वित (जयपुर)

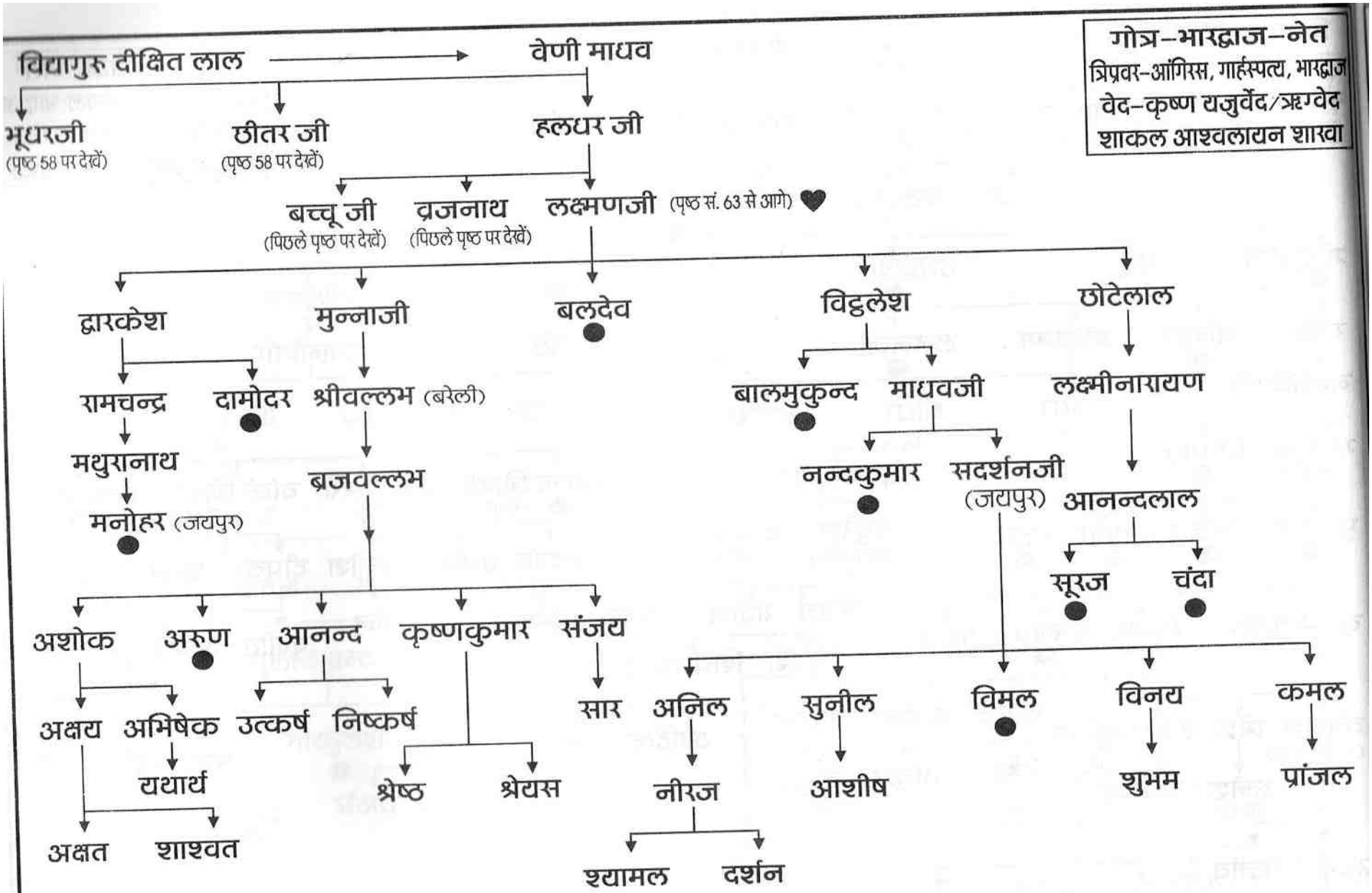
गोत्र–भारद्वाज–नेत
त्रिप्रवर–आंगिरस, गार्हस्पत्य, भारद्वाज
वेद–कृष्ण यजुर्वेद/ऋग्वेद
शाकल आश्वलायन शारवा
विद्यागुरु दीक्षित लाल
वेणी माधव
भूधरजी
(पृष्ठ 58 पर देखें)
छीतर जी
(पृष्ठ 58 पर देखें)
हलधर जी
बच्चू जी
(पिछले पृष्ठ पर देखें)
व्रजनाथ
(पिछले पृष्ठ पर देखें)
लक्ष्मणजी (पृष्ठ सं. 63 से आगे)
द्वारकेश
मुन्नाजी
बलदेव
विट्ठलेश
छोटेलाल
रामचन्द्र
दामोदर
श्रीवल्लभ (बरेली)
बालमुकुन्द
माधवजी
लक्ष्मीनारायण
मथुरानाथ
ब्रजवल्लभ
नन्दकुमार
सदर्शनजी
(जयपुर)
आनन्दलाल
मनोहर (जयपुर)
सूरज
चंदा
अशोक
अरुण
आनन्द
कृष्णकुमार
संजय
अक्षय
अभिषेक
उत्कर्ष
निष्कर्ष
सार
अनिल
सुनील
विमल
विनय
कमल
यथार्थ
श्रेष्ठ
श्रेयस
नीरज
आशीष
शुभम
प्रांजल
अक्षत
शाश्वत
श्यामल
दर्शन

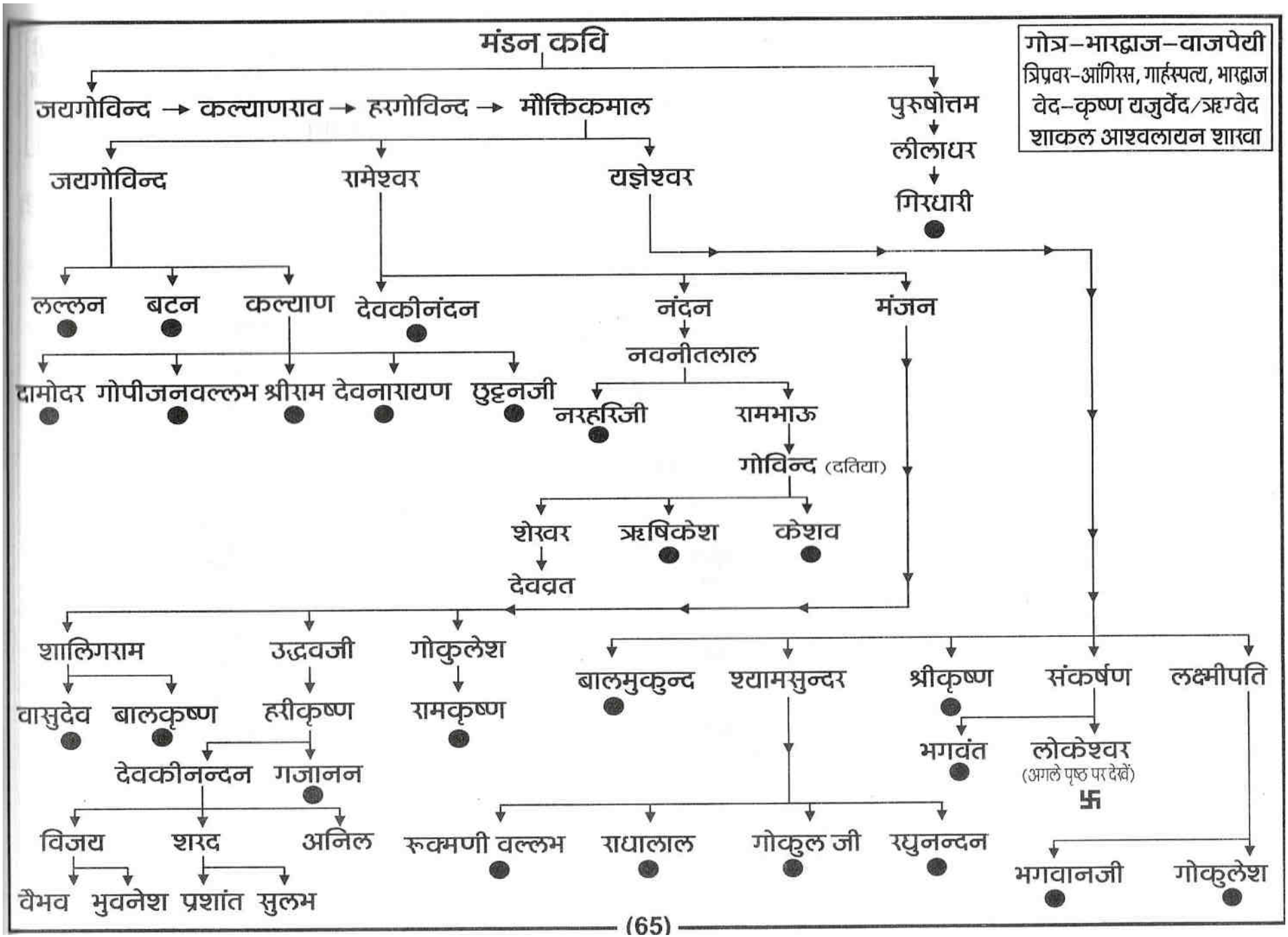
मंडन कवि
गोत्र–भारद्वाज–वाजपेयी
त्रिप्रवर–आंगिरस, गार्हस्पत्य, भारद्वाज
वेद–कृष्ण यजुर्वेद/ऋग्वेद
शाकल आश्वलायन शाखा
जयगोविन्द → कल्याणराव → हरगोविन्द → मौक्तिकमाल
पुरुषोत्तम
लीलाधर
गिरधारी
जयगोविन्द
रामेश्वर
यज्ञेश्वर
लल्लन
बटन
कल्याण
देवकीनंदन
नंदन
मंजन
दामोदर
गोपीजनवल्लभ
श्रीराम
देवनारायण
छुट्टनजी
नवनीतलाल
नरहरिजी
रामभाऊ
गोविन्द (दतिया)
शेखर
ऋषिकेश
केशव
देवव्रत
शालिगराम
उद्धवजी
गोकुलेश
वासुदेव
बालकृष्ण
हरीकृष्ण
रामकृष्ण
देवकीनन्दन
गजानन
विजय
शरद
अनिल
वैभव
भुवनेश
प्रशांत
सुलभ
बालमुकुन्द
श्यामसुन्दर
श्रीकृष्ण
संकर्षण
लक्ष्मीपति
भगवंत
लोकेश्वर
(अगले पृष्ठ पर देखें)
卐
रूक्मणी वल्लभ
राधालाल
गोकुल जी
रघुनन्दन
भगवानजी
गोकुलेश

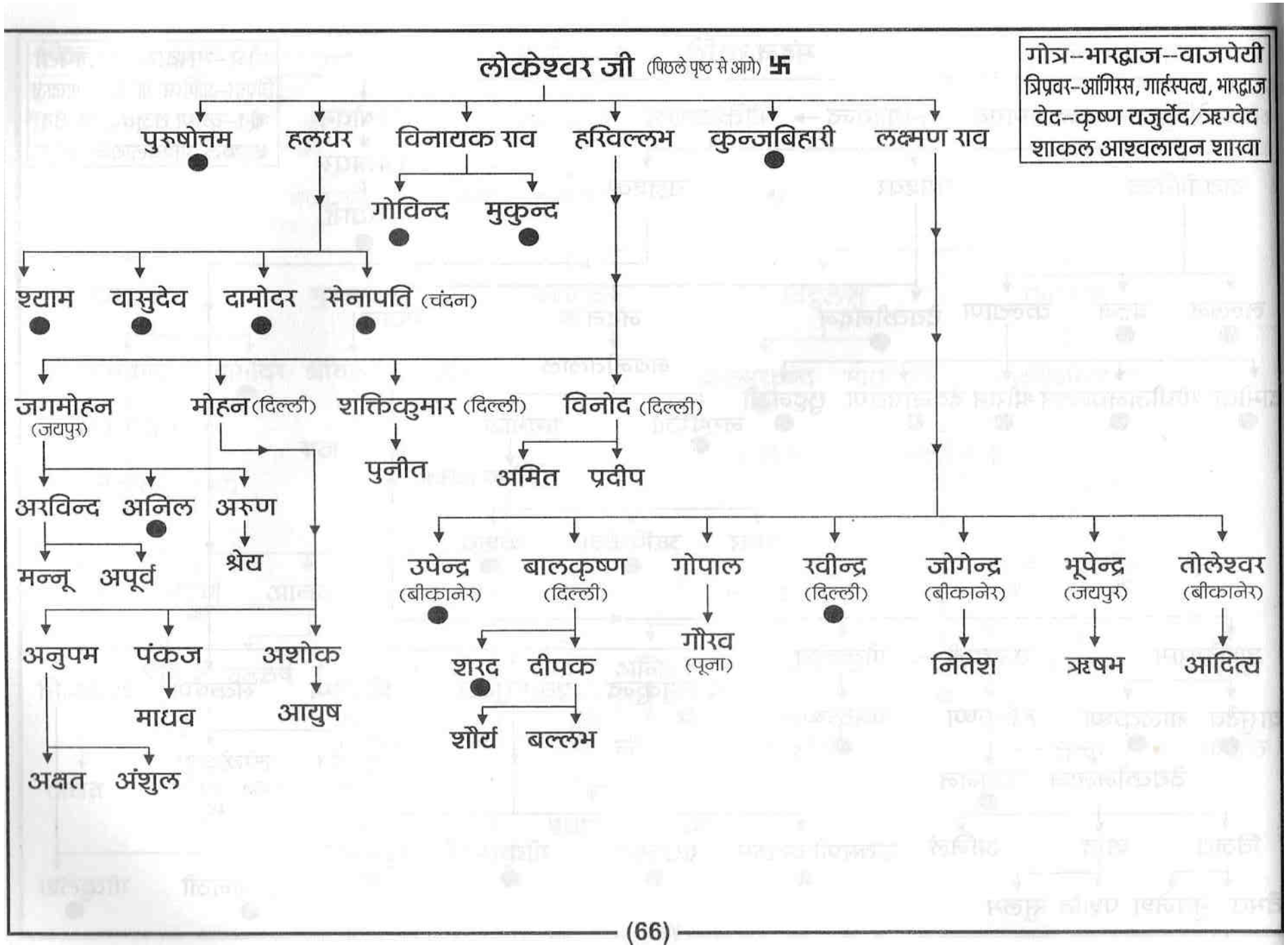
लोकेश्वर जी (पिछले पृष्ठ से आगे) 卐
गोत्र--भारद्वाज--वाजपेयी
त्रिप्रवर-आंगिरस, गार्हस्पत्य, भारद्वाज
वेद--कृष्ण यजुर्वेद/ऋग्वेद
शाकल आश्वलायन शाखा
पुरुषोत्तम
हलधर
विनायक राव
हरिवल्लभ
कुन्जबिहारी
लक्ष्मण राव
गोविन्द
मुकुन्द
श्याम
वासुदेव
दामोदर
सेनापति (चंदन)
जगमोहन (जयपुर)
मोहन (दिल्ली)
शक्तिकुमार (दिल्ली)
विनोद (दिल्ली)
अरविन्द
अनिल
अरुण
मन्नू
अपूर्व
श्रेय
पुनीत
अमित
प्रदीप
अनुपम
पंकज
अशोक
माधव
आयुष
अक्षत
अंशुल
उपेन्द्र (बीकानेर)
बालकृष्ण (दिल्ली)
गोपाल
रवीन्द्र (दिल्ली)
जोगेन्द्र (बीकानेर)
भूपेन्द्र (जयपुर)
तोलेश्वर (बीकानेर)
शरद
दीपक
गौरव (पूना)
नितेश
ऋषभ
आदित्य
शौर्य
बल्लभ

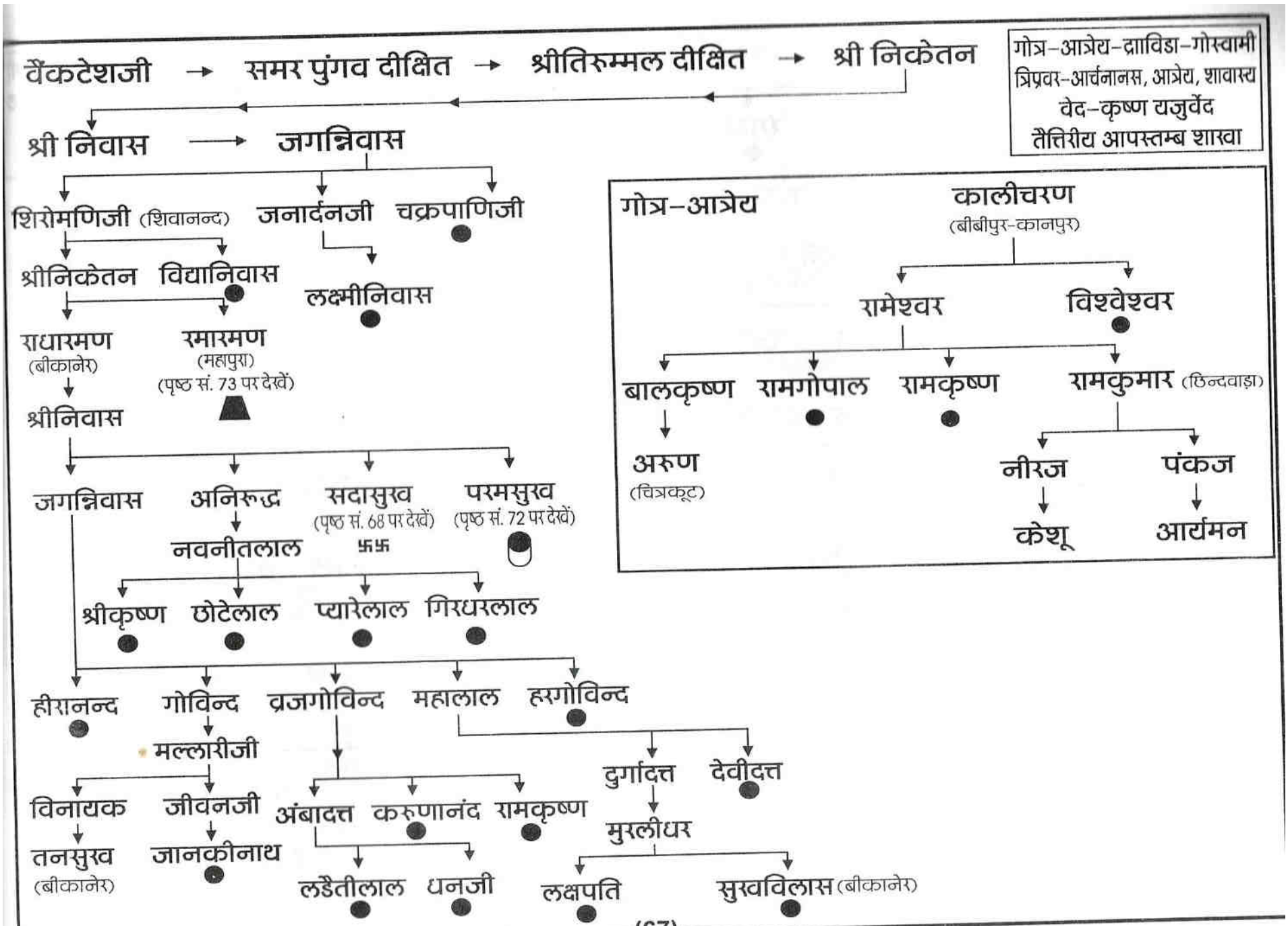
वैंकटेशजी → समर पुंगव दीक्षित → श्रीतिरुम्मल दीक्षित → श्री निकेतन
गोत्र–आत्रेय–द्राविडा–गोस्वामी
त्रिप्रवर–आर्चनानस, आत्रेय, शावास्य
वेद–कृष्ण यजुर्वेद
तैत्तिरीय आपस्तम्ब शाखा
श्री निवास → जगन्निवास
शिरोमणिजी (शिवानन्द)
जनार्दनजी
चक्रपाणिजी
श्रीनिकेतन
विद्यानिवास
लक्ष्मीनिवास
राधारमण (बीकानेर)
रमारमण (महापुरा) (पृष्ठ सं. 73 पर देखें)
श्रीनिवास
जगन्निवास
अनिरुद्ध
सदासुख (पृष्ठ सं. 68 पर देखें)
परमसुख (पृष्ठ सं. 72 पर देखें)
नवनीतलाल
श्रीकृष्ण
छोटेलाल
प्यारेलाल
गिरधरलाल
हीरानन्द
गोविन्द
व्रजगोविन्द
महालाल
हरगोविन्द
मल्लारीजी
विनायक
जीवनजी
तनसुख (बीकानेर)
जानकीनाथ
अंबादत्त
करुणानंद
रामकृष्ण
लडैतीलाल
धनजी
दुर्गादत्त
देवीदत्त
मुरलीधर
लक्षपति
सुखविलास (बीकानेर)
गोत्र–आत्रेय
कालीचरण
(बीबीपुर–कानपुर)
रामेश्वर
विश्वेश्वर
बालकृष्ण
रामगोपाल
रामकृष्ण
रामकुमार (छिन्दवाड़ा)
अरुण
(चित्रकूट)
नीरज
पंकज
केशू
आर्यमन

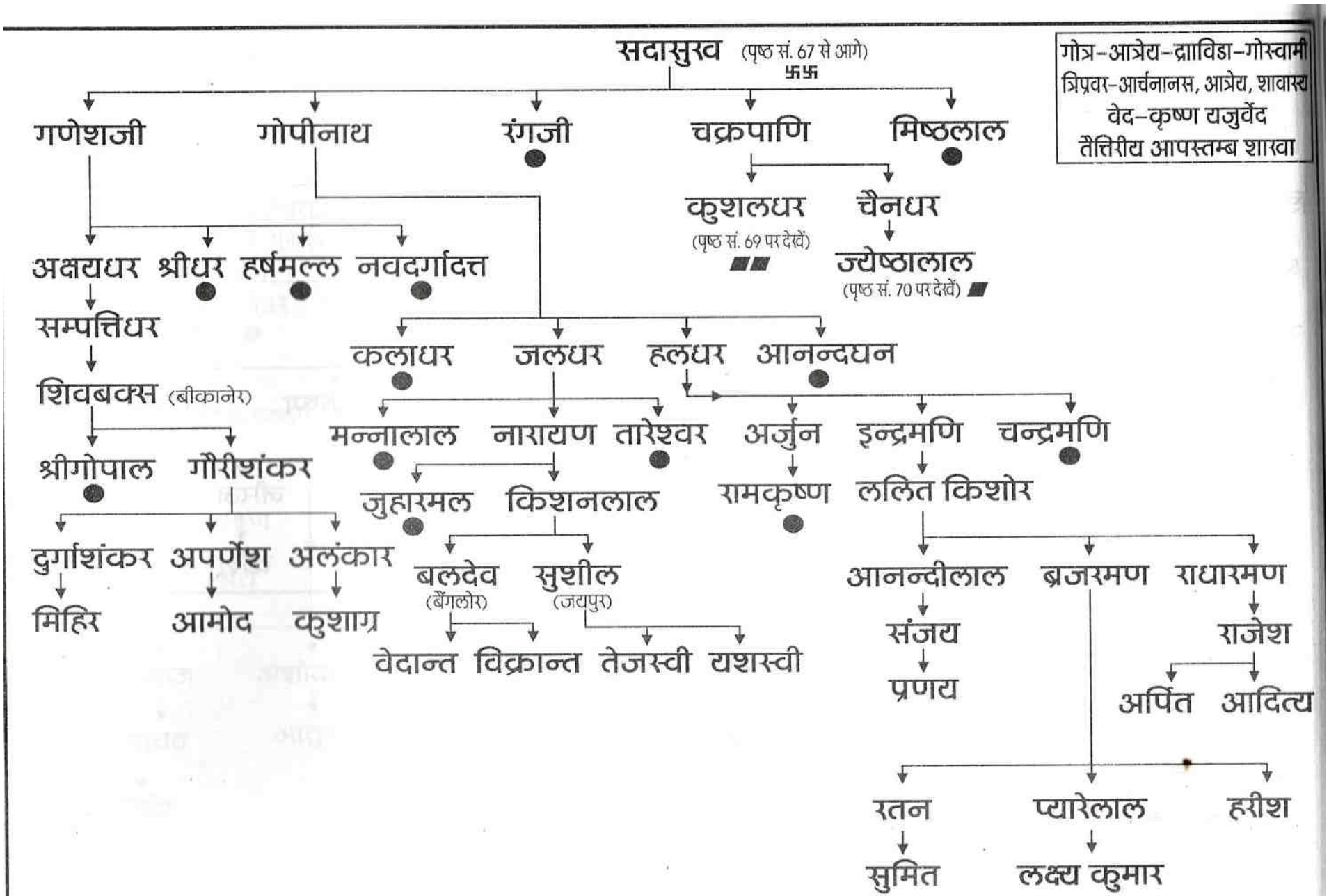
सदासुख (पृष्ठ सं. 67 से आगे)
卐卐
गोत्र–आत्रेय–द्राविडा–गोस्वामी
त्रिप्रवर–आर्चनानस, आत्रेय, शावास्य
वेद–कृष्ण यजुर्वेद
तैत्तिरीय आपस्तम्ब शाखा
गणेशजी
गोपीनाथ
रंगजी
चक्रपाणि
मिष्ठलाल
कुशलधर
(पृष्ठ सं. 69 पर देखें)
चैनधर
ज्येष्ठालाल
(पृष्ठ सं. 70 पर देखें)
अक्षयधर
श्रीधर
हर्षमल्ल
नवदर्गादत्त
सम्पत्तिधर
शिवबक्स (बीकानेर)
श्रीगोपाल
गौरीशंकर
दुर्गाशंकर
अपर्णेश
अलंकार
मिहिर
आमोद
कुशाग्र
कलाधर
जलधर
हलधर
आनन्दघन
मन्नालाल
नारायण
तारेश्वर
अर्जुन
इन्द्रमणि
चन्द्रमणि
जुहारमल
किशनलाल
रामकृष्ण
ललित किशोर
बलदेव
(बैंगलोर)
सुशील
(जयपुर)
वेदान्त
विक्रान्त
तेजस्वी
यशस्वी
आनन्दीलाल
ब्रजरमण
राधारमण
संजय
प्रणय
राजेश
अर्पित
आदित्य
रतन
प्यारेलाल
हरीश
सुमित
लक्ष्य कुमार

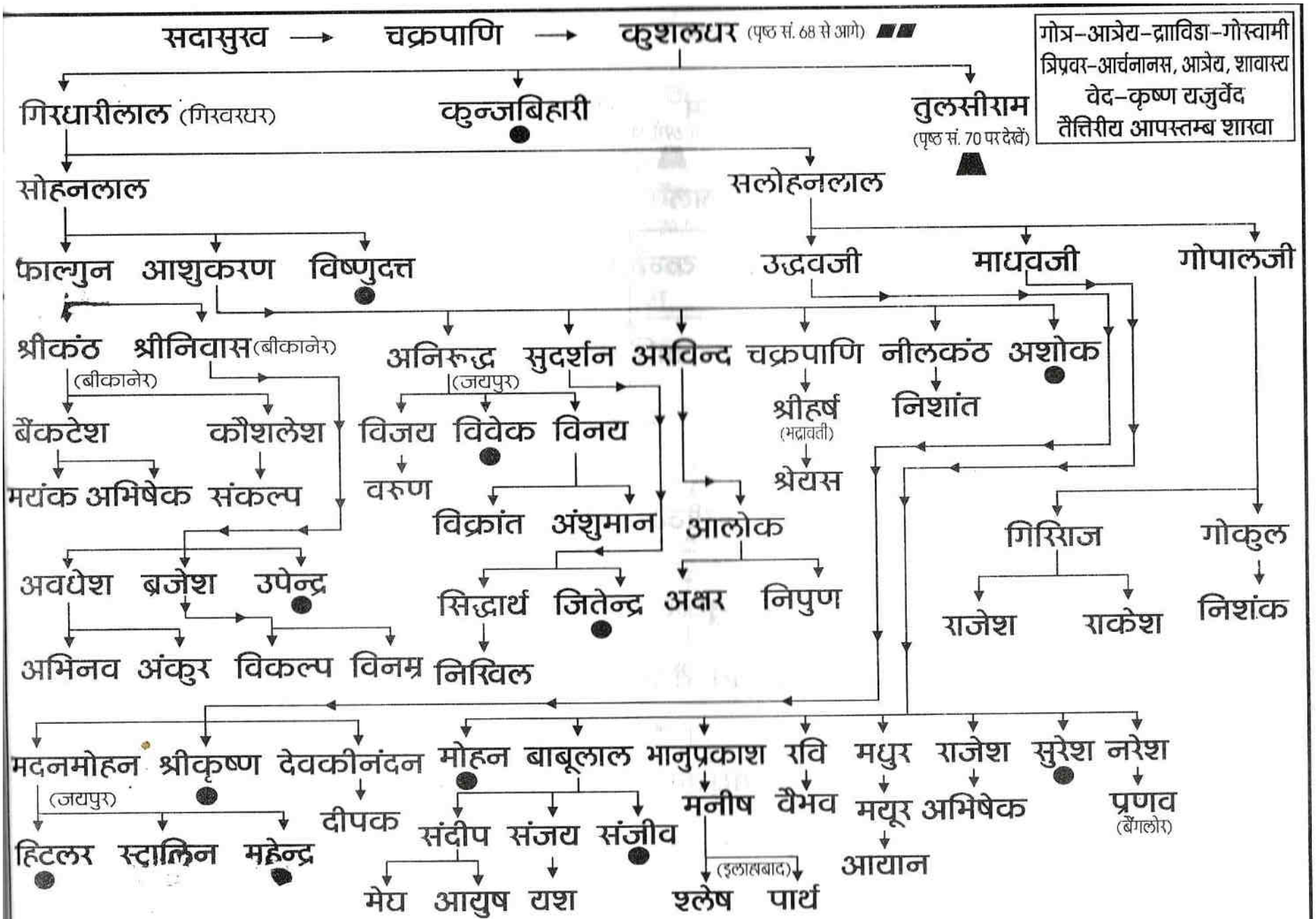
सदासुख → चक्रपाणि → कुशलधर (पृष्ठ सं. 68 से आगे)
गोत्र–आत्रेय–द्राविड–गोस्वामी
त्रिप्रवर–आर्चनानस, आत्रेय, शावास्य
वेद–कृष्ण यजुर्वेद
तैत्तिरीय आपस्तम्ब शाखा
गिरधारीलाल (गिरवरधर)
कुन्जबिहारी
तुलसीराम (पृष्ठ सं. 70 पर देखें)
सोहनलाल
सलोहनलाल
फाल्गुन
आशुकरण
विष्णुदत्त
उद्धवजी
माधवजी
गोपालजी
श्रीकंठ
श्रीनिवास (बीकानेर)
अनिरूद्ध
सुदर्शन
अरविन्द
चक्रपाणि
नीलकंठ
अशोक
(बीकानेर)
(जयपुर)
बैंकटेश
कौशलेश
विजय
विवेक
विनय
श्रीहर्ष (भद्रावती)
निशांत
मयंक
अभिषेक
संकल्प
वरूण
श्रेयस
विक्रांत
अंशुमान
आलोक
गिरिराज
गोकुल
अवधेश
ब्रजेश
उपेन्द्र
सिद्धार्थ
जितेन्द्र
अक्षर
निपुण
राजेश
राकेश
निशंक
अभिनव
अंकुर
विकल्प
विनम्र
निखिल
मदनमोहन
श्रीकृष्ण
देवकीनंदन
मोहन
बाबूलाल
भानुप्रकाश
रवि
मधुर
राजेश
सुरेश
नरेश
(जयपुर)
दीपक
मनीष
वैभव
मयूर
अभिषेक
प्रणव (बैंगलोर)
हिटलर
स्टालिन
महेन्द्र
संदीप
संजय
संजीव
आयान
(इलाहाबाद)
मेघ
आयुष
यश
श्लेष
पार्थ

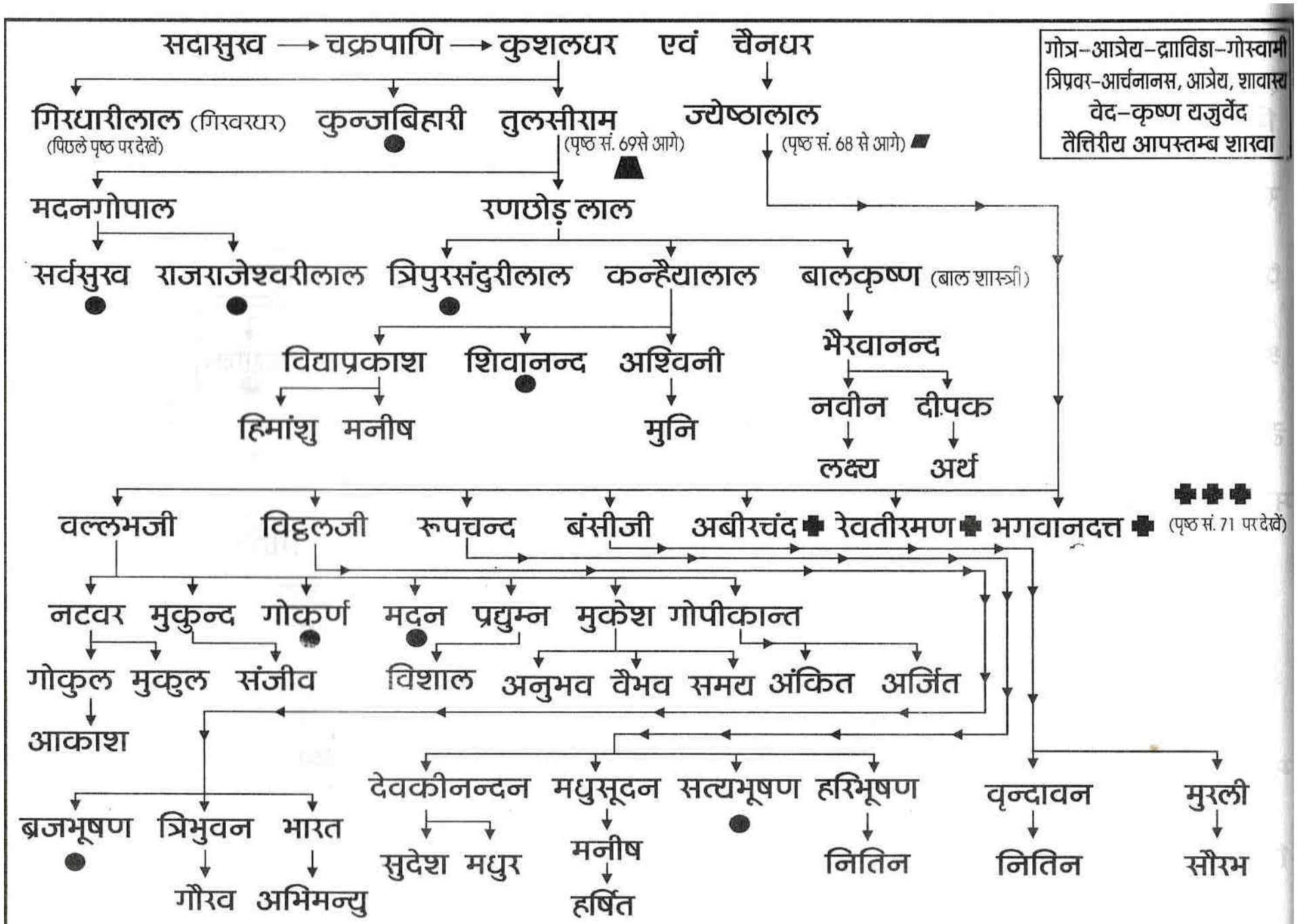
सदासुख → चक्रपाणि → कुशलधर एवं चैनधर
गोत्र–आत्रेय–द्राविड–गोस्वामी
त्रिप्रवर–आर्चनानस, आत्रेय, शावास्य
वेद–कृष्ण यजुर्वेद
तैत्तिरीय आपस्तम्ब शाखा
गिरधारीलाल (गिरवरधर)
(पिछले पृष्ठ पर देखें)
कुन्जबिहारी
तुलसीराम
(पृष्ठ सं. 69से आगे)
ज्येष्ठालाल
(पृष्ठ सं. 68 से आगे)
मदनगोपाल
रणछोड़ लाल
सर्वसुख
राजराजेश्वरीलाल
त्रिपुरसंदुरीलाल
कन्हैयालाल
बालकृष्ण (बाल शास्त्री)
विद्याप्रकाश
शिवानन्द
अश्विनी
भैरवानन्द
हिमांशु
मनीष
मुनि
नवीन
दीपक
लक्ष्य
अर्थ
वल्लभजी
विट्ठलजी
रूपचन्द
बंसीजी
अबीरचंद
रेवतीरमण
भगवानदत्त
(पृष्ठ सं. 71 पर देखें)
नटवर
मुकुन्द
गोकर्ण
मदन
प्रद्युम्न
मुकेश
गोपीकान्त
गोकुल
मुकुल
संजीव
विशाल
अनुभव
वैभव
समय
अंकित
अर्जित
आकाश
देवकीनन्दन
मधुसूदन
सत्यभूषण
हरिभूषण
वृन्दावन
मुरली
ब्रजभूषण
त्रिभुवन
भारत
सुदेश
मधुर
मनीष
नितिन
नितिन
सौरभ
गौरव
अभिमन्यु
हर्षित

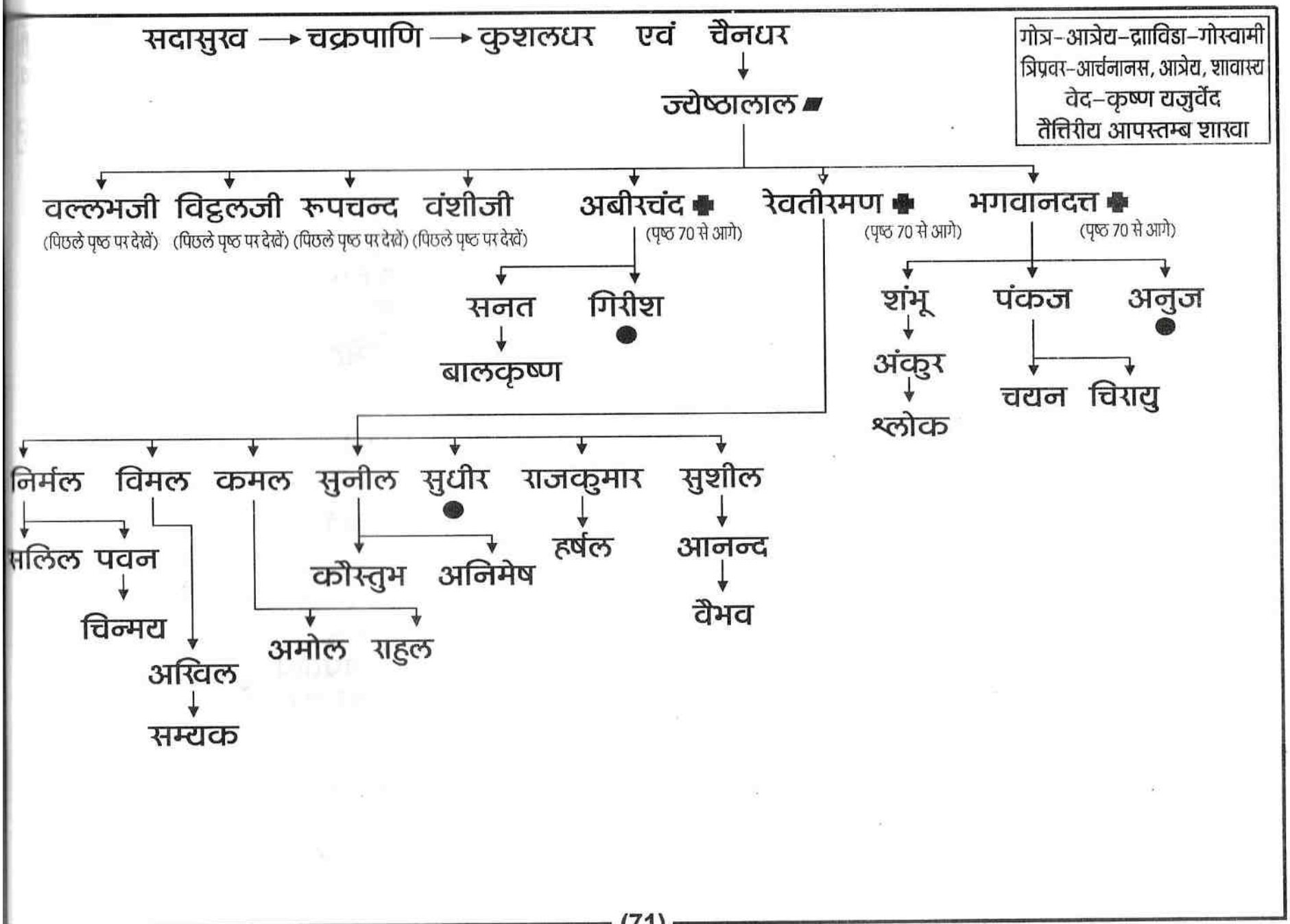
सदासुख → चक्रपाणि → कुशलधर एवं चैनधर
ज्येष्ठालाल
गोत्र-आत्रेय-द्राविडा-गोस्वामी
त्रिप्रवर-आर्चनानस, आत्रेय, शावास्य
वेद-कृष्ण यजुर्वेद
तैत्तिरीय आपस्तम्ब शाखा
वल्लभजी
(पिछले पृष्ठ पर देखें)
विट्ठलजी
(पिछले पृष्ठ पर देखें)
रूपचन्द
(पिछले पृष्ठ पर देखें)
वंशीजी
(पिछले पृष्ठ पर देखें)
अबीरचंद
(पृष्ठ 70 से आगे)
रेवतीरमण
(पृष्ठ 70 से आगे)
भगवानदत्त
(पृष्ठ 70 से आगे)
सनत
गिरीश
बालकृष्ण
शंभू
पंकज
अनुज
अंकुर
श्लोक
चयन
चिरायु
निर्मल
विमल
कमल
सुनील
सुधीर
राजकुमार
सुशील
सलिल
पवन
चिन्मय
अखिल
सम्यक
अमोल
राहुल
कौस्तुभ
अनिमेष
हर्षल
आनन्द
वैभव

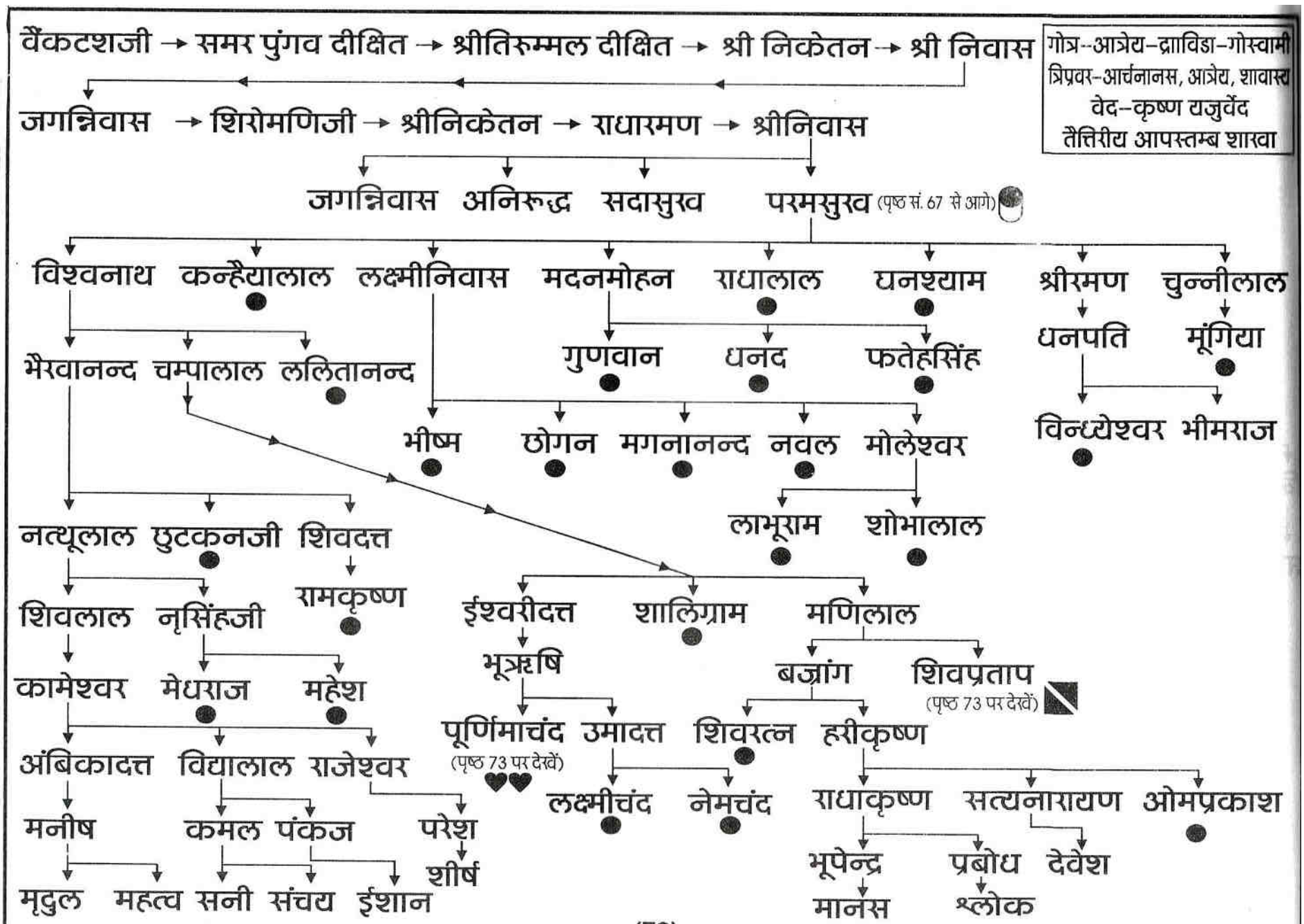
वेंकटशजी → समर पुंगव दीक्षित → श्रीतिरुम्मल दीक्षित → श्री निकेतन → श्री निवास
गोत्र--आत्रेय-द्राविड-गोस्वामी
त्रिप्रवर-आर्चनानस, आत्रेय, शावास्व
वेद-कृष्ण यजुर्वेद
तैत्तिरीय आपस्तम्ब शारवा
जगन्निवास → शिरोमणिजी → श्रीनिकेतन → राधारमण → श्रीनिवास
जगन्निवास अनिरूद्ध सदासुख परमसुख (पृष्ठ सं. 67 से आगे)
विश्वनाथ कन्हैयालाल लक्ष्मीनिवास मदनमोहन राधालाल घनश्याम श्रीरमण चुन्नीलाल
भैरवानन्द चम्पालाल ललितानन्द
गुणवान धनद फतेहसिंह
धनपति मूंगिया
भीष्म छोगन मगनानन्द नवल मोलेश्वर
विन्ध्येश्वर भीमराज
लाभूराम शोभालाल
नत्थूलाल छुटकनजी शिवदत्त
शिवलाल नृसिंहजी रामकृष्ण
कामेश्वर मेधराज महेश
अंबिकादत्त विद्यालाल राजेश्वर
मनीष कमल पंकज परेश
शीर्ष
मृदुल महत्व सनी संचय ईशान
ईश्वरीदत्त शालिग्राम मणिलाल
भूऋषि
पूर्णिमाचंद उमादत्त
(पृष्ठ 73 पर देखें)
लक्ष्मीचंद नेमचंद
बजरांग शिवप्रताप
(पृष्ठ 73 पर देखें)
शिवरत्न हरीकृष्ण
राधाकृष्ण सत्यनारायण ओमप्रकाश
भूपेन्द्र प्रबोध देवेश
मानस श्लोक

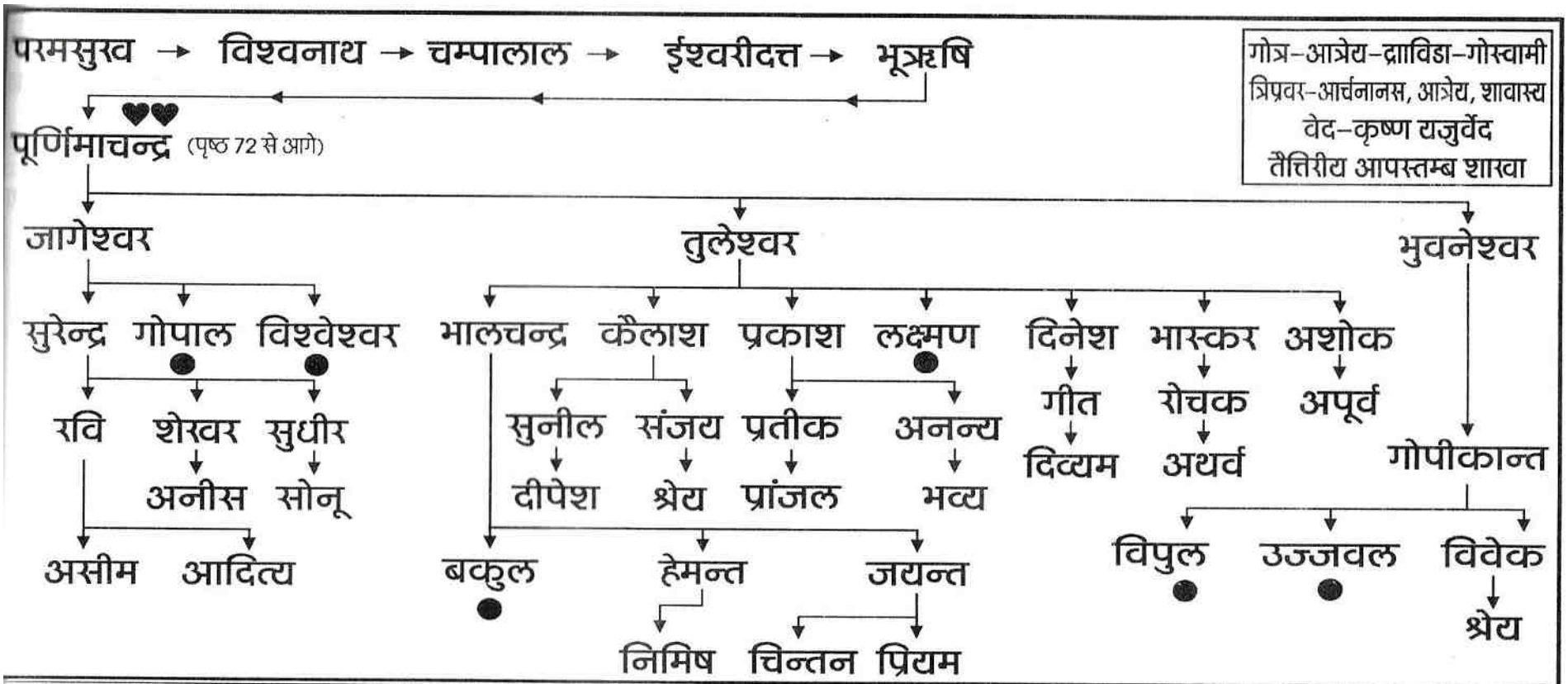
परमसुख → विश्वनाथ → चम्पालाल → ईश्वरीदत्त → भूऋषि
गोत्र–आत्रेय–द्राविडा–गोस्वामी
त्रिप्रवर–आर्चनानस, आत्रेय, शावास्य
वेद–कृष्ण यजुर्वेद
तैत्तिरीय आपस्तम्ब शाखा
पूर्णिमाचन्द्र (पृष्ठ 72 से आगे)
जागेश्वर
तुलेश्वर
भुवनेश्वर
सुरेन्द्र गोपाल विश्वेश्वर
रवि शेखर सुधीर
अनीस सोनू
असीम आदित्य
भालचन्द्र कैलाश प्रकाश लक्ष्मण
सुनील संजय प्रतीक अनन्य
दीपेश श्रेय प्रांजल भव्य
बकुल हेमन्त जयन्त
निमिष चिन्तन प्रियम
दिनेश भास्कर अशोक
गीत रोचक अपूर्व
दिव्यम अथर्व
गोपीकान्त
विपुल उज्जवल विवेक
श्रेय

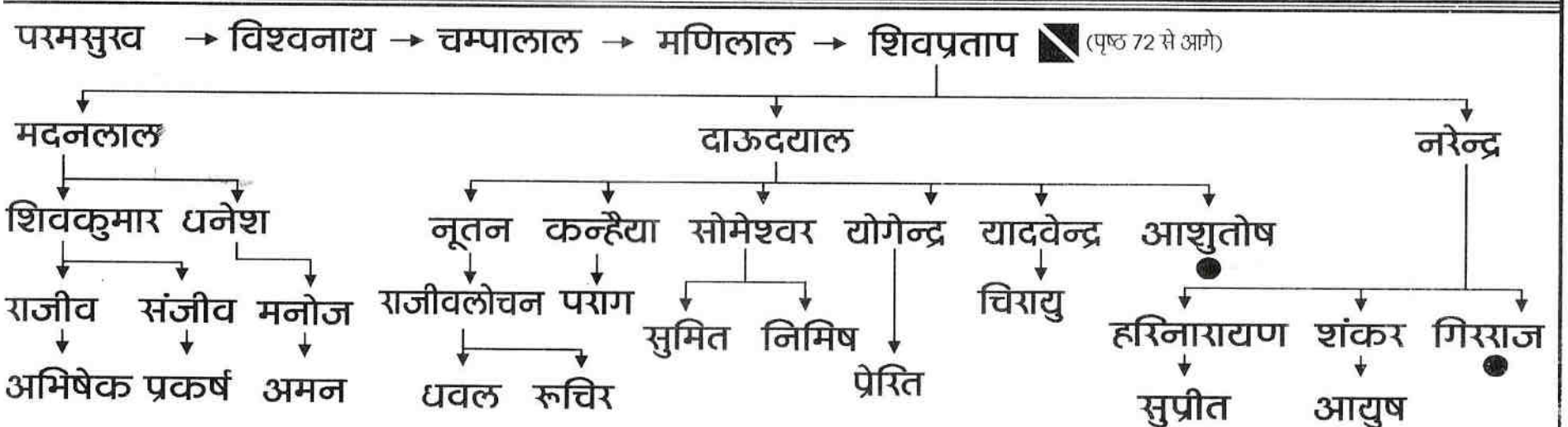
परमसुख → विश्वनाथ → चम्पालाल → मणिलाल → शिवप्रताप (पृष्ठ 72 से आगे)
मदनलाल
दाऊदयाल
नरेन्द्र
शिवकुमार धनेश
राजीव संजीव मनोज
अभिषेक प्रकर्ष अमन
नूतन कन्हैया सोमेश्वर योगेन्द्र यादवेन्द्र आशुतोष
राजीवलोचन पराग
धवल रूचिर
सुमित निमिष
प्रेरित
चिरायु
हरिनारायण शंकर गिरराज
सुप्रीत आयुष

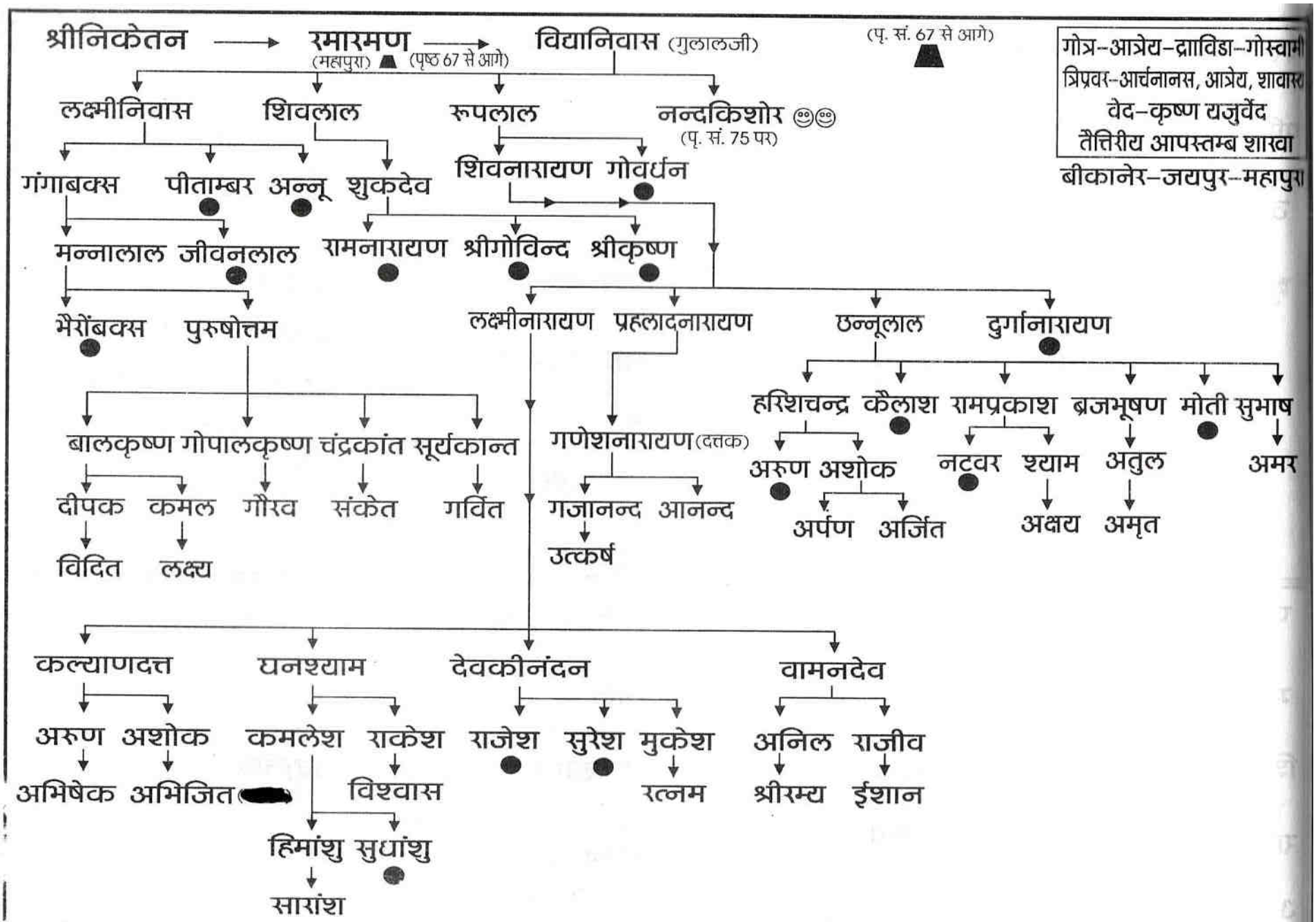
श्रीनिकेतन → रमारमण (महापुरा) (पृष्ठ 67 से आगे) → विद्यानिवास (गुलालजी)
(पृ. सं. 67 से आगे)
गोत्र–आत्रेय–द्राविडा–गोस्वामी
त्रिप्रवर–आर्चनानस, आत्रेय, शावास्व
वेद–कृष्ण यजुर्वेद
तैत्तिरीय आपस्तम्ब शाखा
बीकानेर–जयपुर–महापुरा
लक्ष्मीनिवास
शिवलाल
रूपलाल
नन्दकिशोर
(पृ. सं. 75 पर)
गंगाबक्स
पीताम्बर
अन्नू
शुकदेव
शिवनारायण
गोवर्धन
मन्नालाल
जीवनलाल
रामनारायण
श्रीगोविन्द
श्रीकृष्ण
भैरोंबक्स
पुरुषोत्तम
लक्ष्मीनारायण
प्रहलादनारायण
छन्नूलाल
दुर्गानारायण
बालकृष्ण
गोपालकृष्ण
चंद्रकांत
सूर्यकान्त
गणेशनारायण (दत्तक)
हरिशचन्द्र
कैलाश
रामप्रकाश
ब्रजभूषण
मोती
सुभाष
दीपक
कमल
गौरव
संकेत
गर्वित
गजानन्द
आनन्द
अरुण
अशोक
नटवर
श्याम
अतुल
अमर
विदित
लक्ष्य
उत्कर्ष
अर्पण
अर्जित
अक्षय
अमृत
कल्याणदत्त
घनश्याम
देवकीनंदन
वामनदेव
अरुण
अशोक
कमलेश
राकेश
राजेश
सुरेश
मुकेश
अनिल
राजीव
अभिषेक
अभिजित
विश्वास
रत्नम
श्रीरम्य
ईशान
हिमांशु
सुधांशु
सारांश

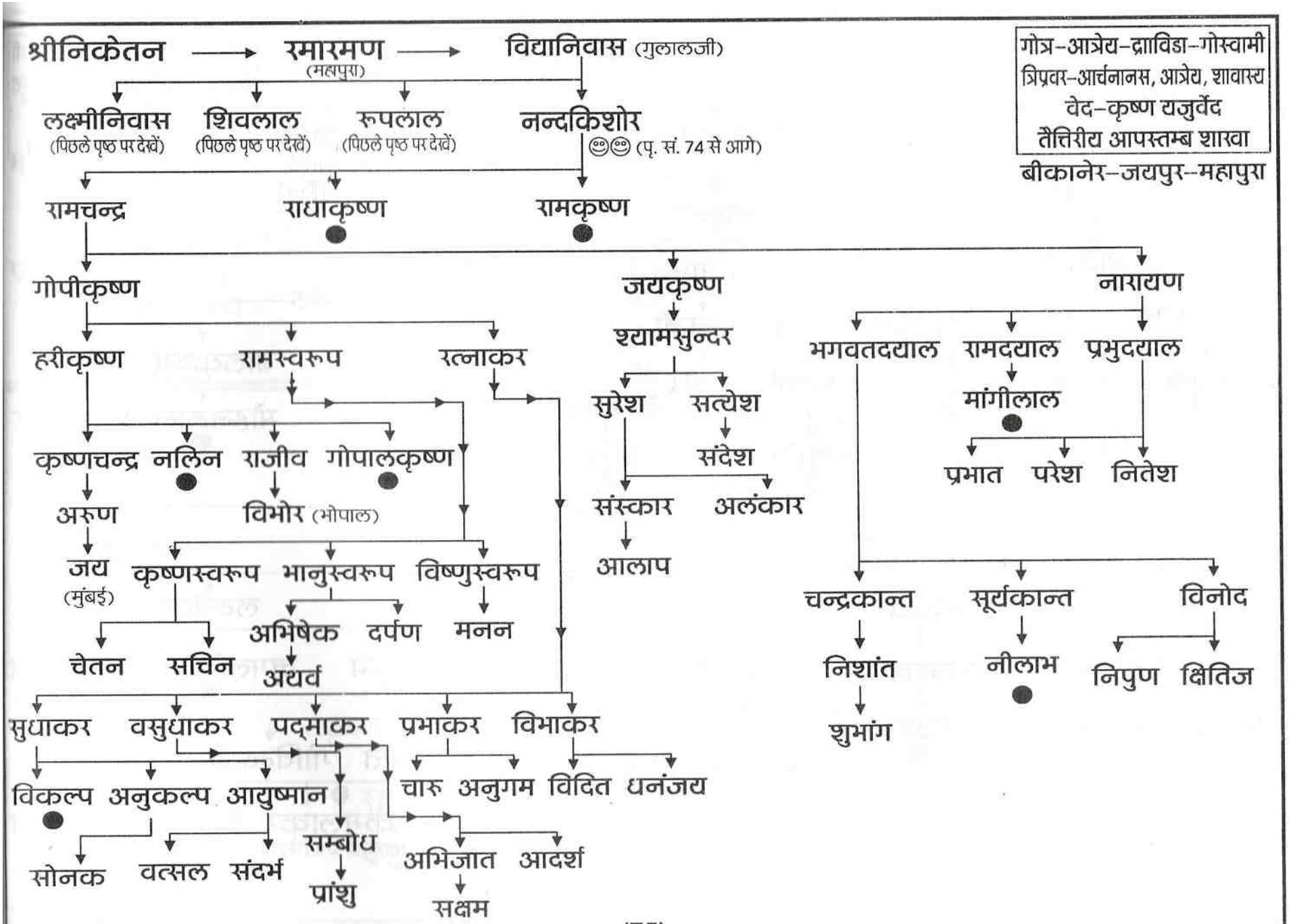
श्रीनिकेतन → रमारमण (महापुरा) → विद्यानिवास (गुलालजी)
गोत्र–आत्रेय–द्राविडा–गोस्वामी
त्रिप्रवर–आर्चनानस, आत्रेय, शावास्य
वेद–कृष्ण यजुर्वेद
तैत्तिरीय आपस्तम्ब शाखा
बीकानेर–जयपुर–महापुरा
लक्ष्मीनिवास (पिछले पृष्ठ पर देखें)
शिवलाल (पिछले पृष्ठ पर देखें)
रूपलाल (पिछले पृष्ठ पर देखें)
नन्दकिशोर
(पृ. सं. 74 से आगे)
रामचन्द्र
राधाकृष्ण
रामकृष्ण
गोपीकृष्ण
जयकृष्ण
नारायण
हरीकृष्ण
रामस्वरूप
रत्नाकर
श्यामसुन्दर
भगवतदयाल
रामदयाल
प्रभुदयाल
सुरेश
सत्येश
मांगीलाल
कृष्णचन्द्र
नलिन
राजीव
गोपालकृष्ण
संदेश
प्रभात
परेश
नितेश
अरुण
विभोर (भोपाल)
संस्कार
अलंकार
जय (मुंबई)
कृष्णस्वरूप
भानुस्वरूप
विष्णुस्वरूप
आलाप
चन्द्रकान्त
सूर्यकान्त
विनोद
अभिषेक
दर्पण
मनन
चेतन
सचिन
अथर्व
निशांत
नीलाभ
निपुण
क्षितिज
सुधाकर
वसुधाकर
पद्माकर
प्रभाकर
विभाकर
शुभांग
विकल्प
अनुकल्प
आयुष्मान
चारु
अनुगम
विदित
धनंजय
सम्बोध
अभिजात
आदर्श
सोनक
वत्सल
संदर्भ
प्रांशु
सक्षम

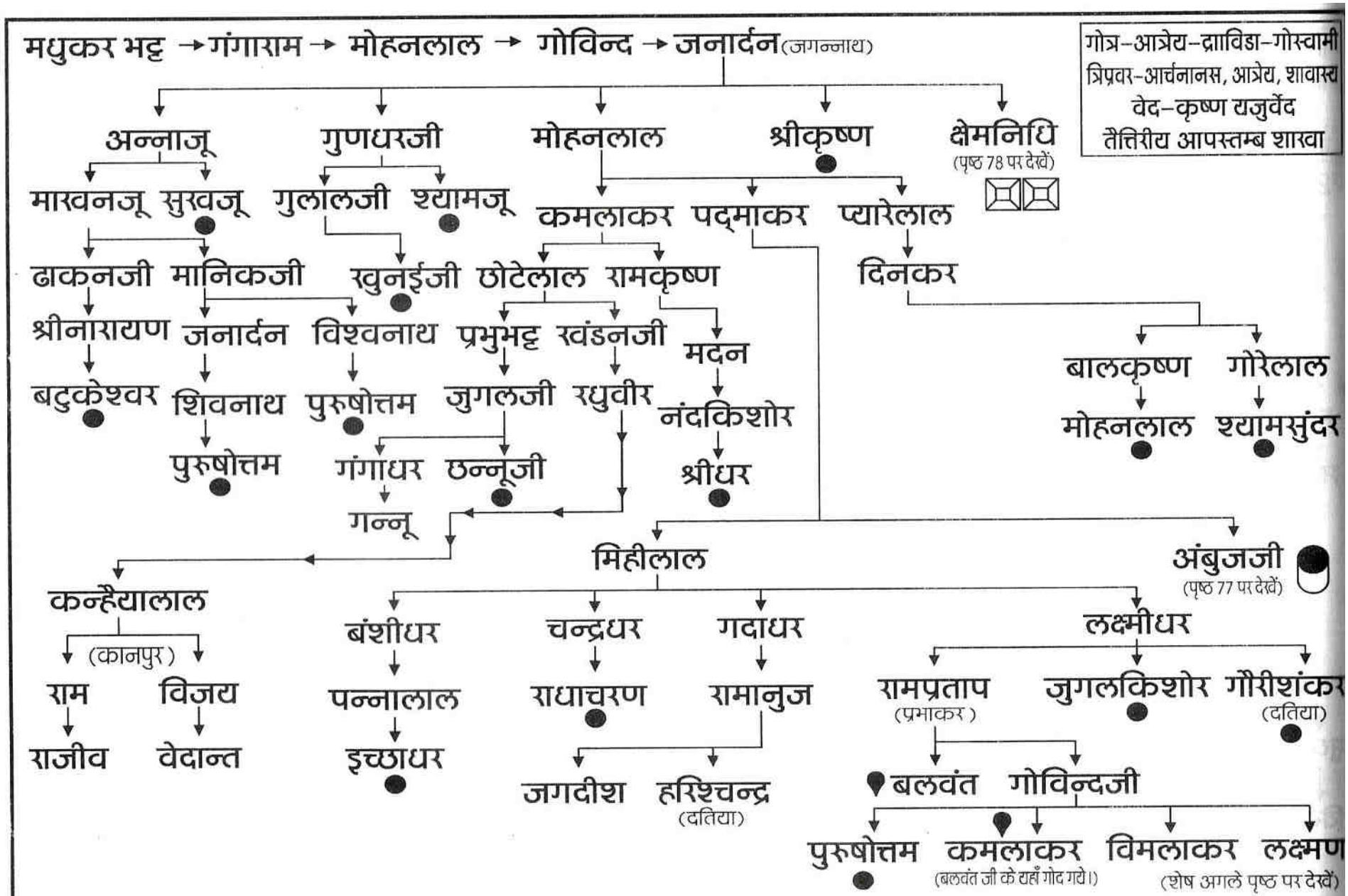
मधुकर भट्ट → गंगाराम → मोहनलाल → गोविन्द → जनार्दन (जगन्नाथ)
गोत्र–आत्रेय–द्राविड–गोस्वामी
त्रिप्रवर–आर्चनानस, आत्रेय, शावास्व
वेद–कृष्ण यजुर्वेद
तैत्तिरीय आपस्तम्ब शाखा
अन्नाजू
गुणधरजी
मोहनलाल
श्रीकृष्ण
क्षेमनिधि
(पृष्ठ 78 पर देखें)
मारवनजू
सुखजू
गुलालजी
श्यामजू
कमलाकर
पद्माकर
प्यारेलाल
ढाकनजी
मानिकजी
खुनईजी
छोटेलाल
रामकृष्ण
दिनकर
श्रीनारायण
जनार्दन
विश्वनाथ
प्रभुभट्ट
खंडनजी
मदन
बालकृष्ण
गोरेलाल
बटुकेश्वर
शिवनाथ
पुरुषोत्तम
जुगलजी
रघुवीर
नंदकिशोर
मोहनलाल
श्यामसुंदर
पुरुषोत्तम
गंगाधर
छन्नूजी
श्रीधर
गन्नू
मिहीलाल
अंबुजजी
(पृष्ठ 77 पर देखें)
कन्हैयालाल
(कानपुर)
बंशीधर
चन्द्रधर
गदाधर
लक्ष्मीधर
राम
विजय
पन्नालाल
राधाचरण
रामानुज
रामप्रताप
(प्रभाकर)
जुगलकिशोर
गौरीशंकर
(दतिया)
राजीव
वेदान्त
इच्छाधर
जगदीश
हरिश्चन्द्र
(दतिया)
बलवंत
गोविन्दजी
पुरुषोत्तम
कमलाकर
(बलवंत जी के यहाँ गोद गये।)
विमलाकर
लक्ष्मण
(शेष अगले पृष्ठ पर देखें)

क्रमश

(पिछले पृष्ठ से आगे)

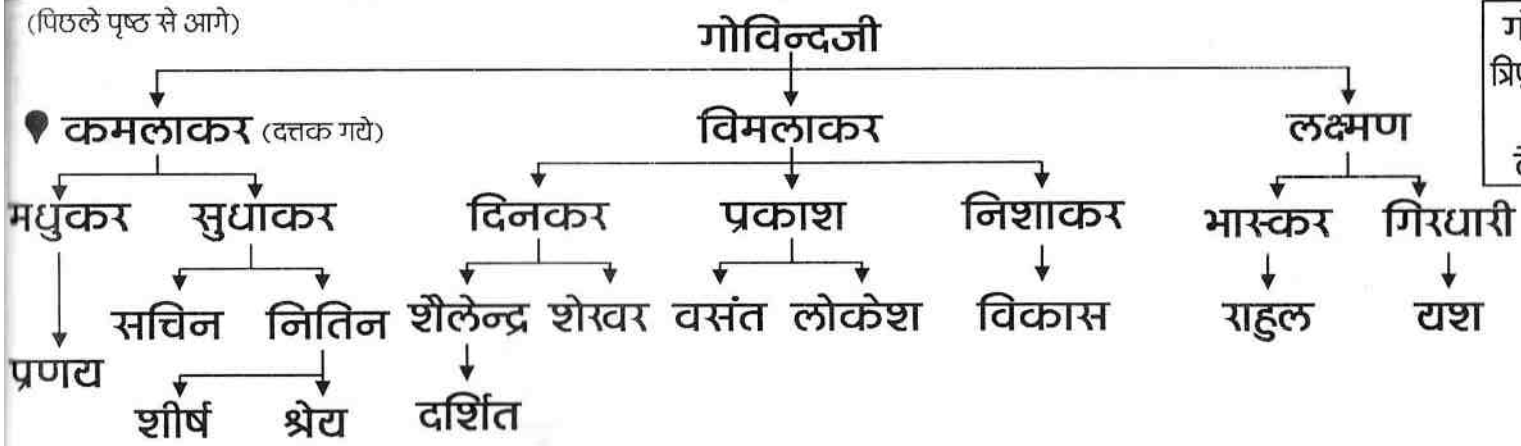

गोत्र–आत्रेय–कवीश्वर
त्रिप्रवर–आर्चनानस, आत्रेय, शावास्य
वेद–कृष्ण यजुर्वेद
तैत्तिरीय आपस्तम्ब शाखा

(पिछले पृष्ठ से आगे)

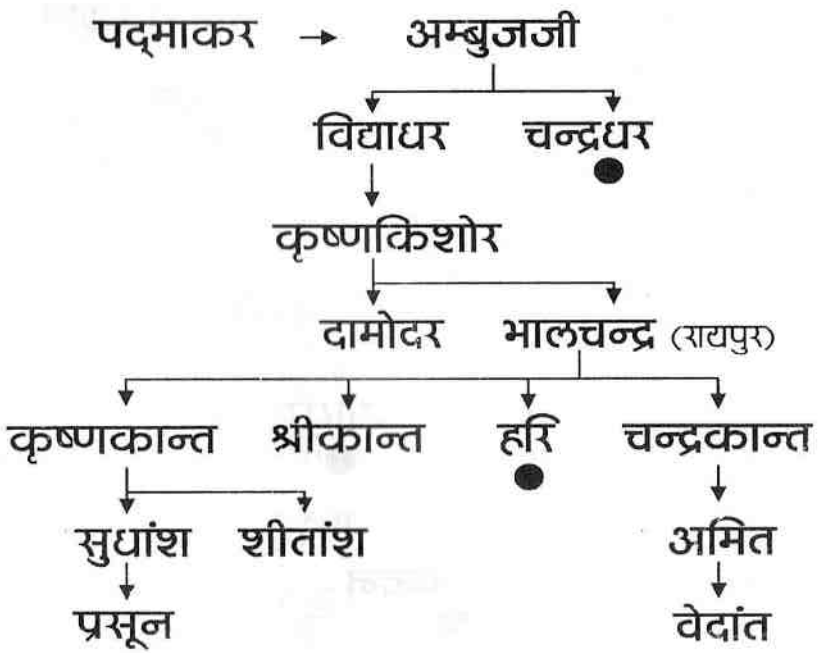

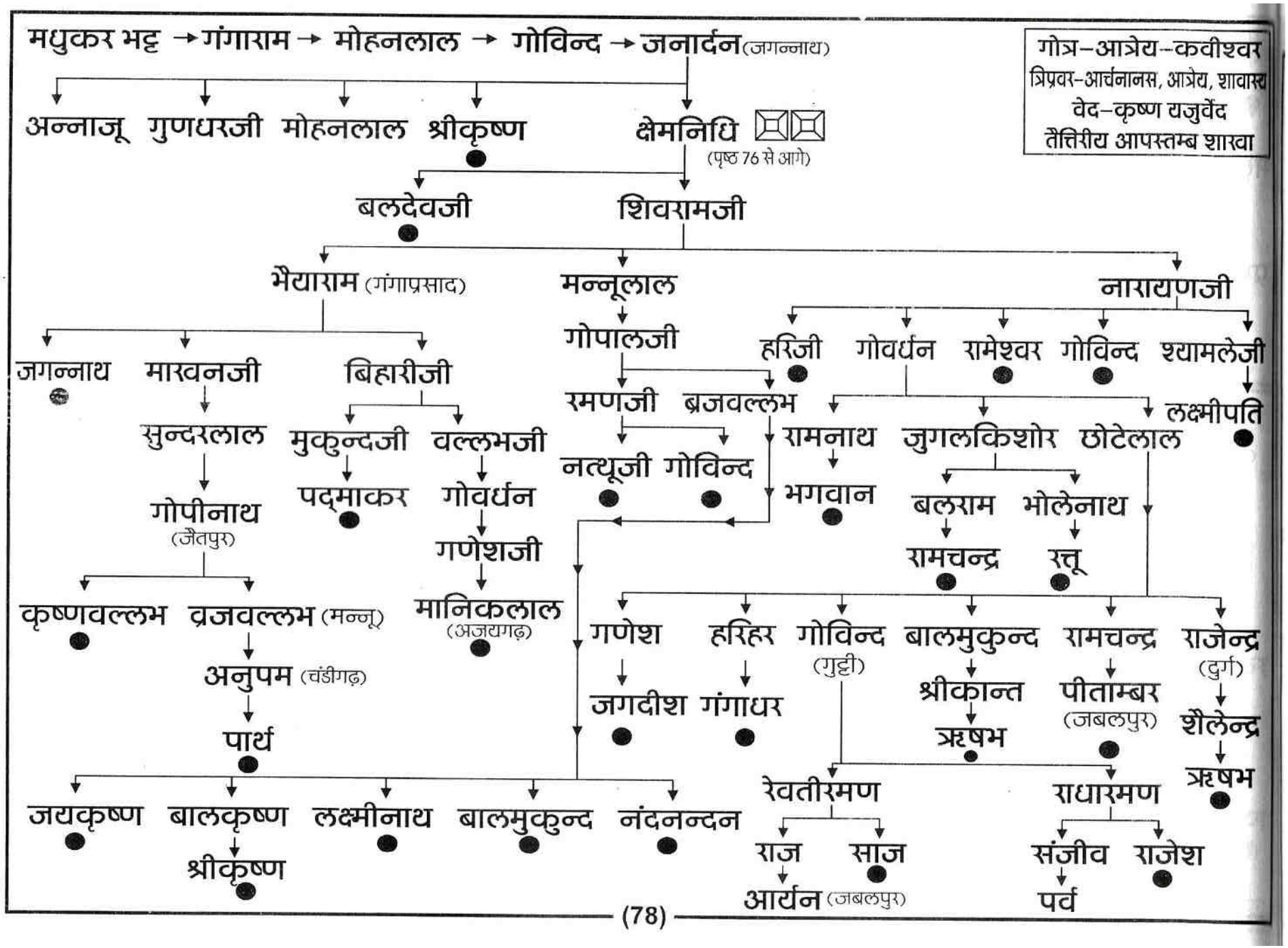
मधुकर भट्ट → गंगाराम → मोहनलाल → गोविन्द → जनार्दन (जगन्नाथ)
गोत्र–आत्रेय–कवीश्वर
त्रिप्रवर–आर्चनानस, आत्रेय, शावास्य
वेद–कृष्ण यजुर्वेद
तैत्तिरीय आपस्तम्ब शाखा
अन्नाजू
गुणधरजी
मोहनलाल
श्रीकृष्ण
क्षेमनिधि
(पृष्ठ 76 से आगे)
बलदेवजी
शिवरामजी
भैयाराम (गंगाप्रसाद)
मन्नूलाल
नारायणजी
जगन्नाथ
मारवनजी
बिहारीजी
गोपालजी
हरिजी
गोवर्धन
रामेश्वर
गोविन्द
श्यामलेजी
सुन्दरलाल
मुकुन्दजी
वल्लभजी
रमणजी
ब्रजवल्लभ
लक्ष्मीपति
रामनाथ
जुगलकिशोर
छोटेलाल
गोपीनाथ
(जैतपुर)
पद्माकर
गोवर्धन
नत्थूजी
गोविन्द
भगवान
बलराम
भोलेनाथ
गणेशजी
रामचन्द्र
रत्तू
कृष्णवल्लभ
ब्रजवल्लभ (मन्नू)
मानिकलाल
(अजयगढ़)
गणेश
हरिहर
गोविन्द
(गुट्टी)
बालमुकुन्द
रामचन्द्र
राजेन्द्र
(दुर्ग)
अनुपम (चंडीगढ़)
जगदीश
गंगाधर
श्रीकान्त
पीताम्बर
(जबलपुर)
शैलेन्द्र
पार्थ
ऋषभ
ऋषभ
रेवतीरमण
राधारमण
जयकृष्ण
बालकृष्ण
लक्ष्मीनाथ
बालमुकुन्द
नंदनन्दन
राज
साज
संजीव
राजेश
श्रीकृष्ण
आर्यन (जबलपुर)
पर्व

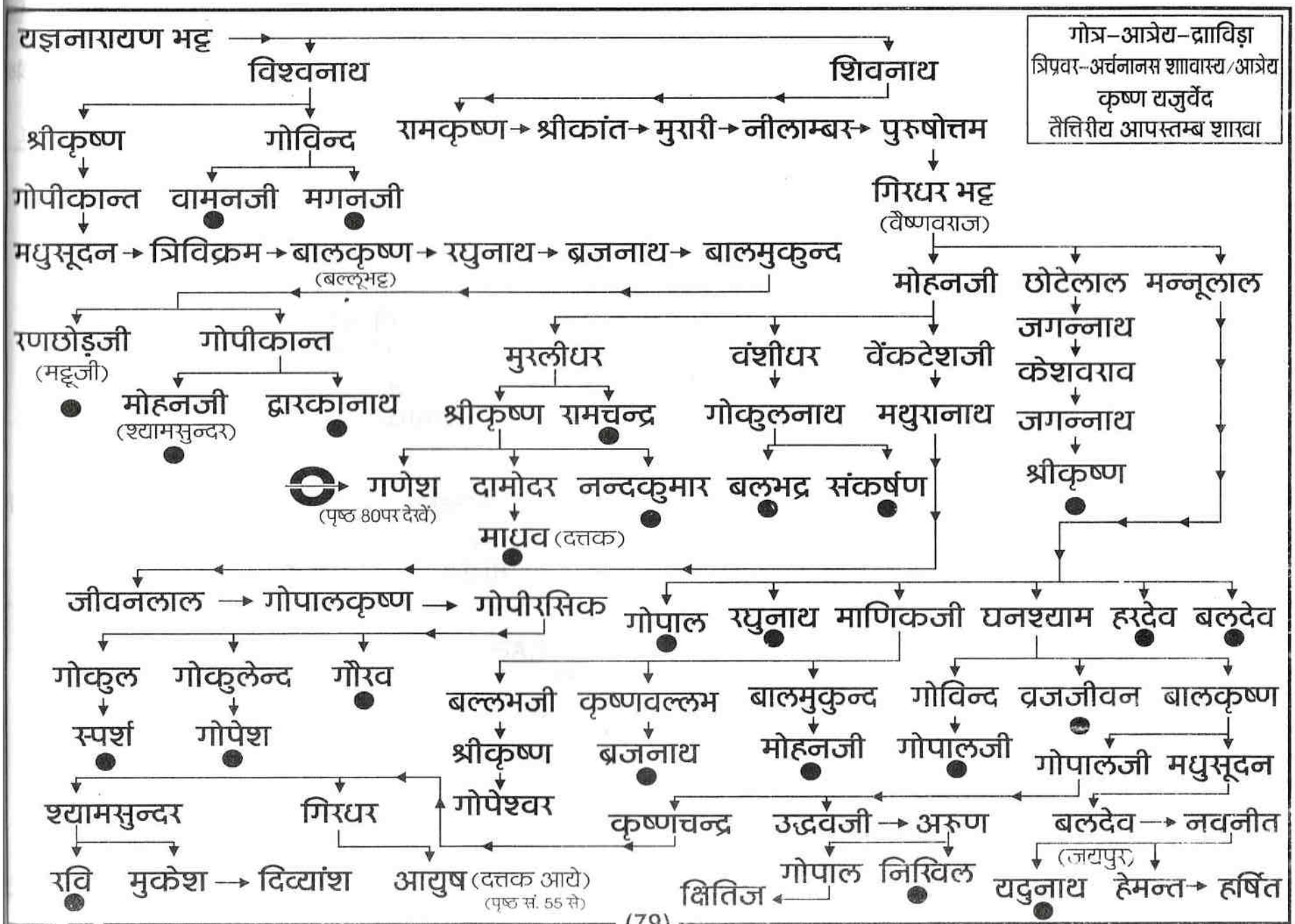
गोत्र–आत्रेय–द्राविड़
त्रिप्रवर–अर्चनानस शाावास्य/आत्रेय
कृष्ण यजुर्वेद
तैत्तिरीय आपस्तम्ब शारवा
यज्ञनारायण भट्ट
विश्वनाथ
शिवनाथ
श्रीकृष्ण
गोविन्द
रामकृष्ण → श्रीकांत → मुरारी → नीलाम्बर → पुरुषोत्तम
गोपीकान्त
वामनजी
मगनजी
गिरधर भट्ट
(वैष्णवराज)
मधुसूदन → त्रिविक्रम → बालकृष्ण → रघुनाथ → ब्रजनाथ → बालमुकुन्द
(बल्लूभट्ट)
मोहनजी
छोटेलाल
मन्नूलाल
रणछोड़जी
(मट्टूजी)
गोपीकान्त
मुरलीधर
वंशीधर
वेंकटेशजी
जगन्नाथ
केशवराव
जगन्नाथ
श्रीकृष्ण
मोहनजी
(श्यामसुन्दर)
द्वारकानाथ
श्रीकृष्ण
रामचन्द्र
गोकुलनाथ
मथुरानाथ
गणेश
(पृष्ठ 80पर देखें)
दामोदर
नन्दकुमार
बलभद्र
संकर्षण
माधव (दत्तक)
जीवनलाल → गोपालकृष्ण → गोपीरसिक
गोपाल
रघुनाथ
माणिकजी
घनश्याम
हरदेव
बलदेव
गोकुल
गोकुलेन्द
गौरव
बल्लभजी
कृष्णवल्लभ
बालमुकुन्द
गोविन्द
व्रजजीवन
बालकृष्ण
स्पर्श
गोपेश
श्रीकृष्ण
ब्रजनाथ
मोहनजी
गोपालजी
गोपालजी
मधुसूदन
श्यामसुन्दर
गिरधर
गोपेश्वर
कृष्णचन्द्र
उद्धवजी → अरुण
बलदेव → नवनीत
(जयपुर)
रवि
मुकेश → दिव्यांश
आयुष (दत्तक आये)
(पृष्ठ सं. 55 से)
क्षितिज
गोपाल
निखिल
यदुनाथ
हेमन्त → हर्षित

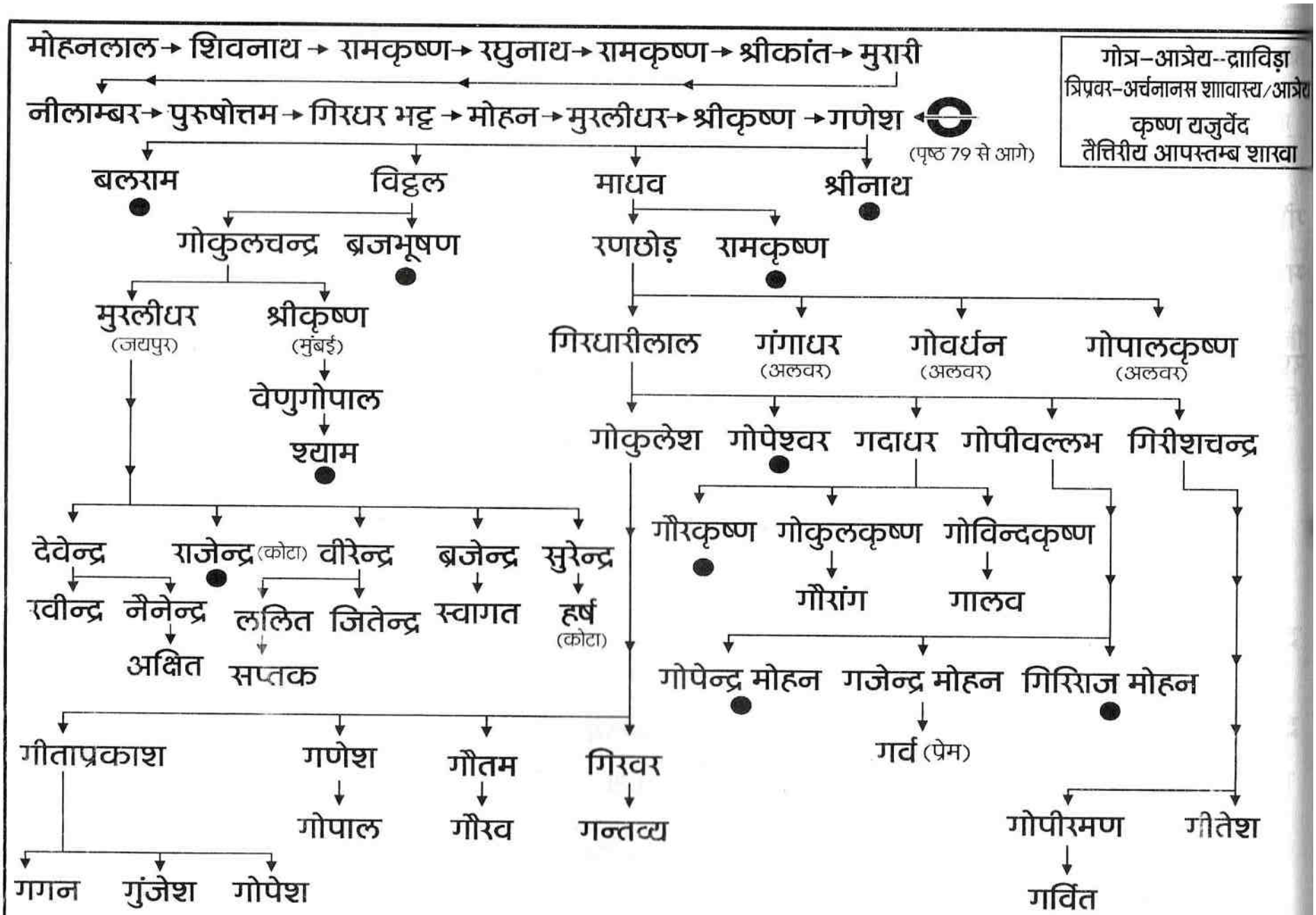
मोहनलाल → शिवनाथ → रामकृष्ण → रघुनाथ → रामकृष्ण → श्रीकांत → मुरारी
नीलाम्बर → पुरुषोत्तम → गिरधर भट्ट → मोहन → मुरलीधर → श्रीकृष्ण → गणेश
(पृष्ठ 79 से आगे)
गोत्र–आत्रेय--द्राविड़
त्रिप्रवर–अर्चनानस शाावास्य/आत्रेय
कृष्ण यजुर्वेद
तैत्तिरीय आपस्तम्ब शाखा
बलराम
विट्ठल
माधव
श्रीनाथ
गोकुलचन्द्र
ब्रजभूषण
रणछोड़
रामकृष्ण
मुरलीधर (जयपुर)
श्रीकृष्ण (मुंबई)
गिरधारीलाल
गंगाधर (अलवर)
गोवर्धन (अलवर)
गोपालकृष्ण (अलवर)
वेणुगोपाल
श्याम
गोकुलेश
गोपेश्वर
गदाधर
गोपीवल्लभ
गिरीशचन्द्र
देवेन्द्र
राजेन्द्र (कोटा)
वीरेन्द्र
ब्रजेन्द्र
सुरेन्द्र
गौरकृष्ण
गोकुलकृष्ण
गोविन्दकृष्ण
रवीन्द्र
नैनेन्द्र
ललित
जितेन्द्र
स्वागत
हर्ष (कोटा)
गौरांग
गालव
अक्षित
सप्तक
गोपेन्द्र मोहन
गजेन्द्र मोहन
गिरिराज मोहन
गर्व (प्रेम)
गीताप्रकाश
गणेश
गौतम
गिरवर
गोपीरमण
गीतेश
गोपाल
गौरव
गन्तव्य
गगन
गुंजेश
गोपेश
गर्वित

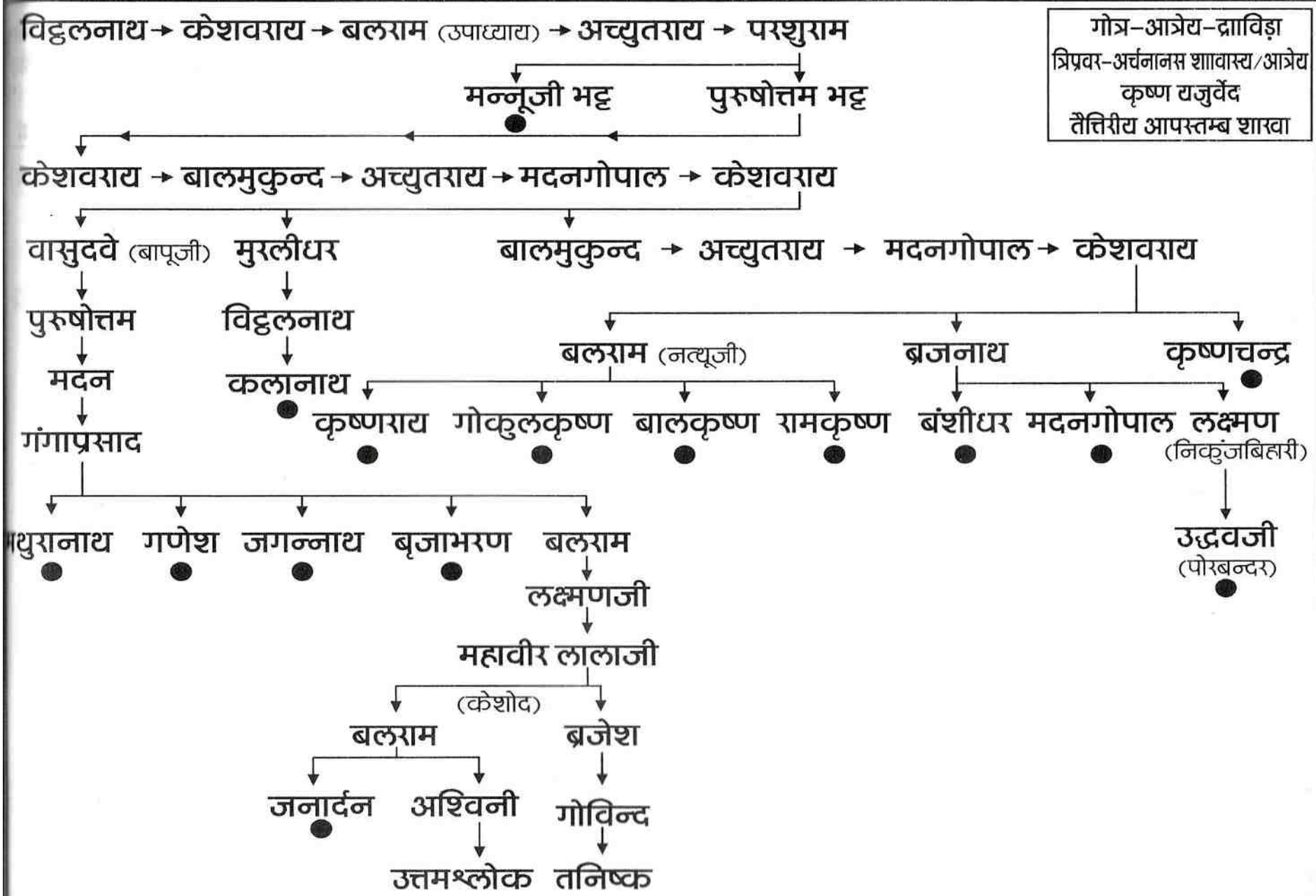
विट्ठलनाथ → केशवराय → बलराम (उपाध्याय) → अच्युतराय → परशुराम
मन्नूजी भट्ट
पुरुषोत्तम भट्ट
गोत्र–आत्रेय–द्राविड़
त्रिप्रवर–अर्चनानस शावास्य/आत्रेय
कृष्ण यजुर्वेद
तैत्तिरीय आपस्तम्ब शारवा
केशवराय → बालमुकुन्द → अच्युतराय → मदनगोपाल → केशवराय
वासुदवे (बापूजी)
मुरलीधर
बालमुकुन्द → अच्युतराय → मदनगोपाल → केशवराय
पुरुषोत्तम
विट्ठलनाथ
बलराम (नत्थूजी)
ब्रजनाथ
कृष्णचन्द्र
मदन
कलानाथ
कृष्णराय
गोकुलकृष्ण
बालकृष्ण
रामकृष्ण
बंशीधर
मदनगोपाल
लक्ष्मण (निकुंजबिहारी)
गंगाप्रसाद
मथुरानाथ
गणेश
जगन्नाथ
बृजाभरण
बलराम
उद्धवजी (पोरबन्दर)
लक्ष्मणजी
महावीर लालाजी
(केशोद)
बलराम
ब्रजेश
जनार्दन
अश्विनी
गोविन्द
उत्तमश्लोक
तनिष्क

गोत्र–आत्रेय–द्राविड़–गोस्वामी
त्रिप्रवर–अर्चनानसं शाावास्य/आत्रेय
कृष्ण यजुर्वेद
तैत्तिरीय आपस्तम्ब शारवा

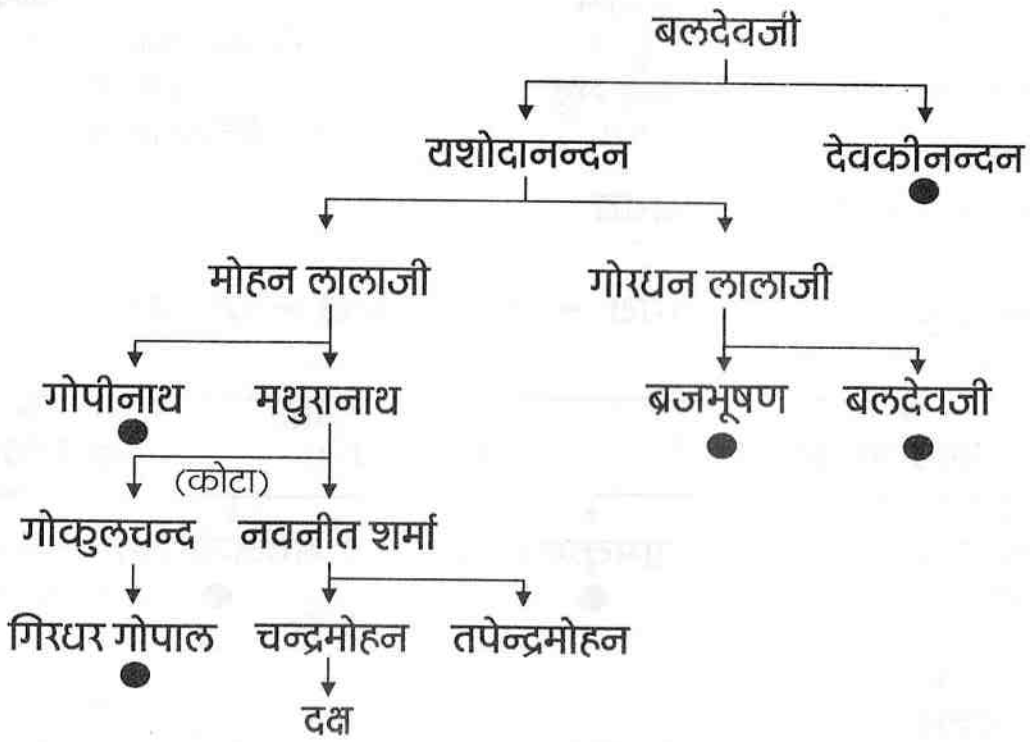

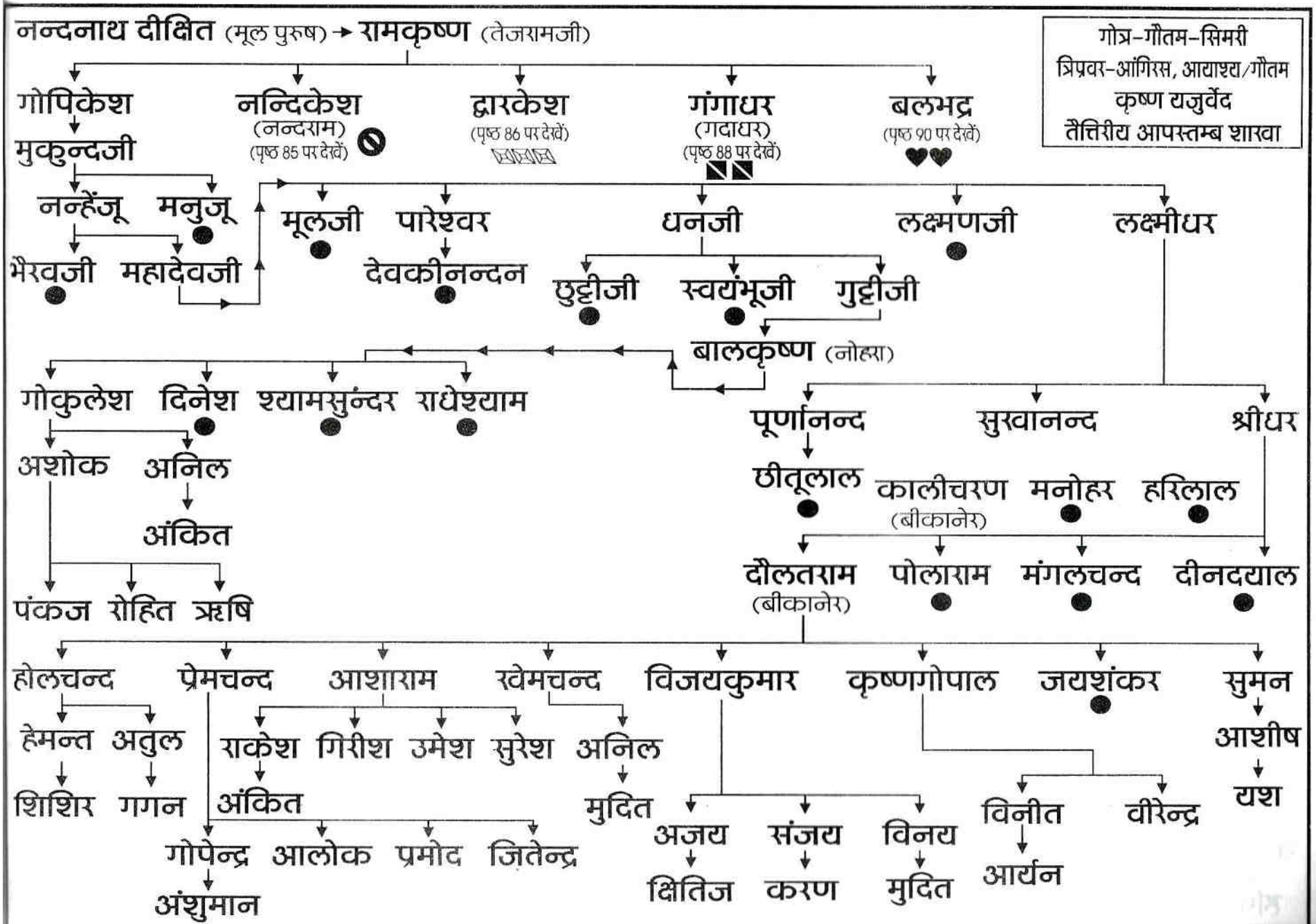
नन्दनाथ दीक्षित (मूल पुरुष) → रामकृष्ण (तेजरामजी)
गोत्र–गौतम–सिमरी
त्रिप्रवर–आंगिरस, आयाश्य/गौतम
कृष्ण यजुर्वेद
तैत्तिरीय आपस्तम्ब शाखा
गोपिकेश
मुकुन्दजी
नन्दिकेश
(नन्दराम)
(पृष्ठ 85 पर देखें)
द्वारकेश
(पृष्ठ 86 पर देखें)
गंगाधर
(गदाधर)
(पृष्ठ 88 पर देखें)
बलभद्र
(पृष्ठ 90 पर देखें)
नन्हेंजू
मनुजू
भैरवजी
महादेवजी
मूलजी
पारेश्वर
देवकीनन्दन
धनजी
लक्ष्मणजी
लक्ष्मीधर
छुट्टीजी
स्वयंभूजी
गुट्टीजी
बालकृष्ण (नोहरा)
गोकुलेश
दिनेश
श्यामसुन्दर
राधेश्याम
अशोक
अनिल
अंकित
पंकज
रोहित
ऋषि
पूर्णानन्द
सुखानन्द
श्रीधर
छीतूलाल
कालीचरण
(बीकानेर)
मनोहर
हरिलाल
दौलतराम
(बीकानेर)
पोलाराम
मंगलचन्द
दीनदयाल
होलचन्द
प्रेमचन्द
आशाराम
खेमचन्द
विजयकुमार
कृष्णगोपाल
जयशंकर
सुमन
हेमन्त
अतुल
शिशिर
गगन
राकेश
गिरीश
उमेश
सुरेश
अनिल
अंकित
मुदित
गोपेन्द्र
आलोक
प्रमोद
जितेन्द्र
अंशुमान
अजय
संजय
विनय
क्षितिज
करण
मुदित
विनीत
वीरेन्द्र
आर्यन
आशीष
यश

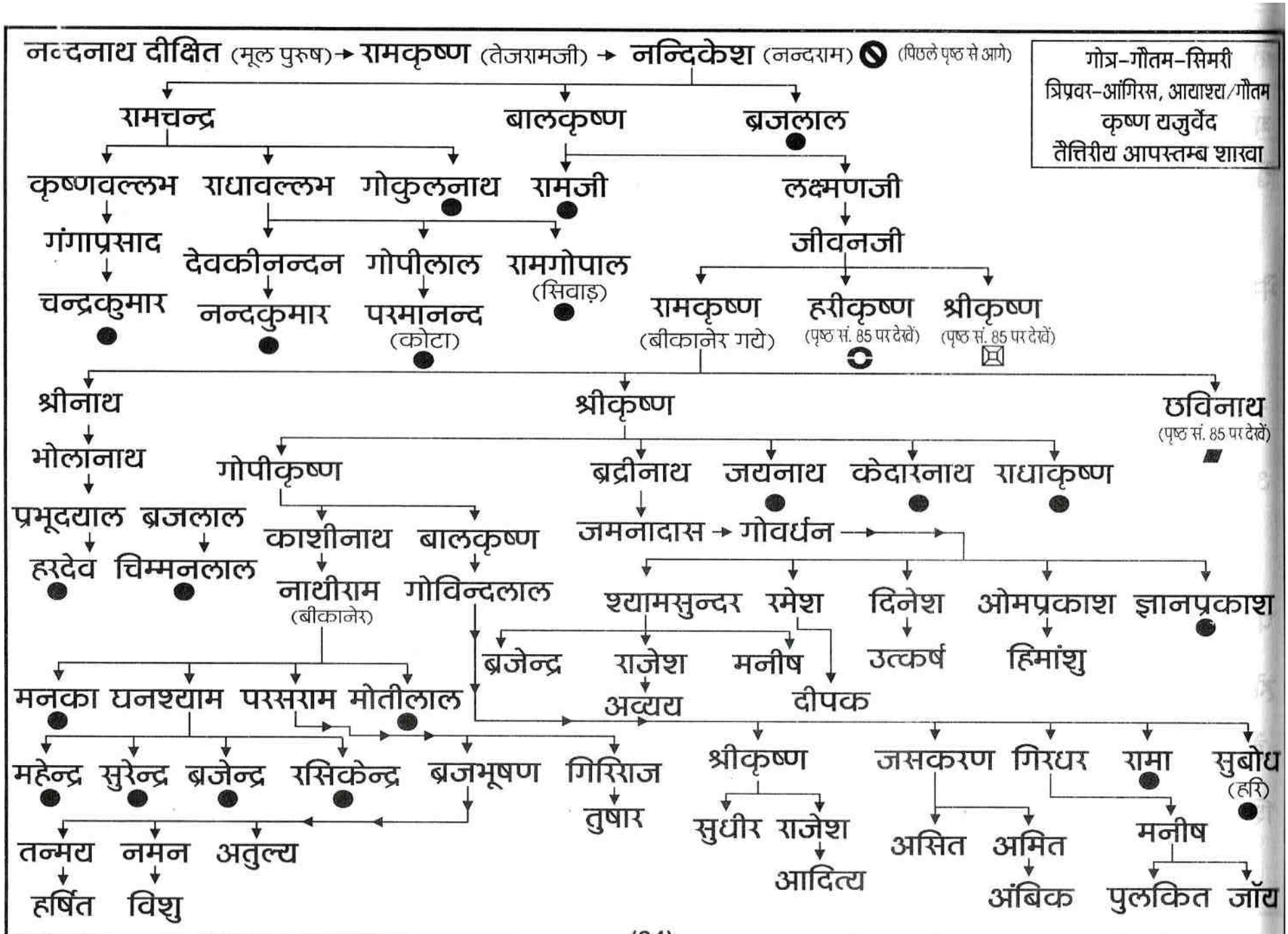
नन्दनाथ दीक्षित (मूल पुरुष) → रामकृष्ण (तेजरामजी) → नन्दिकेश (नन्दराम) (पिछले पृष्ठ से आगे)
गोत्र-गौतम-सिमरी
त्रिप्रवर-आंगिरस, आयाश्य/गौतम
कृष्ण यजुर्वेद
तैत्तिरीय आपस्तम्ब शाखा
रामचन्द्र
बालकृष्ण
ब्रजलाल
कृष्णवल्लभ
राधावल्लभ
गोकुलनाथ
रामजी
लक्ष्मणजी
गंगाप्रसाद
चन्द्रकुमार
देवकीनन्दन
नन्दकुमार
गोपीलाल
परमानन्द
(कोटा)
रामगोपाल
(सिवाड़)
जीवनजी
रामकृष्ण
(बीकानेर गद्दी)
हरीकृष्ण
(पृष्ठ सं. 85 पर देखें)
श्रीकृष्ण
(पृष्ठ सं. 85 पर देखें)
श्रीनाथ
भोलानाथ
प्रभूदयाल
हरदेव
ब्रजलाल
चिम्मनलाल
श्रीकृष्ण
गोपीकृष्ण
काशीनाथ
नाथीराम
(बीकानेर)
बालकृष्ण
गोविन्दलाल
छविनाथ
(पृष्ठ सं. 85 पर देखें)
ब्रद्रीनाथ
जयनाथ
केदारनाथ
राधाकृष्ण
जमनादास → गोवर्धन
श्यामसुन्दर
रमेश
दिनेश
ओमप्रकाश
ज्ञानप्रकाश
उत्कर्ष
हिमांशु
ब्रजेन्द्र
राजेश
अव्यय
मनीष
दीपक
मनका
घनश्याम
परसराम
मोतीलाल
महेन्द्र
सुरेन्द्र
ब्रजेन्द्र
रसिकेन्द्र
ब्रजभूषण
गिरिराज
तुषार
तन्मय
नमन
अतुल्य
हर्षित
विशु
श्रीकृष्ण
सुधीर
राजेश
आदित्य
जसकरण
गिरधर
रामा
सुबोध
(हरि)
असित
अमित
अंबिक
मनीष
पुलकित
जॉय

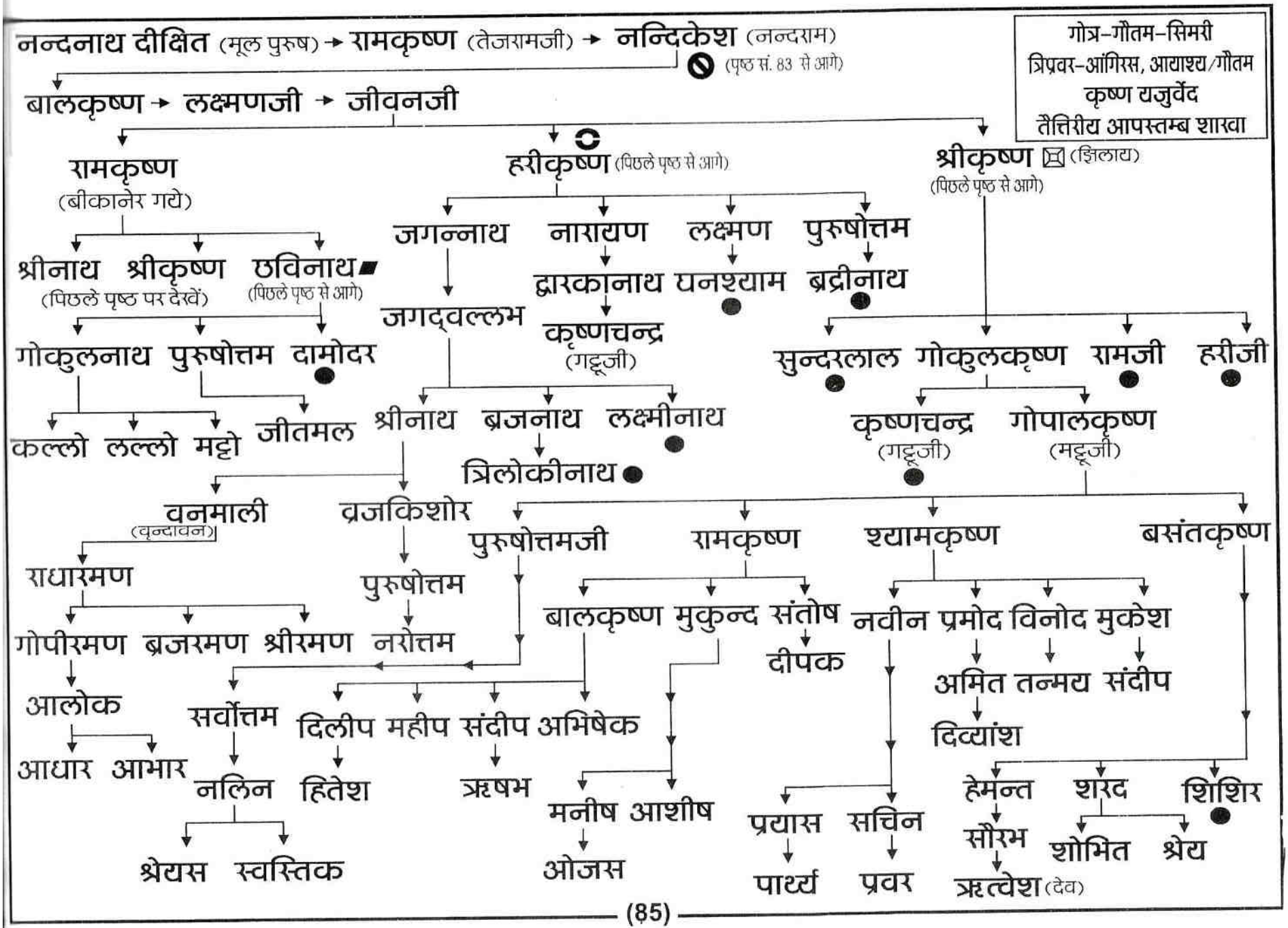
नन्दनाथ दीक्षित (मूल पुरुष) → रामकृष्ण (तेजरामजी) → नन्दिकेश (नन्दराम)
(पृष्ठ सं. 83 से आगे)
गोत्र-गौतम-सिमरी
त्रिप्रवर-आंगिरस, आद्याश्य/गौतम
कृष्ण यजुर्वेद
तैत्तिरीय आपस्तम्ब शाखा
बालकृष्ण → लक्ष्मणजी → जीवनजी
रामकृष्ण
(बीकानेर गये)
हरीकृष्ण (पिछले पृष्ठ से आगे)
श्रीकृष्ण (झिलाय)
(पिछले पृष्ठ से आगे)
श्रीनाथ श्रीकृष्ण छविनाथ
(पिछले पृष्ठ पर देखें)
(पिछले पृष्ठ से आगे)
जगन्नाथ नारायण लक्ष्मण पुरुषोत्तम
द्वारकानाथ घनश्याम बद्रीनाथ
जगद्वल्लभ
कृष्णचन्द्र
(गट्टूजी)
गोकुलनाथ पुरुषोत्तम दामोदर
कल्लो लल्लो मट्टो जीतमल
श्रीनाथ ब्रजनाथ लक्ष्मीनाथ
त्रिलोकीनाथ
सुन्दरलाल गोकुलकृष्ण रामजी हरीजी
कृष्णचन्द्र
(गट्टूजी)
गोपालकृष्ण
(मट्टूजी)
वनमाली
(वृन्दावन)
व्रजकिशोर
पुरुषोत्तमजी
रामकृष्ण
श्यामकृष्ण
बसंतकृष्ण
राधारमण
पुरुषोत्तम
बालकृष्ण मुकुन्द संतोष
दीपक
नवीन प्रमोद विनोद मुकेश
गोपीरमण ब्रजरमण श्रीरमण नरोत्तम
अमित तन्मय संदीप
आलोक
सर्वोत्तम
दिलीप महीप संदीप अभिषेक
दिव्यांश
आधार आभार
नलिन
हितेश
ऋषभ
मनीष आशीष
प्रयास सचिन
हेमन्त शरद शिशिर
श्रेयस स्वस्तिक
ओजस
पार्थ्य प्रवर
सौरभ
शोभित श्रेय
ऋत्वेश (देव)

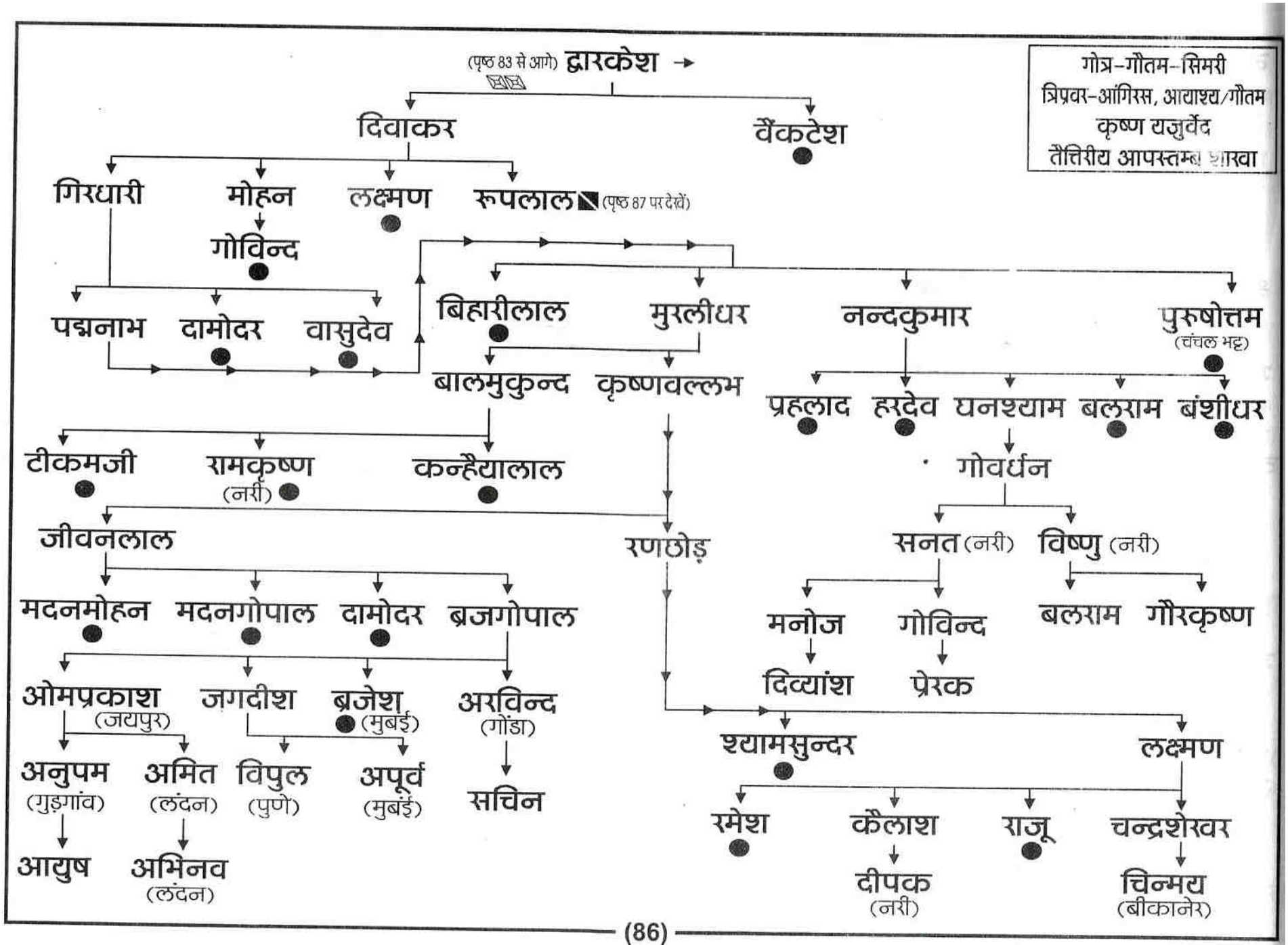
(पृष्ठ 83 से आगे) द्वारकेश →
गोत्र–गौतम–सिमरी
त्रिप्रवर–आंगिरस, आयाश्य/गौतम
कृष्ण यजुर्वेद
तैत्तिरीय आपस्तम्ब शाखा
दिवाकर
वैंकटेश
गिरधारी
मोहन
लक्ष्मण
रूपलाल (पृष्ठ 87 पर देखें)
गोविन्द
पद्मनाभ
दामोदर
वासुदेव
बिहारीलाल
मुरलीधर
नन्दकुमार
पुरुषोत्तम
(चंचल भट्ट)
बालमुकुन्द
कृष्णवल्लभ
प्रहलाद
हरदेव
घनश्याम
बलराम
बंशीधर
टीकमजी
रामकृष्ण
(नरी)
कन्हैयालाल
गोवर्धन
जीवनलाल
रणछोड़
सनत (नरी)
विष्णु (नरी)
मदनमोहन
मदनगोपाल
दामोदर
ब्रजगोपाल
मनोज
गोविन्द
बलराम
गौरकृष्ण
दिव्यांश
प्रेरक
ओमप्रकाश
(जयपुर)
जगदीश
ब्रजेश
(मुबई)
अरविन्द
(गोंडा)
श्यामसुन्दर
लक्ष्मण
अनुपम
(गुड़गांव)
अमित
(लंदन)
विपुल
(पुणे)
अपूर्व
(मुबई)
सचिन
रमेश
कैलाश
राजू
चन्द्रशेखर
आयुष
अभिनव
(लंदन)
दीपक
(नरी)
चिन्मय
(बीकानेर)

गोत्र--गौतम--सिमरी
त्रिप्रवर--आंगिरस, आद्याश्य/गौतम
कृष्ण यजुर्वेद
तैत्तिरीय आपस्तम्ब शाखा

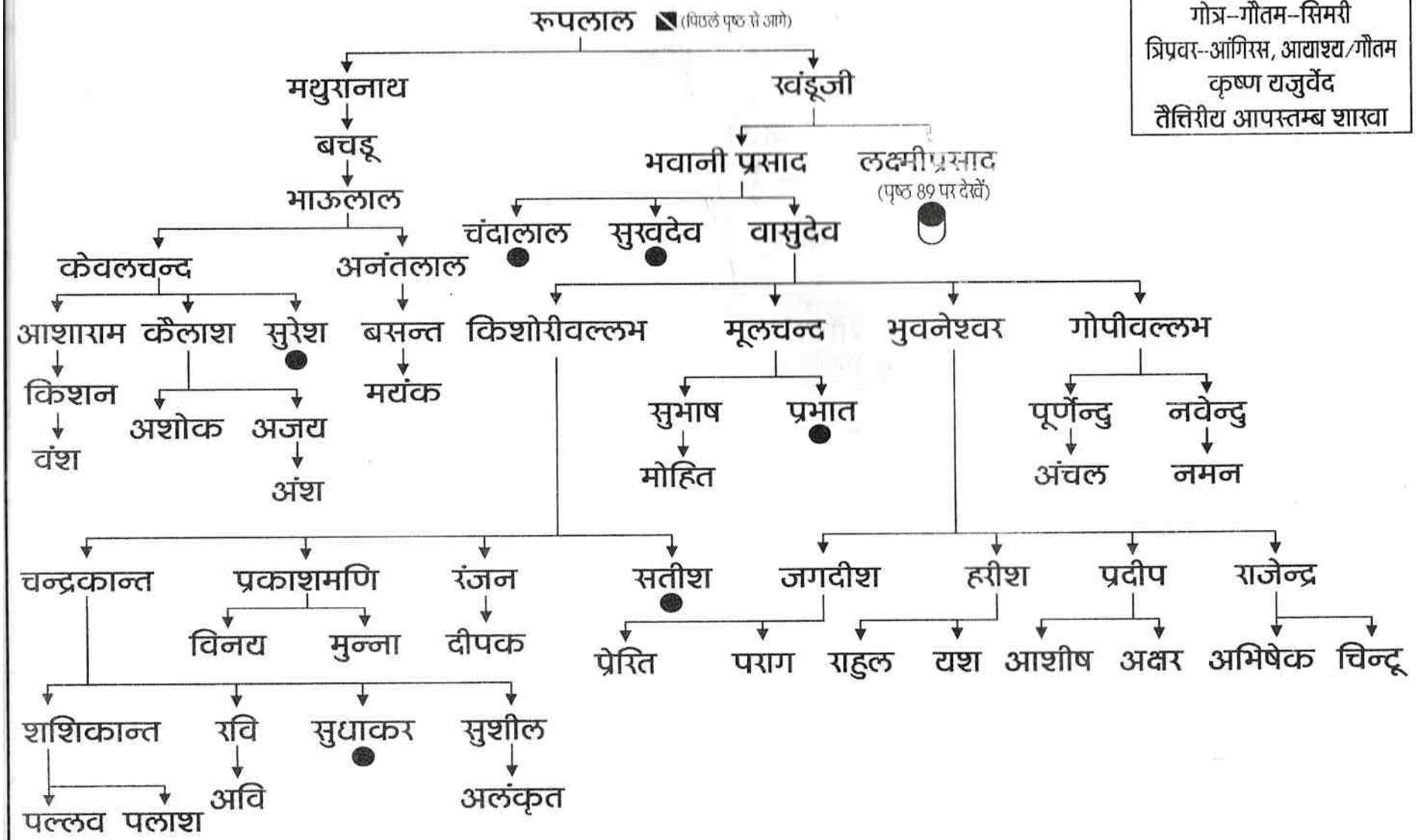

गोत्र–गौतम–सिमरी
त्रिप्रवर–आंगिरस, आयाश्य/गौतम
कृष्ण यजुर्वेद
तैत्तिरीय आपस्तम्ब शाखा

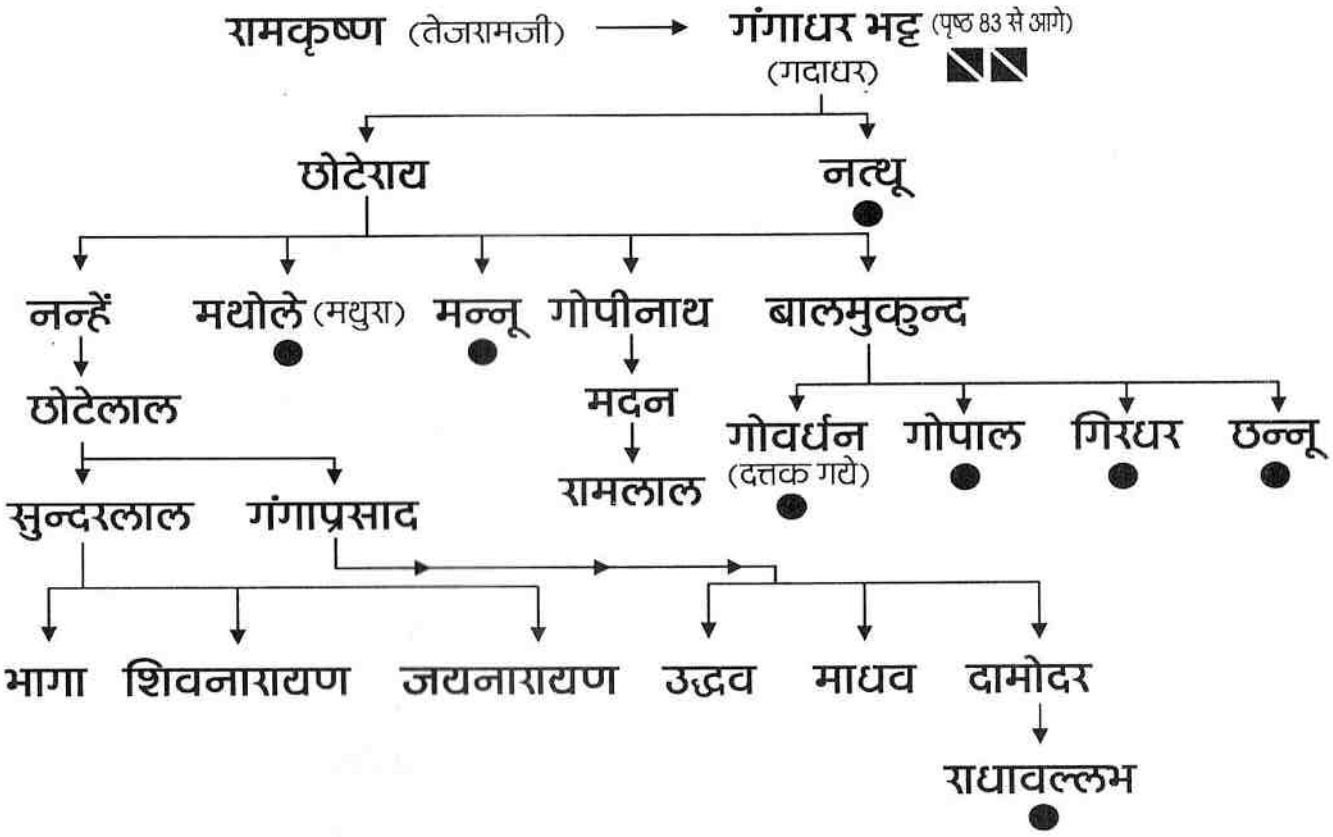

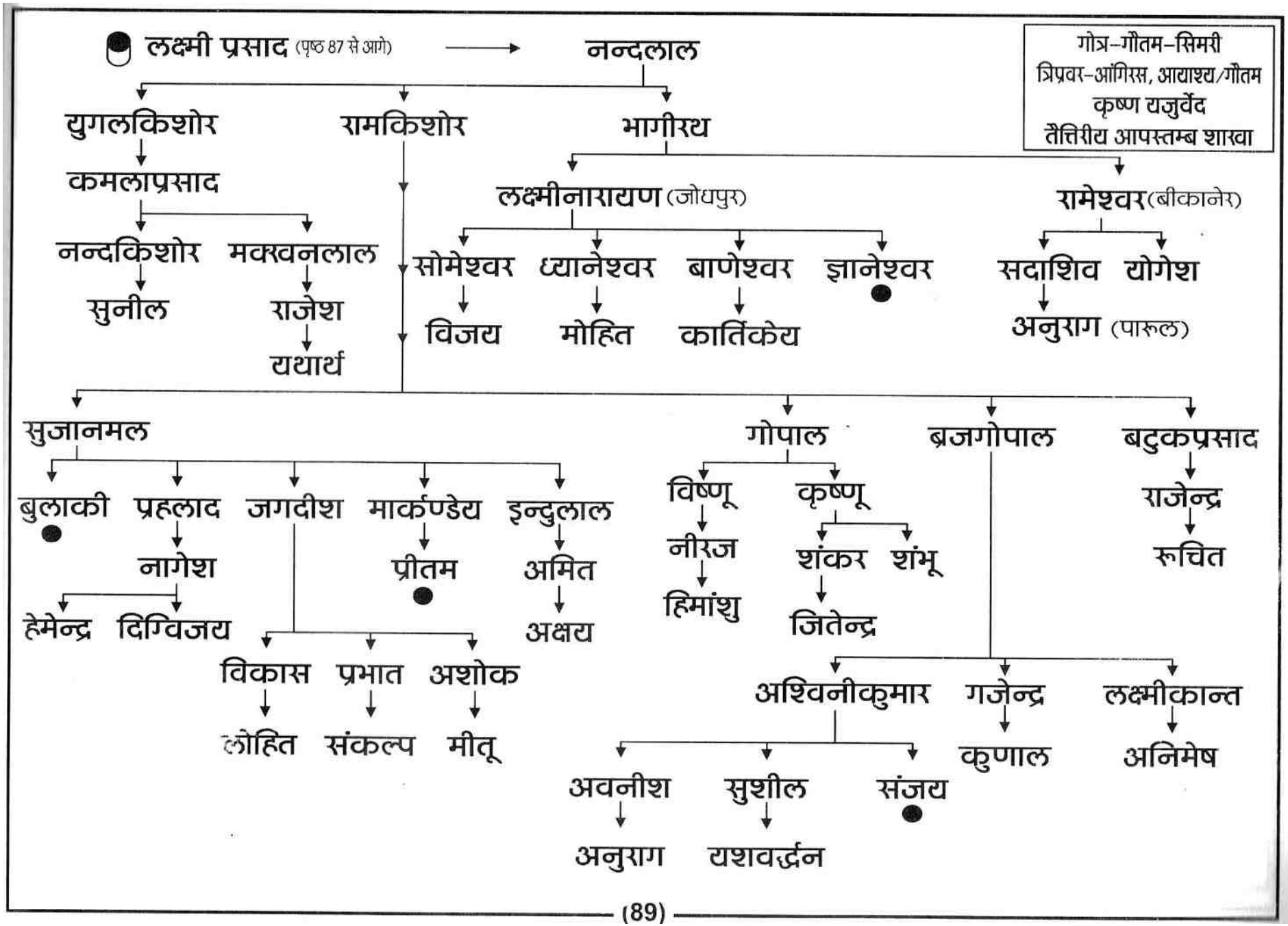
लक्ष्मी प्रसाद (पृष्ठ 87 से आगे)
नन्दलाल
गोत्र–गौतम–सिमरी
त्रिप्रवर–आंगिरस, आद्याश्य/गौतम
कृष्ण यजुर्वेद
तैत्तिरीय आपस्तम्ब शाखा
युगलकिशोर
रामकिशोर
भागीरथ
कमलाप्रसाद
लक्ष्मीनारायण (जोधपुर)
रामेश्वर (बीकानेर)
नन्दकिशोर
मक्खनलाल
सोमेश्वर
ध्यानेश्वर
बाणेश्वर
ज्ञानेश्वर
सदाशिव
योगेश
सुनील
राजेश
विजय
मोहित
कार्तिकेय
अनुराग (पारूल)
यथार्थ
सुजानमल
गोपाल
ब्रजगोपाल
बटुकप्रसाद
बुलाकी
प्रहलाद
जगदीश
मार्कण्डेय
इन्दुलाल
विष्णू
कृष्णू
राजेन्द्र
नागेश
प्रीतम
अमित
नीरज
शंकर
शंभू
रूचित
हेमेन्द्र
दिग्विजय
अक्षय
हिमांशु
जितेन्द्र
विकास
प्रभात
अशोक
अश्विनीकुमार
गजेन्द्र
लक्ष्मीकान्त
लोहित
संकल्प
मीतू
कुणाल
अनिमेष
अवनीश
सुशील
संजय
अनुराग
यशवर्द्धन

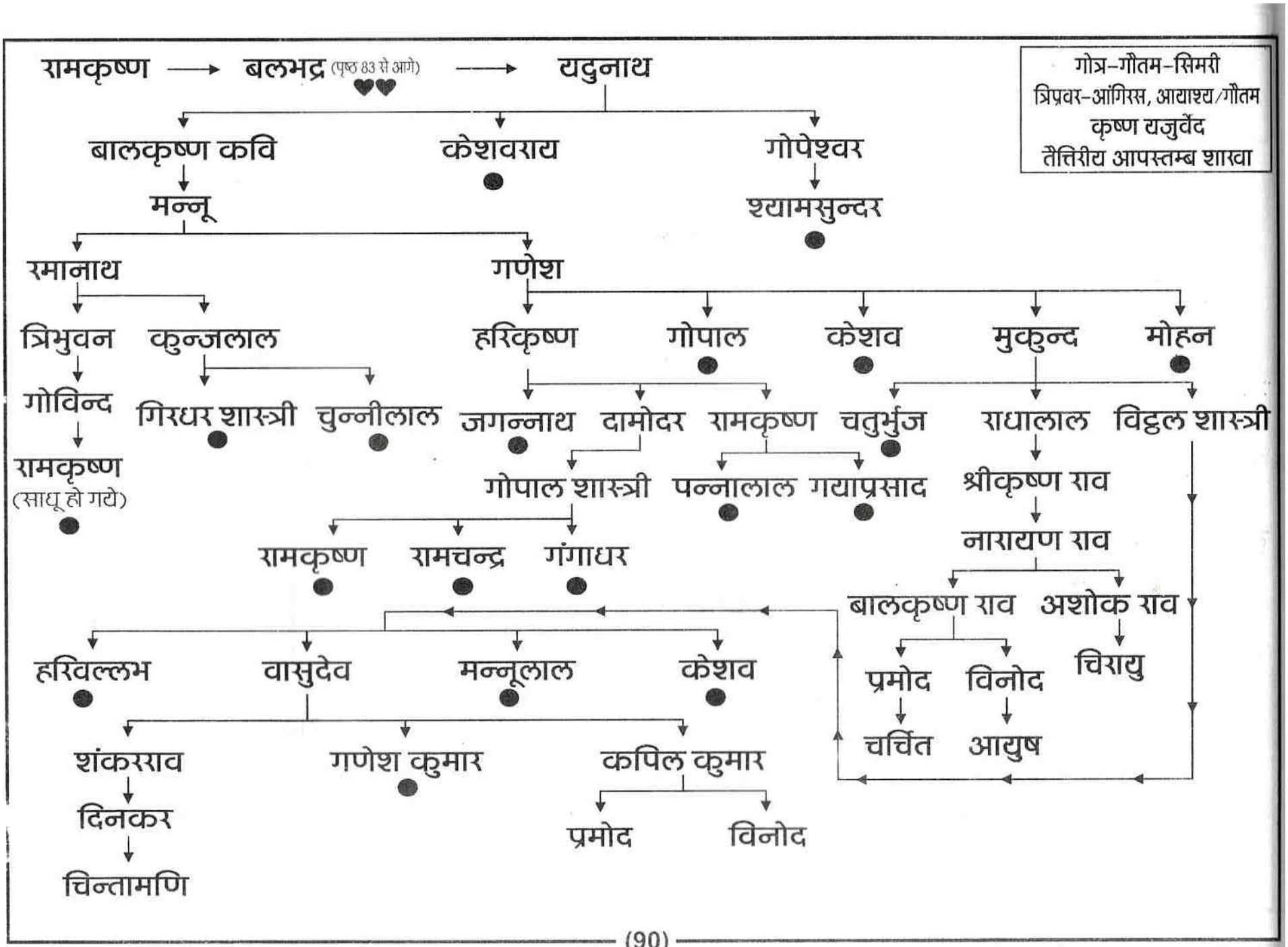
रामकृष्ण → बलभद्र (पृष्ठ 83 से आगे) → यदुनाथ
गोत्र-गौतम-सिमरी
त्रिप्रवर-आंगिरस, आयाश्य/गौतम
कृष्ण यजुर्वेद
तैत्तिरीय आपस्तम्ब शाखा
बालकृष्ण कवि
केशवराय
गोपेश्वर
मन्नू
श्यामसुन्दर
रमानाथ
गणेश
त्रिभुवन
कुन्जलाल
हरिकृष्ण
गोपाल
केशव
मुकुन्द
मोहन
गोविन्द
गिरधर शास्त्री
चुन्नीलाल
जगन्नाथ
दामोदर
रामकृष्ण
चतुर्भुज
राधालाल
विट्ठल शास्त्री
रामकृष्ण
(साधू हो गये)
गोपाल शास्त्री
पन्नालाल
गयाप्रसाद
श्रीकृष्ण राव
रामकृष्ण
रामचन्द्र
गंगाधर
नारायण राव
बालकृष्ण राव
अशोक राव
हरिवल्लभ
वासुदेव
मन्नूलाल
केशव
प्रमोद
विनोद
चिरायु
शंकरराव
गणेश कुमार
कपिल कुमार
चर्चित
आयुष
दिनकर
प्रमोद
विनोद
चिन्तामणि

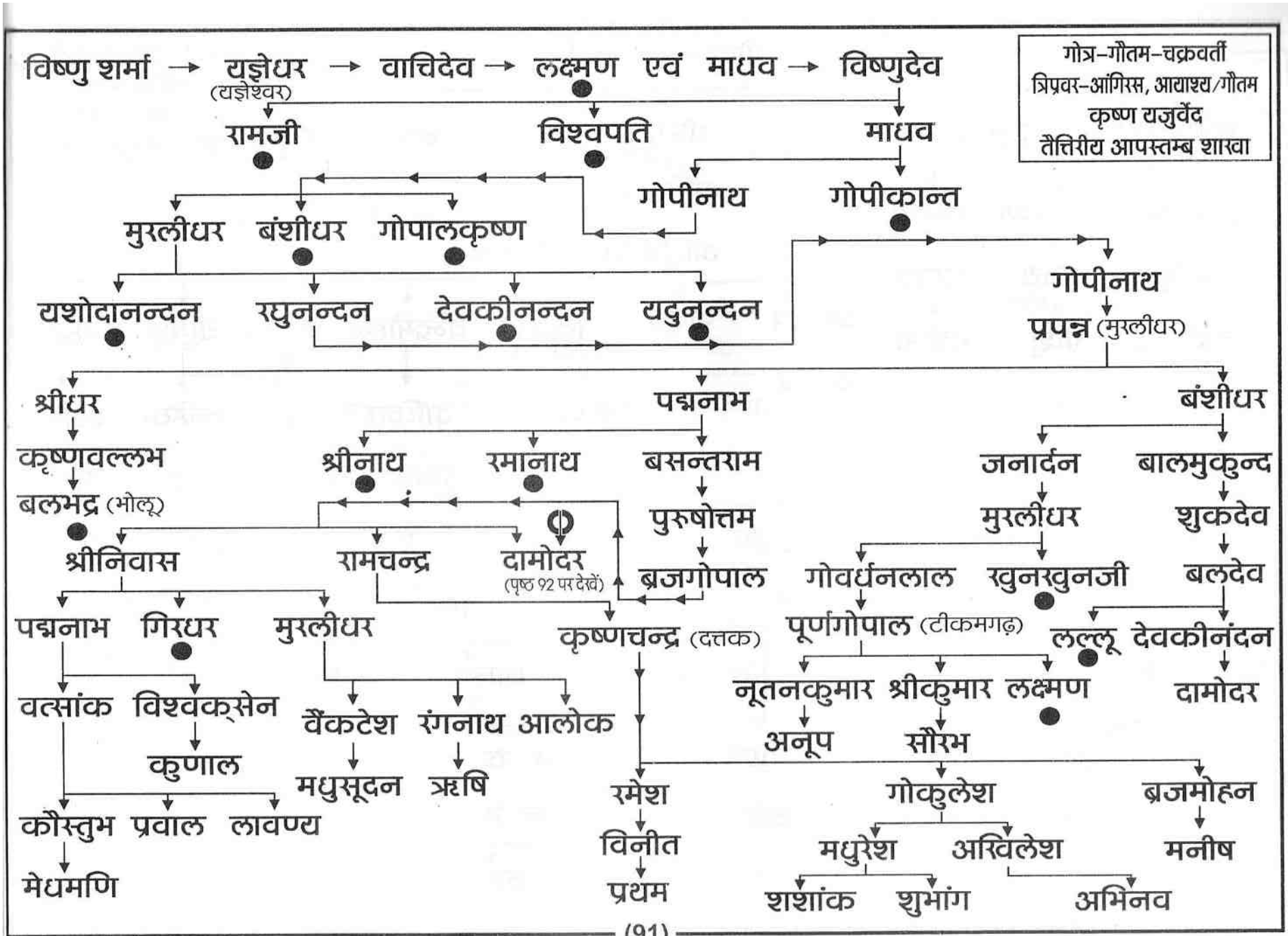
गोत्र–गौतम–चक्रवर्ती
त्रिप्रवर–आंगिरस, आयाश्य/गौतम
कृष्ण यजुर्वेद
तैत्तिरीय आपस्तम्ब शाखा
विष्णु शर्मा → यज्ञेधर (यज्ञेश्वर) → वाचिदेव → लक्ष्मण एवं माधव → विष्णुदेव
रामजी
विश्वपति
माधव
गोपीनाथ
गोपीकान्त
मुरलीधर
बंशीधर
गोपालकृष्ण
यशोदानन्दन
रघुनन्दन
देवकीनन्दन
यदुनन्दन
गोपीनाथ
प्रपन्न (मुरलीधर)
श्रीधर
पद्मनाभ
बंशीधर
कृष्णवल्लभ
श्रीनाथ
रमानाथ
बसन्तराम
जनार्दन
बालमुकुन्द
बलभद्र (भोलू)
पुरुषोत्तम
मुरलीधर
शुकदेव
श्रीनिवास
रामचन्द्र
दामोदर
(पृष्ठ 92 पर देखें)
ब्रजगोपाल
गोवर्धनलाल
खुनखुनजी
बलदेव
पद्मनाभ
गिरधर
मुरलीधर
कृष्णचन्द्र (दत्तक)
पूर्णगोपाल (टीकमगढ़)
लल्लू
देवकीनंदन
वत्सांक
विश्वक्सेन
वैंकटेश
रंगनाथ
आलोक
नूतनकुमार
श्रीकुमार
लक्ष्मण
दामोदर
कुणाल
मधुसूदन
ऋषि
अनूप
सौरभ
कौस्तुभ
प्रवाल
लावण्य
रमेश
गोकुलेश
ब्रजमोहन
विनीत
मधुरेश
अखिलेश
मनीष
मेधमणि
प्रथम
शशांक
शुभांग
अभिनव

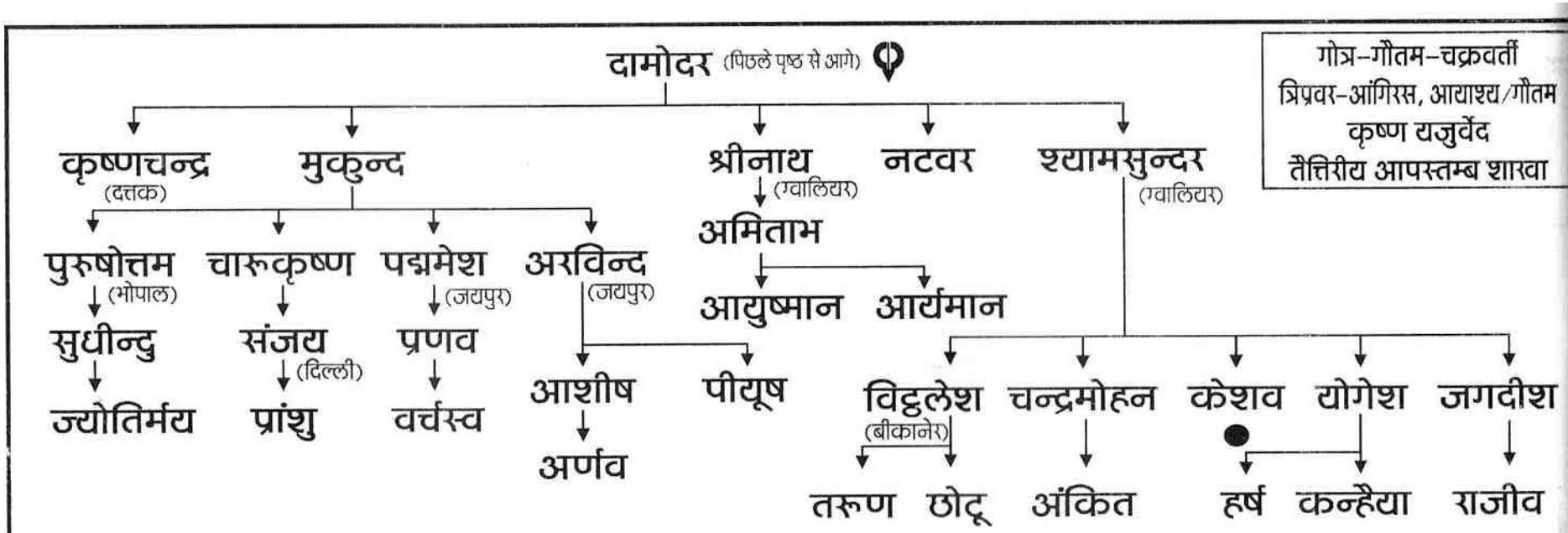
दामोदर (पिछले पृष्ठ से आगे)
गोत्र–गौतम–चक्रवर्ती
त्रिप्रवर–आंगिरस, आयाश्य/गौतम
कृष्ण यजुर्वेद
तैत्तिरीय आपस्तम्ब शाखा
कृष्णचन्द्र
(दत्तक)
मुकुन्द
श्रीनाथ
(ग्वालियर)
नटवर
श्यामसुन्दर
(ग्वालियर)
अमिताभ
पुरुषोत्तम
(भोपाल)
चारूकृष्ण
पद्ममेश
(जयपुर)
अरविन्द
(जयपुर)
आयुष्मान
आर्यमान
सुधीन्दु
संजय
(दिल्ली)
प्रणव
आशीष
पीयूष
विट्ठलेश
(बीकानेर)
चन्द्रमोहन
केशव
योगेश
जगदीश
ज्योतिर्मय
प्रांशु
वर्चस्व
अर्णव
तरूण
छोटू
अंकित
हर्ष
कन्हैया
राजीव

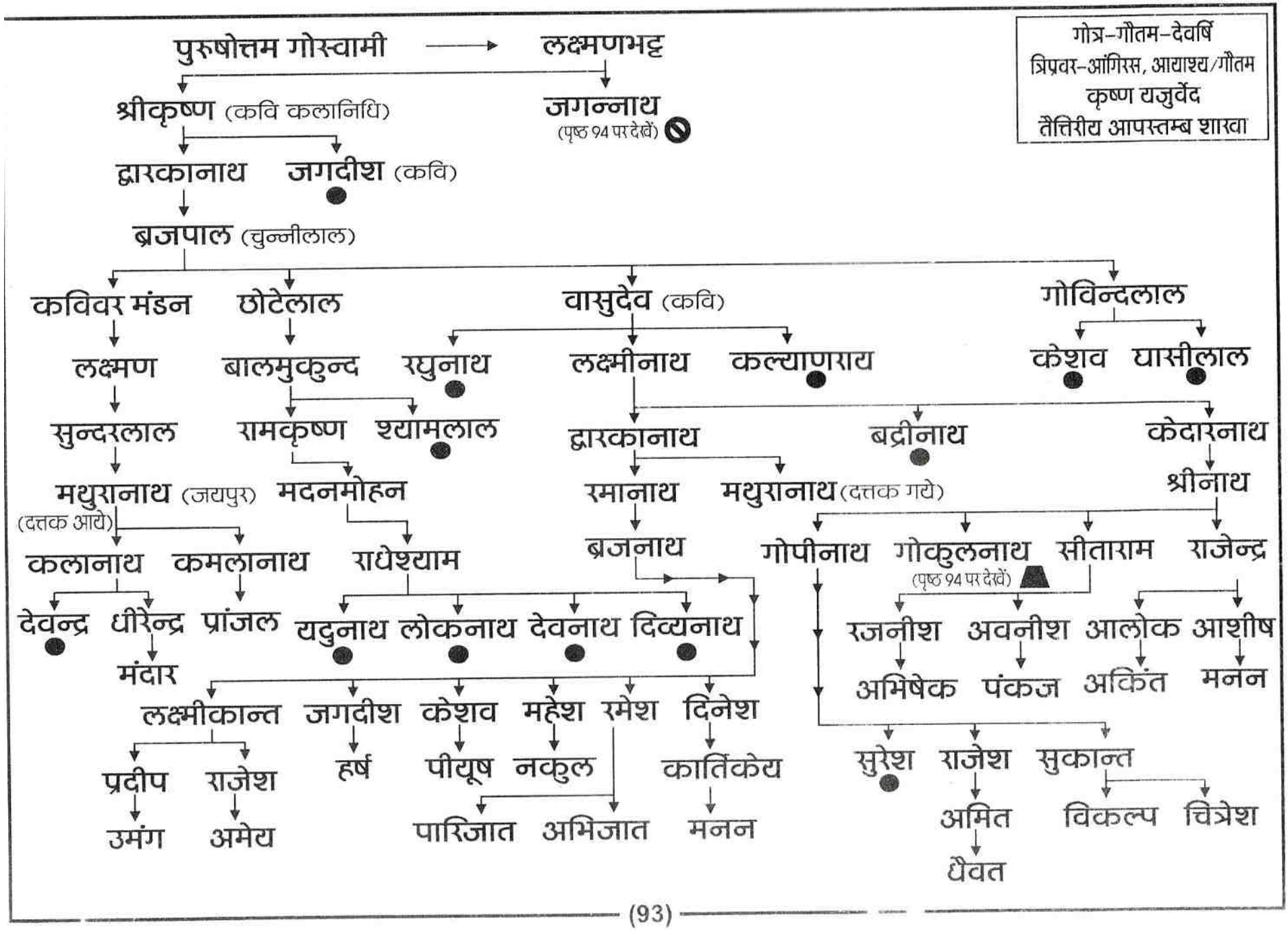
गोत्र–गौतम–देवर्षि
त्रिप्रवर–आंगिरस, आयाश्य/गौतम
कृष्ण यजुर्वेद
तैत्तिरीय आपस्तम्ब शाखा
पुरुषोत्तम गोस्वामी
लक्ष्मणभट्ट
श्रीकृष्ण (कवि कलानिधि)
जगन्नाथ
(पृष्ठ 94 पर देखें)
द्वारकानाथ
जगदीश (कवि)
ब्रजपाल (चुन्नीलाल)
कविवर मंडन
छोटेलाल
वासुदेव (कवि)
गोविन्दलाल
लक्ष्मण
बालमुकुन्द
रघुनाथ
लक्ष्मीनाथ
कल्याणराय
केशव
घासीलाल
सुन्दरलाल
रामकृष्ण
श्यामलाल
द्वारकानाथ
बद्रीनाथ
केदारनाथ
मथुरानाथ (जयपुर)
(दत्तक आये)
मदनमोहन
रमानाथ
मथुरानाथ (दत्तक गये)
श्रीनाथ
कलानाथ
कमलानाथ
राधेश्याम
ब्रजनाथ
गोपीनाथ
गोकुलनाथ
(पृष्ठ 94 पर देखें)
सीताराम
राजेन्द्र
देवेन्द्र
धीरेन्द्र
प्रांजल
यदुनाथ
लोकनाथ
देवनाथ
दिव्यनाथ
रजनीश
अवनीश
आलोक
आशीष
मंदार
अभिषेक
पंकज
अकिंत
मनन
लक्ष्मीकान्त
जगदीश
केशव
महेश
रमेश
दिनेश
प्रदीप
राजेश
हर्ष
पीयूष
नकुल
कार्तिकेय
सुरेश
राजेश
सुकान्त
उमंग
अमेय
पारिजात
अभिजात
मनन
अमित
विकल्प
चित्रेश
धैवत

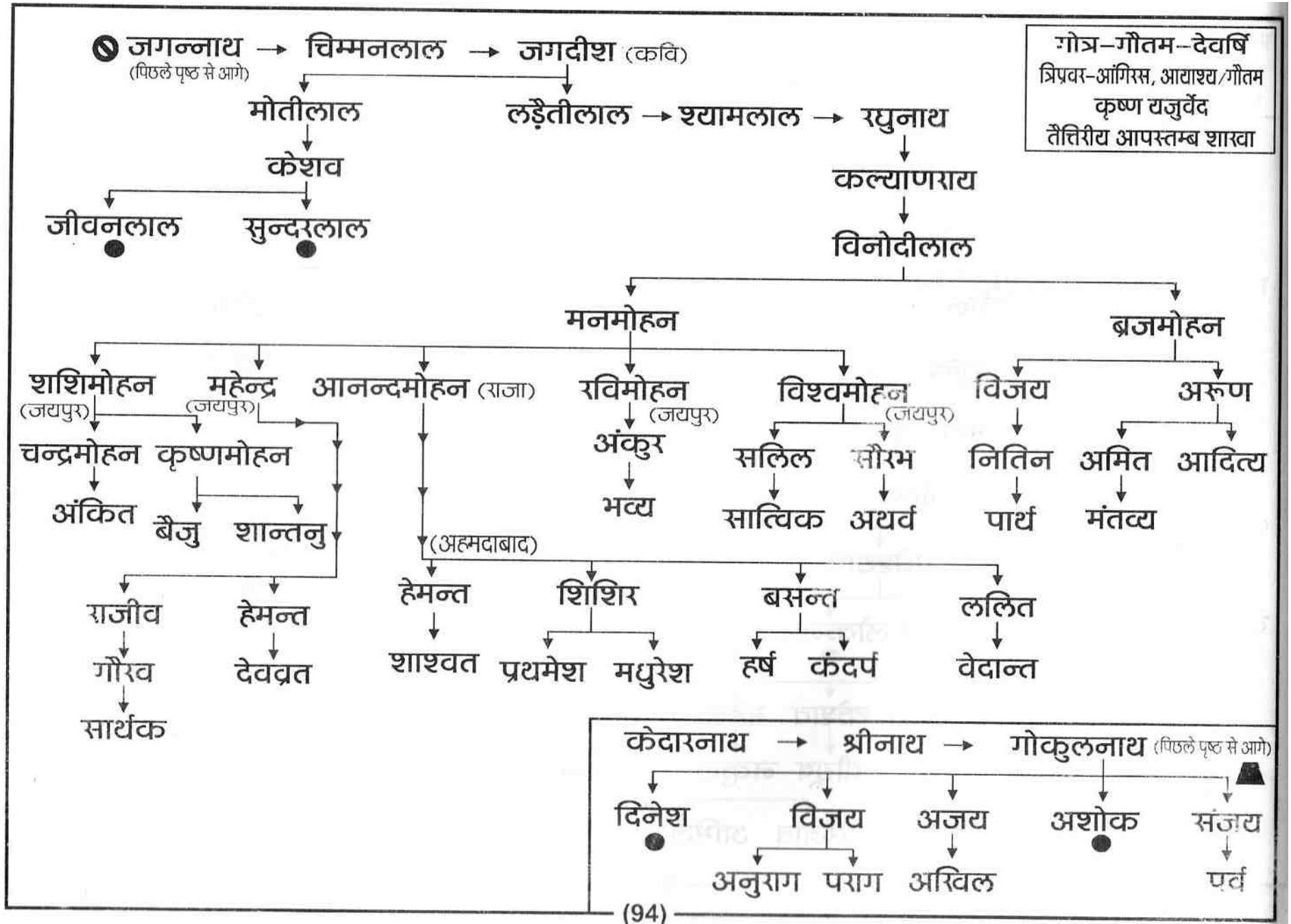
जगन्नाथ → चिम्मनलाल → जगदीश (कवि)
(पिछले पृष्ठ से आगे)
गोत्र–गौतम–देवर्षि
त्रिप्रवर–आंगिरस, आयाश्य/गौतम
कृष्ण यजुर्वेद
तैत्तिरीय आपस्तम्ब शाखा
मोतीलाल
लड़ैतीलाल → श्यामलाल → रघुनाथ
केशव
कल्याणराय
जीवनलाल
सुन्दरलाल
विनोदीलाल
मनमोहन
ब्रजमोहन
शशिमोहन (जयपुर)
महेन्द्र (जयपुर)
आनन्दमोहन (राजा)
रविमोहन (जयपुर)
विश्वमोहन (जयपुर)
विजय
अरूण
चन्द्रमोहन
कृष्णमोहन
अंकुर
सलिल
सौरभ
नितिन
अमित
आदित्य
अंकित
बैजु
शान्तनु
भव्य
सात्विक
अथर्व
पार्थ
मंतव्य
(अहमदाबाद)
राजीव
हेमन्त
हेमन्त
शिशिर
बसन्त
ललित
गौरव
देवव्रत
शाश्वत
प्रथमेश
मधुरेश
हर्ष
कंदर्प
वेदान्त
सार्थक
केदारनाथ → श्रीनाथ → गोकुलनाथ (पिछले पृष्ठ से आगे)
दिनेश
विजय
अजय
अशोक
संजय
अनुराग
पराग
अखिल
पर्व

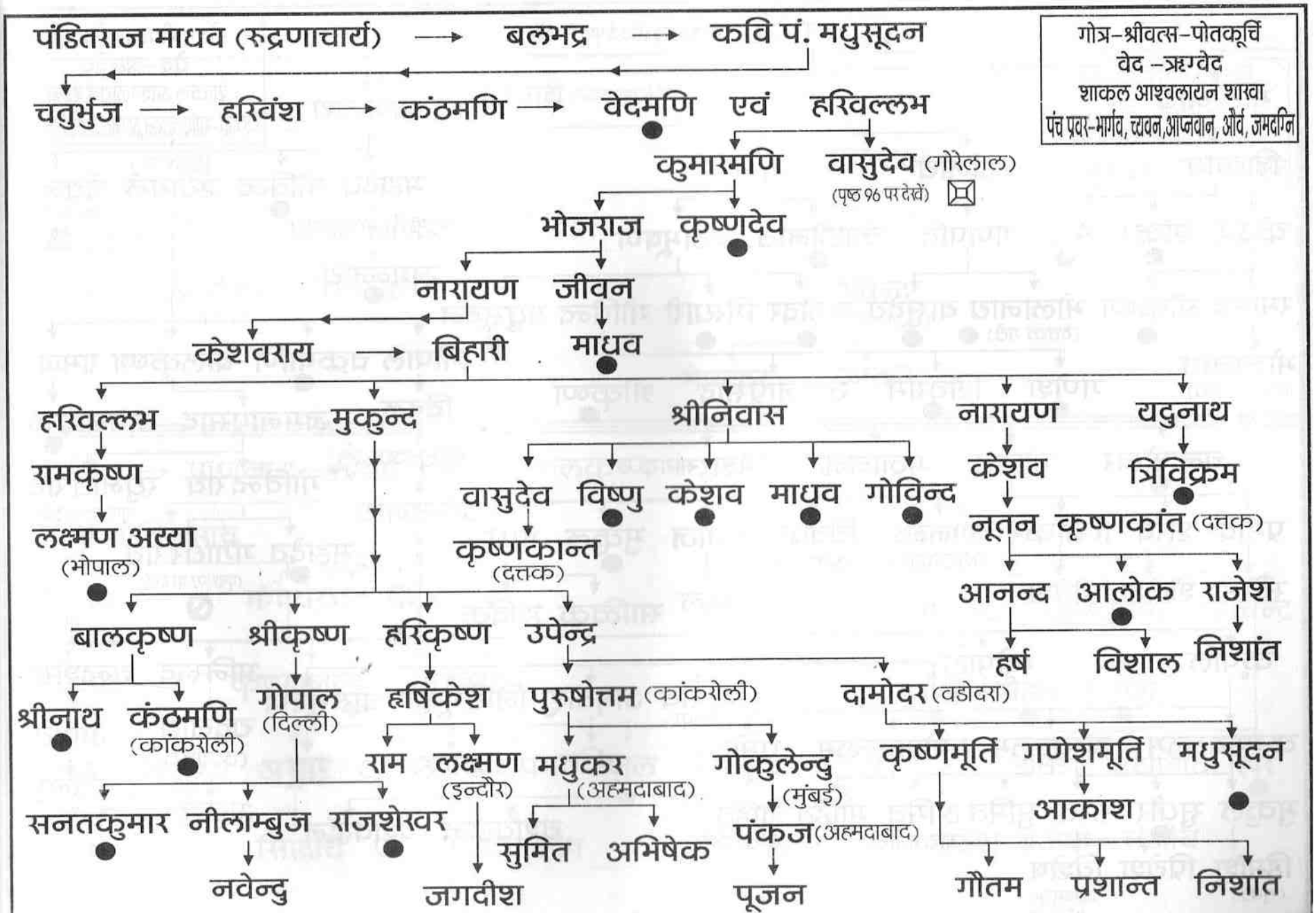
पंडितराज माधव (रुद्रणाचार्य) → बलभद्र → कवि पं. मधुसूदन
गोत्र–श्रीवत्स–पोतकूर्चि
वेद –ऋग्वेद
शाकल आश्वलायन शाखा
पंच प्रवर–भार्गव, च्यवन,आप्नवान, और्व, जमदग्नि
चतुर्भुज → हरिवंश → कंठमणि → वेदमणि एवं हरिवल्लभ
कुमारमणि
वासुदेव (गोरेलाल)
(पृष्ठ 96 पर देखें)
भोजराज
कृष्णदेव
नारायण
जीवन
केशवराय → बिहारी
माधव
हरिवल्लभ
मुकुन्द
श्रीनिवास
नारायण
यदुनाथ
रामकृष्ण
वासुदेव
विष्णु
केशव
माधव
गोविन्द
केशव
त्रिविक्रम
लक्ष्मण अय्या
(भोपाल)
कृष्णकान्त
(दत्तक)
नूतन
कृष्णकांत (दत्तक)
आनन्द
आलोक
राजेश
बालकृष्ण
श्रीकृष्ण
हरिकृष्ण
उपेन्द्र
हर्ष
विशाल
निशांत
श्रीनाथ
कंठमणि
(कांकरोली)
गोपाल
(दिल्ली)
हृषिकेश
पुरुषोत्तम (कांकरोली)
दामोदर (वडोदरा)
राम
लक्ष्मण
(इन्दौर)
मधुकर
(अहमदाबाद)
गोकुलेन्दु
(मुंबई)
कृष्णमूर्ति
गणेशमूर्ति
मधुसूदन
सनतकुमार
नीलाम्बुज
राजशेखर
आकाश
सुमित
अभिषेक
पंकज (अहमदाबाद)
नवेन्दु
जगदीश
पूजन
गौतम
प्रशान्त
निशांत

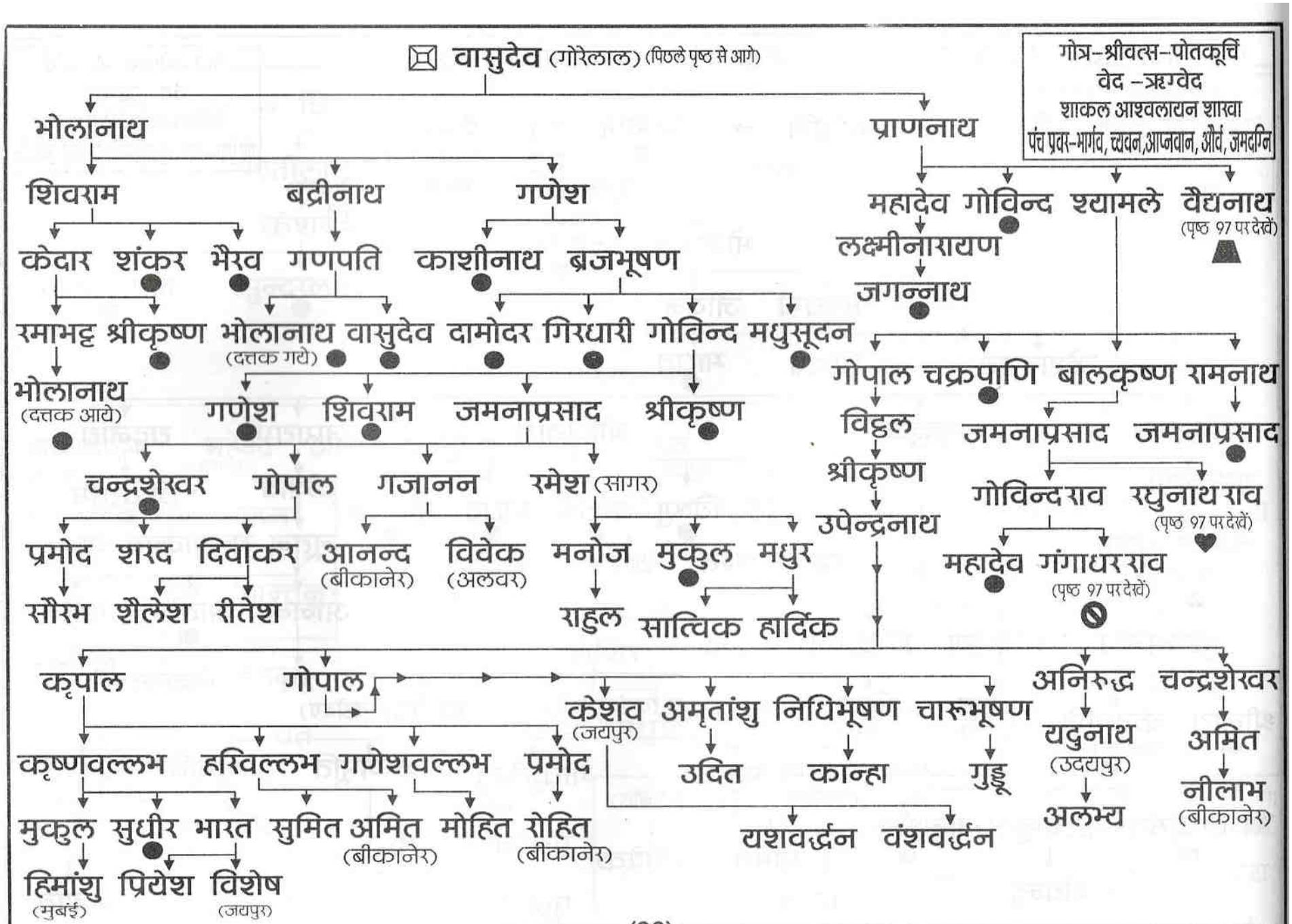
वासुदेव (गोरेलाल) (पिछले पृष्ठ से आगे)
गोत्र–श्रीवत्स–पोतकूचिं
वेद –ऋग्वेद
शाकल आश्वलायन शाखा
पंच प्रवर–भार्गव, च्यवन,आप्नवान, और्व, जमदग्नि
भोलानाथ
प्राणनाथ
शिवराम
बद्रीनाथ
गणेश
महादेव
गोविन्द
श्यामले
वैद्यनाथ
(पृष्ठ 97 पर देखें)
केदार
शंकर
भैरव
गणपति
काशीनाथ
ब्रजभूषण
लक्ष्मीनारायण
जगन्नाथ
रमाभट्ट
श्रीकृष्ण
भोलानाथ
वासुदेव
दामोदर
गिरधारी
गोविन्द
मधुसूदन
(दत्तक गये)
भोलानाथ
(दत्तक आये)
गोपाल
चक्रपाणि
बालकृष्ण
रामनाथ
गणेश
शिवराम
जमनाप्रसाद
श्रीकृष्ण
विट्ठल
जमनाप्रसाद
जमनाप्रसाद
चन्द्रशेखर
गोपाल
गजानन
रमेश (सागर)
श्रीकृष्ण
गोविन्दराव
रघुनाथराव
(पृष्ठ 97 पर देखें)
उपेन्द्रनाथ
प्रमोद
शरद
दिवाकर
आनन्द
(बीकानेर)
विवेक
(अलवर)
मनोज
मुकुल
मधुर
महादेव
गंगाधरराव
(पृष्ठ 97 पर देखें)
सौरभ
शैलेश
रीतेश
राहुल
सात्विक
हार्दिक
कृपाल
गोपाल
केशव
(जयपुर)
अमृतांशु
निधिभूषण
चारूभूषण
अनिरुद्ध
चन्द्रशेखर
कृष्णवल्लभ
हरिवल्लभ
गणेशवल्लभ
प्रमोद
उदित
कान्हा
गुड्डू
यदुनाथ
(उदयपुर)
अमित
मुकुल
सुधीर
भारत
सुमित
अमित
(बीकानेर)
मोहित
रोहित
(बीकानेर)
यशवर्द्धन
वंशवर्द्धन
अलभ्य
नीलाभ
(बीकानेर)
हिमांशु
(मुबंई)
प्रियेश
विशेष
(जयपुर)

गोत्र–श्रीवत्स–पोतकूर्चि
वेद –ऋग्वेद
शाकल आश्वलायन शाखा
पंच प्रवर–भार्गव, च्यवन,आप्नवान, और्व, जमदग्नि

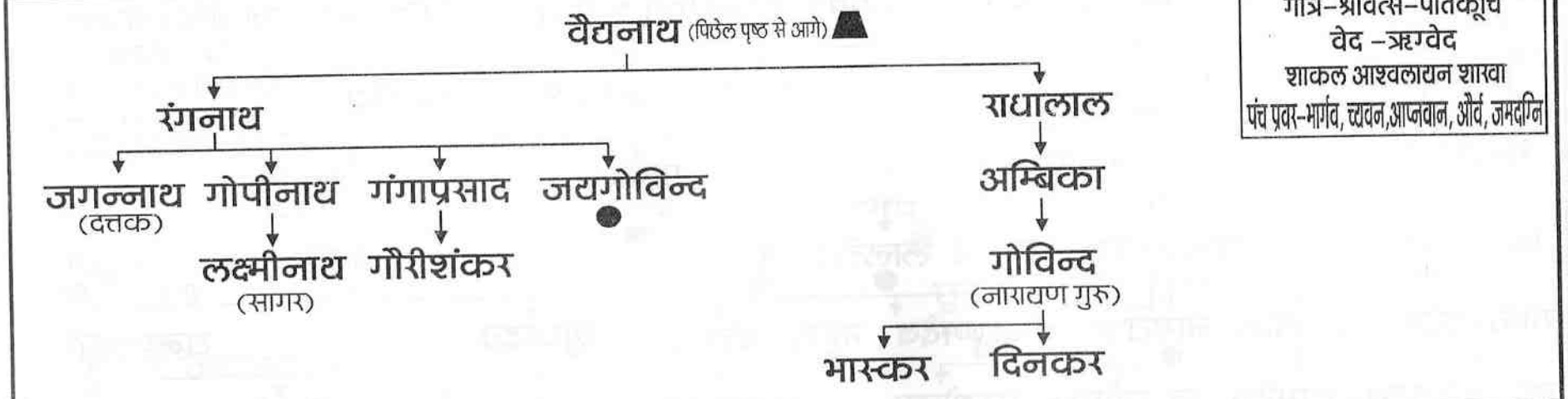

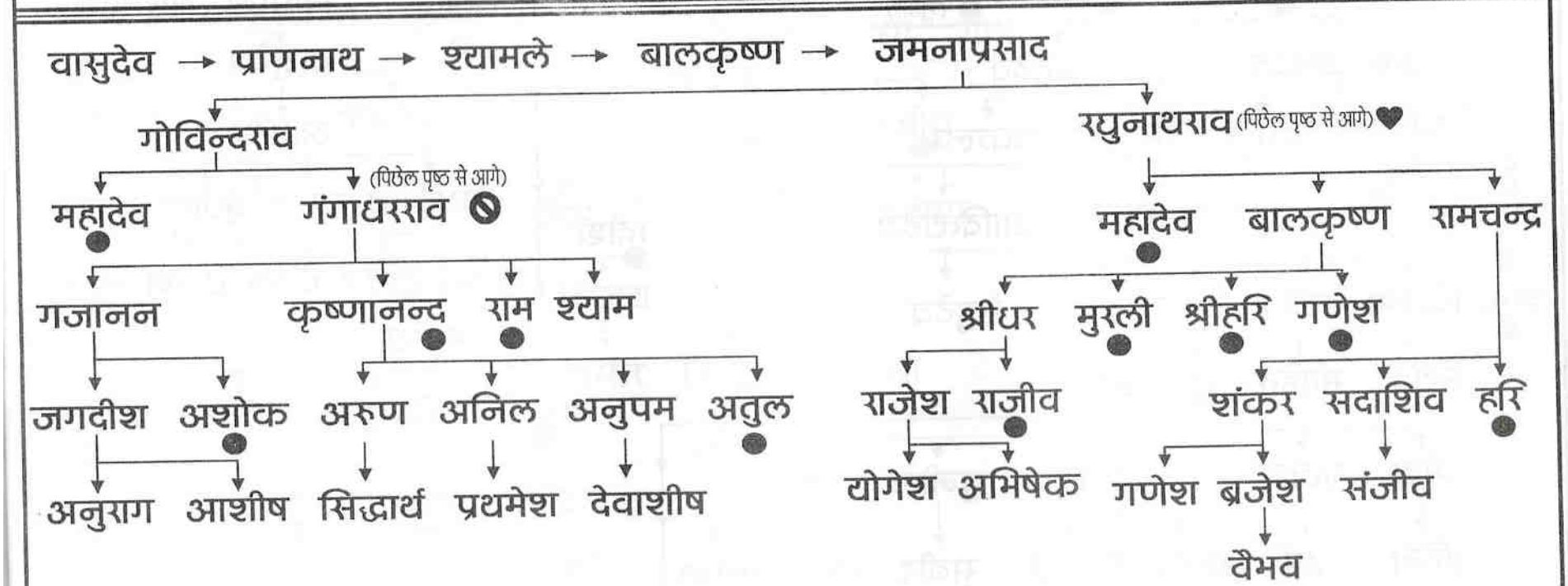

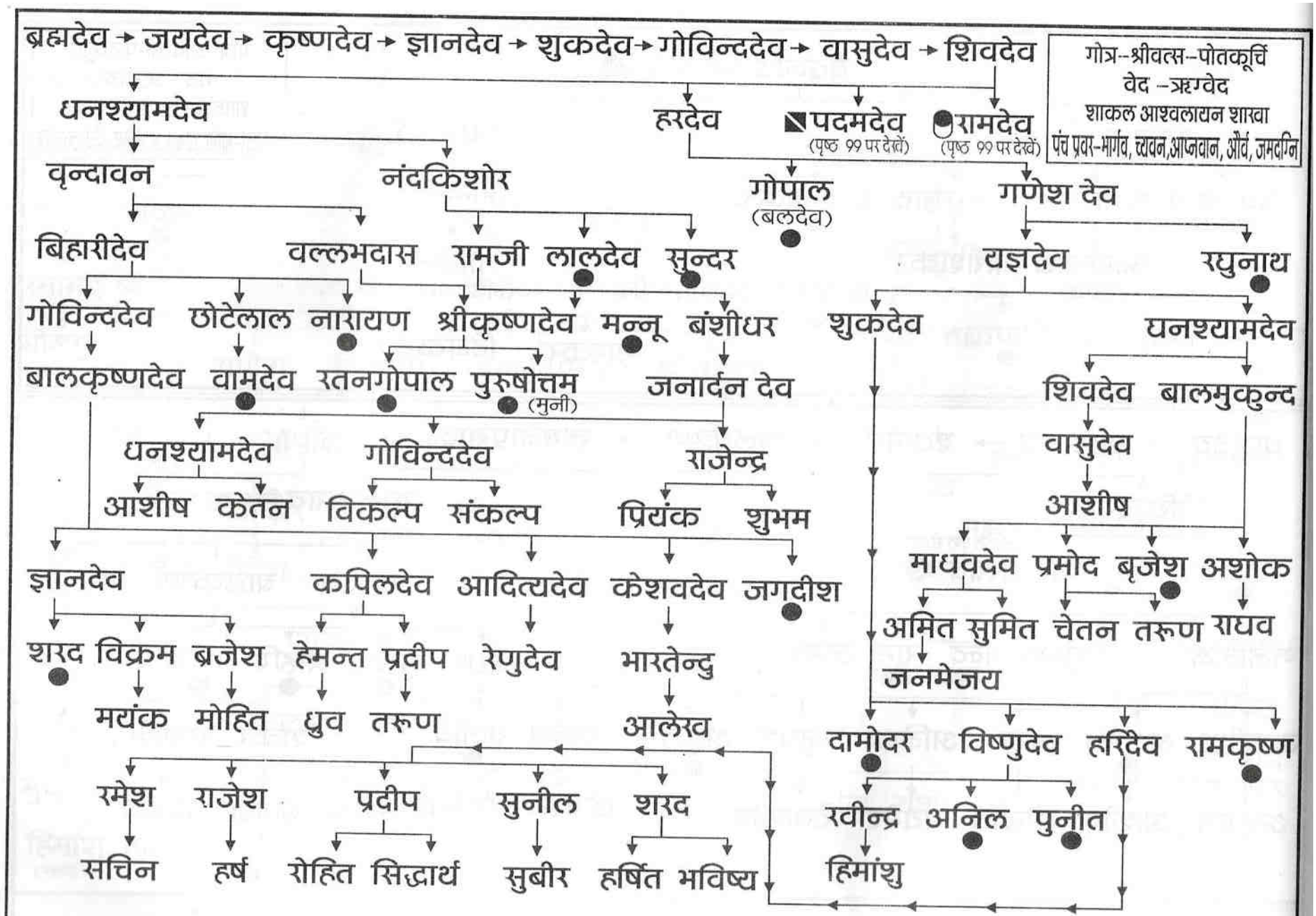
ब्रह्मदेव → जयदेव → कृष्णदेव → ज्ञानदेव → शुकदेव → गोविन्ददेव → वासुदेव → शिवदेव
गोत्र--श्रीवत्स--पोतकूर्चि
वेद --ऋग्वेद
शाकल आश्वलायन शाखा
पंच प्रवर-भार्गव, च्यवन,आप्नवान, और्व, जमदग्नि
धनश्यामदेव
हरदेव
पदमदेव
(पृष्ठ 99 पर देखें)
रामदेव
(पृष्ठ 99 पर देखें)
वृन्दावन
नंदकिशोर
गोपाल
(बलदेव)
गणेश देव
बिहारीदेव
वल्लभदास
रामजी
लालदेव
सुन्दर
यज्ञदेव
रघुनाथ
गोविन्ददेव
छोटेलाल
नारायण
श्रीकृष्णदेव
मन्नू
बंशीधर
शुकदेव
धनश्यामदेव
बालकृष्णदेव
वामदेव
रतनगोपाल
पुरुषोत्तम
(मुनी)
जनार्दन देव
शिवदेव
बालमुकुन्द
धनश्यामदेव
गोविन्ददेव
राजेन्द्र
वासुदेव
आशीष
केतन
विकल्प
संकल्प
प्रियंक
शुभम
आशीष
ज्ञानदेव
कपिलदेव
आदित्यदेव
केशवदेव
जगदीश
माधवदेव
प्रमोद
बृजेश
अशोक
शरद
विक्रम
ब्रजेश
हेमन्त
प्रदीप
रेणुदेव
भारतेन्दु
अमित
सुमित
चेतन
तरूण
राघव
मयंक
मोहित
ध्रुव
तरूण
आलेख
जनमेजय
दामोदर
विष्णुदेव
हरिदेव
रामकृष्ण
रमेश
राजेश
प्रदीप
सुनील
शरद
रवीन्द्र
अनिल
पुनीत
सचिन
हर्ष
रोहित
सिद्धार्थ
सुबीर
हर्षित
भविष्य
हिमांशु

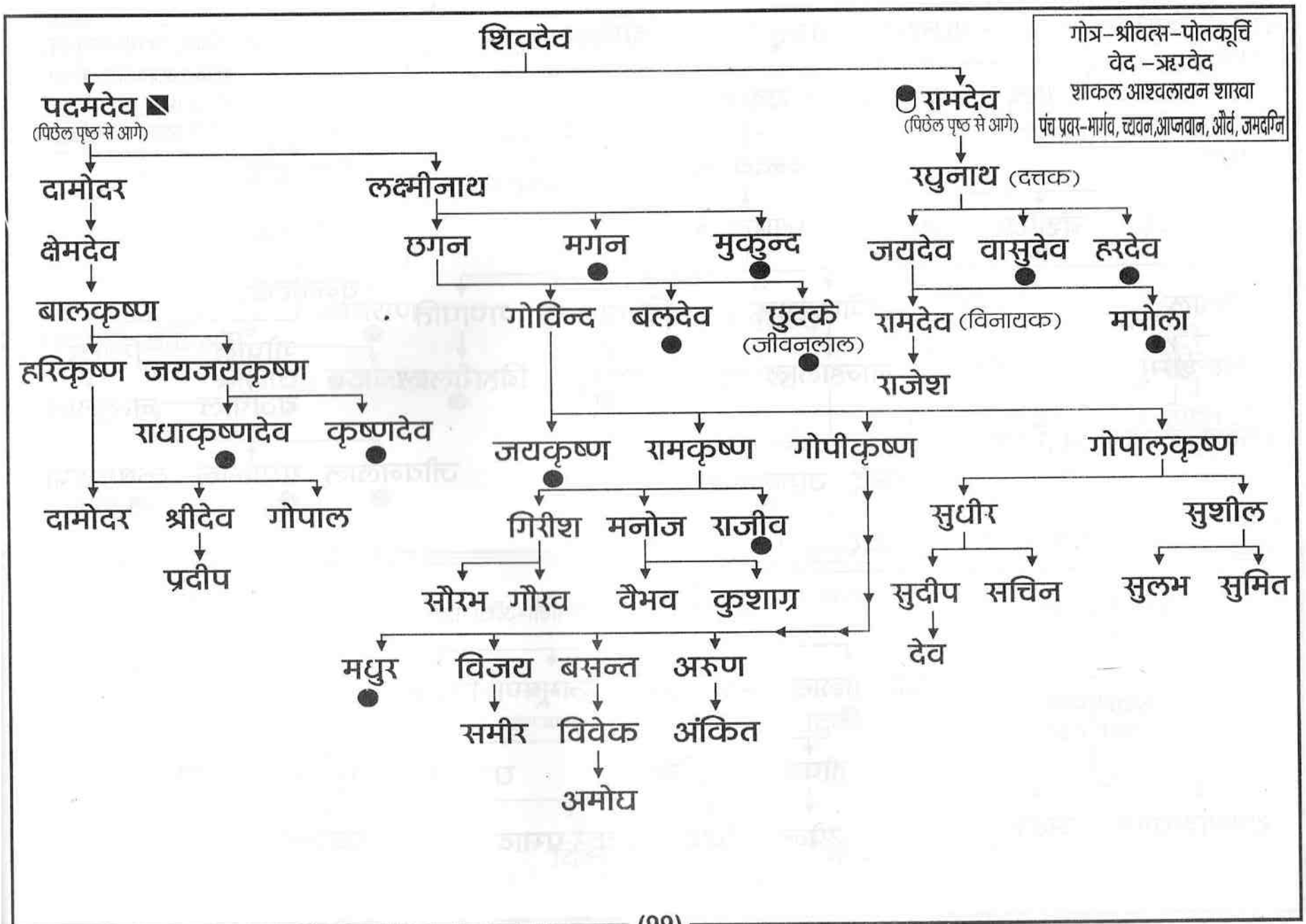
शिवदेव
गोत्र–श्रीवत्स–पोतकूर्चि
वेद –ऋग्वेद
शाकल आश्वलायन शाखा
पंच प्रवर–भार्गव, च्यवन,आप्नवान, और्व, जमदग्नि
पदमदेव
(पिछेल पृष्ठ से आगे)
रामदेव
(पिछेल पृष्ठ से आगे)
दामोदर
लक्ष्मीनाथ
रघुनाथ (दत्तक)
क्षेमदेव
छगन
मगन
मुकुन्द
जयदेव
वासुदेव
हरदेव
बालकृष्ण
गोविन्द
बलदेव
छटके
(जीवनलाल)
रामदेव (विनायक)
मपोला
हरिकृष्ण
जयजयकृष्ण
राजेश
राधाकृष्णदेव
कृष्णदेव
जयकृष्ण
रामकृष्ण
गोपीकृष्ण
गोपालकृष्ण
दामोदर
श्रीदेव
गोपाल
गिरीश
मनोज
राजीव
सुधीर
सुशील
प्रदीप
सौरभ
गौरव
वैभव
कुशाग्र
सुदीप
सचिन
सुलभ
सुमित
देव
मधुर
विजय
बसन्त
अरुण
समीर
विवेक
अंकित
अमोघ

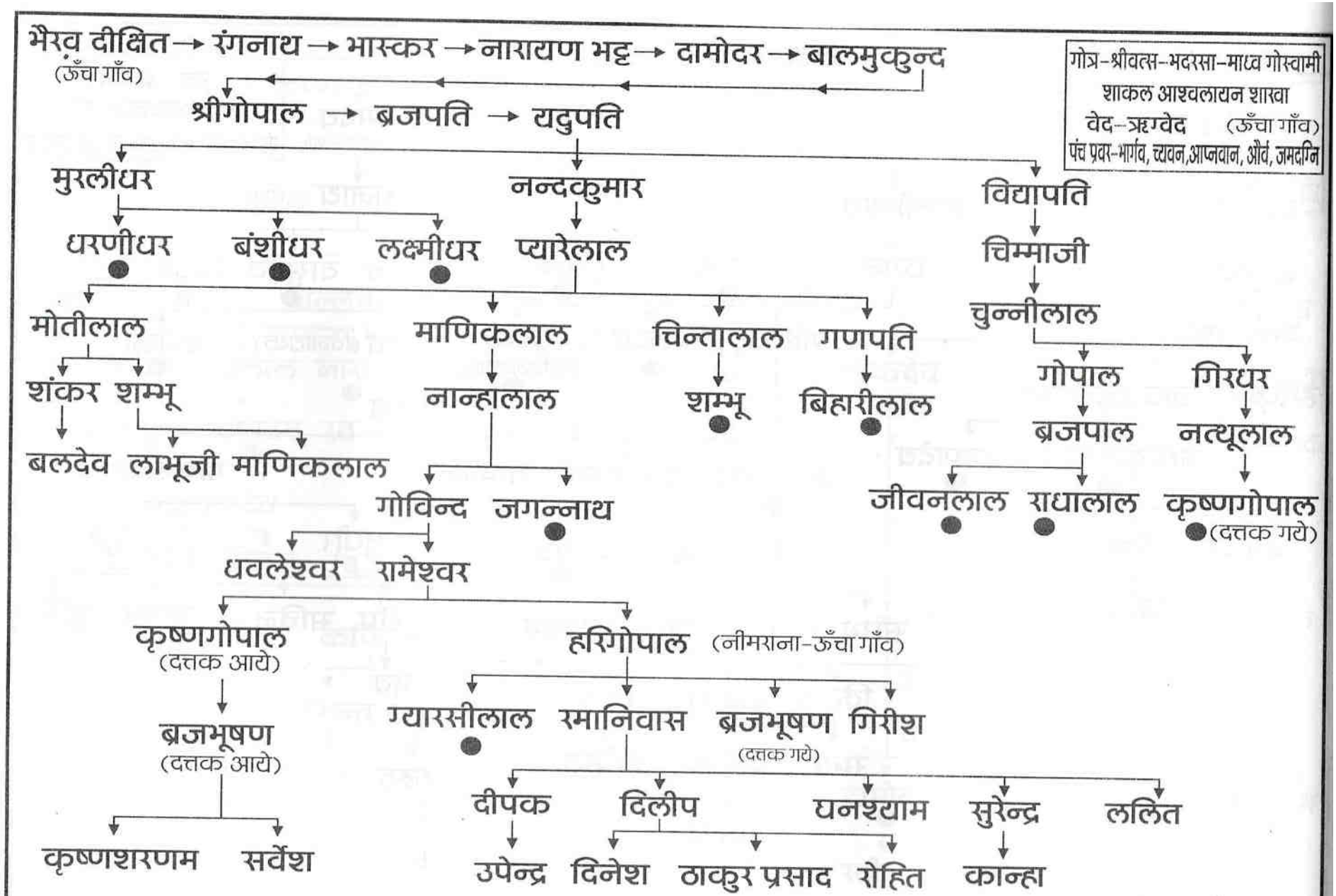
भैरव दीक्षित → रंगनाथ → भास्कर → नारायण भट्ट → दामोदर → बालमुकुन्द
(ऊँचा गाँव)
श्रीगोपाल → ब्रजपति → यदुपति
गोत्र-श्रीवत्स-भदरसा-माध्व गोस्वामी
शाकल आश्वलायन शाखा
वेद-ऋग्वेद (ऊँचा गाँव)
पंच प्रवर-भार्गव, च्यवन,आप्नवान, और्व, जमदग्नि
मुरलीधर
नन्दकुमार
विद्यापति
धरणीधर
बंशीधर
लक्ष्मीधर
प्यारेलाल
चिम्माजी
चुन्नीलाल
मोतीलाल
माणिकलाल
चिन्तालाल
गणपति
गोपाल
गिरधर
शंकर
शम्भू
नान्हालाल
शम्भू
बिहारीलाल
ब्रजपाल
नत्थूलाल
बलदेव
लाभूजी
माणिकलाल
गोविन्द
जगन्नाथ
जीवनलाल
राधालाल
कृष्णगोपाल
(दत्तक गये)
धवलेश्वर
रामेश्वर
कृष्णगोपाल
(दत्तक आये)
हरिगोपाल (नीमराना-ऊँचा गाँव)
ब्रजभूषण
(दत्तक आये)
ग्यारसीलाल
रमानिवास
ब्रजभूषण
(दत्तक गये)
गिरीश
दीपक
दिलीप
घनश्याम
सुरेन्द्र
ललित
कृष्णशरणम
सर्वेश
उपेन्द्र
दिनेश
ठाकुर प्रसाद
रोहित
कान्हा

गोत्र–कौंडिन्य–करंजी
तैत्तिरीय आपस्तम्ब शाखा
कृष्ण यजुर्वेद
त्रिप्रवर–कौंडिन्य, मैत्रावरुण, वशिष्ठ

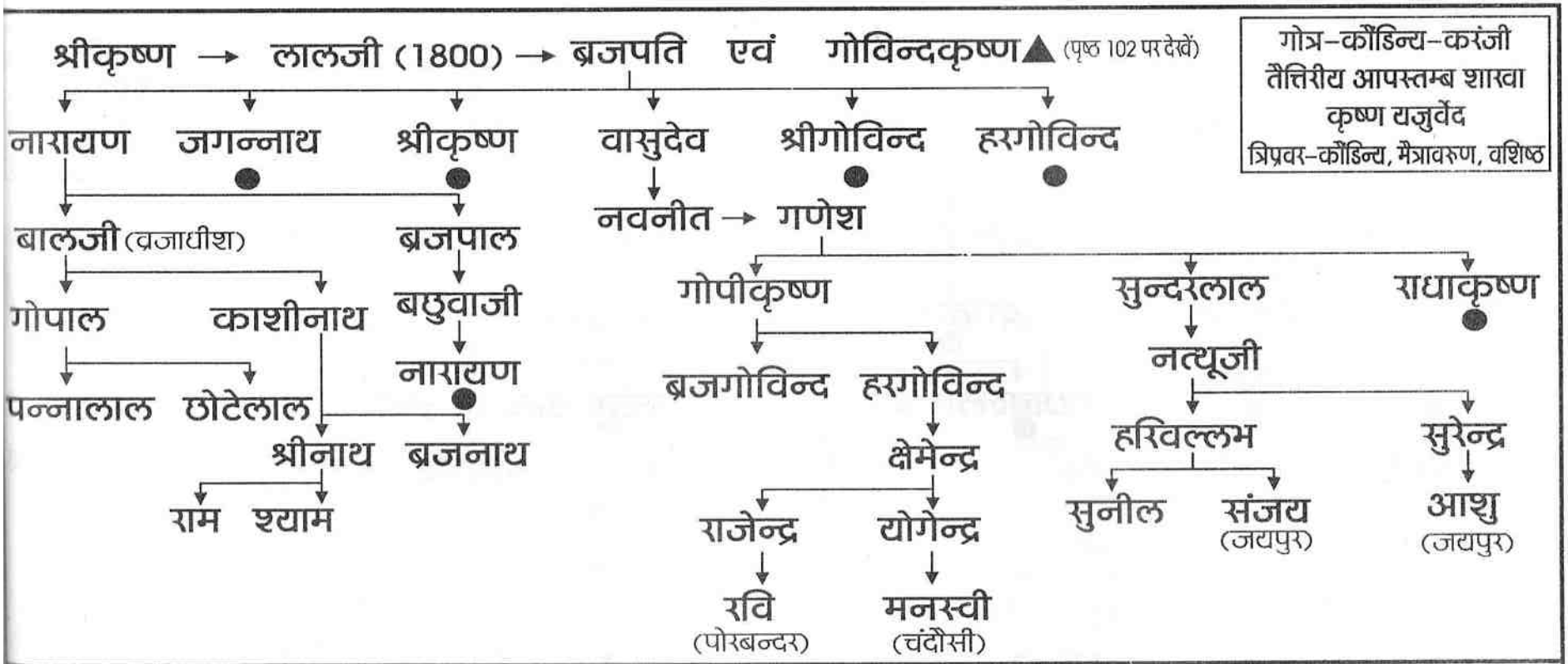

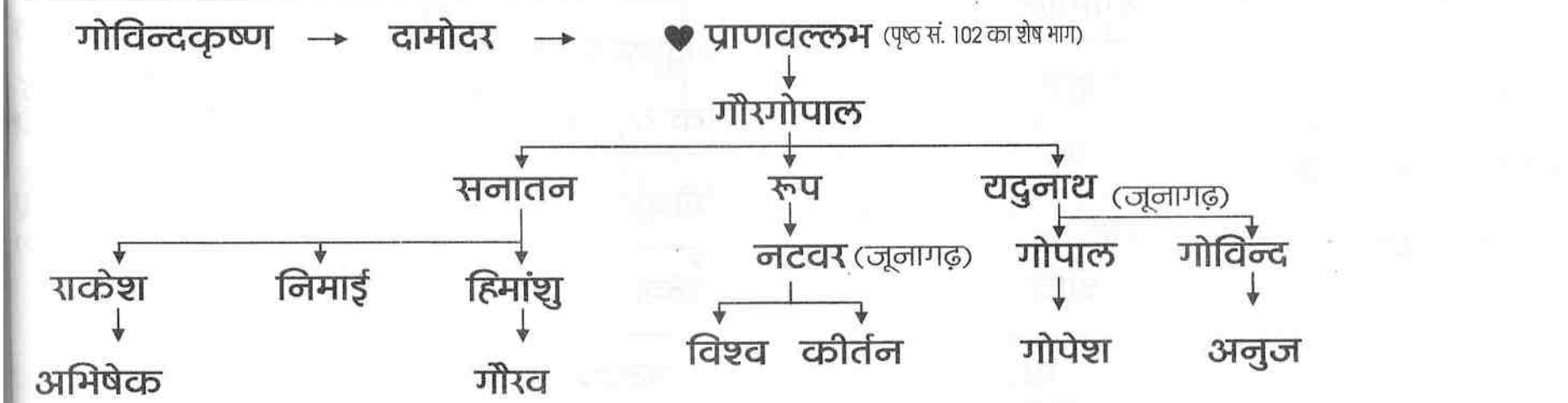

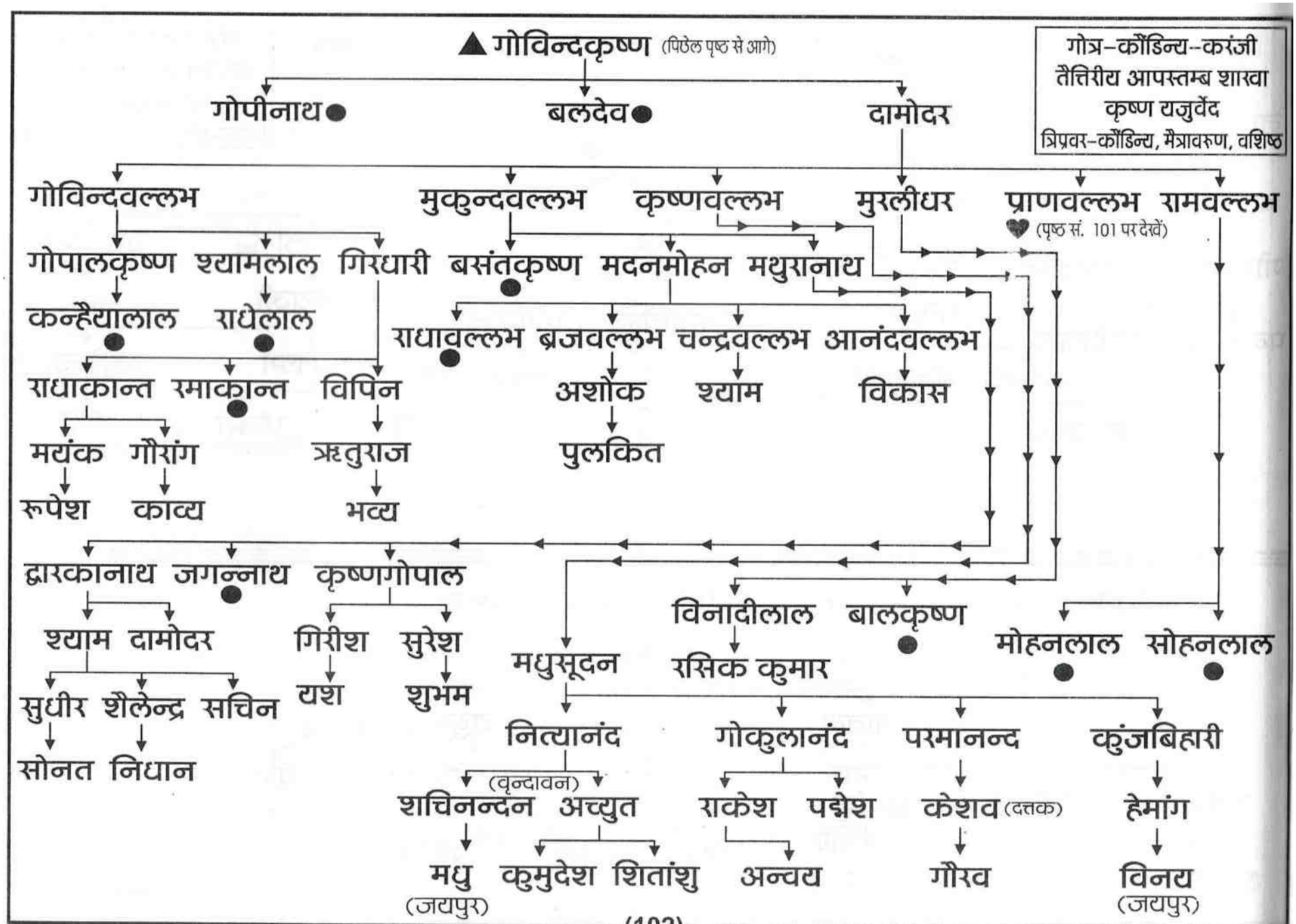
▲ गोविन्दकृष्ण (पिछेल पृष्ठ से आगे)
गोत्र–कौंडिन्य--करंजी
तैत्तिरीय आपस्तम्ब शाखा
कृष्ण यजुर्वेद
त्रिप्रवर–कौंडिन्य, मैत्रावरुण, वशिष्ठ
गोपीनाथ
बलदेव
दामोदर
गोविन्दवल्लभ
मुकुन्दवल्लभ
कृष्णवल्लभ
मुरलीधर
प्राणवल्लभ
रामवल्लभ
(पृष्ठ सं. 101 पर देखें)
गोपालकृष्ण
श्यामलाल
गिरधारी
बसंतकृष्ण
मदनमोहन
मथुरानाथ
कन्हैयालाल
राधेलाल
राधावल्लभ
ब्रजवल्लभ
चन्द्रवल्लभ
आनंदवल्लभ
राधाकान्त
रमाकान्त
विपिन
अशोक
श्याम
विकास
मयंक
गौरांग
ऋतुराज
पुलकित
रूपेश
काव्य
भव्य
द्वारकानाथ
जगन्नाथ
कृष्णगोपाल
विनादीलाल
बालकृष्ण
मोहनलाल
सोहनलाल
श्याम
दामोदर
गिरीश
सुरेश
मधुसूदन
रसिक कुमार
सुधीर
शैलेन्द्र
सचिन
यश
शुभम
नित्यानंद
गोकुलानंद
परमानन्द
कुंजबिहारी
सोनत
निधान
(वृन्दावन)
शचिनन्दन
अच्युत
राकेश
पद्मेश
केशव (दत्तक)
हेमांग
मधु
(जयपुर)
कुमुदेश
शितांशु
अन्वय
गौरव
विनय
(जयपुर)

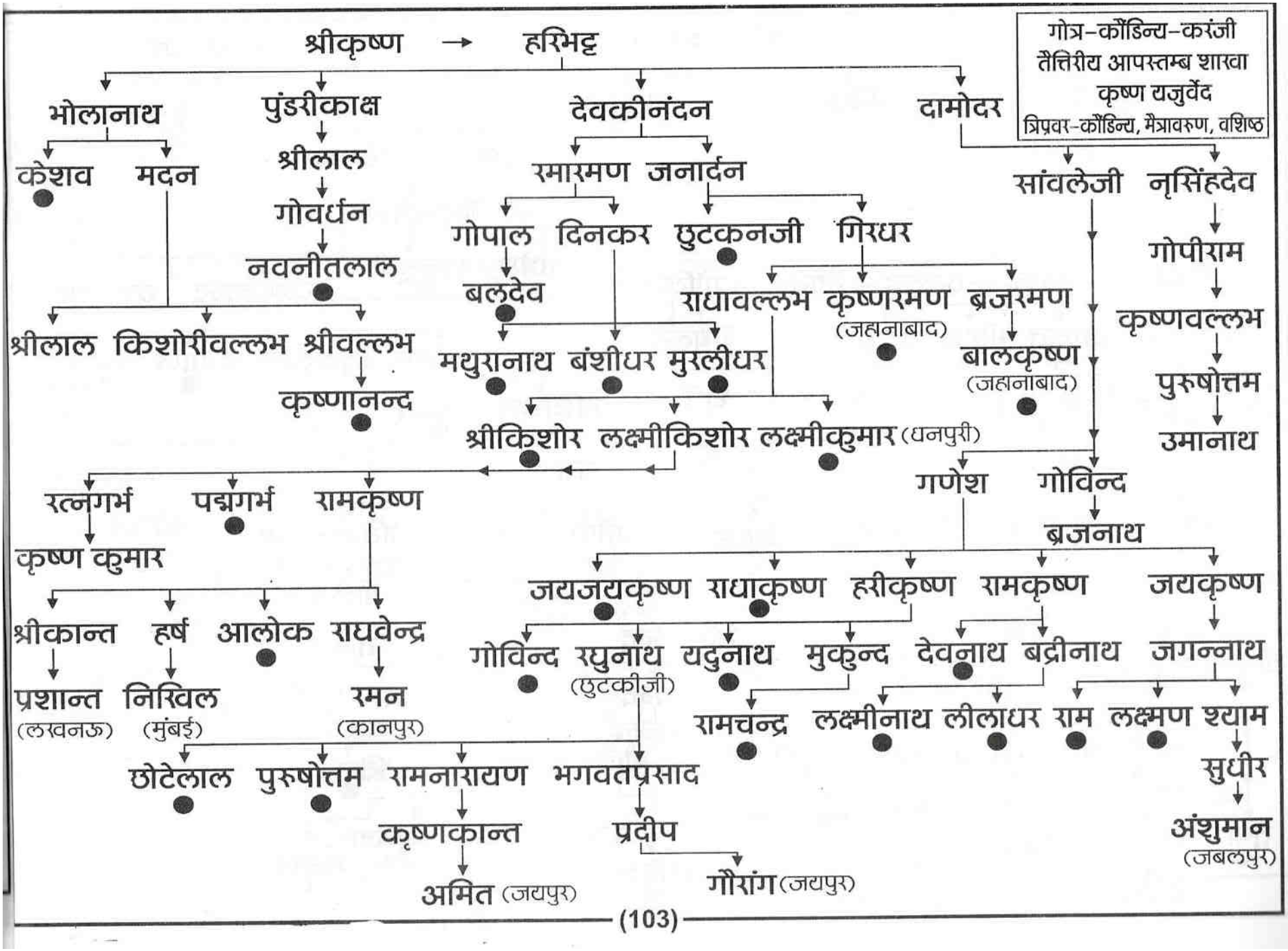
गोत्र–कौंडिन्य–करंजी
तैत्तिरीय आपस्तम्ब शाखा
कृष्ण यजुर्वेद
त्रिप्रवर–कौंडिन्य, मैत्रावरुण, वशिष्ठ
श्रीकृष्ण → हरिभट्ट
भोलानाथ
पुंडरीकाक्ष
देवकीनंदन
दामोदर
केशव
मदन
श्रीलाल
गोवर्धन
नवनीतलाल
रमारमण
जनार्दन
गोपाल
दिनकर
छुटकनजी
गिरधर
बलदेव
राधावल्लभ
कृष्णरमण (जहानाबाद)
ब्रजरमण
बालकृष्ण (जहानाबाद)
मथुरानाथ
बंशीधर
मुरलीधर
श्रीलाल
किशोरीवल्लभ
श्रीवल्लभ
कृष्णानन्द
श्रीकिशोर
लक्ष्मीकिशोर
लक्ष्मीकुमार (धनपुरी)
सांवलेजी
नृसिंहदेव
गोपीराम
कृष्णवल्लभ
पुरुषोत्तम
उमानाथ
रत्नगर्भ
पद्मगर्भ
रामकृष्ण
कृष्ण कुमार
गणेश
गोविन्द
ब्रजनाथ
श्रीकान्त
हर्ष
आलोक
राघवेन्द्र
जयजयकृष्ण
राधाकृष्ण
हरीकृष्ण
रामकृष्ण
जयकृष्ण
प्रशान्त (लखनऊ)
निखिल (मुंबई)
रमन (कानपुर)
गोविन्द
रघुनाथ (छुटकीजी)
यदुनाथ
मुकुन्द
देवनाथ
बद्रीनाथ
जगन्नाथ
रामचन्द्र
लक्ष्मीनाथ
लीलाधर
राम
लक्ष्मण
श्याम
सुधीर
अंशुमान (जबलपुर)
छोटेलाल
पुरुषोत्तम
रामनारायण
भगवतप्रसाद
कृष्णकान्त
प्रदीप
अमित (जयपुर)
गौरांग (जयपुर)

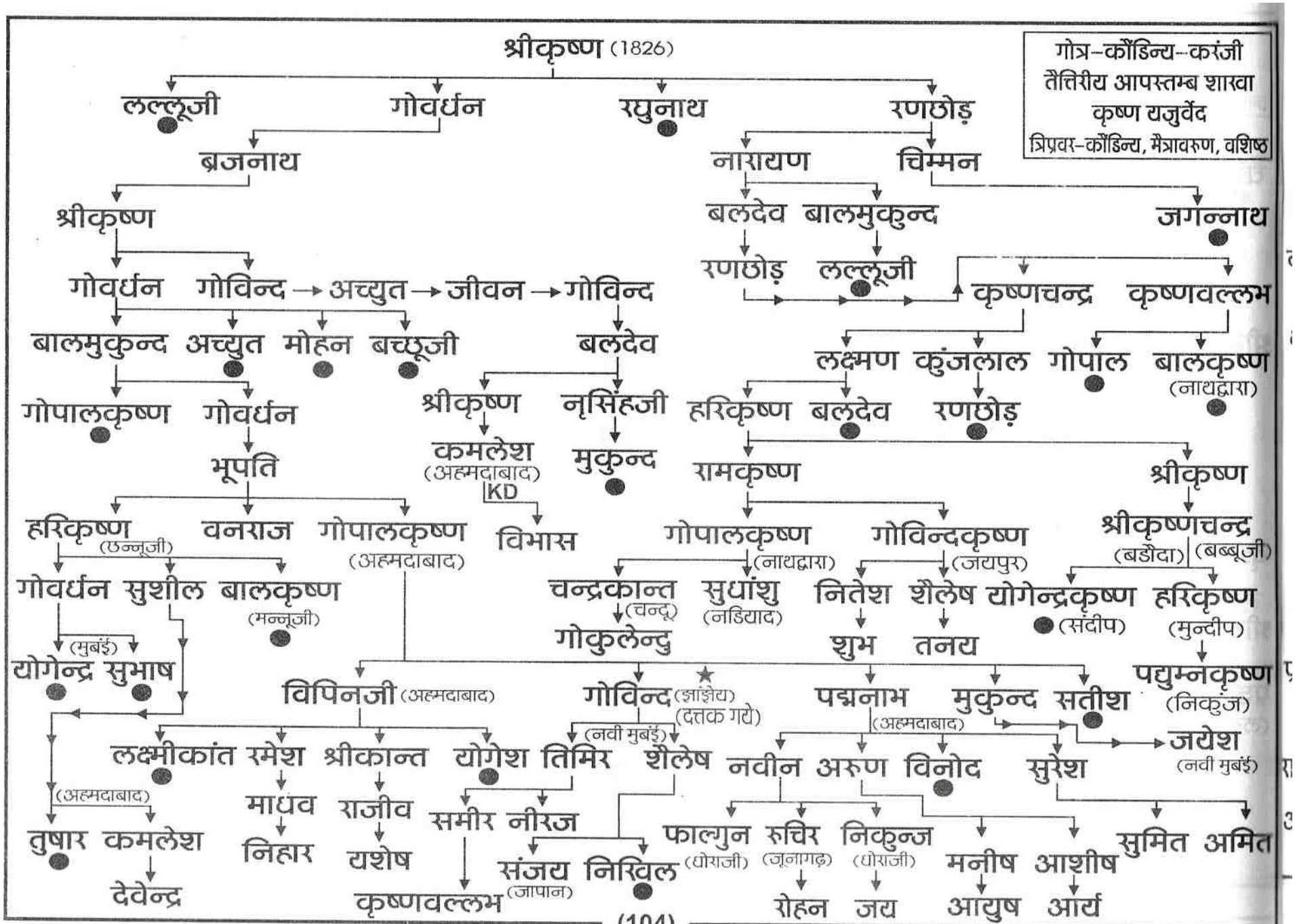

गोत्र–कौंडिन्य–करंजी
तैत्तिरीय आपस्तम्ब शाखा
कृष्ण यजुर्वेद
त्रिप्रवर–कौंडिन्य, मैत्रावरुण, वशिष्ठ
श्रीकृष्ण (1826)
लल्लूजी
गोवर्धन
रघुनाथ
रणछोड़
ब्रजनाथ
नारायण
चिम्मन
श्रीकृष्ण
बलदेव
बालमुकुन्द
जगन्नाथ
रणछोड़
लल्लूजी
गोवर्धन
गोविन्द
अच्युत
जीवन
गोविन्द
कृष्णचन्द्र
कृष्णवल्लभ
बालमुकुन्द
अच्युत
मोहन
बच्छूजी
बलदेव
लक्ष्मण
कुंजलाल
गोपाल
बालकृष्ण (नाथद्वारा)
गोपालकृष्ण
गोवर्धन
श्रीकृष्ण
नृसिंहजी
हरिकृष्ण
बलदेव
रणछोड़
कमलेश (अहमदाबाद)
KD
मुकुन्द
भूपति
रामकृष्ण
श्रीकृष्ण
हरिकृष्ण (छन्नूजी)
वनराज
गोपालकृष्ण (अहमदाबाद)
विभास
गोपालकृष्ण (नाथद्वारा)
गोविन्दकृष्ण (जयपुर)
श्रीकृष्णचन्द्र (बडौदा) (बब्बूजी)
गोवर्धन
सुशील
बालकृष्ण (मन्नूजी)
चन्द्रकान्त (चन्दू)
सुधांशु (नडियाद)
नितेश
शैलेष
योगेन्द्रकृष्ण (संदीप)
हरिकृष्ण (मुन्दीप)
गोकुलेन्दु
शुभ
तनय
(मुबंई)
योगेन्द्र
सुभाष
पद्युम्नकृष्ण (निकुंज)
विपिनजी (अहमदाबाद)
गोविन्द (झांझिय) (दत्तक गये)
पद्मनाभ (अहमदाबाद)
मुकुन्द
सतीश
जयेश (नवी मुबंई)
(नवी मुबंई)
लक्ष्मीकांत
रमेश
श्रीकान्त
योगेश
तिमिर
शैलेष
नवीन
अरुण
विनोद
सुरेश
(अहमदाबाद)
माधव
राजीव
समीर
नीरज
तुषार
कमलेश
निहार
यशोष
संजय (जापान)
निखिल
फाल्गुन (धोराजी)
रुचिर (जूनागढ़)
निकुन्ज (धोराजी)
मनीष
आशीष
सुमित
अमित
देवेन्द्र
कृष्णवल्लभ
रोहन
जय
आयुष
आर्य

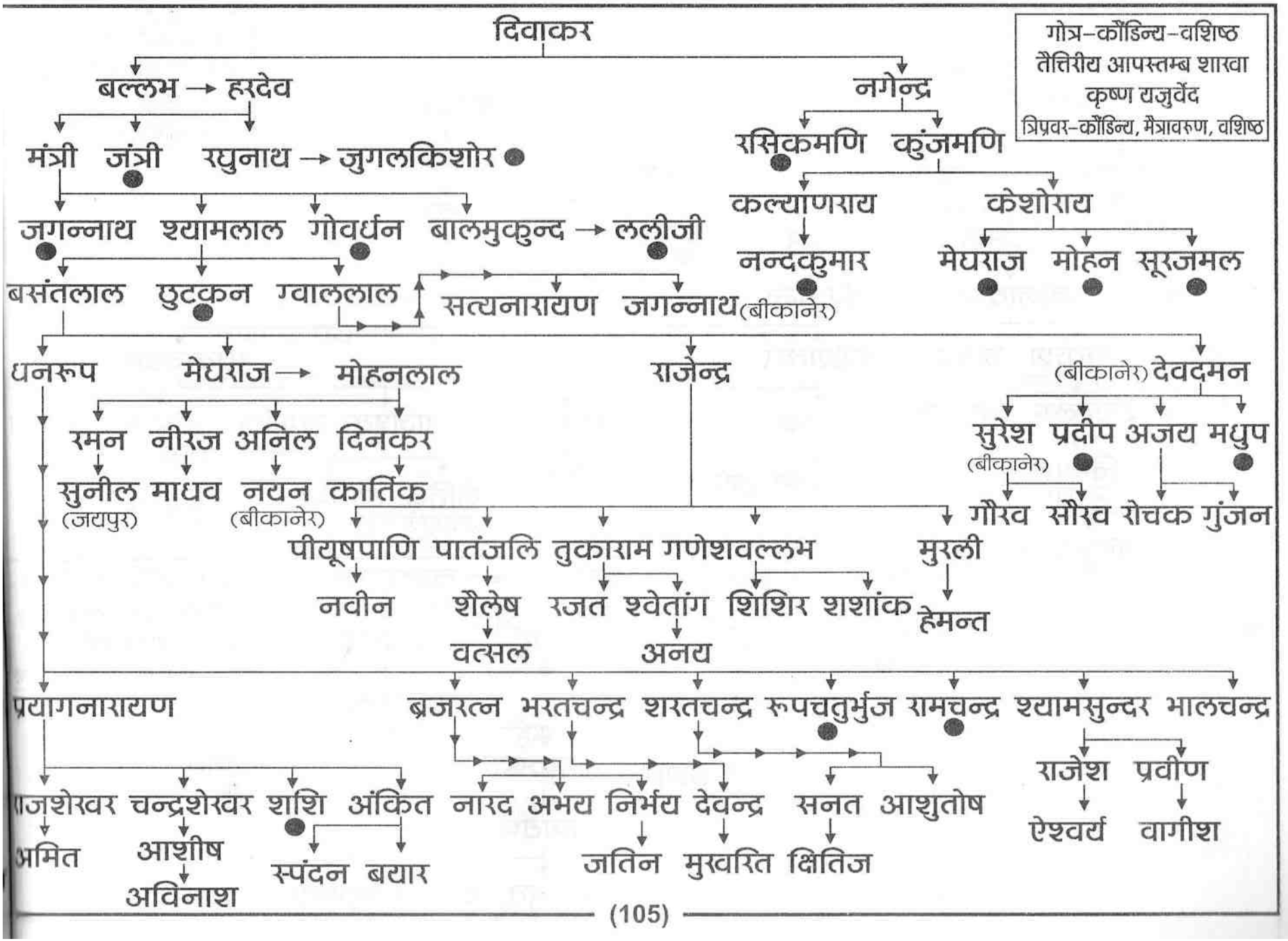
दिवाकर
गोत्र–कौंडिन्य–वशिष्ठ
तैत्तिरीय आपस्तम्ब शाखा
कृष्ण यजुर्वेद
त्रिप्रवर–कौंडिन्य, मैत्रावरुण, वशिष्ठ
बल्लभ → हरदेव
नगेन्द्र
मंत्री
जंत्री
रघुनाथ → जुगलकिशोर
रसिकमणि
कुंजमणि
जगन्नाथ
श्यामलाल
गोवर्धन
बालमुकुन्द → ललीजी
कल्याणराय
केशोराय
नन्दकुमार
(बीकानेर)
मेघराज
मोहन
सूरजमल
बसंतलाल
छुटकन
ग्वाललाल
सत्यनारायण
जगन्नाथ (बीकानेर)
धनरूप
मेघराज → मोहनलाल
राजेन्द्र
(बीकानेर) देवदमन
रमन
नीरज
अनिल
दिनकर
सुरेश
प्रदीप
अजय
मधुप
(बीकानेर)
सुनील
(जयपुर)
माधव
नयन
(बीकानेर)
कार्तिक
गौरव
सौरव
रोचक
गुंजन
पीयूषपाणि
पातंजलि
तुकाराम
गणेशवल्लभ
मुरली
नवीन
शैलेष
रजत
श्वेतांग
शिशिर
शशांक
हेमन्त
वत्सल
अनय
प्रयागनारायण
ब्रजरत्न
भरतचन्द्र
शरतचन्द्र
रूपचतुर्भुज
रामचन्द्र
श्यामसुन्दर
भालचन्द्र
राजशेखर
चन्द्रशेखर
शशि
अंकित
नारद
अभय
निर्भय
देवन्द्र
सनत
आशुतोष
राजेश
प्रवीण
अमित
आशीष
अविनाश
स्पंदन
बयार
जतिन
मुखरित
क्षितिज
ऐश्वर्य
वागीश

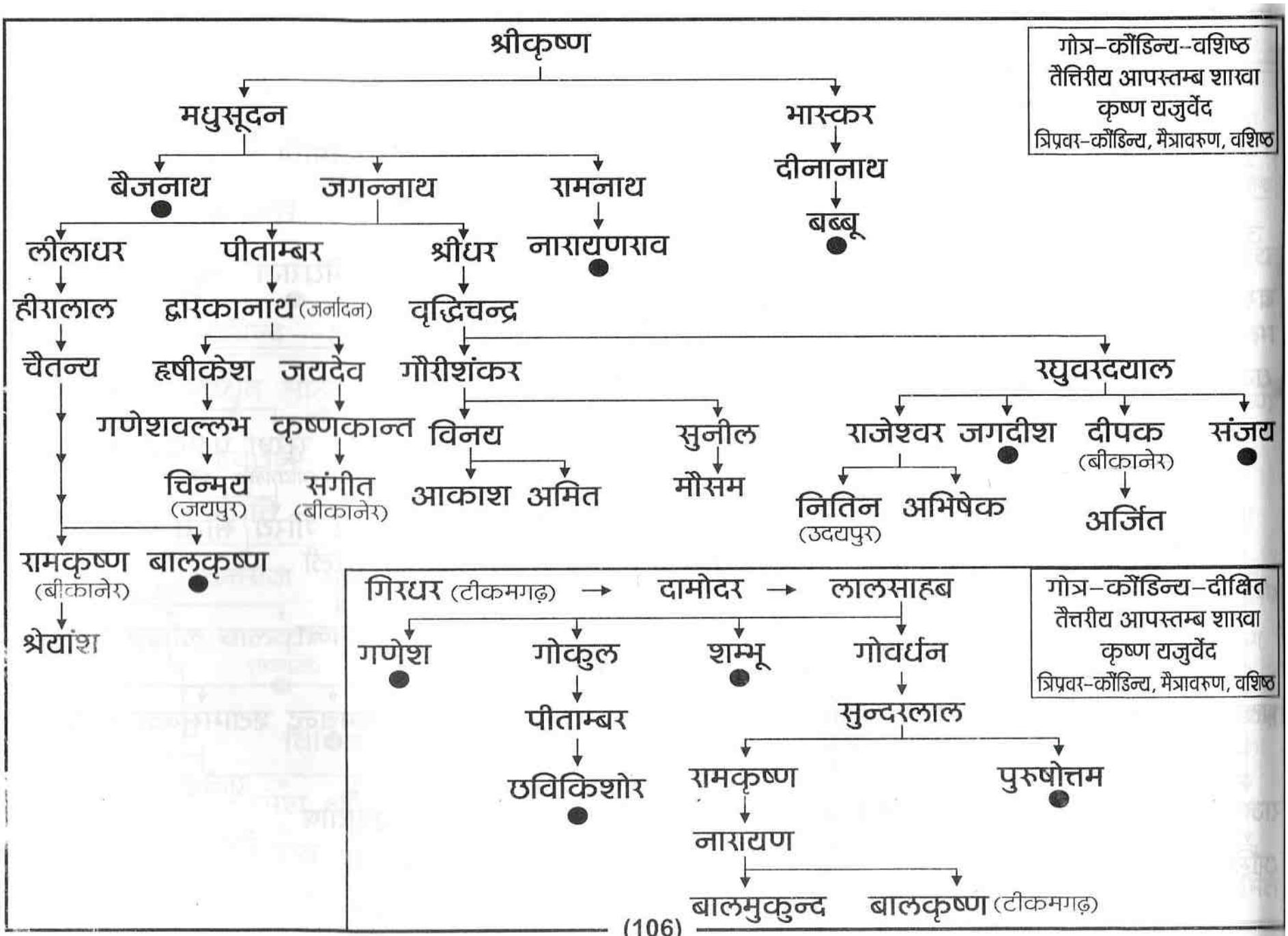
श्रीकृष्ण
मधुसूदन
भास्कर
बैजनाथ
जगन्नाथ
रामनाथ
दीनानाथ
बब्बू
लीलाधर
पीताम्बर
श्रीधर
नारायणराव
हीरालाल
द्वारकानाथ (जनार्दन)
वृद्धिचन्द्र
चैतन्य
हृषीकेश
जयदेव
गौरीशंकर
रघुवरदयाल
गणेशवल्लभ
कृष्णकान्त
विनय
सुनील
राजेश्वर
जगदीश
दीपक (बीकानेर)
संजय
चिन्मय (जयपुर)
संगीत (बीकानेर)
आकाश
अमित
मौसम
नितिन (उदयपुर)
अभिषेक
अर्जित
रामकृष्ण (बीकानेर)
बालकृष्ण
श्रेयांश
गोत्र–कौंडिन्य--वशिष्ठ
तैत्तिरीय आपस्तम्ब शाखा
कृष्ण यजुर्वेद
त्रिप्रवर–कौंडिन्य, मैत्रावरुण, वशिष्ठ
गिरधर (टीकमगढ़)
दामोदर
लालसाहब
गणेश
गोकुल
शम्भू
गोवर्धन
पीताम्बर
सुन्दरलाल
छविकिशोर
रामकृष्ण
पुरुषोत्तम
नारायण
बालमुकुन्द
बालकृष्ण (टीकमगढ़)
गोत्र–कौंडिन्य–दीक्षित
तैत्तरीय आपस्तम्ब शाखा
कृष्ण यजुर्वेद
त्रिप्रवर–कौंडिन्य, मैत्रावरुण, वशिष्ठ

गोत्र–कौंडिन्य
तैत्तिरीय आपस्तम्ब शाखा
कृष्ण यजुर्वेद
त्रिप्रवर–कौंडिन्य, मैत्रावरुण, वशिष्ठ

- वी. श्रीरामा राव
  - लक्ष्मीनृसिंह राव
    - जी. रामाराव (मुंबई)
      - रंगनाथ राव
      - विजय राव
      - प्रतीक राव

गोत्र–मुद्‌गल (षड्भ्रात्)
तैत्तरीय आपस्तम्ब शाखा
कृष्ण यजुर्वेद
त्रिप्रवर–आंगिरस–भार्यास्व–मौद्‌ग्ल्य

- पिट्टमण्डलम् वेंकटकृष्ण शर्मा (चैन्नई)
  - वेंकटाचलपति (फ्रांस)
  - सुब्रमण्यम् (चैन्नई)
    - कृष्ण शर्मा (चैन्नई)
      - द्वारकेश (जापान)
        - राहुल
      - रमेश (अमेरिका)
    - श्रीनाथ (चैन्नई)
      - राकेश (आस्ट्रेलिया-बैंगलुरू)
      - विक्रम (चैन्नई)
    - गोकुलनाथ (पोरबन्दर)
      - हेमन्त
        - श्रेयश
    - गोपीनाथ (चैन्नई)
  - पद्मनाभ
  - स्वामीनाथ (मुंबई)
    - ध्रुव शर्मा
      - सत्येन्द्र

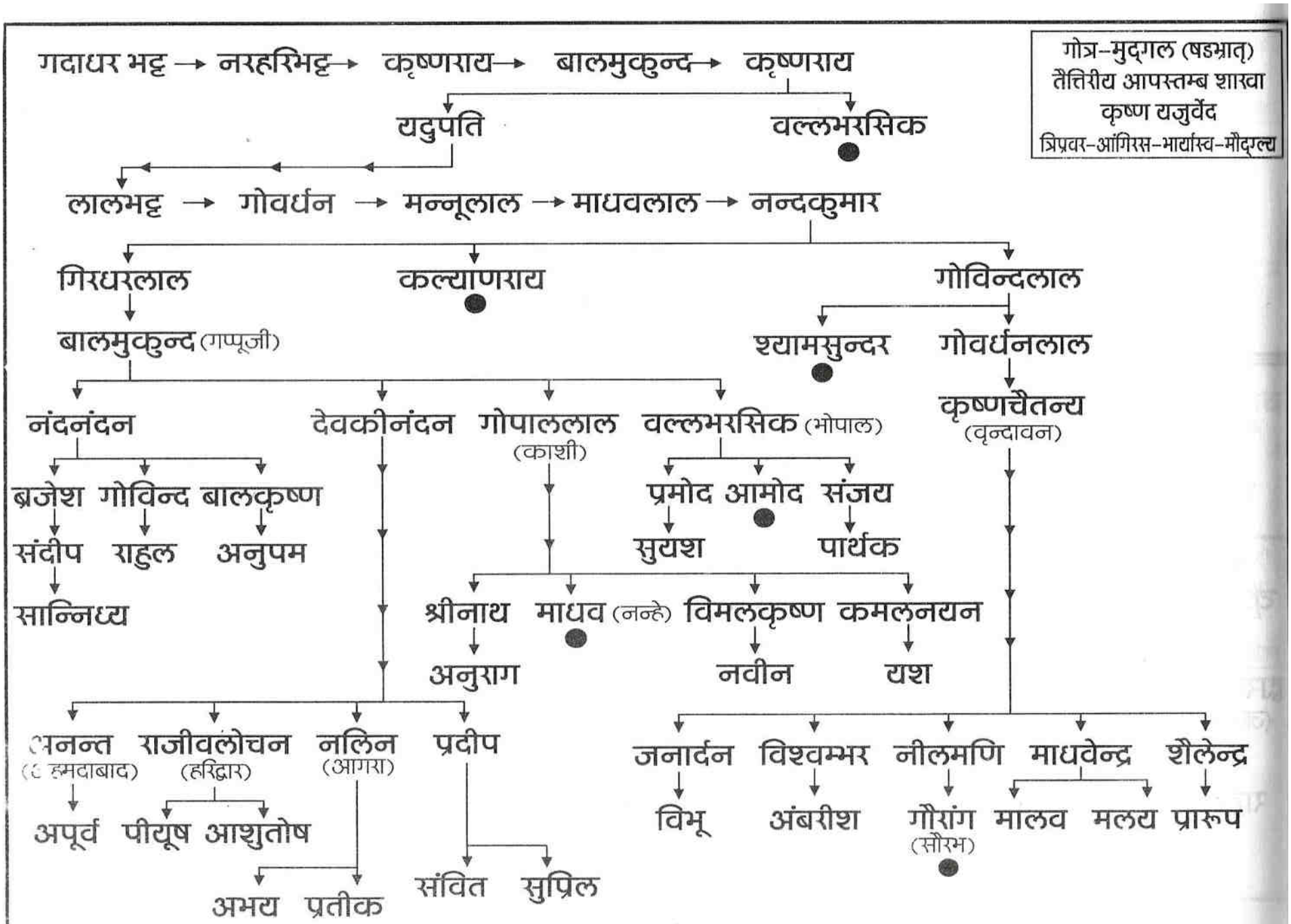
गोत्र–मुद्गल (षडभ्रात्)
तैत्तिरीय आपस्तम्ब शाखा
कृष्ण यजुर्वेद
त्रिप्रवर–आंगिरस–भार्गास्व–मौद्गल्य
गदाधर भट्ट → नरहरिभट्ट → कृष्णराय → बालमुकुन्द → कृष्णराय
यदुपति
वल्लभरसिक
लालभट्ट → गोवर्धन → मन्नूलाल → माधवलाल → नन्दकुमार
गिरधरलाल
कल्याणराय
गोविन्दलाल
बालमुकुन्द (गप्पूजी)
श्यामसुन्दर
गोवर्धनलाल
कृष्णचैतन्य (वृन्दावन)
नंदनंदन
देवकीनंदन
गोपाललाल (काशी)
वल्लभरसिक (भोपाल)
ब्रजेश गोविन्द बालकृष्ण
संदीप राहुल अनुपम
सान्निध्य
प्रमोद आमोद संजय
सुयश पार्थक
श्रीनाथ माधव (नन्हे) विमलकृष्ण कमलनयन
अनुराग
नवीन यश
अनन्त (अहमदाबाद)
राजीवलोचन (हरिद्वार)
नलिन (आगरा)
प्रदीप
अपूर्व पीयूष आशुतोष
अभय प्रतीक
संवित सुप्रिल
जनार्दन विश्वम्भर नीलमणि माधवेन्द्र शैलेन्द्र
विभू अंबरीश
गौरांग (सौरभ)
मालव मलय प्रारूप

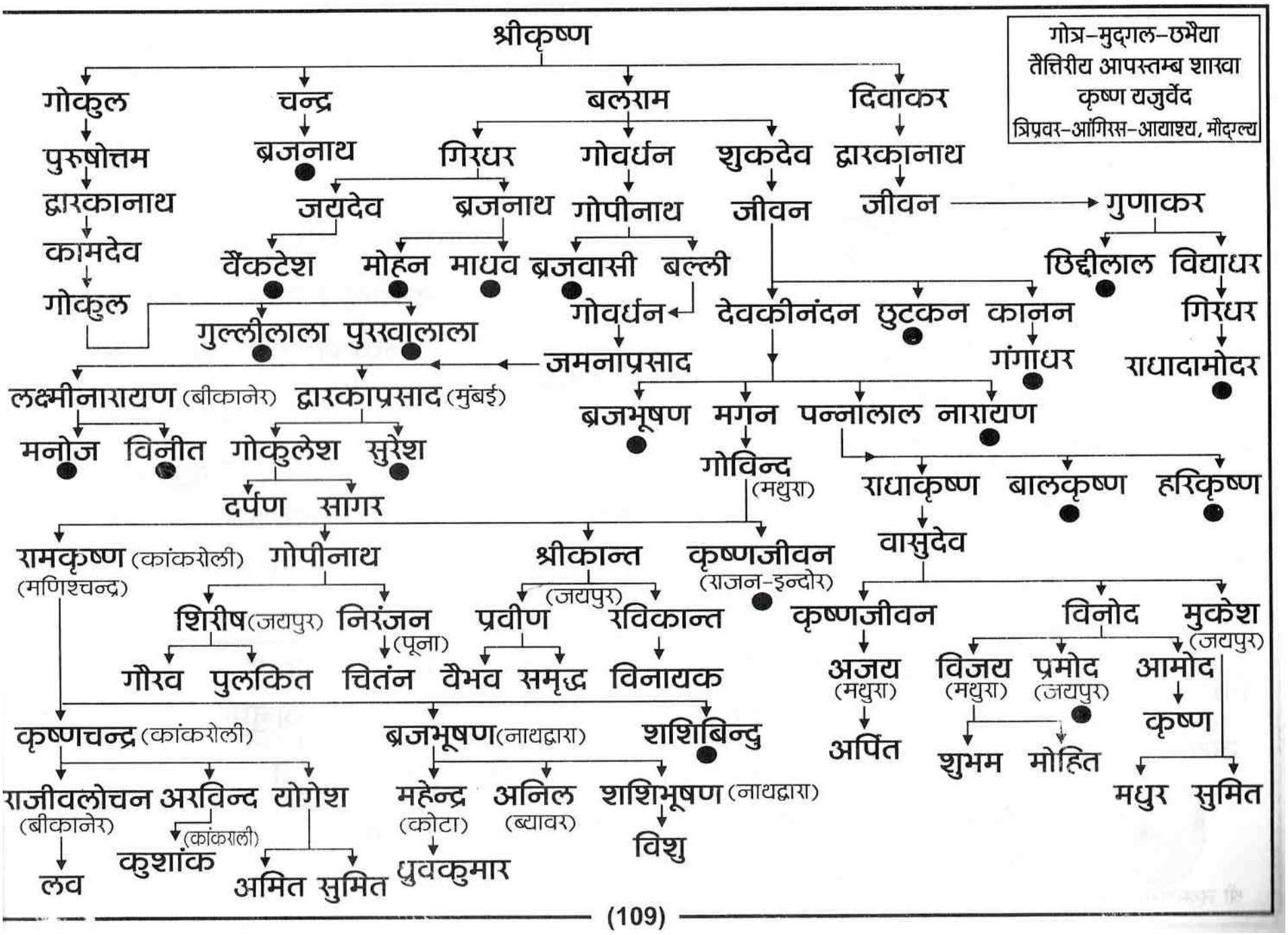
श्रीकृष्ण
गोत्र–मुद्गल–छभैया
तैत्तिरीय आपस्तम्ब शाखा
कृष्ण यजुर्वेद
त्रिप्रवर–आंगिरस–आद्याश्य, मौद्गल्य
गोकुल
चन्द्र
बलराम
दिवाकर
पुरुषोत्तम
ब्रजनाथ
गिरधर
गोवर्धन
शुकदेव
द्वारकानाथ
द्वारकानाथ
जयदेव
ब्रजनाथ
गोपीनाथ
जीवन
जीवन
गुणाकर
कामदेव
वैंकटेश
मोहन
माधव
ब्रजवासी
बल्ली
छिद्दीलाल
विद्याधर
गोकुल
गुल्लीलाला
पुरखालाला
गोवर्धन
देवकीनंदन
छुटकन
कानन
गिरधर
जमनाप्रसाद
गंगाधर
राधादामोदर
लक्ष्मीनारायण (बीकानेर)
द्वारकाप्रसाद (मुंबई)
ब्रजभूषण
मगन
पन्नालाल
नारायण
मनोज
विनीत
गोकुलेश
सुरेश
गोविन्द (मथुरा)
राधाकृष्ण
बालकृष्ण
हरिकृष्ण
दर्पण
सागर
वासुदेव
रामकृष्ण (कांकरोली) (मणिश्चन्द्र)
गोपीनाथ
श्रीकान्त (जयपुर)
कृष्णजीवन (राजन–इन्दौर)
कृष्णजीवन
विनोद
मुकेश (जयपुर)
शिरीष (जयपुर)
निरंजन (पूना)
प्रवीण
रविकान्त
अजय (मथुरा)
विजय (मथुरा)
प्रमोद (जयपुर)
आमोद
गौरव
पुलकित
चितंन
वैभव
समृद्ध
विनायक
कृष्ण
कृष्णचन्द्र (कांकरोली)
ब्रजभूषण (नाथद्वारा)
शशिबिन्दु
अर्पित
शुभम
मोहित
राजीवलोचन (बीकानेर)
अरविन्द (कांकराली)
योगेश
महेन्द्र (कोटा)
अनिल (ब्यावर)
शशिभूषण (नाथद्वारा)
मधुर
सुमित
कुशांक
अमित
सुमित
ध्रुवकुमार
विशु
लव

गोत्र–मुद्गल–छभैया
तैत्तिरीय आपस्तम्ब शाखा
कृष्ण यजुर्वेद
त्रिप्रवर–आंगिरस–आयाश्य, मौद्गल्य

श्री लक्ष्मणभट्ट तैलंग

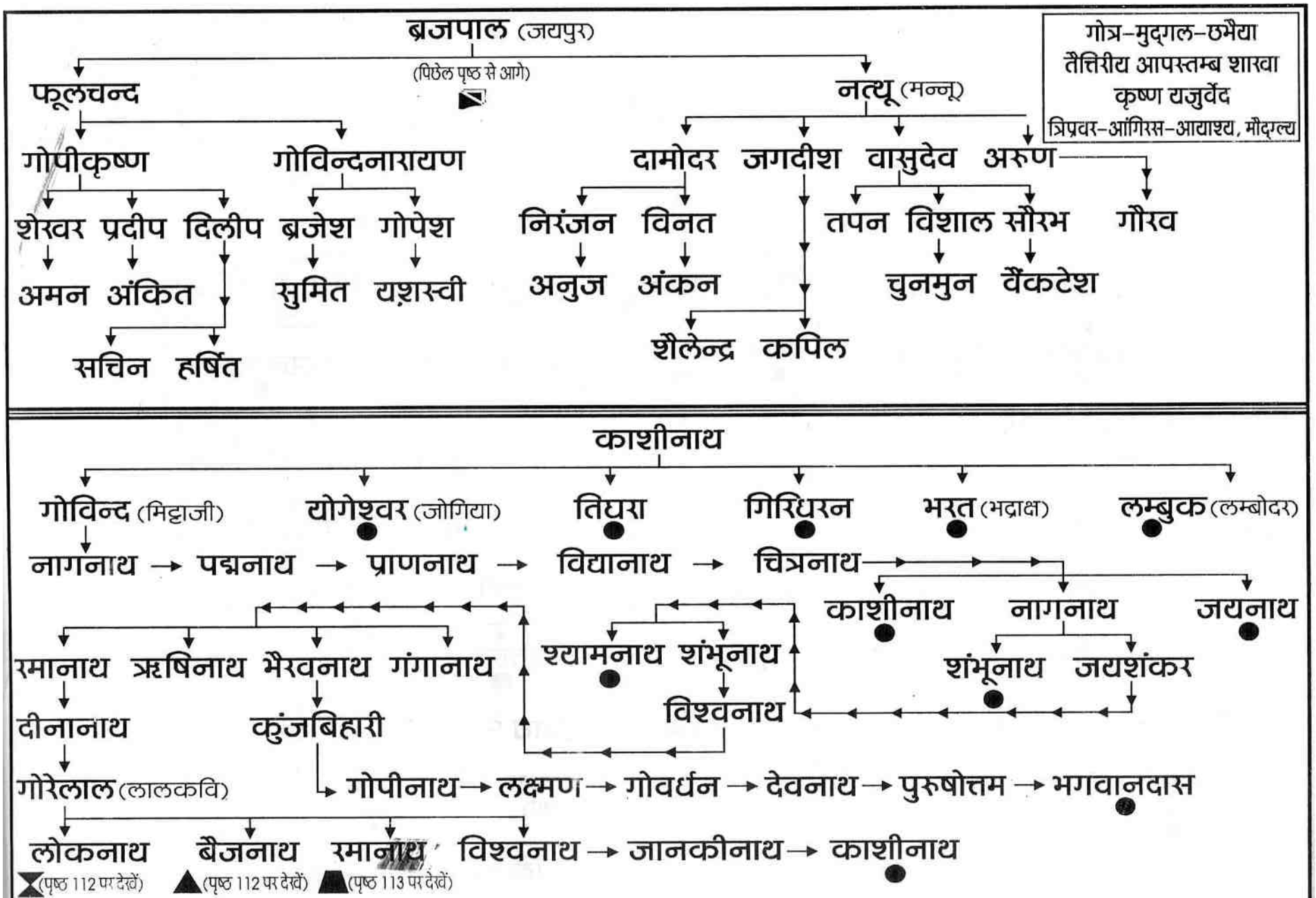

गोत्र–मुद्गल–छभैया
तैत्तिरीय आपस्तम्ब शाखा
कृष्ण यजुर्वेद
त्रिप्रवर–आंगिरस–आयाश्य, मौद्गल्य

ब्रजपाल (जयपुर)

(पिछेल पृष्ठ से आगे)

- फूलचन्द
  - गोपीकृष्ण
    - शेखर → अमन
    - प्रदीप → अंकित
    - दिलीप
      - सचिन
      - हर्षित
  - गोविन्दनारायण
    - ब्रजेश → सुमित
    - गोपेश → यशस्वी
- नत्थू (मन्नू)
  - दामोदर
    - निरंजन → अनुज
    - विनत → अंकन
  - जगदीश
    - शैलेन्द्र
    - कपिल
  - वासुदेव
    - तपन
    - विशाल → चुनमुन
    - सौरभ → वैंकटेश
  - अरुण
    - गौरव

काशीनाथ

- गोविन्द (मिट्ठाजी)
- योगेश्वर (जोगिया) ●
- तिघरा ●
- गिरिधरन ●
- भरत (भद्राक्ष) ●
- लम्बुक (लम्बोदर) ●

गोविन्द → नागनाथ → पद्मनाथ → प्राणनाथ → विद्यानाथ → चित्रनाथ

- चित्रनाथ
  - काशीनाथ ●
  - नागनाथ
    - शंभूनाथ ●
    - जयशंकर
      - श्यामनाथ ●
      - शंभूनाथ
        - विश्वनाथ
          - रमानाथ → दीनानाथ → गोरेलाल (लालकवि)
            - लोकनाथ
            - बैजनाथ
            - रमानाथ
            - विश्वनाथ → जानकीनाथ → काशीनाथ ●
          - ऋषिनाथ
          - भैरवनाथ → कुंजबिहारी → गोपीनाथ → लक्ष्मण → गोवर्धन → देवनाथ → पुरुषोत्तम → भगवानदास ●
          - गंगानाथ
  - जयनाथ ●

⧗ (पृष्ठ 112 पर देखें) ▲ (पृष्ठ 112 पर देखें) ▰ (पृष्ठ 113 पर देखें)

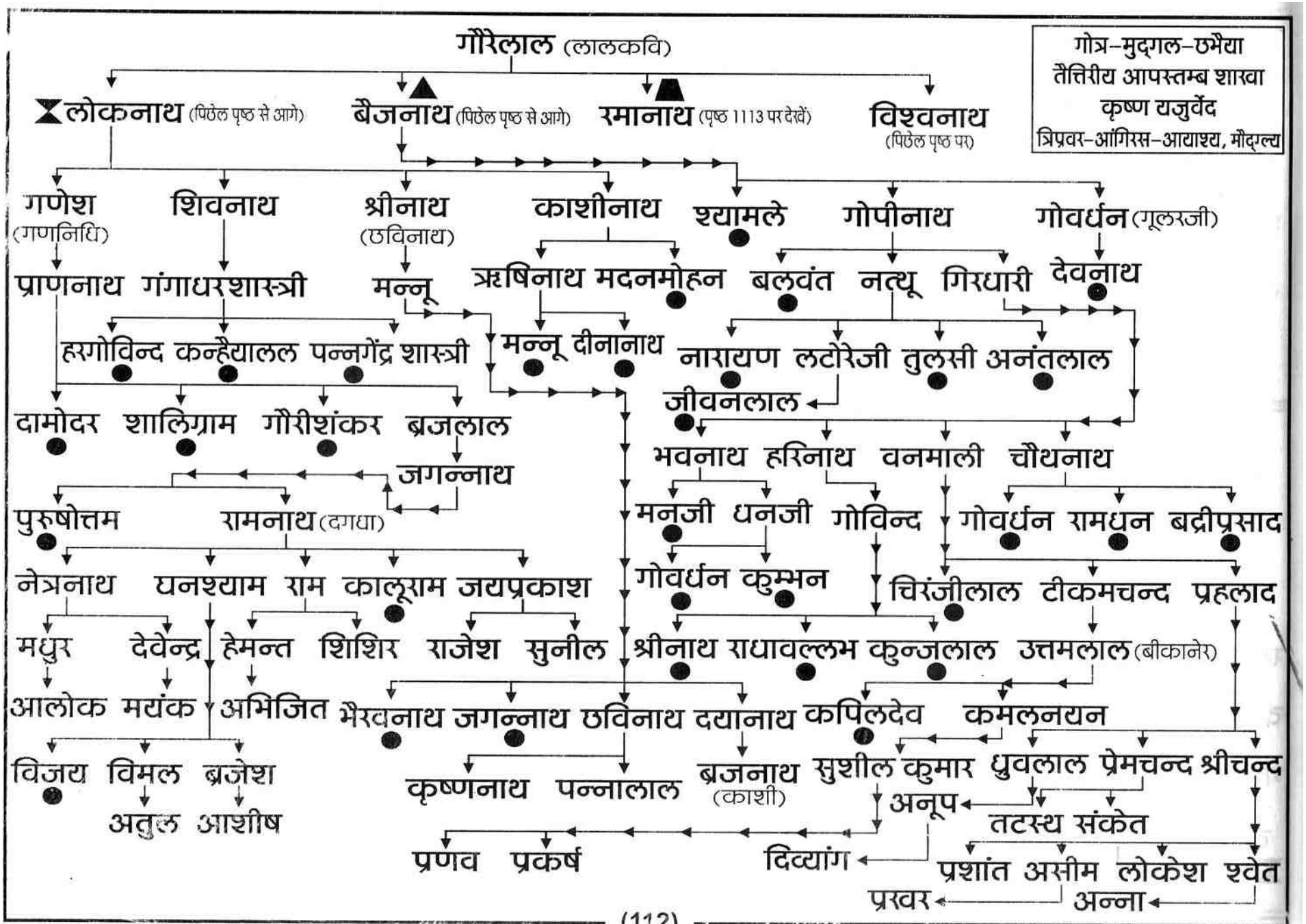
गौरेलाल (लालकवि)
गोत्र–मुद्गल–छभैया
तैत्तिरीय आपस्तम्ब शाखा
कृष्ण यजुर्वेद
त्रिप्रवर–आंगिरस–आयाश्य, मौद्गल्य
लोकनाथ (पिछेल पृष्ठ से आगे)
बैजनाथ (पिछेल पृष्ठ से आगे)
रमानाथ (पृष्ठ 1113 पर देखें)
विश्वनाथ (पिछेल पृष्ठ पर)
गणेश (गणनिधि)
शिवनाथ
श्रीनाथ (छविनाथ)
काशीनाथ
श्यामले
गोपीनाथ
गोवर्धन (गूलरजी)
प्राणनाथ
गंगाधरशास्त्री
मन्नू
ऋषिनाथ
मदनमोहन
बलवंत
नत्थू
गिरधारी
देवनाथ
हरगोविन्द
कन्हैयालल
पन्नगेंद्र शास्त्री
मन्नू
दीनानाथ
नारायण
लटोरेजी
तुलसी
अनंतलाल
जीवनलाल
दामोदर
शालिग्राम
गौरीशंकर
ब्रजलाल
जगन्नाथ
भवनाथ
हरिनाथ
वनमाली
चौथनाथ
पुरुषोत्तम
रामनाथ (दगधा)
मनजी
धनजी
गोविन्द
गोवर्धन
रामधन
बद्रीप्रसाद
नेत्रनाथ
घनश्याम
राम
कालूराम
जयप्रकाश
गोवर्धन
कुम्भन
चिरंजीलाल
टीकमचन्द
प्रहलाद
मधुर
देवेन्द्र
हेमन्त
शिशिर
राजेश
सुनील
श्रीनाथ
राधावल्लभ
कुन्जलाल
उत्तमलाल (बीकानेर)
आलोक
मयंक
अभिजित
भैरवनाथ
जगन्नाथ
छविनाथ
दयानाथ
कपिलदेव
कमलनयन
विजय
विमल
ब्रजेश
कृष्णनाथ
पन्नालाल
ब्रजनाथ (काशी)
सुशील कुमार
ध्रुवलाल
प्रेमचन्द
श्रीचन्द
अतुल
आशीष
अनूप
तटस्थ संकेत
प्रणव
प्रकर्ष
दिव्यांग
प्रशांत
असीम
लोकेश
श्वेत
प्रवर
अन्ना

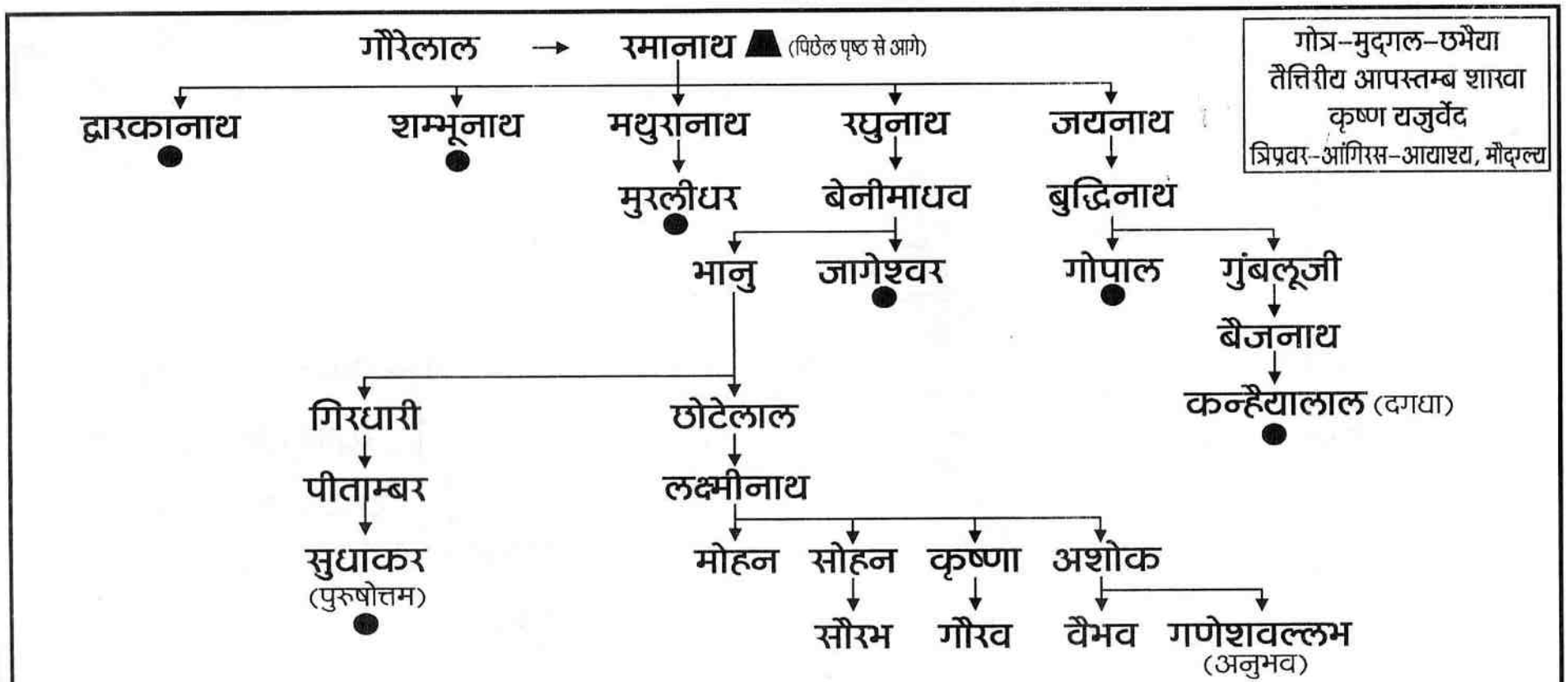
गौरेलाल → रमानाथ (पिठेल पृष्ठ से आगे)
गोत्र–मुद्गल–छभैया
तैत्तिरीय आपस्तम्ब शारवा
कृष्ण यजुर्वेद
त्रिप्रवर–आंगिरस–आयाश्य, मौद्गल्य
द्वारकानाथ
शम्भूनाथ
मथुरानाथ
रघुनाथ
जयनाथ
मुरलीधर
बेनीमाधव
बुद्धिनाथ
भानु
जागेश्वर
गोपाल
गुंबलूजी
बैजनाथ
कन्हैयालाल (दगधा)
गिरधारी
छोटेलाल
पीताम्बर
लक्ष्मीनाथ
सुधाकर
(पुरुषोत्तम)
मोहन
सोहन
कृष्णा
अशोक
सौरभ
गौरव
वैभव
गणेशवल्लभ
(अनुभव)

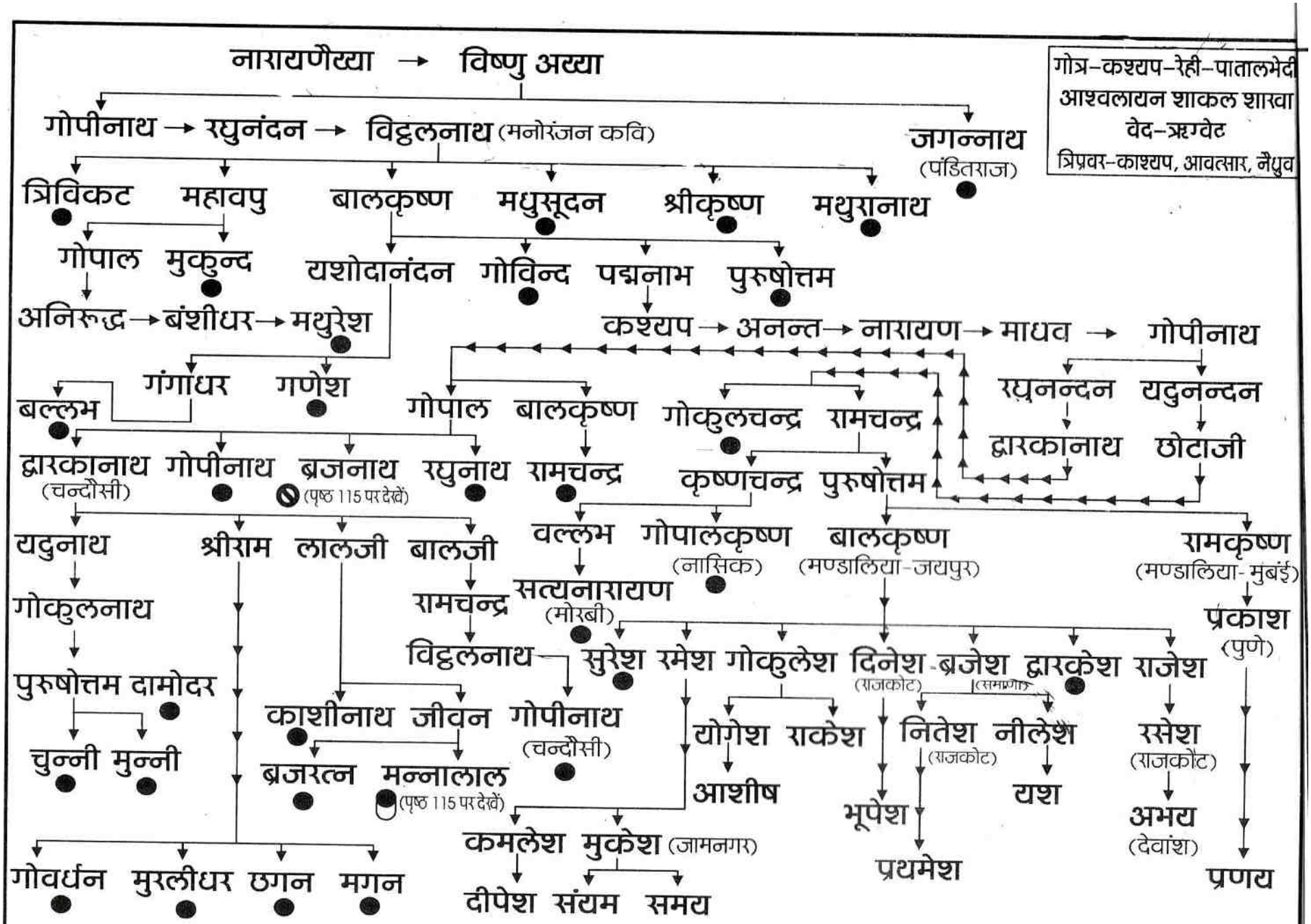
नारायणैय्या → विष्णु अय्या
गोत्र–कश्यप–रेही–पातालभेदी
आश्वलायन शाकल शारवा
वेद–ऋग्वेद
त्रिप्रवर–काश्यप, आवत्सार, नैधुव
गोपीनाथ → रघुनंदन → विट्ठलनाथ (मनोरंजन कवि)
जगन्नाथ (पंडितराज)
त्रिविकट
महावपु
बालकृष्ण
मधुसूदन
श्रीकृष्ण
मथुरानाथ
गोपाल
मुकुन्द
यशोदानंदन
गोविन्द
पद्मनाभ
पुरुषोत्तम
अनिरूद्ध → बंशीधर → मथुरेश
कश्यप → अनन्त → नारायण → माधव → गोपीनाथ
गंगाधर
गणेश
रघुनन्दन
यदुनन्दन
बल्लभ
गोपाल
बालकृष्ण
गोकुलचन्द्र
रामचन्द्र
द्वारकानाथ
छोटाजी
द्वारकानाथ (चन्दौसी)
गोपीनाथ
ब्रजनाथ
रघुनाथ
रामचन्द्र
कृष्णचन्द्र
पुरुषोत्तम
(पृष्ठ 115 पर देखें)
यदुनाथ
श्रीराम
लालजी
बालजी
वल्लभ
गोपालकृष्ण (नासिक)
बालकृष्ण (मण्डालिया–जयपुर)
रामकृष्ण (मण्डालिया- मुंबई)
गोकुलनाथ
रामचन्द्र
सत्यनारायण (मोरबी)
प्रकाश (पुणे)
विट्ठलनाथ
सुरेश
रमेश
गोकुलेश
दिनेश (राजकोट)
ब्रजेश (समणी)
द्वारकेश
राजेश
पुरुषोत्तम दामोदर
काशीनाथ
जीवन
गोपीनाथ (चन्दौसी)
योगेश
राकेश
नितेश (राजकोट)
नीलेश
रसेश (राजकोट)
चुन्नी
मुन्नी
ब्रजरत्न
मन्नालाल
(पृष्ठ 115 पर देखें)
आशीष
भूपेश
यश
अभय (देवांश)
कमलेश
मुकेश (जामनगर)
प्रथमेश
गोवर्धन
मुरलीधर
छगन
मगन
दीपेश
संयम
समय
प्रणय

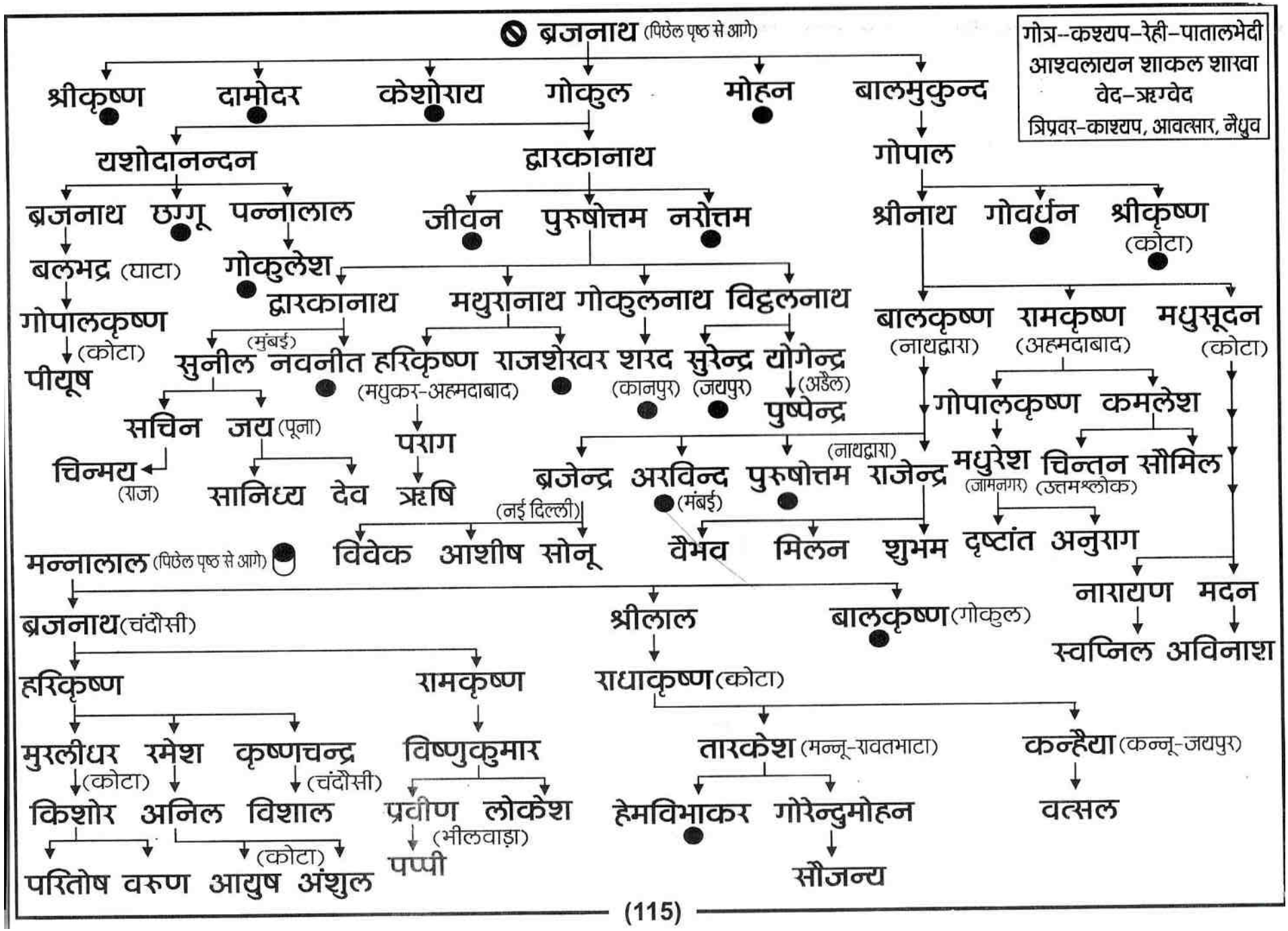

गोत्र–कश्यप–रेही–पातालभेदी
आश्वलायन शाकल शाखा
वेद–ऋग्वेद
त्रिप्रवर–काश्यप, आवत्सार, नैध्रुव
ब्रजनाथ (पिछेल पृष्ठ से आगे)
श्रीकृष्ण
दामोदर
केशोराय
गोकुल
मोहन
बालमुकुन्द
यशोदानन्दन
द्वारकानाथ
गोपाल
ब्रजनाथ
छग्गू
पन्नालाल
जीवन
पुरुषोत्तम
नरोत्तम
श्रीनाथ
गोवर्धन
श्रीकृष्ण (कोटा)
बलभद्र (घाटा)
गोकुलेश
गोपालकृष्ण (कोटा)
पीयूष
द्वारकानाथ
मथुरानाथ
गोकुलनाथ
विट्ठलनाथ
बालकृष्ण (नाथद्वारा)
रामकृष्ण (अहमदाबाद)
मधुसूदन (कोटा)
सुनील (मुंबई)
नवनीत
हरिकृष्ण (मधुकर-अहमदाबाद)
राजशेखर
शरद (कानपुर)
सुरेन्द्र (जयपुर)
योगेन्द्र (अडैल)
पुष्पेन्द्र
गोपालकृष्ण
कमलेश
सचिन
जय (पूना)
पराग
चिन्मय (राज)
सानिध्य
देव
ऋषि
ब्रजेन्द्र
अरविन्द (मंबई)
पुरुषोत्तम
राजेन्द्र (नाथद्वारा)
मधुरेश (जामनगर)
चिन्तन (उत्तमश्लोक)
सौमिल
विवेक
आशीष
सोनू (नई दिल्ली)
वैभव
मिलन
शुभम
दृष्टांत
अनुराग
मन्नालाल (पिछेल पृष्ठ से आगे)
नारायण
मदन
ब्रजनाथ (चंदौसी)
श्रीलाल
बालकृष्ण (गोकुल)
स्वप्निल
अविनाश
हरिकृष्ण
रामकृष्ण
राधाकृष्ण (कोटा)
मुरलीधर (कोटा)
रमेश
कृष्णचन्द्र (चंदौसी)
विष्णुकुमार
तारकेश (मन्नू-रावतभाटा)
कन्हैया (कन्नू-जयपुर)
किशोर
अनिल
विशाल
प्रवीण
लोकेश (भीलवाड़ा)
हेमविभाकर
गोरेन्दुमोहन
वत्सल
परितोष
वरुण
आयुष (कोटा)
अंशुल
पप्पी
सौजन्य

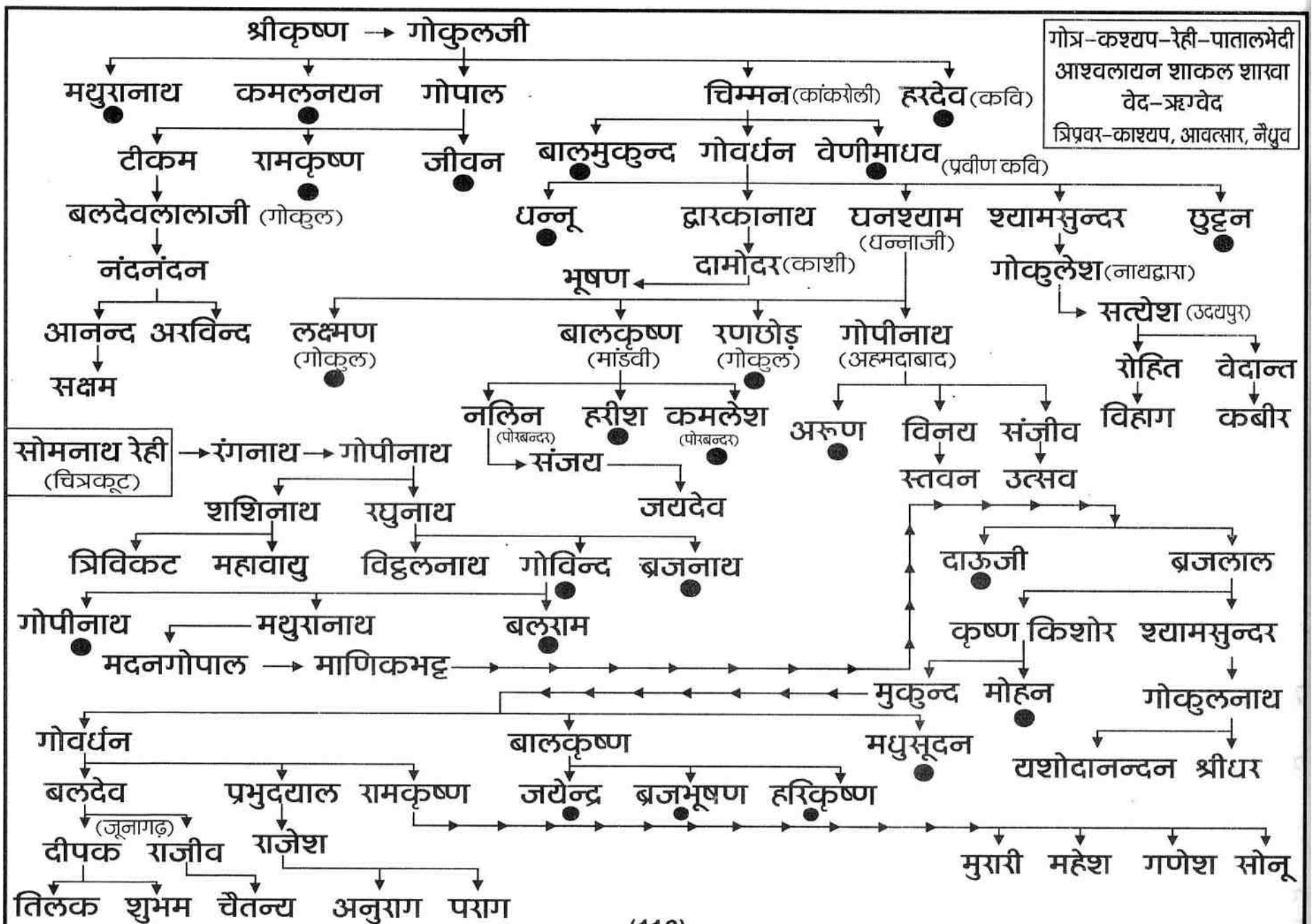
श्रीकृष्ण → गोकुलजी
गोत्र–कश्यप–रेही–पातालभेदी
आश्वलायन शाकल शाखा
वेद–ऋग्वेद
त्रिप्रवर–काश्यप, आवत्सार, नैधुव
मथुरानाथ
कमलनयन
गोपाल
चिम्मन (कांकरोली)
हरदेव (कवि)
टीकम
रामकृष्ण
जीवन
बालमुकुन्द
गोवर्धन
वेणीमाधव (प्रवीण कवि)
बलदेवलालाजी (गोकुल)
धन्नू
द्वारकानाथ
घनश्याम (धन्नाजी)
श्यामसुन्दर
छुट्टन
नंदनंदन
दामोदर (काशी)
गोकुलेश (नाथद्वारा)
भूषण
आनन्द
अरविन्द
सक्षम
लक्ष्मण (गोकुल)
बालकृष्ण (मांडवी)
रणछोड़ (गोकुल)
गोपीनाथ (अहमदाबाद)
सत्येश (उदयपुर)
रोहित
वेदान्त
विहाग
कबीर
नलिन (पोरबन्दर)
हरीश
कमलेश (पोरबन्दर)
संजय
जयदेव
अरूण
विनय
संजीव
स्तवन
उत्सव
सोमनाथ रेही (चित्रकूट) → रंगनाथ → गोपीनाथ
शशिनाथ
रघुनाथ
त्रिविकट
महावायु
विट्ठलनाथ
गोविन्द
ब्रजनाथ
दाऊजी
ब्रजलाल
गोपीनाथ
मथुरानाथ
बलराम
कृष्ण किशोर
श्यामसुन्दर
मदनगोपाल → माणिकभट्ट
मुकुन्द
मोहन
गोकुलनाथ
गोवर्धन
बालकृष्ण
मधुसूदन
यशोदानन्दन
श्रीधर
बलदेव
प्रभुदयाल
रामकृष्ण
जयेन्द्र
ब्रजभूषण
हरिकृष्ण
(जूनागढ़)
दीपक
राजीव
राजेश
मुरारी
महेश
गणेश
सोनू
तिलक
शुभम
चैतन्य
अनुराग
पराग

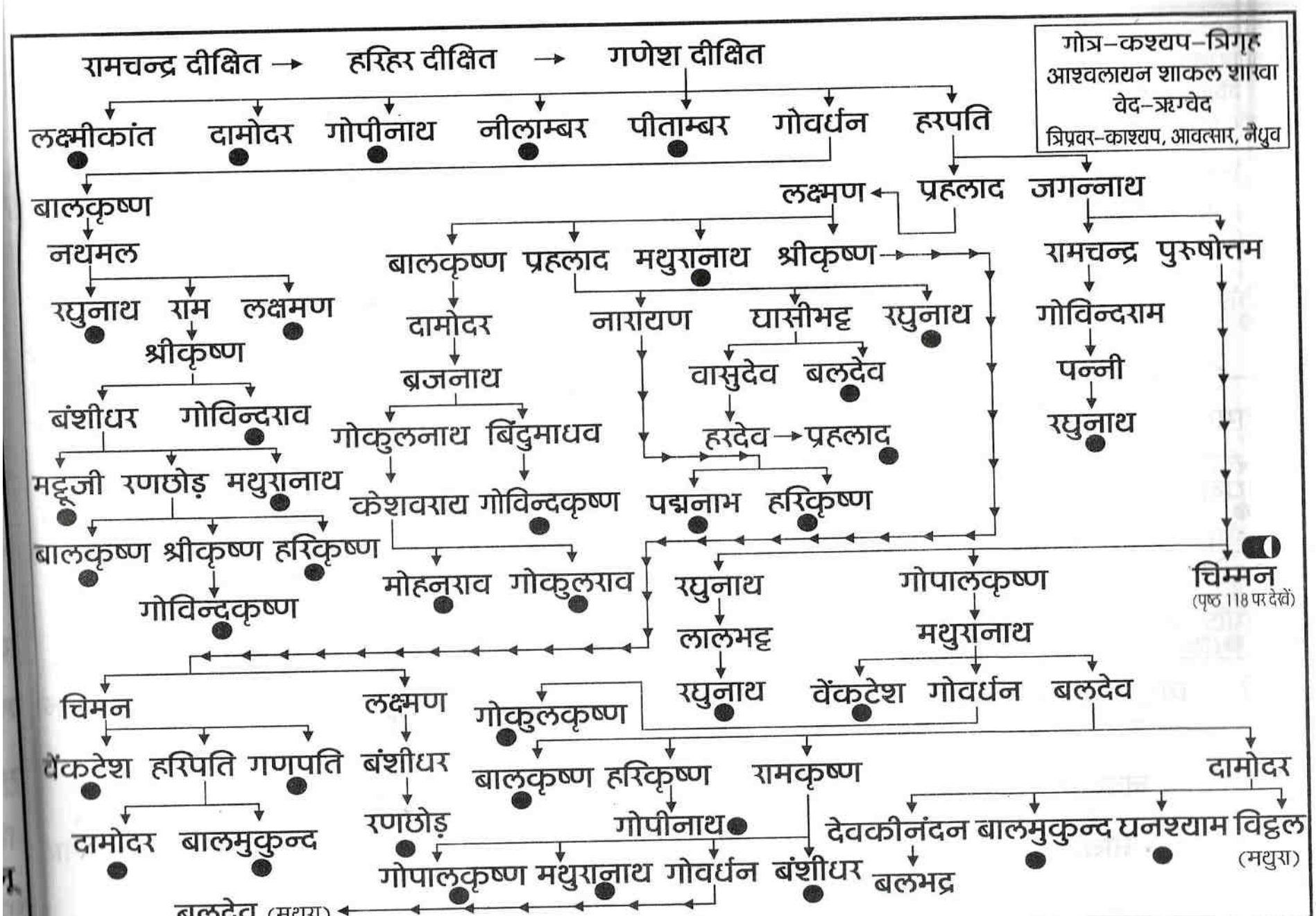
रामचन्द्र दीक्षित → हरिहर दीक्षित → गणेश दीक्षित
गोत्र–कश्यप–त्रिगृह
आश्वलायन शाकल शाखा
वेद–ऋग्वेद
त्रिप्रवर–काश्यप, आवत्सार, नैधुव
लक्ष्मीकांत
दामोदर
गोपीनाथ
नीलाम्बर
पीताम्बर
गोवर्धन
हरपति
बालकृष्ण
नथमल
रघुनाथ
राम
लक्ष्मण
श्रीकृष्ण
बंशीधर
गोविन्दराव
मट्टूजी
रणछोड़
मथुरानाथ
बालकृष्ण
श्रीकृष्ण
हरिकृष्ण
गोविन्दकृष्ण
लक्ष्मण
प्रहलाद
जगन्नाथ
बालकृष्ण
प्रहलाद
मथुरानाथ
श्रीकृष्ण
दामोदर
ब्रजनाथ
गोकुलनाथ
बिंदुमाधव
केशवराय
गोविन्दकृष्ण
मोहनराव
गोकुलराव
नारायण
घासीभट्ट
रघुनाथ
वासुदेव
बलदेव
हरदेव
प्रहलाद
पद्मनाभ
हरिकृष्ण
रामचन्द्र
पुरुषोत्तम
गोविन्दराम
पन्नी
रघुनाथ
चिम्मन
(पृष्ठ 118 पर देखें)
रघुनाथ
लालभट्ट
रघुनाथ
गोपालकृष्ण
मथुरानाथ
वेंकटेश
गोवर्धन
बलदेव
चिमन
वेंकटेश
हरिपति
गणपति
दामोदर
बालमुकुन्द
लक्ष्मण
बंशीधर
रणछोड़
गोपालकृष्ण
मथुरानाथ
गोवर्धन
बंशीधर
बलदेव (मथुरा)
गोकुलकृष्ण
बालकृष्ण
हरिकृष्ण
रामकृष्ण
गोपीनाथ
देवकीनंदन
बलभद्र
दामोदर
बालमुकुन्द
घनश्याम
विट्ठल
(मथुरा)

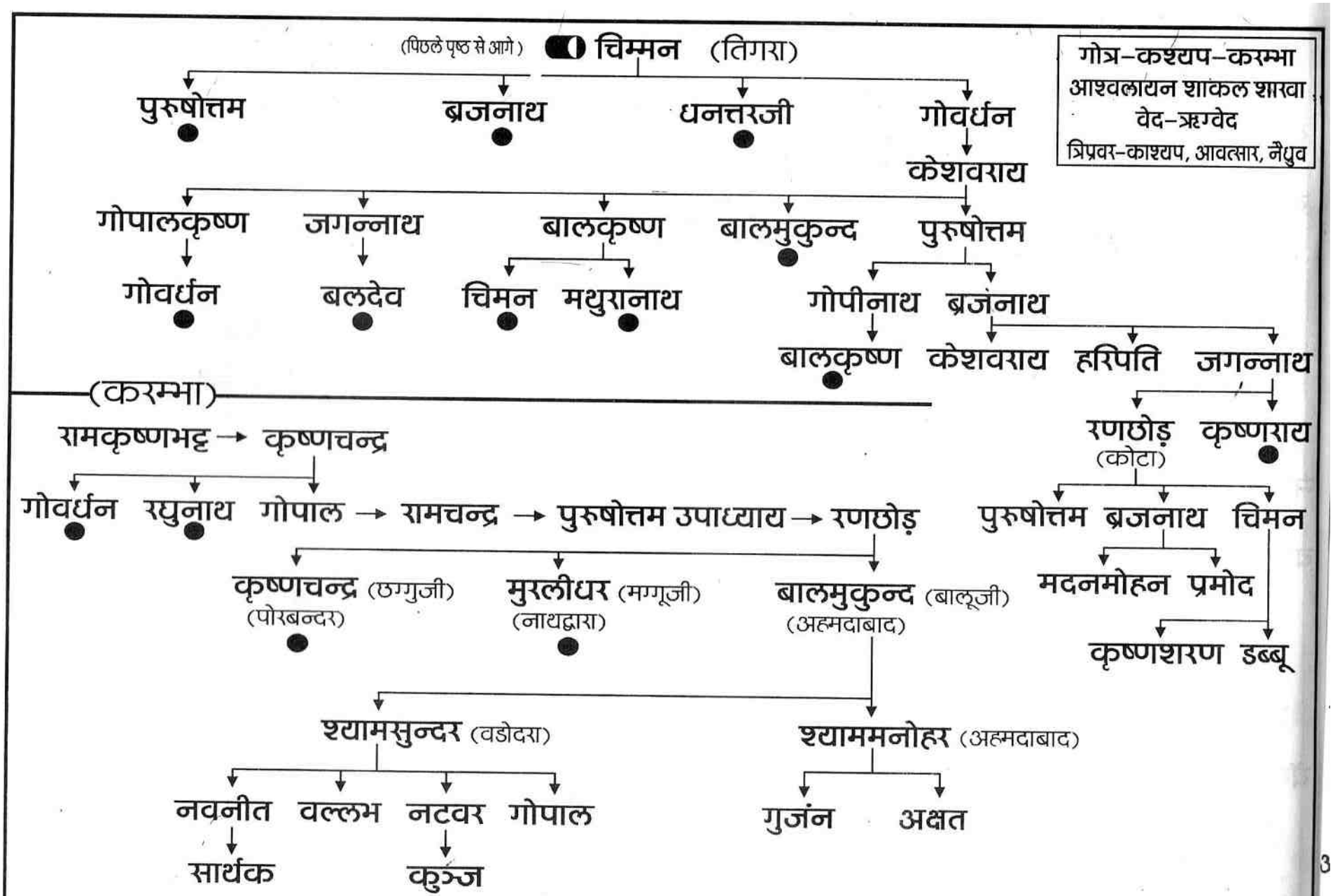
(पिछले पृष्ठ से आगे)
चिम्मन (तिगरा)
गोत्र–कश्यप–करम्भा
आश्वलायन शाकल शारवा
वेद–ऋग्वेद
त्रिप्रवर–काश्यप, आवत्सार, नैधुव
पुरुषोत्तम
ब्रजनाथ
धनत्तरजी
गोवर्धन
केशवराय
गोपालकृष्ण
जगन्नाथ
बालकृष्ण
बालमुकुन्द
पुरुषोत्तम
गोवर्धन
बलदेव
चिमन
मथुरानाथ
गोपीनाथ
ब्रजनाथ
बालकृष्ण
केशवराय
हरिपति
जगन्नाथ
रणछोड़ (कोटा)
कृष्णराय
(करम्भा)
रामकृष्णभट्ट → कृष्णचन्द्र
गोवर्धन
रघुनाथ
गोपाल → रामचन्द्र → पुरुषोत्तम उपाध्याय → रणछोड़
पुरुषोत्तम
ब्रजनाथ
चिमन
मदनमोहन
प्रमोद
कृष्णशरण
डब्बू
कृष्णचन्द्र (छग्गुजी) (पोरबन्दर)
मुरलीधर (मग्गूजी) (नाथद्वारा)
बालमुकुन्द (बालूजी) (अहमदाबाद)
श्यामसुन्दर (वडोदरा)
श्याममनोहर (अहमदाबाद)
नवनीत
वल्लभ
नटवर
गोपाल
गुजंन
अक्षत
सार्थक
कुञ्ज

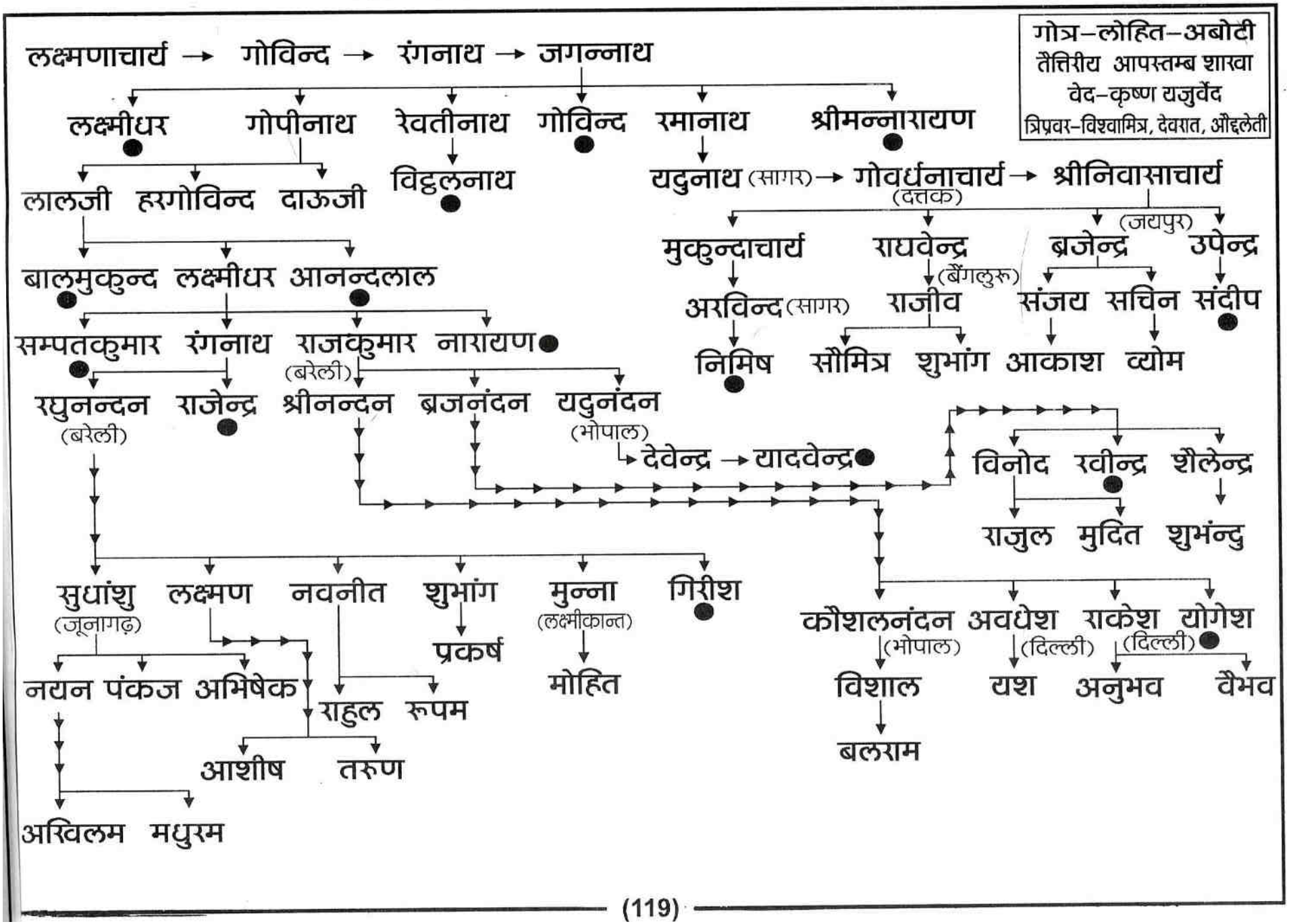

गोत्र–लोहित–अबोटी
तैत्तिरीय आपस्तम्ब शाखा
वेद–कृष्ण यजुर्वेद
त्रिप्रवर–विश्वामित्र, देवरात, औद्दलेती
लक्ष्मणाचार्य → गोविन्द → रंगनाथ → जगन्नाथ
लक्ष्मीधर
गोपीनाथ
रेवतीनाथ
गोविन्द
रमानाथ
श्रीमन्नारायण
लालजी
हरगोविन्द
दाऊजी
विट्ठलनाथ
यदुनाथ (सागर) → गोवर्धनाचार्य (दत्तक) → श्रीनिवासाचार्य
मुकुन्दाचार्य
राघवेन्द्र
ब्रजेन्द्र
(जयपुर)
उपेन्द्र
बालमुकुन्द
लक्ष्मीधर
आनन्दलाल
अरविन्द (सागर)
राजीव (बेंगलुरू)
संजय
सचिन
संदीप
सम्पतकुमार
रंगनाथ
राजकुमार (बरेली)
नारायण
निमिष
सौमित्र
शुभांग
आकाश
व्योम
रघुनन्दन (बरेली)
राजेन्द्र
श्रीनन्दन
ब्रजनंदन
यदुनंदन (भोपाल)
देवेन्द्र → यादवेन्द्र
विनोद
रवीन्द्र
शैलेन्द्र
राजुल
मुदित
शुभेन्दु
सुधांशु (जूनागढ़)
लक्ष्मण
नवनीत
शुभांग
मुन्ना (लक्ष्मीकान्त)
गिरीश
कौशलनंदन (भोपाल)
अवधेश (दिल्ली)
राकेश (दिल्ली)
योगेश
प्रकर्ष
मोहित
नयन
पंकज
अभिषेक
राहुल
रूपम
विशाल
यश
अनुभव
वैभव
आशीष
तरुण
बलराम
अखिलम
मधुरम

गोत्र–कौशिक–गोष्ठीशाल
तैत्तिरीय आपस्तम्ब शाखा
वेद–कृष्ण यजुर्वेद
त्रिप्रवर–विश्वामित्र, देवरात, औदल

बलदेवजी
↓
गोरधन
↓
बालमुकुन्द — ब्रजरमण ●

बालमुकुन्द
↓
ब्रजचन्द्र (अहमदाबाद)
↓
विधुभूषण — प्रणव कुमार

विधुभूषण
↓
स्वप्निल

प्रणव कुमार
↓
करनराज

श्री बालमुकुन्द गोष्ठीशाल

श्री ब्रजचन्द गोष्ठीशाल

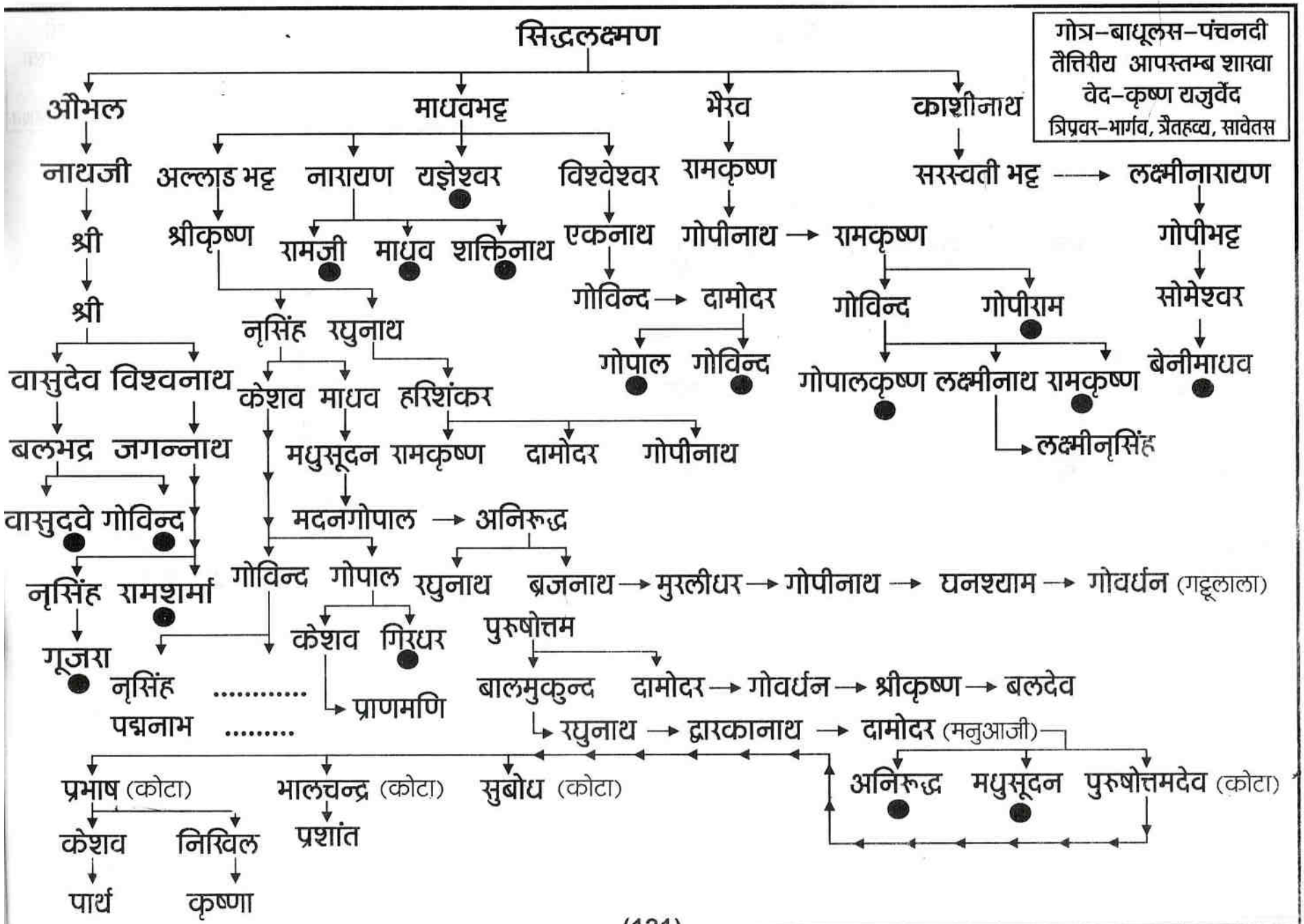
सिद्धलक्ष्मण
गोत्र–बाधूलस–पंचनदी
तैत्तिरीय आपस्तम्ब शाखा
वेद–कृष्ण यजुर्वेद
त्रिप्रवर–भार्गव, त्रैतहव्य, सावेतस
औभल
माधवभट्ट
भैरव
काशीनाथ
नाथजी
अल्लाड भट्ट
नारायण
यज्ञेश्वर
विश्वेश्वर
रामकृष्ण
सरस्वती भट्ट
लक्ष्मीनारायण
श्री
श्रीकृष्ण
रामजी
माधव
शक्तिनाथ
एकनाथ
गोपीनाथ
रामकृष्ण
गोपीभट्ट
श्री
नृसिंह
रघुनाथ
गोविन्द
दामोदर
गोविन्द
गोपीराम
सोमेश्वर
वासुदेव
विश्वनाथ
केशव
माधव
हरिशंकर
गोपाल
गोविन्द
गोपालकृष्ण
लक्ष्मीनाथ
रामकृष्ण
बेनीमाधव
बलभद्र
जगन्नाथ
मधुसूदन
रामकृष्ण
दामोदर
गोपीनाथ
लक्ष्मीनृसिंह
वासुदवे
गोविन्द
मदनगोपाल
अनिरूद्ध
नृसिंह
रामशर्मा
गोविन्द
गोपाल
रघुनाथ
ब्रजनाथ
मुरलीधर
गोपीनाथ
घनश्याम
गोवर्धन (गट्टूलाला)
गूजरा
केशव
गिरधर
पुरुषोत्तम
नृसिंह .....
पद्मनाभ .....
प्राणमणि
बालमुकुन्द
दामोदर
गोवर्धन
श्रीकृष्ण
बलदेव
रघुनाथ
द्वारकानाथ
दामोदर (मनुआजी)
प्रभाष (कोटा)
भालचन्द्र (कोटा)
सुबोध (कोटा)
अनिरूद्ध
मधुसूदन
पुरुषोत्तमदेव (कोटा)
केशव
निरविल
प्रशांत
पार्थ
कृष्णा

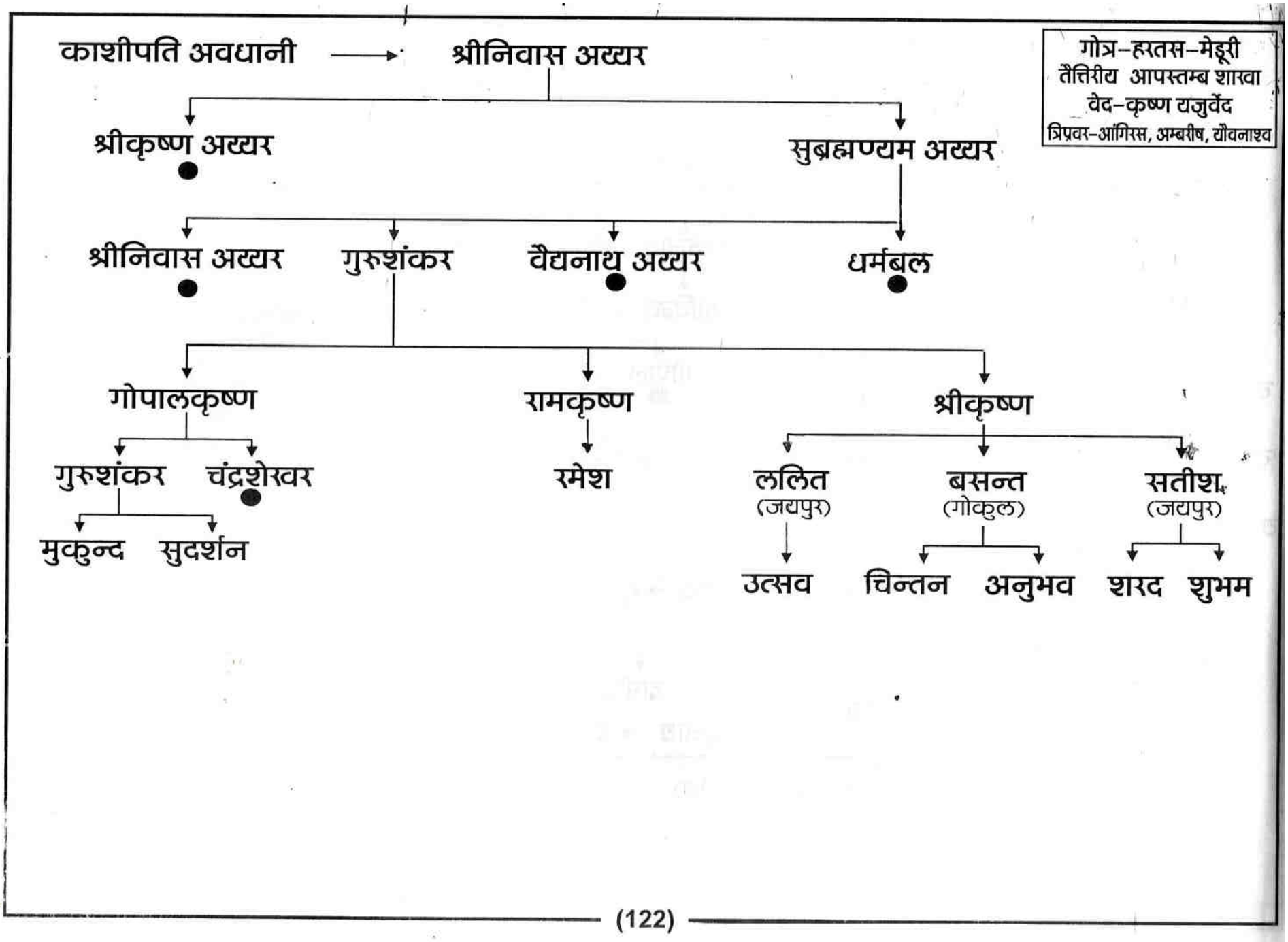
काशीपति अवधानी
श्रीनिवास अय्यर
गोत्र–हरतस–मेडूरी
तैत्तिरीय आपस्तम्ब शाखा
वेद–कृष्ण यजुर्वेद
त्रिप्रवर–आंगिरस, अम्बरीष, यौवनाश्व
श्रीकृष्ण अय्यर
सुब्रह्मण्यम अय्यर
श्रीनिवास अय्यर
गुरुशंकर
वैद्यनाथ अय्यर
धर्मबल
गोपालकृष्ण
रामकृष्ण
श्रीकृष्ण
गुरुशंकर
चंद्रशेखर
रमेश
ललित
(जयपुर)
बसन्त
(गोकुल)
सतीश
(जयपुर)
मुकुन्द
सुदर्शन
उत्सव
चिन्तन
अनुभव
शरद
शुभम

गोत्र–शांडिल्य (विरसिंहपुर)
तैत्तिरीय आपस्तम्ब शाखा
वेद–कृष्ण यजुर्वेद
त्रिप्रवर–काश्यप, आवत्सार, शांडिल्य

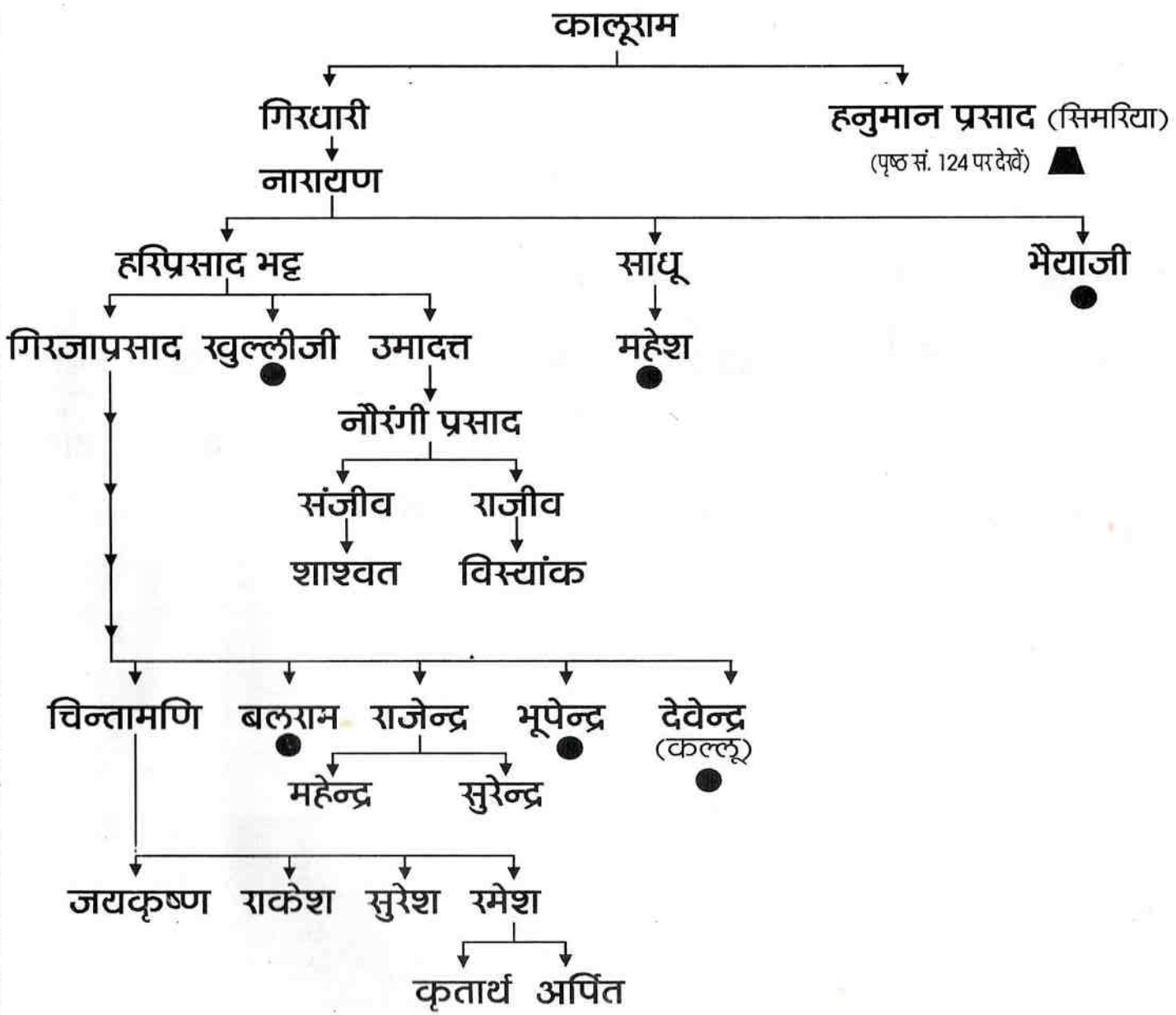

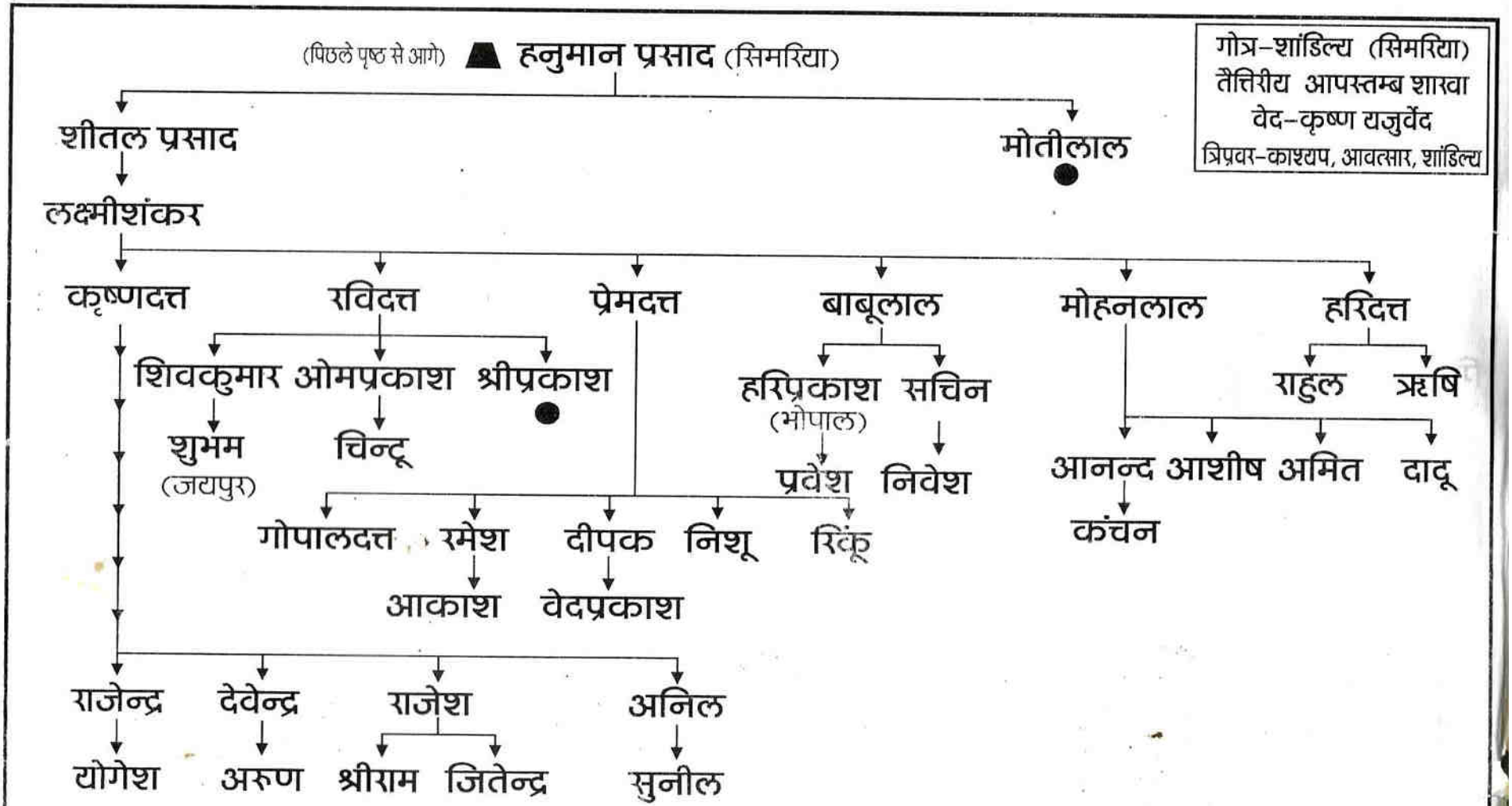

गोत्र–शांडिल्य (सिमरिया)
तैत्तिरीय आपस्तम्ब शाखा
वेद–कृष्ण यजुर्वेद
त्रिप्रवर–काश्यप, आवत्सार, शांडिल्य

(पिछले पृष्ठ से आगे) ▲ **हनुमान प्रसाद** (सिमरिया)

- **शीतल प्रसाद**
  - **लक्ष्मीशंकर**
    - **कृष्णदत्त**
      - राजेन्द्र
        - योगेश
      - देवेन्द्र
        - अरुण
      - राजेश
        - श्रीराम
        - जितेन्द्र
      - अनिल
        - सुनील
    - **रविदत्त**
      - शिवकुमार
        - शुभम (जयपुर)
      - ओमप्रकाश
        - चिन्टू
      - श्रीप्रकाश ●
    - **प्रेमदत्त**
      - गोपालदत्त
      - रमेश
        - आकाश
      - दीपक
        - वेदप्रकाश
      - निशू
      - रिंकू
    - **बाबूलाल**
      - हरिप्रकाश (भोपाल)
        - प्रवेश
      - सचिन
        - निवेश
    - **मोहनलाल**
      - आनन्द
        - कंचन
      - आशीष
      - अमित
      - दादू
    - **हरिदत्त**
      - राहुल
      - ऋषि
- **मोतीलाल** ●